FREE Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos
Educational Books, Educational Videos, Wallpapers

****

All Music is also available in **CD** format. **CD Cover** can also be print with your Firm Name

****

We also provide this whole Music and Data in **PENDRIVE** and **EXTERNAL HARD DISK.**

Contact : Ankit Mishra (+91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com)

हिन्दू ज्योतिष

में

कर्म और पुनर्जन्म

विषय सूची

भाग १
हिन्दू ज्योतिष में कर्म

भाग २

हिन्दू ज्योतिष में पुनर्जन्म

पुस्तक-आयोजन

यहां प्रयुक्त की जाने वाली योजना और समायोजित विषय इस प्रकार हैं :-

क) जब राहु ईर्ष्या जगाता है और आजीविका अवरुद्ध करता है।

ख) किसी व्यक्ति का जन्म-समय उसके प्रारब्ध का प्रथम सीमा चिह्न है।

ग) किसी व्यक्ति के जन्म के समय चन्द्र का विशेष नक्षत्र समूह (राशि) में और जन्म-समय चन्द्र की स्थिति उसके प्रारब्ध की दूसरी सीमारेखा है।

घ) विगत जन्म के आध्यात्मिक-पुण्यों के परिणाम स्वरुप ही कोई व्यक्ति अपनी सन्तान से सुख की आशा कर सकता है।

ङ) अच्छे-बुरे या मिले-जुले गुण-अवगुणों वाली सन्तान पिछले जन्म के संबंध दिखाती है।

(च) प्रतिभावान सन्तान के जन्म-समय के निश्चित समय का फलित ज्योतिषीय अध्ययन क्या जन्म-समय में समावेश दिखाये जाने पर प्रारब्ध बदल देता है?

(छ) समय चक्र भाग्य बदल देता है क्योंकि समय ही भगवान है।

(ज) पुनर्जन्म और फलित ज्योतिष पर सम्पूर्ण खण्ड पढ़िए।

(झ) जीवन एक साथ समृद्धि, भौतिक उपलब्धियां, काम और चमक-दमक में साथ-साथ कूदने की कहानी नहीं है। अनेक लोगों के जन्म-समय पर आध्यात्मिक संघर्ष फैले रहते हैं।

(ट) जन्म और पुनर्जन्म मानव का और मानवेतर भी हो सकता है। कुछ कट्टरपंथी धर्मों में यह प्रचार होता है कि पशुओं में आत्मा नहीं होती, इसे सत्य नहीं मानना चाहिए और मन से हटा देना चाहिए।

लेखक - एक परिचय

के.एन. राव (*कोटमराजू नारायन राव*) भारतीय ऑडिट एवं एकाउन्ट्स सेवा से डाइरेक्टर जनरल के पद से नवम्बर १९९० में सेवा निवृत्त हुए। वे स्वतंत्रतापूर्व युग के नेशनल हेर्ल्ड के संस्थापक, संपादक एवं तीस से भी अधिक पत्रिकाओं के संपादक, ख्याति प्राप्त पत्रकार श्री के. रामा राव के चार पुत्रों में दूसरे पुत्र है। श्री राव को ज्योतिष का प्रारम्भिक ज्ञान वर्ष १९४३ में १२ वर्ष की उम्र में उनकी स्व. माताजी श्रीमती सरसवाणी देवी जी से प्राप्त हुआ। उनके अनुसार वह ज्योतिष के दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों - विवाह एवं सन्तान तथा प्रश्न में महारथी थीं।

वर्ष १९५७ में अखिल भारतीय परीक्षा के द्वारा सरकारी सेवा में आने से पूर्व श्री राव अंग्रेजी विषय के प्रवक्ता थे। उन्होंने भारतीय ऑडिट एवं एकाउन्ट्स में सेवा की एवं डाइरेक्टर जनरल के पद से वर्ष १९९० में सेवा निवृत्त हुए। युवावस्था में ज्योतिष से भी अधिक रुचि खेलकूद में होने के कारण राव ने शतरंज प्रतियोगिता एवं दो राज्य-स्तरीय ब्रिज प्रतियोगिताओं में प्रतिभा पुरस्कार प्राप्त किये। इसके अतिरिक्त वे दस अन्य खेलों में सक्रिय रुप से भाग लेते थे जिसके फलस्वरूप ही उनके ज्योतिष लेखन में खेलकूद का अक्सर सन्दर्भ आता है।

अपने सेवा काल में वह राजस्व प्राप्ति लेखा परीक्षण के अन्तराष्ट्रीय तीन पाठ्यक्रमों के, एक बार संयुक्त निदेशक एवं दो बार महानिदेशक के पद पर योजनाकार प्रबन्धक तथा शिक्षक के रूप में कार्यरत रहे। उनके एक अधिकारी एवं ज्योतिषी के रूप में विदेशियों के साथ दो दशकों से अधिक तक हुए संवाद के फलस्वरूप ही उन्हें एक ज्योतिषी के रूप में विदेशी बुद्धिजीवियों के विशालतम् मित्र समूह की प्राप्ति हुई।

अपने सेवा काल के दौरान ही वह ज्योतिष का मौलिक शोध करते रहते थे, इसके कारण ही उन्होंने हजारों जन्मपत्रिकाओं का व्यवस्थित संग्रह किया। उनके संग्रह में ५०,००० से अधिक जन्मपत्रिकाऐं हैं, जिनमें प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की दस महत्वपूर्ण घटनाओं के वर्णन का भी समावेश किया गया है। यह शायद किसी भी ज्योतिष द्वारा किया गया जन्म पत्रिकाओं का सबसे बड़ा संग्रह होगा।

बिना कोई शुल्क लिये ज्योतिषीय कार्य को जीवन का उद्देश्य मानते हुए, अत्यधिक कार्य करने की थकान ने उन्हें कई बार ज्योतिष को छोड़ने हेतु बाध्य किया। किन्तु वर्ष १९८१ के दिसम्बर माह में उन्हें दिल्ली में सम्पन्न त्रिदिवसीय सेमिनार में भाग लेने हेतु बाध्य होना पड़ा। इसमे उनके विलक्षण भाषण के कारण उनके ज्योतिषीय लेखों की मांग वृहद जोर पकड़ती गई इसके उपरान्त ही पाठक उनके ज्योतिष के मौलिक शोध कार्य का लाभ उठा पाये, जिसके लिए उन्हे विश्वभर में ख्याति प्राप्त है।

वर्ष १९९३ एवं १९९५ के बीच श्री राव पाँच बार शिक्षण दौरे पर अमेरिका जा चुके है। वर्ष १९९३ में *"अमेरिकन काउन्सिल ऑफ वैदिक एस्ट्रोलौजी"* के सम्मेलन का मुख्य अतिथि बनने का श्रेय भी उन्हें प्राप्त हुआ। वर्ष १९९४ में भी उन्हें तृतीय सम्मेलन में उपस्थित होने का अनुरोध प्राप्त हुआ था। क्योंकि उनकी उपस्थिति के कारण विशाल जनसमूह की भागीदारी निश्चित थी। यद्यपि उनके द्वार अमेरिकी सम्मेलन में भाग लेने में असमर्थता व्यक्त की गई तथापि नवम्बर १९९५ तक चतुर्थ सम्मेलन में उनके भाग लेने का प्रचार किया जाता रहा।

उनकी विषय में पारंगता के फलस्वरूप वर्तमान में उनके अपने देश में एक हजार से अधिक एवं अमेरिका में दो सौ से अधिक शिष्य हैं। श्री राव भारतीय विद्या भवन नई दिल्ली, में ज्योतिष पाठ्यक्रम के परामर्शदाता है। भारतीय विद्या भवन में ज्योतिष के शिक्षक भी राव साहब की तरह अवैतनिक रूप से शिक्षण कार्य करते हैं। श्री राव को इस कार्य हेतु प्रवृत्त करने का कारण उनकी जन्म कुण्डली से स्पष्ट होता है – जहाँ लग्न और दशवें भाव के स्वामी लग्न में एक हो जाते हैं। उच्च राशिस्थ वृहस्पति दसवें स्थान में स्थित है। यह सब उनके ज्योतिष गुरु, गुजरात के योगी भास्करानन्द, जिन्हें श्री राव अन्तिम ऋषि ज्योतिष मानते हैं, ने पूर्व भाषित कर दिया था। उन्होंने कहा था कि वह (श्री राव) हिन्दु ज्योतिष को सम्मान, मान्यता, एवं प्रतिष्ठा जो इसे अभी तक प्राप्त नहीं है, दिलाने के लिए कई देशों की यात्रा करेंगे। श्री राव की १९९३ में प्रथम अमेरिका यात्रा का वर्णन एक अमेरिकी ने **"वैदिक ज्योतिष राव के पूर्व एवं पश्चात्"** के शीर्षक में किया।

विभिन्न योगियों ने जो ज्योतिष शास्त्र को **"वैदांग"** कहते हैं। श्री राव को इस शास्त्र को नहीं छोड़ने की सलाह दी, जिसका समावेश श्री राव ने अपनी पुस्तक

"योगिज डेस्टिनी एण्ड द व्हील ऑफ टाइम" में किया है।

धनलोलुपता व शोषणात्मक प्रवृति के रूप में ज्योतिष को अपनाने के कारण इसे अच्छी ख्याति प्राप्त नहीं हो पायी है। श्री राव जी के ज्योतिष को एक व्यवसाय न बनाने के निर्णय ने जहाँ उन्हें हजारों प्रशंसको का मित्र बनाया वहीं पेशेवर ज्योतिषियों के रूप में कुछ शत्रु भी मिले। राव की इसी विचारधारा के समर्थक एवं उनके दो सौ से अधिक शिष्यों का दल है जिनके लिये ज्योतिष जीविकोपार्जन का साधन न होकर एक विज्ञान है, जो मनुष्य जीवन के यथार्थ का चित्रण करता है। इस दल की विचारधारा से भी पेशेवर ज्योतिषियों में भय व्याप्त हुआ।

उनके मन्त्र गुरु स्वामी परमानन्द सरस्वती एवं उनके ज्योतिष गुरू भास्करानन्द, दोनों ने उन्हें आध्यात्मिक ज्योतिष के कुछ गुप्त भेद पढ़ाये जो सामान्यतया ज्योतिष की पुस्तकों में नहीं होते। श्री राव ने इस गुप्त भेदों का कुछ वर्णन अपनी पुस्तक *"योगीज डेस्टिनी एण्ड व्हील ऑफ टाइम"* में किया है। श्री राव की नवीनतम मौलिक एवं आधारभूत शोध पुस्तकें हैं - *"प्रिडिक्टिंग थ्रू जैमिनीज चर दशा"* और *"प्रिडिक्टिंग थ्रू कारकांशा एवं मण्डूक दशा"*। उनके लिये यह शोध ग्रन्थ लिखना इस कारण सम्भव हुआ कि उनके ज्योतिष गुरु ने उन्हें बताया कि ज्योतिष परम्परा में पुस्तकों में समाहित ज्ञान का अनुसरण हो रहा है। उनकी प्रथम ज्योतिष गुरू उनकी पूज्य माता जी को इन पारम्परिक गुप्त भेदों का ज्ञान था जिन्हें श्री राव ने अपनी पुस्तकों *"अप्स एण्ड डाउन्स इन कैरियर"*, *"एस्ट्रोलॉजी डेस्टिनी एण्ड द व्हील ऑफ टाइम"* और *"प्लेनेट्स एण्ड चिल्ड्रन"* में व्यक्त किया है।

यह उनके मन्त्र गुरु स्वामी परमानन्द सरस्वती थे जिन्होंने उन्हें ज्योतिष को न त्यागने की सलाह दी थी क्योंकि इसे उन्हें अपनी साधना का एक पूर्णांग बनाना था। कालान्तर में एक महान योगी स्वामी मूर्खानन्द जी ने १९८२ में भविष्यवाणी की, कि उन्हें ज्योतिष शास्त्र के पुनर्जागरण का महान शिल्पी बनना है। यह भविष्यवाणी पूर्ण हुई या नही इसका आँकलन उनके शोध कार्यों से, जो उनकी लेखनी के माध्यम से प्रकाशित हो चुके हैं, से प्रमाणित होता है।

प्रत्येक सप्ताह उनको प्राप्त असंख्य पत्रों में से कुछ यहां दिए जा रहे हैं।

प्रशस्तियाँ

५२२ जोचिम ड्राइव सोनामा सी. ए.
दूरभाष: ७०७९३९-१७८७
फैक्स: ७०७९३९-९४४८ जॉनसन १०८ ए.आ.एल. कॉम
अक्टूबर ३०, १९९६
प्रिय श्री राव,

हाल ही में आपकी सबसे बाद में (हाल ही में) लिखी पुस्तक "ज्योतिष की ऐतिहासिक यात्रा रहस्य और जन्मपत्रियाँ" देवोराह रेस ने मेरे लिए भेजी। मेरे बारे में लिखे हितैसितापूर्ण शब्दों के लिए धन्यवाद। अपनी पुस्तक में आपने लिखा है कि "मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि मैं कितना अच्छा ज्योतिषी हूँ मुझे यह स्पष्ट करना है कि मैं प्रथम स्तर का शिष्य मात्र हूँ। यद्यपि मैं न भी होता तब भी बिना गुरु के और बिना परम्परा के आशीर्वाद के मैं स्वयं को ज्योतिषी कहने का विचार मन में न लाता।

मुझे यह जानकर बहुत दुःख हुआ कि निकट भविष्य में आप संयुक्तराज्य-अमरीका का यात्रा नहीं करेंगे। फिर भी जब मैंने जब आपके द्वारा लिखी जा रही पुस्तकों के शीर्षक (ज्योतिष पुनर्जन्म और परम्परा, दुर्घटना जनित अपमृत्यु) देखा तो मुझे कुछ ऐसा पूर्वज्ञान हुआ कि मैं सचमुच लड़खड़ाने लगा। ऐसी कृतियाँ अपने वजन के सोने जैसी मूल्यवान होती है। मुझे इस बात की शिकायत नहीं करनी चाहिए कि जब आप ऐसी अच्छी योजनाओं पर अपना समय समर्पित कर रहे हैं तब हम आपको जल्दी दुबारा नहीं देख पायेंगे।

सादर,

आपकी लिंडा जॉनसन

मयूर डी. देसाई

बी. कॉम. एल.एल. बी.

एडवोकेट

बी.६ अपोलो अपार्टमेंट पुराने शरदा

मंदिर के सामने, नेताजी रोड, नजदीक लॉ गार्डन

एलिसब्रिज अहमदाबाद-६४४९९५८

दिनांक- १९-११-१९९६

आदरणीय गुरुजी श्री के.एन. राव प्रणाम

ज्योतिष के नौसिखिया छात्र किन्तु व्यवसायी वकील के रूप में मैं इस अवसर का लाभ उठा रहा हूँ।

मैं १९९० से के. पी. के शिक्षणरत और अपने ज्योतिष मित्र श्री सतीश नवाथे से ज्योतिष सीख रहा हूँ। मैं के. पी. से सन्तुष्ट नही था अत: मैंने परम्परागत ज्योतिष सीखना आरंभ कि किन्तु मैं पूर्णत: निराश हुआ क्योंकि इनमें से कोई भी पुस्तक भविष्य कथन की कला में मुझे प्रबुद्ध नहीं कर सकी। मैंने गुजरात में डा. बी.वी. रमन, डा. चन्द्रशेखर ठक्कर की पुस्तकों के पूरे सेट खरीदे तथा सुमीत चुग, जे.एस. भसीन और के.पी. पर हरिहरण की कुछ पुस्तकें भी खरीदी। किन्तु मेरे विचार से ये सब पुस्तकें मूल पुस्तकों के अनुवाद से मेरे पृष्ठों के अतिरिक्त निरर्थक थी।

अपने को शतप्रतिशत सही बताने वाले १०० से अधिक ज्योतिषियें से भी मैंने विचार विमर्श किया किन्तु मेरी दृष्टि में वे सब बुरी तरह असफल रहे। वकील होने के कारण तथा ज्योतिष में रूचि होने से बिना सवाल-जबाब के मैं किसी सत्य को स्वीकार नहीं करता। इन ज्योतिषियों से उनके भविष्य कथन पर मैंने विचार-विमर्श और तर्क किए तो इनमें से कोई भी अपने भविष्यवाणियों के कारणों की व्याख्या नहीं कर सका तब एक अच्छे दिन जब मैं ज्योतिष पर वास्तविक रूप से अच्छी पुस्तकें देख रहा था तब मैंने "योगी प्रारब्ध और काल चक्र" शीर्षक वाली आपकी पुस्तक देखी। इस पुस्तक के कुछ पृष्ठ पढ़ने के बाद मैंने पुस्तक खदीदनें का निश्चय किया और जब मैंने पुरी पुस्तक पढ़ ली तो मैं मंत्रमुग्ध हो गया। इतनी स्पष्टता वाली अन्य पुस्तकें मैंने नहीं पढ़ी थी। गुरु जी तब मैंने मुम्बई के योगी का पता लेने के लिए आप से संपर्क किया। मैं उनसे स्वयं मिला और एक जीवित योगी को देख कर अचंभित रह गया। इस शहर में उपलब्ध ज्योतिष पर आपकी लिखी सभी पुस्तकें मेरे पास है उन्हें बार-बार पढ़ने पर मुझे ये पुस्तकें सर्वोत्तम लगी विचारों की स्पष्टता और चार्टों की व्याख्या की उत्तमरीति में मुझे ये पुस्तकें अद्वितीय प्रतीत हुई। इस व्याख्याओं के किसी भी जन्मपत्री में बड़ी सरलता से प्रयोग किया जा सकता है यहां तक कि मुझ जैसे नौसिखिया ज्योतिषी के लिए भी।

मेरे पास आपकी लिखी "योगी प्रारब्ध और कालचक्र, २. ज्योतिष प्रारब्ध और

कालचक्र, ३. जीवन में उतार-चढाव, ४. जैमिनी की चर दशा, ५. योगिनी दशा, ६. ग्रह और जातक, ७. भविष्य कथन की प्रोन्नत कला, ८. मुहूर्त, ९. ग्रह और विदेश यात्रा, १०. तिरछे अक्षरों में लिखी (पुस्तक सं. ६, ९ तथा अन्तिम पुस्तक)" पुस्तकों का सम्पादन मैंने किया है। अब तक किसी ज्योतिषी या लेखक के द्वारा न बताई गई जिस वास्तविक तकनीकी को ज्योतिष की सेवा के लिए प्रयोग कर रहे है उसके लिए मुझे आपको हार्दिक धन्यवाद देने का अवसर मिला है और अब मैं यह बात गर्व से कह सकता हूँ कि मैंने वास्तविक "ज्योतिष गुरु" पा लिया है और मैं गंभीरता से विधि ावत ज्योतिष विज्ञान को सीखना चाहता हूँ। यदि ज्योतिष को पत्राचार पाठ्यक्रमों के रूप में पढ़ने की सुविधा भारतीय विद्या भवन प्रदान करता है तो मैं बहुत आभारी रहूँगा। गुरुजी, मैं पुनः आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

प्रणाम सहित
(मयूर डी. देव)

आदरणीय श्री राव

मेरा आपसे प्रथम परिचय मेरी एक शिष्या द्वारा दी गई आपकी पुस्तक "*योगी हंस बाबा*" के माध्यम से हुआ। पश्चिमोन्मुख मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि के कारण मैंने अपना ध्यान किसी अलौकिक वस्तु की ओर और विशेषकर योगियों और स्वामियों की ओर नहीं दिया। किन्तु आपकी पुस्तक में दिए गए तथ्यों और प्रमाणों ने इन विषयों पर मेरी अपनी स्थिति (विचारों पर) प्रश्न-चिह्न लगा दिया। तब मेरा परिचय आपकी पुस्तक ("*अश्रुरहित ज्योतिष*" से हुआ जिसमें वैदिक ज्योतिष, इसकी विधियां और तकनीक) को समझने के लिए कई तथ्यात्मक सूचनाएं और वैज्ञानिक विधि दी गई है।

मनोविज्ञान और मनोचिकित्सा में दृढ़ विश्वास के कारण मेरा ज्ञान सीमित था। मनोचिकित्सा विधियों पर विश्वास और व्यावसायिक बुद्धि के कारण मैं समझता था कि हर मनुष्य को स्वयं को बदलने में सहायता दी जा सकती है। अतः मेरी बुद्धि ज्योतिष को विज्ञान मानने को तैयार नहीं थी। तब मैंने आपकी लिखी पुस्तक "*ज्योतिष प्रारब्ध ा और कालचक्र*" पढ़ी जिसमें आपने वैदिक ज्योतिष को व्यक्तिगत जीवन पर प्रमाणित किया है वे इतनी वैज्ञानिक और शोध-परक है कि मेरे मन में ज्योतिष को विज्ञान की तरह विधिवत पढ़ने की चाह उत्पन्न हो गई और मैंने एक छात्र की तरह ज्योतिष पढ़ना आरंभ कर दिया। ज्योतिष नक्षत्र-विद्या या वैदिक साहित्य की थोड़ी सी भी पृष्ठभूमि न जानने और एक दम नई विद्या होने से मेरे लिए ज्योतिष विषय को समझना और ग्रहण करना कठिन था। आपकी शोधपरक पुस्तकों "ज्योतिष और कर्म, जीवन में उतार-चढाव *और सर्वाधिक रूप में* ग्रह और जातक" ने ज्योतिष की गहनता

को समझने में मेरी सहायता की। विभिन्न व्यक्तियों के व्यक्तित्व से संबंधित विषयों पर तुलनात्मक विधियों तकनीकों और नियमों पर आपके शोधपरक अध्ययन ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया। अत्यधिक अमूर्त विषय-सामग्री को स्पष्ट रूचिकर और व्यावहारिक रूप में उद्घटित करने की आपकी योजना ने अपने गुणों सिद्धान्तों , तुलनात्मक विधियों, तकनीकों के आधार पर समय की धारा के साथ विज्ञान के रूप में अपनी पहचान बनाने हेतु ज्योतिष का मार्ग प्रशस्त किया। अभी तक ज्योतिषरूपी समुद्र में अपने लिए मार्ग ढूढने वाला मैं मात्र एक छात्र हूँ लेकिन जो अल्प प्रकाश और समझ मैं पा सका हूँ उसका श्रेय ज्योतिष पर व्यावहारिकशोधपरक, प्रामाणिक और तुलनात्मक रूप में आपके लेखों और पुस्तकों को है। आपकी पुस्तकों से परिचित होने से मैं स्वयं को सौभाग्यशाली समझता हूँ और जिसके बिना मैं कभी भी ज्योतिष का छात्र नहीं हो सकता था। धन्यवाद तथा आदर सहित आपका शुभ चिंतक

विमला वीर राघवन
मनोविज्ञान प्रोफेसर
प्रयोगात्क मनोविज्ञान विभाग
दिल्ली विश्व विद्यालय-साउथ कैंपस

सेक्रेड इमेजिज पब्लिशिंग
पो. आ. बाक्स १२६७
शावनी मिशन, के. एस. ६६२२२
जैनिफर क्लेटन, ४२०५५ केन्यरन साइड सी.टी.
अग्वाना, सी.ए. ९२५३६, यू. एस. ए.
(प्राप्ति तिथि - २५ फरवरी १९९७)
श्रीमान् राव

आपको ज्योतिष गुरु पाने का सौभाग्य पाने वालों में मैं एक हूँ। यद्यपि शारीरिक-रूप में आप यहां नहीं है फिर भी आपके टेप सुनकर और पुस्तकें पढ़कर सीख रही हूँ। मैं आपकी वापसी की प्रतीक्षा में हूँ। मैं मार्क बोनी के साथ पढ़ती हू जो के. एन. राव के फार्मा का अनुसरण करती है। उसने आपकी नवीनतम पुस्तक "दिव्यता, ज्योतिष और इतिहास में डुबकियां" पुस्तक मुझे दी है जो कि आपने उदार पूर्वक उसके शिष्यों को दी जो कि आपकी अन्य पुस्तकों के समान दिव्य है।

नमस्कार
जैनिफर

के.एन. राव की कृतियां

१. अप्स एण्ड डाउन्स इन कैरियर्स (१९९३, १९९५)
२. एस्ट्रोलौजी, डेस्टिनी एण्ड व्हील ऑफ टाइम (१९९३, १९९५)
३. प्लैनेट्स एण्ड चिल्ड्रन (१९९३, १९९५)
४. द नेहरू डायनेस्टी (१९९३, १९९५)
५. ज्योतिष प्रारब्ध तथा काल-चक्र (हिन्दी १९९४)
६. लर्न वैदिक एस्ट्रोलौजी विदाउट टियर्स (१९९५) अब पुनर्लिखित और विस्तृत नये नाम के साथ **"लर्न हिन्दू एस्ट्रोलौजी इजिली"**
७. प्रिडिक्टिंग थ्रू जैमिनी चर दशा - *एक मौलिक शोध*
८. टाइमिंग ईवैन्टस थ्रू विंशोत्तरी दशा - *एक मौलिक शोध*
९. एस्ट्रोलौजी एण्ड कर्मा - *एक मौलिक शोध*
१०. प्रिडिक्टिंग थ्रू कारकांश एण्ड जैमिनीज मंडूक दशा - *एक मौलिक शोध*
११. एस्ट्रोलौजिकल जर्नी थ्रू हिस्ट्री, मिस्ट्री एण्ड होरोस्कोपस
१२. योगीज डेस्टिनी एण्ड व्हील ऑफ टाइम *(संशोधित एवं विस्तृत)*
१३. डिवाइन लव एण्ड मिराकल्स ऑफ योगी हंस बाबा (१९९४)
१४. डिप्स इन्टू डिवाइनिटी एस्ट्रोलौजी एण्ड हिस्ट्री (१९९६)
१५. सक्सैसफुल प्रिडिक्टिव टेकनीक्स ऑफ हिन्दू एस्ट्रोलौजी (१९९६)
१६. मंडल रिपोर्ट ऐक्सरेड (अज्योतिषी पुस्तक, संग्रह से बाहर)
१७. चन्द्रशेखर द सर्वाइवर (संग्रह से बाहर)
१८. एनिग्माज इन एस्ट्रोलोजी (१९९९)
१९. हिन्दू ज्योतिष का सरल अध्ययन (१९९९)
२०. विंशोत्तरी दशा से भविष्यवाणी करना (हिन्दी) (1998)
२१. जैमिनी चर दशा से भविष्यवाणी (हिन्दी) (1998)
२२. हिन्दू ज्योतिष में **कर्म और पुनर्जन्म** (हिन्दी) (1999)
२३. ट्रायड़ टेकनीक्स ऑफ प्रिडिक्सन्स (1999)

निर्देशन एवं सम्पादक

२४. एडवान्स टेकनीक्स ऑफ एस्ट्रोलौजिकल प्रिडिक्सन्स
२५. द मिस्ट्री ऑफ राहु इन ए होरोस्कोप द्वारा शिवराज शर्मा
२६. प्लैनेट्स एण्ड फेरिन ट्रेवेल द्वारा एम०एस० मेहता
२७. मुहूर्ता ट्रेडिस्नल एण्ड माडर्न द्वारा के०के० जोशी

गाइड और संपादक

ज्योतिष पत्रिका

गहन ज्योतिष को समर्पित एक मात्र ज्योतिषीय पत्रिका।

के.एन. राव की पुस्तकें निम्नलिखित स्थानों पर उपलब्ध है-

१. मैसर्स अलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड
पो. बा. नं. ९९३२, जयदेव हॉस्टल बिल्डिंग,
फोर्थ मेंन रोड, गाँधी नगर
बंगलौर - ५६०००९

२. मैसर्स ईस्ट-वेस्ट (मद्रास) प्रा. लिमिटेड
२३९ प्रथम तल डी. एम. एम. बिल्डिंग
बुल टेंपल रोड कामराजपेढ,
बंगलौर- ५६०००९

३. मैसर्स यू.बी.एस. पब्लिशर्स डिस्ट्रिब्यूटर्स लिमिटेड
१०, फर्स्ट मेन रोड, गाँधी नगर,
बंगलौर- ५६०००९

४. मैसर्स यू.बी.एस. पब्लिशर्स डिस्ट्रिब्यूटर्स लिमिटेड
अपीजे चैम्बर्स वैलेस स्ट्रीट
मुम्बई- ४००००४

५. मैसर्स स्टुडेंट्स एजेंसीज,
स्वदेशी मिल्स एस्टेट गिरगाँव
मुम्बई- ७०००१६

६. मैसर्स यू.बी.एस. पब्लिशर्स डिस्ट्रिब्यूटर्स लिमिटेड
८/१-बी. चौरंगी लेन
कलकत्ता- ७०००१६

७. मैसर्स बुक सलेक्शन सेंटर
आर्यसमाज रोड के सामने
प्रथम तल सुल्तान बाजार,
हैदराबाद - ५००१९५

८. मैसर्स ईस्ट-वेस्ट (मद्रास) प्रा. लिमिटेड,
३-५-११०८
मारूति कम्पलेक्स द्वितीस तल नारायण गुडा,
हैदराबाद- ५०००२९

९. मैसर्स ईस्ट-वेस्ट (मद्रास) प्रा. लिमिटेड
६२-ए, ओरमेस रोड कालिपॅक,
मद्रास- ६०००१०

१०. मैसर्स इंडिया बुक हाउस
वेल्फसिंगटन एस्टेट (प्रथम तल)
२४, कमांडर-इन-चीफ रोड
मद्रास- ६००१०५

११. मैसर्स यू.बी.एस. पब्लिशर्स डिस्ट्रिब्यूटर्स लिमिटेड
६, शिवगंगा रोड ननगम्बक्कम्,
मद्रास- ६०००३४

१२. मैसर्स अलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड
माउंट रोड मद्रास- ६००००२

१३. मैसर्स इंडिया बुक हाउस
शिव प्रकाश समा बिल्डिंग
एम. जी. रोड, त्रिवेन्द्रम्- ६९५००१

इन स्थनों पर भी उपलब्ध हैं -

आशुराव
एफ. २९१ सरस्वती कुंज
पटपड़ गंज विस्तार, दिलली - ११००९२

के. सुदेव राव
३ विवेकानंद मार्ग, वंदरिया बाग
लखनऊ (यू. पी.) २२६००१

शिशिर राजगोपालन
बी-१० सैनिकपुरी, सिकंदराबाद

करीन सिंह
१६ 'बी' पीस हैवन
मेंट एड्यूज रोड
मुम्बई ४०००५०

प्रस्तावना

ज्योतिष पर इस पुस्तक को लिखने की आवश्यकता इसलिए हुई कि ज्योतिष की कक्षाओं के विभिन्न बैचों को सामान्य-ज्योतिष के लेक्चरों में मैं, *"ज्योतिष और कर्म"* के कई क्षेत्रों के बारे में मैं बता चुका था। उनमें से कई लेक्चर टेप-रिकार्ड किए गये थे परन्तु उनमें से कोई टेप मेरे पास नहीं है। उन विचारों को एक साथ संग्रहीत करना और क्रम से रखना भी आवश्यक हो गया था, क्योंकि छात्र ऐसी पुस्तक चाहते हैं जिसे वे भलीभाँति समझ सकें।

मैं इसे इतनी जल्दी नहीं लिखना चाहता था, फिर भी इसे स्थगित करना बुद्धिमानी नहीं होती। मेरे ज्योतिष गुरु श्री भास्करानन्द जी ने ज्योतिष के सामान्य विचारों पर चार लम्बे अध्याय लिखे जिसमें उनके, आध्यात्मिक और ज्योतिषीय-ज्ञान का सार भरा था। मैंने उन्हें खोजने की बहुत कोशिश की परन्तु असफल रहा। मुझे श्री पीयूस भारतीय से जिनके निवास (जोरबाग-दिल्ली में वे ठहरा करते थे) ज्ञात हुआ कि उनकी मृत्यु के कुछ सप्ताहों के अन्दर अहमदाबाद के निकट स्थित उनका छोटा-सा आश्रम और उनकी हस्तलिखित सभी पुस्तकें (पाण्डु लिपि) बिक चुकी थीं। यह कलियुग का लक्षण था जिसमें शिष्य उस गुरु को ठगते हैं, जिनके वे ऋणि होते हैं और जिनके साथ रहते हुए कई प्रकार से लोग स्वार्थपूर्ति करते हैं।

ज्योतिष की भारतीय पद्धति पर इन विषयों पर इतनी गहराई और समझ से जैसे मेरे ज्योतिष गुरु ने लिखा ऐसे दूसरे ज्योतिषी की मुझे जानकारी नहीं है। इसका कारण मैं स्पष्ट रूप से जानता हूँ। अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए भारत के अन्य प्रख्यात ज्योतिषियों से बिल्कुल अलग रहकर मेरे ज्योतिष गुरू ने ज्योतिष का

अभ्यास (प्रयोग) ऋषि परम्परा से किया। व्यवसाय के रूप में ज्योतिष चुनने पर उनकी दिव्यता समाप्त हो जाती है और इसका महत्व कम हो जाता है। भविष्य कथन और जन्मपत्रियों को देखकर होने वाली आमदनी से आजीविका चलाने वाला ज्योतिषी उस व्यक्ति के ही समान है जो जूते बेंचकर होने वाली आमदनी से अपने परिवार का खर्चा चलाता है। ज्योतिष से धन कमाने वाले ज्योतिष की आध्यात्मिक गहराई में नहीं जा सकते जैसे मेरे योगी ज्योतिष गुरु गए।

पश्चिमी देशों विशेषकर संयुक्त-राज्य-अमरीका में जहाँ की १९९७ में छ: सप्ताह तक की गई पांच यात्राओं में मैं अमरीकन परिवारों के साथ रहा और हजारों अमरीकनों से मुलाकात की, उसमें से कई आध्यात्म से अच्छे अभ्यासकर्ता थे और साधना को कार्य समझते थे। यद्यपि वे भौतिकवादी सामाज में रहते थे।

उनमें से कई लोग बार-बार भारत की यात्रा करते हैं। योगियों सन्तों से मिलने के लिये यात्राओं पर जाते हैं और आध्यात्म प्रेमियों से मिलने के साथ-साथ अधिक व्यावसायिक संपर्क बनाते हैं। अमरीकनों का आध्यात्म के प्रति विचित्र लगाव है। हिन्दु शब्द में निहित विशेषताओं को बताने वाले हिन्दू ज्योतिष में यह समुदाय रूचि रखता है हिन्दू ज्योतिष को ये वैदिक ज्योतिष मानते हैं। परन्तु वैदिक ज्योतिष भविष्य कथन के लिए ठीक नहीं है। कभी-कभी मैंने भी भूल से अमरीकनों की यह सोच (विचारधारा) स्वीकार की। वैदिक ज्योतिष भारतीय ज्योतिषीय परम्परा में अपरिपक्व समझ की उपज है परन्तु बाजार में इसकी अच्छी मांग है। संयुक्तराज्य अमरीका के कुछ वैदिक ज्योतिषियों के माध्यम से मैं भारतीय साधना में रूचि रखने वाले कई लोगों से मिला। उनमें से कुछ श्रेष्ठ मानव है।

न तो धन कमाने वाले व्यावसायी भारतीय ज्योतिषी और न संयुक्तराज्य अमरीका के वैदिक ज्योतिषी ही यह समझ सके कि ज्योतिष आध्यात्मिक अनुशासन के लिए है। यह गहन ध्यान के लिए एकग्रता या धारणा को बढ़ाने की सर्वोत्तम विधि है।

उनसे इस विषय पर तर्क करना असफल प्रयास है कि वे धन कमाने के उद्देश्य से ज्योतिष अपनाना कर्म-जाल में अधिक फसने के समान है क्योंकि आध्यात्मिक रूप से प्रबद्ध नहीं होते।

अमरीकनों के विचार का एक भाग बड़ा भ्रामक है कि कोई भी व्यक्ति बिना किसी वर्जना या बाधा के उच्चकोटि का आध्यात्मिक व्यक्ति भी बन सकता है और इच्छानुसार कामवासना की पूर्ति भी कर समता है। वे इस तथ्य को नहीं जानते कि जिसे वे शुद्ध आध्यात्म समझते हैं वह विकर्म मिश्रित आध्यात्मिक जीवन है। अमरीका के एक धार्मिक स्थान में एक अमरीकन महिला का ज्योतिषीय अध्ययन कर रहा था। मेरे पूछे जाने पर उसने स्वीकार किया कि उसका विषयजन्य (*Sexual-life*) जीवन

असाधारण है। उसने मुझसे कुछ पूछा और उसके प्रश्नों में उत्तम आध्यात्मिक जीवन बिताने के लिए अनुरोध किया। एक दूसरे स्थान पर अपनी पत्नी को सताने वाले और उसकी उपेक्षा करने वाले समलैंगिक भावना वाले व्यक्ति ने मुझे बताया कि वह कुण्डलिनी शक्ति से महान आध्यात्मिक अनुभवों पर एक पुस्तक लिखेगा, जिस कुण्डलिनी शक्ति को विश्व में केवल वही जानता है। ऐसी संस्कृति में आध्यात्मिकता भी विक्रय की वस्तु बन जाती है, बल्कि बन चुकी है। व्यापार में अमरीकी निवासी विश्व में अग्रणी है।

आध्यात्मिक जीवन में अधिक रूचि रखने वाले अधिकांश लोगों को मैंने आध यात्मिक जीवन के एक मात्र आधार-भूत इस तथ्य के महत्व से अनभिज्ञ पाया है कि कर्म ही अकर्म की ओर ले जाता है। केवल एशियावासी ही आध्यात्म और निर्धनता के समन्वय की परम्परा को जानते और अपनाते है।

मात्र धर्म ही मानव के उत्थान की साम्य-शक्तियां है। विग्रह (विवाद) के श्रोत भी धर्म ही रहे है, उत्तम और उन्नतिकारक आध्यात्मिक सभी साधनाएं एशिया से जन्मी-फैली है। स्वेज नहर के पूर्व से ही सभी सभ्य प्रभाव विश्व में फैले है। मैंने कई अमरीकनों को यह कहते और चर्चा करते सुना है कि हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म जैसे भारतीय धर्मों द्वारा प्रदत्त साधना ने ही उन्हें आकर्षित किया है।

जिस विकर्म को कुछ अमरीकन भूल से आध्यात्मिक जीवन समझ बैठे है उस विकर्म को ज्योतिषी भली-भाँति देखता और समझता है। कुछ कम आयु के लोग, विशेषकर जिन युवको से मैं मिला उन्होंने साधना के लिए पवित्र-ब्रह्मचर्य जीवन के महत्व पर चर्चा अवश्य की परन्तु वे बड़ी तेजी से संबंधों में फंस गये।

भौतिकवादी संस्कृति को दंभ है कि मनुष्य अपना प्रारब्ध स्वयं बनाता है ऐसा इसलिए है कि संयुक्तराज्य-अमरीका में जो एक दो वैदिक ज्योतिषी है और जो घटनाओं के बारे में भविष्यकथन कर सकते हैं, वे भी प्रारब्ध संबंधी भविष्यकथन नहीं करना चाहेगें, क्योंकि उन्होंने ज्योतिष का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं किया है, और केवल अनुमान से दो चार अनर्गल वाक्य कह लेते हैं। ज्योतिष की अपेक्षा वे अन्य पश्चिमी ज्योतिषियों की भाँति मनोवैज्ञानिक लेखों पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। इसका कारण यह भी हो सकता है कि वे जानते है कि उनके भविष्यकथन पर उनके देशवासी विश्वास नहीं करेगें फिर भी देर-सवेर उन्हें भविष्यकथन पक्ष पर ध्यान केन्द्रित करना पड़ेगा।

एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र से घृणा करना या एक राष्ट्र का स्वयं को दूसरे राष्ट्र से श्रेष्ठ समझना अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में नई बात नहीं है। संयुक्तराज्य-अमरीका जैसे सुपर पावर का मद (दुराग्रह) अमरीकनों के अनाध्यात्मिक रवैये में झलकता है जिसे कोई ज्योतिषी छिपाना नही चाहता। रुपये-पैसे के मामले में बेईमानी और हर अतिथि से धन लेने की आदत के साथ-साथ इस समाज को

अमाननीय रवैये ने पश्चिमी देशों को और विशेषकर संयुक्तराज्य अमरीका को पूर्णरूप से अनाध्यात्मिक बना दिया है। किन्तु आध्यात्मिक संस्कृति वाले भारत पर निश्चित रूप से आक्षेप लगाया जायेगा, अगर वह पश्चिमी देशों की तरह भ्रष्टाचार अपनाता है। इस सच्चाई को हम-सब जानते हैं लेकिन अमरीका को इस विषय (तरीके) को संरक्षण देने की आवश्यकता नहीं है। अमरीकनों को आध्यात्मिक-जीवन के इस निचले स्तर को सुधारने के लिए कुछ कदम उठाने होंगे।

अन्य एशियाई देशों की तरह भारत में भौतिकवादी लक्षण गहराई से पनप रहे है। भारतीयों की रिश्वत लेने की आदत इसका एक भाग है जिसकी एक बार एक मीटिंग में एक अमरीकी ने तीव्र रूप से भर्त्सना की। यद्यपि उनकी तुलना में यह दोष क्षम्य था। मैंने अमरीकी के साथ तर्क करना कठिन और अनावश्यक समझा।

इसलिए मैंने एक घटना का वर्णन किया। वाशिंगटन डी.सी. में मुझे एक बेरोजगार अमरीकी को सलाह (दिशानिर्देष) देने के लिए कहा गया। मैंने बिना कोई फीस लिए पूरे दो घंटे उसकी रीडिंग में समय दिया। तब मैंने उसे ८० डॉलर की पुस्तक भेंट की। मैंने उससे किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की जन्मपत्री लाने के लिए कहा, उसने अपने एक ज्योतिषी मित्र से ऐसी जन्मपत्री लाने का आग्रह किया। अगले दिन वह जन्मपत्री ले आया और मुझसे दस डालर लिये पांच जन्मपत्री के और पांच आने जाने के किराये के लिए। मुझे उसके इस व्यवहार पर आश्चर्य हुआ, कि दो घंटे बिना कोई पैसे लिये रीडिंग करने और बिना पैसे लिये किताबें देने पर भी उसने मुझसे दस डालर लिए। यह संयुक्तराज्य-अमरीका की आक्रामक भौतिकवादी संस्कृति है। उसके बाद मुझे इसी प्रकार के एक सौ व्यक्तियों के अनुभव हुए जो स्वयं को मात्र आध्यात्मिक ही नहीं बल्कि पूर्ण रूप से आध्यात्मिक मानने का स्वांग रचाते थे।

मुझे बता देना चहिए कि जो अमरीका रिश्वत लेने की आदत पर भारतीयों की आलोचना कर रहे थे वे स्वयं भी अच्छे नहीं थे। वे डालर लूटने जैसे जघन्य काम में संलग्न रहते थे। यह रिश्वत लेने से भी बुरा काम था। आध्यात्मिकता के मार्ग में डालर लूटने का काम सबसे बड़ी बाधा थी। जहाँ भारतीय अतिथि द्वारा किसी वस्तु का मूल्य दिये जाने पर अपमानित अनुभव करते है वहाँ अमरीकन अपने साथ ठहरने वाले अतिथि से उसे दी जाने वाली हर वस्तु का मूल्य वसूल करते हैं।

डालर लूटने की आक्रामक आदत के बावजूद अमरीकन बिना संकोच के मुक्ति के बारे में प्रश्न पूछते हैं। भारतीय जानते है कि आध्यात्मिक उन्नति के लिए धन के प्रति उदासीनता होना अच्छी बात है या संचित धन को उदारतापूर्वक दान करना अच्छा होता है। मैंने देखा कि अमरीका में चंदे या दान के लिए किये जाने वाले अभ्यागत व्यवसाय का अंग है। यदि ईश्वर कीमत देकर मिल जाता तो अमरीका उसे बहुत जल्दी ही प्राप्त कर लेता।

इन सबके बावजूद अमरीका में *"**सेक्स-डालर और ईश्वर-छाप आध्यात्मिकता**"* की बहुत चाह है किन्तु पाखण्डी के रूप में व्यवहार करने वाले भारतवासी किस रूप में बेहतर हैं? इसके बावजूद भारत में महान योगी हैं और होते रहेंगे। भारतीय आध्यात्मिक परम्परा भ्रष्टाचार के मरुस्थल में पाये जाने वाले विस्तृत मरुद्यान हैं। कुछ अमरीकन इस बात को समझते हैं और हमारे सार्वजनिक जीवन की कमियों पर ध्यान न देते हुए तहे दिल से भारत में रूचि लेते हैं। भारतीय ज्योतिष परम्परा में उनकी रुचि के कारण ही मेरा मन अमरीका जाने को हुआ किन्तु अब वहाँ जाने की इच्छा नहीं होती क्योंकि वहाँ ज्योतिष की जानकारी प्रारम्भिक है।

अमरीका के कुछ वास्तविक जिज्ञासु आने वाले शताब्दियों में जानेगें कि आध्यात्मिक जीवन भौतिकवाद से पीछे हटने की प्रक्रिया है। इस तथ्य को गीता के द्वितीय अध्याय के ६९वें श्लोक में भली-भाँति समझाया गया है।

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुने।।

संक्षेप में इसका अर्थ है कि आध्यात्मिक जिज्ञासु का जीवन उन मूल्यों से दूर होना है जिन्हें एक भौतिकवादी संजोता है। इस श्लोक का शबदश: अर्थ है:
जो सामान्य जनों के लिए रात्रि है। अधिसंख्यक लोग जीवन के उच्च उद्देश्य से परिचित नहीं है जो सर्वश्रेष्ट है वे जीवन का मर्म गहराई से नहीं जानते और जीवन के वास्तविक उद्देश्यों पर प्रश्न-चिन्ह लगाते हैं जैसे कि मानव जीवन का अर्थ और उद्देश्य क्या है? उनके लिए जीवन, आहार, निद्रा और मैथुन मात्र है।

"संयमी जीवन की समयावधि में जागत रहना है, योगी इन माया-जालों में नहीं फसता, अधिसंख्यक मनुष्य के लिए जो दिन का प्रकाश है"

अर्थात् विश्व के अधिसंख्यक मनुष्यों के लिए और भी मानव समुदायों में डालर कमाना (धन कमाना), सांसारिक सुखभोग, यौन-तृप्ति ही जीवन का आनन्द है और दिन का प्रकाश है।

"संयमी के लिए यह रात्रि है"। ज्योतिष का उद्देश्य एक ज्योतिषी को इस योगिक-प्रक्रिया में लौटाना है। भाग्य, दुर्बोध और अगम्य है। आध्यात्मिक व्यक्ति इसे प्रसन्नतापूर्वक भोगता है।

कर्म क्या है?

क्या मनुष्य पूर्ण-रूप से अपना प्रारब्ध बना सकता है?

क्या मनुष्य पूर्ण-रूप से अपना भाग्य बना सकता है, या इसे एक सीमा तक बना सकता है, और पूर्व प्रारब्ध को भी भोग सकता है? इस विचार पर पश्चिमी जगत के लोग पूर्ण-रूपेण भ्रमित हैं। पश्चिमी जगत के कुछ विचारकों ने यहां के कुछ लोगों के मस्तिष्क में संदेह जैसा संक्रामक रोग पैदा कर दिया है। वे क्लोनिंग में सफल हो चुके हैं। जब क्लोन एक दम समान रूप से व्यवहार करते हैं तो इससे सिद्ध होता है कि कर्मों का पूर्ण निर्धारित रूप, प्रतिक्रिया, टेस्ट, पसंद और नापसंद होते हैं। ऋषियों की अपेक्षा क्लोंस पश्चिमी वासियों को कुछ बुद्धि दे सकते हैं।

मैंने अपने से मिलने वाले विदेशियों के लिए कुछ अग्रिम विश्लेषण (पाठ) अपनी पुस्तकों में पर्याप्त प्रमाण के तौर पर दिए हुए हैं। मैंने हमेशा यह काम आधे घंटे में निपटाया है। मैं उन्हें पाठ में अपनी टिप्पणी देने के लिए कहता था। यदि साठ प्रतिशत टिप्पणी भी सही होती थी तो यह सिद्ध हो जाता था कि पूर्व निर्धारित बातें उनके जीवन में घट चुकी हैं। अगर हम सबके जीवन में पूर्वनिर्धारित तत्व है तो क्या वास्तव में हम अपना भाग्य बना सकते हैं या इसे ईश्वर द्वारा हमारे लिए पहले ही निश्चित किया जा चुका है।

यहाँ पर एक यूरोपीयन की घटना है जो मेरे पास आया था। उसने कहा की उसकी पहचान बताये बिना मैं अपनी पुस्तक में उपयोग कर सकता हूँ, मेरी नोट-बुक, शीतल, दिल्ली बर्लिना के ३५वें पेज पर लिखा है। आपके दिल्ली पहुँचने पर पिछली रात को (अगस्त १७, १९९५) जो जन्मपत्री आपने पहुँचाई उसका मैं यहां उपयोग कर

रहा हूँ। संक्षेप में जन्म से लेकर अब तक आपके जीवन की कहानी बीमारी, खेलों, संपदा, तकनीकी शिक्षा से होते हुए आध्यात्मिकता तक की यात्रा है।

कृपया निम्नलिखित पर अपने विचार लिखिए -

१. क्या १९६४ से १९६६ के मध्य आपका परिवार विषम परिस्थितियों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकता रहा है?

उत्तर- हाँ, हड्डी टूटने के कारण।

२. संगीत जैसे विषय में रुचि के कारण उन्नति हेतु १९६६ और १९६८ के मध्य पुनः परिवर्तन हुआ, हालांकि उस समय तुम छोटे से बच्चे थे?

उत्तर- माँ और चाचा पियानों बजाते थे।

३. १९६८ से आगे वाली दशाब्दी में जब तुम लगातार बीमार चलते रहे, तब परिवारिक संमृद्धि होती दिखाई दी और तुम्हारे पिता ने समुद्र नदी के किनारे कुछ संपति से मकान बनाना शुरू किया?

उत्तर- हर समय हांसिल्य की तकलीफ और ऊँचा बुखार रहता था।

४. १९७१ के आस-पास थोड़े समय के लिए विदेश यात्रा हुई होगी, खेलों में और विशेषकर पानी के खेलों में रुचि बनी होगी?

उत्तर- हर वर्ष एक या दो बार इटली जाते थे।

५. १९७२-७३ का समय तुम्हारे माता-पिता के लिए कठिनाई का रहा होगा माँ बीमार चल रही होगी और पिता धनवान?
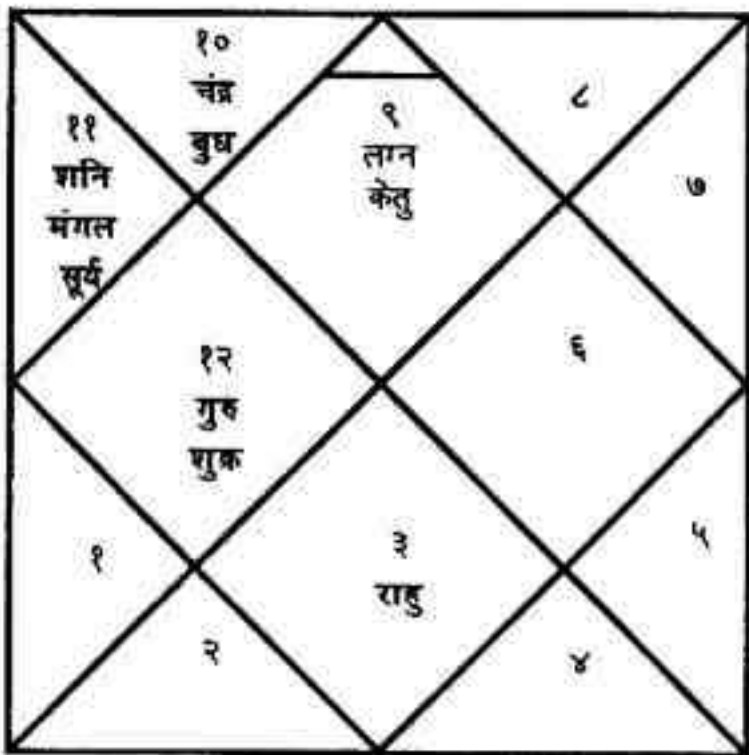
गुरु शुक्र			राहु
शनि मंगल सूर्य	१३ फरवरी १९६४ ०५:५० सी. ई. टी. बर्लिन		
चंद्र बुध			
लग्न केतु			

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
२०° ३१"	००° १०"	२६° ०२"	०१° ०१"	०९° ५९"
गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
२३° ३५"	०९° २६"	०१° ५९"	१७° ०८"	१७° ०८"

उत्तर- मां गंभीर रूप से बीमार हुई थी।

६. १९७३-७४ और १९७४-७५ में तुम्हारे जीवन में क्या विशेष घटना घटी?

उत्तर- १९७४ में प्रारम्भिक स्कूली शिक्षा पूरी की और हाईस्कूल शिक्षा आरम्भ हुई।

७. १९७५-७६ तुम्हारी शिक्षा में कुछ उन्नति हेतु परिवर्तन हुआ होगा?

उत्तर- मुझे याद नहीं।

८. १९७८-७९ से परिवार का भाग्य बनना सुधरना शुरू हुआ, इसके बाद समृद्धि आई। खुद की आमदनी शेयर से स्टॉक से या छात्रवृत्ति से शुरू हुई?

उत्तर- पिता अपने व्यवसाय में निरन्तर सफल होते चले गये। माँ से पैसे मिले।

९. १९८० और १९८९ के मध्य तुम्हारा जीवन अप्रसन्नता या संबंधों के कारण आध्यात्मिकता, समृद्धि, भावनात्मक उथल-पुथल के मध्य गुजरा?

उत्तर- (१) हाँ आध्यात्मिकता आदि। (२) संबंधों के कारण मुर्ख माना गया।

१०. लगभग १८ वर्ष (१९८२) की आयु में दूसरे देशों के धर्मों के प्रति रुचि हुई और उनका ज्ञान हुआ और उसके बाद सम्भवत: कुछ आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हुआ या आध्यात्मिक विभूतियों के प्रति आकर्षित हुए होगें?

उत्तर- हां, परमहंस योगानन्द के शिष्य राय यूजन डेविस ने योग की दीक्षा दी।

११. तुम्हारी शिक्षा की दिशा विशिष्ट रूप में तकनीकी लगती है?

उत्तर- वायुयान संबंधी काम सीखा।

१२. सम्भवत: तुम्हारे पिताजी को मकैनिकल तकनीकी की और सेना से जुड़े काम करने पड़े होगें, और उन्हें परिवार की सुख-समृद्धि बढ़ाने के लिए परिश्रम करना पड़ा होगा?

उत्तर- संगमरमर बेचने से परिवार को सुखी-समृद्ध बनाया।

१३. तुम्हारी जन्मपत्री कुछ भीषण घटनाएं जैसे आकाशी-बिजली से बच जाना बताती है?

उत्तर- हड्डियां टूटने और कई दुर्घटनाओं से बच जाना।

१४. १९८९ के बाद तुम्हारे मन में विवाह का विचार बना?

उत्तर- १९८८ को विवाह हुआ।

१५. १९८१ और दुबारा १९८४ में किसी महिला से घनिष्टता के अवसर निराशाजनक सिद्ध हुए होंगे?

उत्तर- औरतों के इर्द-गिर्द घूमने से बेवकूफ बना औरत अहंकारी (झूठी) थी, उसने मुझे ठगा।

१६. १९८९ के बाद, आप किसी कान्तिमयी, लम्बी, सुन्दर स्त्री से मिले होंगे जो सम्भवत: तुम्हारी पत्नी बनी होगी?

उत्तर- १९८८ में विवाह हुआ।

१७. कुछ ज्योतिषीय बाधाओं के बावजूद तुम्हारी एक सन्तान संभवत: लड़का हो सकता है परन्तु इसकी पुष्टि के लिए तुम्हारी पत्नी की जन्मपत्री देखनी होगी?

उत्तर- पहली सन्तान एक पुत्र जिसका जन्म ३१/५/१९८८ में हुआ दूसरी सन्तान एक कन्या, जिसका जन्म ४/७/१९९० में हुआ।

१९. तुम्हारे माता-पिता का वैवाहिक जीवन आदर्श नहीं लगता?

उत्तर- उनमें तलाक (विवाह-विच्छेद) हो गया था।

२०. १९९३-९४ में किसी महान आध्यात्मिक विभूति से मिलने का प्रबल आकर्षण था। अब तुम्हारी भारत यात्रा का उससे कुछ सम्बन्ध हो सकता है।

उत्तर- सत्य श्री साई-बाबा और महर्षि रमण।

२१. तुम्हारा आध्यात्मिक जीवन ग्यारह वर्ष के बाद संभवत: २००६ के बाद अधिक सम्पन्न होगा?

अधिकतर उत्तर सही

जिस व्यक्ति को मैंने कभी नहीं देखा हो उसके बारे में साठ प्रतिशत लक्षण (अनुमान) भी सत्य निकलता है तो इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य अपना प्रारब्ध नहीं बनाता यह पहले से ही बना होता है।

मेरी पुस्तक "***योगी, प्रारब्ध और काल चक्र***" में मैंने नागरीदास बाबा की चर्चा की है जो कहा करते थे कि हम जीवन के मंच पर कलाकार हैं जिन्हें नाटक की कहानी को जाने बिना अपनी भूमिका निभानी होती है।

ज्योतिष इसे एक बिन्दु पर सिद्ध करता है केवल एक बिन्दु पर

(एक अंग्रेज महिला) प्रसंग पृष्ठ ५० उटाह/दिल्ली पर, नंबर १९९६, अपनी जन्मपत्री की पुष्टि के लिए कृपया निम्निलिखत का उत्तर दीजिए -

१. तुम चार या पांच सगे भाई-बहन हो सकते हो तुम या तो पहली सन्तान हो या पहली कन्या?

उत्तर- सबसे बडी तब भाई, बहन और भाई।

२. दस वर्ष की आयु के बाद के तीन वर्षों में तुम्हारी पढ़ाई की दिशा ठीक हुई।

उत्तर- हाँ (बिल्कुल-ठीक)।

३. बचपन में होते हुए भी १९६६ में तुम्हारी पढ़ाई की प्रगति अच्छी रही होगी और संभवत: नई भाषा भी सीखी होगी?

उत्तर- कोई भाषा नहीं, परन्तु ११-१२ वर्ष तक अंग्रेजी और लैटिन भाषा का अच्छा ज्ञान।

४. १९६९-७० में कोई परिवर्तन हुआ होगा और १९७५ में विशेष बात?

उत्तर- १९७० में पिताजी की मृत्यु हुई। १९७५ में स्वेच्छा से लंबी यात्रा की।

५. १९७६-८१ के मध्य तुम्हारे जीवन में बहुत परिवर्तन हुए होंगे। परिवार में किसी प्रिय-जन की मृत्यु हुई, तुम्हारा अपना व्यवसाय अच्छी स्थिति में, साहित्य और योग जैसे आध्यात्मिक विषयों के प्रति विशेष रुचि?

उत्तर- व्यवसाय में बहुत परिवर्तन हुए, दुबारा स्कूली शिक्षा। पश्चिमी ज्योतिष और योग में रुचि हुई।

६. इसी समयावधि में विवाह तो नहीं बल्कि विवाह जैसी स्थिति जिसकी जानकारी स्पष्ट हो गई होगी।

उत्तर- हाँ १९७७-८० के मध्य दृढ़ संबंध हुए।

७. १९८१-१९८५ के दौरान में तुम्हें कुछ पैत्रक सम्पति मिली होगी?

उत्तर- हां दादाओं की थोड़ी सी सम्पति मिली।

८. १९८५ के बाद घर बदलते हुए तुम भटके हुए होंगे, विपरीत परिस्थितियों की श्रृंखला में गुजरने से भयानक मानसिक वेदना, जिसके कारण सच्चे आध्यात्मिक उत्तर पाने हेतु उत्सुकता पैदा हुई होगी जिससे लाभ हुआ होगा, संभवत: इस समय तक तुम्हारी आर्थिक-स्थिति बेहतर हुई होगी?

उत्तर- इंग्लैंड छोड़ दिया, संबंध छोड़ दिया, बहमास और कनाडा में शिवारानन्दा अश्रम में प्रवेश लिया।

९. १९८६-८७ के मध्य का समय किसी संबंध में जीवन का मोड़ सिद्ध हुआ होगा। एक प्रकार की बदलाव यात्रा, हलचल की स्थिति बनी होगी?

उत्तर- ऐसी स्थिति १९८५ में आयी और चलती रही।

१०. १९८७-८८ के मध्य एक मुख्य हलचल जीवन में हुई होगी और कार्यशैली में गरिवर्तन आया होगा?

उत्तर- आश्रम छोड़ दिया, वापस आ गई और दूसरा संबंध बना।

११. १९८८ में अच्छी आमदनी के लिए अच्छा अवसर मिला होगा, किसी संबंध में गलतफहमी पैदा हुई थी?

उत्तर- दुबारा स्कूल में प्रवेश, एक रेस्तरां में काम करते हुए कुछ धन भी कमाया।

१२. १९९२ के बाद तुम एक सक्रिय आध्यात्मिक कार्यकर्ता बने होंगे?

उत्तर- छोटे बच्चों के साथ काम करते हुए।

१३. जो विषय तुम पढ़ते थे उनमें पहले विज्ञान फिर कला, साहित्य, इतिहास और अन्त में धर्म।

उत्तर- हां सामाजिक-विज्ञान, मनोविज्ञान और बहुत सी पुस्तकें पढ़ी।

१३. २७ वर्ष की आयु से और कहना चाहिए सन् १९८० में जो आध्यात्मिक मोड़ तुम्हारे जीवन में आया वह तुम्हारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है और तुम इस मार्ग में अच्छा काम कर रही हो?

उत्तर- योग, हठयोग।

१४. या तो तुम्हारी रुचि विवाह करने में नहीं है या लोगों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध करना चाहती हो और तुम्हारे मन में सन्यास् आता है?

उत्तर- संघर्ष कर रही हूँ स्वयं को जर्जर अनुभव करती हूँ।

१५. तुम्हारे आकर्षण की वस्तुएं विदेशी धर्म, धार्मिक-साहित्य है तुम्हारे प्रिय और चाहने वाले मित्रों में से कुछ में आध्यात्मिकता के प्रति उन्माद पैदा हुआ होगा?

उत्तर- हाँ सबमें।

यह दूसरा उदाहरण है कि जीवन का काम और रास्ता पूर्व निर्धारित होता है और ज्योतिष इसे समझने में सहायता देता है।

क्या कोई ज्योतिषी हर बात की भविष्यवाणी कर सकता है?

क्या कोई ज्योतिषी हर बात की भविष्यवाणी कर सकता है? इसका स्पष्ट उत्तर है नहीं। हर मनुष्य के भाग्य में ऐसा अदृश्य भाग होता है जिसे एक योगी ही देख सकता है। ज्योतिषी की अपनी सीमाएं होती है और कभी-कभी तो बहुत ही सीमित।

हर ज्योतिषी को यह तथ्य जान लेना चाहिए और ऐसी शेखी नहीं बखारनी चाहिए कि वह हर बात बता सकता है या उसका भविष्य कथन हमेशा शत-प्रतिशत सत्य होता है, ऐसा कभी नहीं होता।

यह पुस्तक भारतीयों को ध्यान में रखकर लिखी गई है जो भगवद्गीता और अन्य ज्योतिष-ग्रन्थों के ज्ञान का प्रमाण चाहते हैं। संयोगवश यह पुस्तक अमरीकनों को भी लाभान्वित करती है। उनमें से कुछ एक सीमा तक अपनी इस भूल को सुधार सकते हैं तथा इस विचार को मन से निकाल सकते हैं कि उनका रुझान आध्यात्मिक है।

तब कर्म क्या है?

आत्माओं के पुनर्जन्म के विश्वास के अनुसार ज्योतिष और कर्म परस्पर जुड़े हुए हैं। यह मात्र विश्वास नहीं है अपितु हिन्दू-धार्मिक विश्वास है जो कि हमारी अपनी आयु के अनुभव से तथा वर्तमान जीवन में पिछले जन्मों की बातें बताने वाले व्यक्तियों की बातों से पुष्ट होकर और अधिक प्रामाणिक तथा सशक्त होता है।

हाल ही में मैंने कहीं पढ़ा है कि आचार्य विनोबा-भावे ने एक ईसाई मिशनरी को पूछा कि जो बच्चा जन्म लेने के चार सेकंड बाद मर जाता है उसके लिए प्रलय दिन (ईश्वर के दरबार में जीवन में किए गए सद्कर्मों-दुष्कर्मों के सुनने का दिन) का अर्थ क्या है? ऐसे शिशु के अच्छे बुरे कर्मों का दण्ड ईश्वर क्या दे सकता है? कोई उत्तर नहीं मिला। इस शिशु के लिए अन्तिम न्याय का दिन क्या होगा?

मेरे अपने विचार इस विषय में अधिक दृढ़ हैं क्योंकि मैं ऐसे लोगों से मिल चुका हूँ जिनकी पूर्वजन्म की स्मृतियां सर्वविदित हैं और जिन की प्रमाणिकता सिद्ध की जा सकती है और अपने धार्मिक विश्वास के कारण पुनर्जन्म की बात का जहां वहिष्कार करते हैं ऐसी संस्कृति के बुद्धिजीवियों के लिए पुनर्जन्म खोज का विषय है? किसी प्रमाण या अन्य लोगों के अनुभव के आधार पर नहीं अपितु अपनी संतुष्टि और तथ्यों की जानकारी के लिए यह आवश्यक है।

मैंने ज्योतिष और अनुभव पर एक पत्र भी निकाला है। इस संशोधित संस्करण में धार्मिक अध्ययन के रूप में अपपने विस्तृत शोध का एक भाग सम्मिलित कर रहा हूँ।

इस पुस्तक का मुख्य विषय ज्योतिष और कर्म है। एक ज्योतिषी योगी की तरह देख सकता है। इसका अनुभव पाने के लिए किसी को भी ज्योतिष भली-भाँति सीखनी चाहिए। जब कोई भविष्यवाणी सच हो जाती है और जिसके लिए ज्योतिष के अलावा कोई तर्क संगत व्याख्या नहीं है वह भविष्यवाणी कथन किसी को भी जन्मचक्र का यह स्वीकार करने को बाध्य कर देता है, तथा यह भी स्वीकार करवाता है कि कर्म का फल कई जन्मों तक फैलता है और मात्र एक जन्म तक सीमित नहीं रहता।

क्या पुनर्जन्म का कोई प्रमाण है? यह अलग प्रश्न उठता है। पुनर्जन्म विषय पर भारतीय और पाश्चात्य विद्धानों की अनेकों पुस्तकें लिखी गई हैं जो इसकी सत्यता को प्रमाणित करती हैं। फिर भी कुछ धर्म पुनर्जन्म के सिद्धान्त का विरोध करते हैं और हमेशा करते रहेंगे। डॉ. इयान-स्टीवेंशन की पुनर्जन्म पर लिखी पुस्तक-सीरीज के बावजूद दूसरे धर्म के वैज्ञानिक और कट्टरपंथी पुनर्जन्म के सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करते जैसे कि १९७५ में संयुक्तराज्य-अमरीका के कुछ वैज्ञानिकों नें (जिनमें कुछ नोबेल पुरस्कार विजेता भी हैं) वैज्ञानिक खोजों के बजाय अपने धार्मिक विश्वासों के कारण ज्योतिष का विरोध किया। कुछ वैज्ञानिकों ने कभी भी यह अनुभव नहीं किया कि वे तर्क विरूद्ध और कट्टरवादी हैं। वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण रहित वैज्ञानिक है।

असंगति और कट्टरता मानव-जाति की उदारता और बुद्धिमानी की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली लक्षण है। उदाहरणों (दृष्टान्तों) के द्वारा यह प्रयास करना अति-आवश्यक है कि **ज्योतिष और कर्म** तथा **ज्योतिष और पुनर्जन्म** उतना ही प्रत्यक्ष है जितना कि विश्व में कहीं भी आप हरे-भरे पेड़ को देख रहे हैं।

प्रारब्ध क्या है? और इसकी व्याख्या किस प्रकार की गई है? इसको कुछ उदाहरणों से स्पष्ट किया जायेगा।

अनिश्चितता का पाँचवा तत्व
(ज्योतिष और प्रारब्ध के पृष्ठ-२९ से)

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम् ।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम् ।।

(गीता - अध्याय १८ श्लोक १

आधुनिक संदर्भ में बल्कि प्रबंधन की भाषा में किसी योजना के कार्यान्वय में पाँच त होते हैं - पहला - कार्य-योजना, दूसरा - योजनाकार, तीसरा - कर्म करने का साध चौथा - कार्यशैली।

इसका अन्तिम परिणाम है - सफलता या असफलता क्योंकि यह *"प्रारब्ध"* न पाँचवे तत्व पर निर्भर है।

ज्येतिष क्या है?

ज्योतिषामायनं साक्षाद् यत्तज्ज्ञानमतीन्द्रियम् ।
प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम् ।।

(श्रीमद्भागवत पृष्ठ १६२ श्लोक

जो पाँचों ज्ञानेन्द्रियों की पहुँच की पहुंच से बाहर है और भूतकाल के गर्भ में छि हुआ और भविष्य को ज्योतिष के अध्ययन से जाना जा सकता है। आपने वह शा रचा है।

(शुकदेव महर्षि गर्गाचार्य से कहते

प्रारब्ध क्या है?

(वाल्मीकि रामायण से)

यह बात कई स्थानों पर वर्णित है। यहां वाल्मीकि रामायण में हम पाते हैं। राज्याभिषे होने के स्थान पर राम को चौदह वर्षों के लिए वनवास करने को कहा जाता है, राम लक्ष्मण से कहते हैं - यह प्रारब्ध की देन है जिसे बुद्धिमान व्यक्ति को स्वीक करना चाहिए। प्रारब्ध क्या है? और यह कैसे खेल खेलता है? इसकी व्याख्या इन श में की गई है -

कश्च दैवेन सौमित्रे योद्धुमुत्सहते पुमान् ।
यस्य नु ग्रहणं किंचित् कर्मणोऽन्यत्र दृश्यते ।।

अर्थात - जब हमें सुख या दुःख के रूप में अपने कर्मों का फल मिलता है त हमें प्रारब्ध का ज्ञान होता है। प्रारब्ध से कोई नहीं लड़ सकता।

सुखदुःखे भयक्रोधौ लाभालाभौ भवाभवौ ।
यस्य किंचत् तथाभूतं ननु, दैवस्य कर्म तत् ।।

अथार्त - सुख और दु:ख, भय और क्रोध, लाभ और हानि, निर्माण (रचना) और विध्वंस और इस प्रकार की अन्य घटनाएं प्रारब्ध के खेल हैं।

ऋषयोऽप्युग्रतपसो दैवेनाभिप्रचोदिता।
उत्सृज्य नियमांस्तीव्रान भ्रश्यन्ते काममन्युभिः।।

अर्थात - जब प्रारब्ध चाहता है तो महान ऋषि भी अपना तप (आध्यात्मिकता) छोड़ बैठते हैं और काम-क्रोध के वशीभूत होकर प्रारब्धवश वे अपने आदर्शों से गिर जाते हैं।

असंकल्पितमेवेह् यदकस्मात् प्रवर्तते।
निवर्त्यारब्धमारम्भैर्नन्नु दैवस्य कर्म तत्।।

अर्थात - जो कुछ अचानक घटता है और प्रयास करने पर भी नहीं रोका जा सकता बल्कि नई और दुर्बोध स्थिति पैदा करता है, वह सब प्रारब्ध के काम होते हैं।

पौराणिक गाथाएं (किंम्बदंतियाँ) अर्थ और विषय सामग्री

नास्ति चिंतासमं दुःखं कायशोषणमेव हि।
यस्तां संत्यज्य वर्तेत स सुखेन प्रमोदते।।

अर्थात- चिंता करने की आदत से बढ़कर कोई दुःख नहीं है। क्योंकि यह शरीर को क्षीण करती है। चिंतामुक्त होकर जो संतुलित जीवन जीता है वही सुखी रहता है।

पदमपुराण (भूदानखण्ड)

हर मनुष्य का जीवन पूर्वजन्म के कर्मों के भोग की कहानी है इससे कोई नहीं बच सकता क्योंकि मानव जीवन शाश्वत रूप से पाप-कर्मों और पुण्य-कर्मों का मिश्रण है। जन्म-जन्मान्तरों में उनका फल मिलता है। मानव के कर्म हर जन्म में उसका अनुसरण करते हैं। यह महाभारत का मत है। कर्म अपने कर्ता को उसी तरह पहचानते हैं जैसे गायों के झुण्ड में भी बछड़ा अपनी माँ को पहचान लेता है।

कर्म की व्याख्या

येन येन यथा यद् यत्पुरा कर्म सुनिश्चितम्।
तत् तदेकतरो भुङ्क्ते नित्यं विहितमात्मना।।

अर्थात - जो भी कर्म मानव ने अपने पिछले जन्मों में किये होते है उसका परिणाम

उसे ही भोगने पड़ते हैं।

स्वकर्मफलनिक्षेपं विधानपरिरक्षितम्।
भूतग्राममिमं कालः समन्तादपकर्षति।।

अर्थात - मानवकृत-कर्म कोष की तरह होते हैं जो शास्त्रविहित विधान के अनुसार सुरक्षित होते हैं उचित समय आने पर काल-कर्मों के कर्ता को अपनी ओर खींचते हैं।

अचोद्यमानानि यथा पुष्पाणि च फलानि च।
स्वं कालं नातिवर्तन्ते तथा कर्म पुरा कृतम्।।

अर्थात - जैसे फल और फूल बिना प्रेरणा के अपने आप बढ़ते रहते हैं उसी प्रकार पूर्व जन्मों में किये कर्म के फल काल सीमा का अतिक्रमण किये बिना मिलते रहते हैं।

सन्मानश्चावमानश्च लाभालाभौ क्षयोदयौ।
प्रवृता विनिवर्तन्ते विधानान्ते पदे पदे।।

अर्थात - सम्मान और अपमान, लाभ और हानि, उत्थान और पतन ये सब पूर्व जन्मों के कर्मों के पद-पद पर मिलने वाले परिणाम है। जब उनको भोग लिया जाता है तो वे स्वतः समाप्त हो जाते हैं।

आत्मना विहितं दुःखमात्मना विहितं सुखम्।
गर्भशय्यामुपादाय भुज्यते पौर्वदेहिकम।।

अर्थात - सुख या दुःख पूर्व-जन्मों के किए गये कर्मों का परिणाम होते हैं। माँ के गर्भ में प्रवेश करते ही मनुष्य अपने पूर्व-जन्मों के परिणामों का अनुभव करने लगता है।

बालो युवा वो वृद्धश्च यत् करोति शुभाशुभमम्।
तस्यां तस्यांमवस्थायां भुङ्क्ते जन्मनि जन्मनि।।

अर्थात - बालक हो या वृद्ध, विशेष परिस्थिति में वह जो कार्य कर चुका है जन्म-जन्मान्तरों में उसे उन्हीं परिस्थितियों में सुख-दुःख भोगना पड़ता है।

यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्।
तथा पूर्वकृतं कर्म कर्तारमनुगच्छति।।

अर्थात - जैसे झुण्ड में बछड़ा अपनी गाय माँ को पहचान लेता है वैसे ही विगत जन्मों में किए अपने कर्ता को पहचान लेते हैं और उस तक पहुँच जाते हैं।

एक अन्य प्रसंग में महाभारत में कहा गया है - केवल ग्रह या नक्षत्र सद्परिणाम या दुष्परिणाम नहीं देते बल्कि व्यक्ति विशेष द्वारा किये गये कर्मों का परिणाम भी उस व्यक्ति विशेष को मिलता है। लोग समझते हैं कि मिलने वाले सुख-दुःख ग्रहों के प्रभाव से मिलते है।

केवलम् ग्रह नक्षत्रं न करोति शुभाशुभम्।
सर्वमात्मकृतं कर्म लोकवादो ग्रहा इति।।

अर्थात - जब अच्छे परिणाम मिलने का समय या बुरे परिणाम मिलने का समय होता

है, ये सब ग्रह संकेत से बता देते हैं।

हिन्दू शास्त्रीय परंपरा में पुनर्जन्म, कर्म और ज्योतिष परस्पर मिश्रित होते हैं इस सच्चाई को सभी अच्छे ज्योतिषी जानते हैं फिर भी इस संबंध में कुछ नहीं कर सकते। यह सब ज्योतिषी भी उसी दिव्यशक्ति के प्रभाव से जानते हैं। वह निजी जीवन के अच्छे समय की भविष्यवाणी कर सकता है परन्तु बुरे समय के बारे में बताने में असमर्थ होता है। अच्छी-बुरी घटनाओं के चक्र को तो काल ही प्रकट करता है।

भारतीय ज्योतिषी अच्छी-बुरी घटनाओं को विभिन्न दशा-पद्धतियों से जानते हैं जैसा कि विश्व में और कोई नहीं कर सकता। यूनान और मिश्र ने यह पद्धति भारत से सीखी थी परन्तु इसे सीखना बहुत दुर्बोध और गहन पाया। जूलाई १९९५ में पश्चिम वर्जीनिया में हिन्ददृष्टि योजना पर हुई मिटिंग में (जहाँ मुझे भाषण देने के लिए बुलाया गया था) प्रकट हुआ कि यह भारतीय परम्परा मिश्रवासियों और यूनानियों द्वारा भारत से उधार ली गई जिसे उन्हें आधा ही सीखा था गलत ढंग से इसका अभ्यास (प्रयोग) किया और फिर भूल गये। रावर्ट-श्चमिट ने कहा था कि जितना ही अधिक हिन्ददृष्टि योजना पर काम हुआ उतनी ही मात्रा में यह सिद्ध होता गया कि यह विषय हिन्दू ज्योतिष से लिया गया है। रावर्ट हैंड ने मीटिंग में कहा था कि यवन जातक में उदघृत द्रविड पिंगरी का शोध ग्रंथ पहले ही अमान्य हो चुका है।

एक दूसरे अमरीकन ने मुझे बताया कि पिंगरी यह भी नहीं देख-समझ सके कि हिन्दू देवताओं के विशाल मंदिर का पूरा विवरण वे अपने ग्रंथ में कैसे दे सकते हैं।

अब जब नब्बे का दशक समाप्ति की ओर है, भारतीय ज्योतिष परम्परा के नेतृत्व प्रधान और विशिष्ट नींव पर विश्वव्यापी ज्योतिष उभर रही है। भारत के बाहर ज्योतिष की न तो भली-भाँति विकसित पद्धति और परम्परा है न विश्वसनीय मनोवैज्ञानिक पठन विधि या आध्यात्मिक निर्देशन ही है। जब पाश्चात्य ज्योतिषी भविष्यवाणी नहीं कर सकते तो सही सलाह कैसे दे सकते हैं वे अनुभव कर चुके हैं कि ज्योतिष के भविष्य कथन पक्ष की उपेक्षा करना ज्योतिष को उसी प्रकार निरर्थक करना है जैसे झूठे अनुमान को मनोविज्ञान रूपी वस्त्र से सजाना। दशापद्धति को मूल रूप में यूनान या मिश्र की होने पर भी हिन्दसाइट योजना का सराहनीय उद्देश्य इसे पुनर्जीवित करना ज्योतिष को विश्वव्यापी बनाने की दिशा में पहला कदम है। किन्तु निष्कर्ष रूप में हिन्दसाइट का योजना को ईमानदारी से स्वीकार करना चहिए कि ज्योतिष उस देश की उपज नहीं हो सकती जहां अवतार या पुनर्जन्म पर विश्वास न हों।

संयुक्तराज्य-अमरीका वैदिक-ज्योतिष के साथ दशा-पद्धति को सीखना चाहता है भारतीय ज्योतिष की योग-मुक्त दशा-पद्धति सर्वाधिक प्रत्यक्ष सच्चाई है जिसे कोई

ज्योतिषी देख सकता है बशर्तें उसे इस पद्धति का अच्छा प्रशिक्षण मिल चुका हो। जो कि इस असाधारण सच्चाई को अपनी तीसरी-आँख से देख सकते हैं और एक निपुर्ण ज्योतिषी जन्मपत्री के माध्यम से बरवादी की स्थिति को कोई नहीं टाल सकता। योगी इस बरवादी को अगले जन्म तक रोक सकता है या कष्टों को एक सीमा तक कम कर सकता है, परन्तु ज्योतिषी ऐसा नहीं कर सकता।

यह अनुमान किया जाने लगा है कि मानव जीवन की अनिर्वाचनीयता और गूढ़ता केवल भारतीय ज्योतिष से ही समझाई जा सकती है। संयुक्तराज्य-अमरीका इसे समझने, ग्रहण करने और प्रयोग करने को तैयार है।

रावर्ट-हैंड और रावर्टश्मिट पश्चिम के भविष्य कथन के ज्योतिष का मूल ढूंढने के लिए कठिन परिश्रम करते आ रहे हैं जो सम्भवत: १६वीं शताब्दी के लगभग विलुप्त हो चुकी है। संयुक्तराज्य-अमरीका में रहते हुए उस प्राचीन विद्वता को (जिसकी परम्परा समाप्त हो चुकी है) ढूंढ निकालने और समझाने के सूत्र पाना उनके लिए सबसे बड़ी बाधा है। उन्होंने हिन्दसाइट नामक योजना की स्थापना की है और इस पर कई लघु-पुस्तकें छाप चुके हैं। यह उस साहसिक कार्य का आरंभ है जिसे करने में कई शताब्दियां लगेंगी। ज्योतिषीय सच्चाइयों को ढूंढने के लिए यदि वे यूनानी पौराणिक कथाओं का विश्लेषण करें तो लाभदायक होगा। ऐसा करने से वे हिन्दू विश्वासों को सहजता से स्वीकार कर लेंगे।

हिन्दसाइट योजना का उद्देश्य भी दशा-पद्धति को पाश्चात्य ज्योतिष के साथ पुनर्जीवित करना है। ऐसा होने पर पाश्चात्य ज्योतिषी घूम-फिर कर कुछ आशा जनक निष्कर्ष पर पहुँच जायेंगे। इनमें से एक निष्कर्ष होगा भविष्य कथन के लिए ग्रह संक्रमण पर अधिक निर्भर होना। पाश्चात्य ज्योतिषियों को ऐसी संदेहजनक (अनिश्चित) तरीकों को जीतना (दबाना) होगा। प्रत्येक ज्योतिषीय पुनर्जागरण भ्रमजाल को दूर करने की प्रक्रिया से गुजरना चहिए।

पाश्चात्य-ज्योतिष में ऐसी एक प्रक्रिया (यूनान और मिश्र प्राचीन ज्योतिष) का अध्ययन करना होगा जिसमें हर्षल-प्लूटो और नेपच्यून रहित राशिमाला की खोज थी अब उनमें से कितने स्वयं को पूर्वाग्रहरहित होकर सफल हो सकते हैं।

उन्होंने इस सिद्धान्त को लेकर एक असंगत शुरुआत की है कि ज्योतिष का जन्म भारत में नहीं हो सकता एक बार एक अज्ञानी अमरीकन महिला ने कुछ हास्यास्पद तर्क रखे कि वेद विश्व की प्राचीनतम पुस्तकें नहीं है। अपनी आयुवर्ग की अन्य महिलाओं की अपेक्षा उसने उत्तेजना में मुझ पर शब्द प्रहार किए। पूर्वाग्रह रहित व्यक्ति ही भ्रमजाल या गूढता हटाने की प्रक्रिया से गुजर सकता है। पूर्वाग्रह रहने या अपनी जिद पर अड़े रहने पर हिन्दसाइट योजना की असफलता पूर्वनिश्चत है। मैंने सुना और पढ़ा है कि कई पाश्चात्य ज्योतिषी पुनर्जन्म में विश्वास रखते थे। हालांकि

मैं उन्हें व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता। मेरी यह जानकारी सत्य भी हो सकती है और मुझे गलत भी सिद्ध किया जा सकता है।

हिन्दू पौराणिकता की गूढ़ता ... कम करना

असाधारण प्रभाव डालने वाली दशा-पद्धति की जानकारी और अभ्यास के बिना जिन भारतीय ज्योतिषियों ने अपनी कल्पना मात्र से शनि के जैसे गुण-दोष वाले हर्सल-प्लूटो और नेपच्यून को अन्य ग्रहों के साथ मिला दिया है वे मात्र नकलची है और सही मायने में वे घर के हैं न घाट के। उनकी असफल भविष्यवाणियों की मूल्य दर भले ही बहुत अधिक हो फिर भी उनकी कल्पना का भूत ही उनके ज्योतिषीय जीवन की सबसे बड़ी बाधा है। जहां तक मेरी जानकारी है ऐल में ज्योतिषियों में एक ने भी इन तीनों ग्रहों के प्रभाव को सिद्ध करने को लेकर ऐसी खोज नहीं की है कि इन ग्रहों के फल-दोष के बिना ज्योतिष के संदिग्ध (अस्पष्ट) क्षेत्र नहीं हो पाये हों। पुणे के एक ज्योतिष ने इन ग्रहों के बारे में बड़ी उत्सुकता से चर्चा की थी हालांकि उसे ज्योतिष के रहस्यों की पूरी जानकारी थी। जब उससे पिछले दस वर्षों में हुई ज्योतिष संबंधी गोष्ठियों में सम्मिलित रहने पर भी इन ग्रहों संबंधी अपने तर्कों को सिद्ध करने को कहा गया तो वह उस अंधविश्वास को प्रामाणिक रूप से सिद्ध करने के लिए कोई खोज प्रस्तुत नहीं कर सका। इस पुस्तक के प्रथम संस्करण के प्रकाशित होने के एक वर्ष बाद वह मर गया।

ऐसे नकलची लोगों को जान लेना चहिए कि भारतीय ज्योतिष देश के धार्मिक-पौराणिक ग्रन्थों में निहित है। इसकी गहनता को दूर करने की आवश्यकता है। इसे बड़ी आसानी से किया जा सकता है क्योंकि भारतीय ज्योतिष संबंधी अध्ययन और संस्कृत अध्ययन दोनों ही हमारी अमर और सक्रिय परम्परायें है। हम अपनी त्रैमासिक **ज्योतिष पत्रिका** में इस विषय पर कई लेख छापेंगे। हिन्दसाइट योजना की बाधाएं भारत में नहीं है लेकिन भारत में न तो ऐसी पहल होती है न खोज के लिए अपेक्षित उत्साह ही है। डॉ. रमण जैसे पुरानी पीढ़ी के ज्योतिषियों ने जो अनुवाद किया उनके दिए गये थोड़े से दृष्टान्तों और गलत अयनांश हमारे लिए बाधा बन गए। इन गलतियों को तुरन्त सुधारा जाना चाहिए। उनके लिए किसी शास्त्र के गलत अनुवाद भी सिद्धान्त बन गया। याद रखने की बात यह है कि इनमें से अधिकांश अनुवादकों ने अनुवाद का सही अर्थ नहीं समझा। उन्होंने अनुपलब्ध को उपलब्ध तो कराया परन्तु हानि भी पहुँचायी जैसा कि मैंने स्वरचित ***"जैमिनीय-मण्डूक दशा"*** में स्पष्ट किया है।

मेरे द्वारा लिखे गए शोध ग्रन्थ ***"द प्रिज्म ऑफ प्रिडिक्सन"*** ऐस्ट्रोलॉजिकल मैगजीन के १९८४ के सितम्बर-अक्टूबर अंक में पुराणों और महाभारत की कुछ कहानियों के माध्यम से इस प्रकार की गूढ़ता को स्पष्ट करने का आधार था। मेरे

सभी शोध-ग्रन्थ लगभग उन संकेतो पर आधारित हैं जो मुझे भारत के पवित्र ग्रन्थों से मिले। डेविड पिंगरी जैसे विद्वानों को कभी भी इस बात का ज्ञान नहीं है कि भारतीय ज्योतिष की बहुत सी बातें इन पुस्तकों में हैं। केवल ज्योतिष-साहित्य से सम्बन्धित हस्तलिखित (पाण्डु लिपियों) साहित्य में नहीं।

उन प्रतिभाशाली विद्वानों की खोजें धीमी-गति से प्रकाश में आ रही हैं जो यह जानते हैं कि इन पुस्तकों में शरीर विज्ञान के तत्व भी समाहित हैं।

यहाँ एक घटना उद्धघृत है

२४ अक्टूबर १९९५ में हुए ग्रहण के बारे में सुधामयी रघुनाथन द्वारा लिखित और १६ अगस्त १९९५ के टाइम्स्-ऑफ-इंडिया के अंक में एक दिलचस्प कहानी प्रकाशित हुई जिसका विवरण निम्नलिखित है-

दैवी घटनाओं में विशिष्ट रहस्य और शक्ति होती है जो सम्भवत: प्राचीन काल की पौराणिक और कल्पित कथनों में वर्णित है। किम्बदंतियों और पौराणिक वर्णनों के आधार पर पूरे भारत में यह बात समान्य रूप में मानी जाती है कि राहु रूपी सर्प, सूर्य-चन्द्र को ग्रसता है जिसे हम ग्रहण कहते हैं। एक कहानी यह भी है कि गजानन गणेश जब बड़ी मात्रा में प्रस्तुत इच्छित भोजन का कुछ अंश ही खा पाये कि उन्होंने सूर्य-चन्द्र को अपने पर हँसते देखा। इससे लम्बोदर गणेश कुपित हो गए और उन्होंने तुरन्त अपनी कमर पर पेटी के रूप में बधे सर्पों को आदेश दिया कि वे सूर्य-चन्द्र को निगल लें। उन्होंने आदेश का पालन किया और पूरी पृथ्वी अंधकार में डूब गयी।

नेहरू-प्लेनेटोरियम के निदेशक, डॉ. निरूपम-राघवन का कहना है कि यह पौराणिक कथा वास्तविक निरीक्षण पर आधारित है। पूर्ण सूर्यग्रहण से कुछ ही देर पहले (लगभग ३० सेकंड पहले) आकाश में अंधेरा छा जाता है और जब थोड़े से हिस्से से सूर्य की किरणें आकाश में फैली तो तार जैसी लंबी आकार की थी जो लाखों सर्पों और केचुओं की तरह दिखायी दे रही थी। पूर्ण सूर्यग्रहण के अन्त में वे पुन: दिखाई दिए। इसलिए मेरा मानना है कि इसी कारण ग्रहण से जुड़ी हमारी पौराणिक कथाओं में इसका सर्पों से संबंध माना गया है।

राहु और केतु की चर्चा पर रिपोर्ट में लिखा है - ४००० ई. पूर्व में भी लोग ग्रहण के संबंध में राहु-केतु के जुड़ जाने के बारे में जानते थे। दो प्रकार के समतल कक्ष हैं। पहला - जिससे होकर पृथ्वी सूर्य का परिक्रमण करती है। एक दूसरे मार्ग या कक्षा को काट्ने वाले बिन्दु राहु और केतु कहलाते हैं। ऐसा तब होता है जब सूर्य और चन्द्र एक पंक्ति में होता है कल्पना और वास्तविकता के संबंध में डॉ. राघवन ऐसा कहते हैं।

भविष्य कथन के लिए जन्मपत्री में राहु-केतु की स्थिति तथा विंशोत्तरी दशा

पद्धति में भी राहु-केतु की दशा-अन्तर्दशा बहुत उपयोगी और सत्य होती है। राहु-केतु ग्रह नहीं हैं फिर भी उन्हें ग्रह माना जाता है और जन्मपत्री का सही अध्ययन करने पर उनका प्रभाव दिखायी देता है। प्राचीन काल में इन दोनों स्थितियों का अध्ययन किया जाता होगा क्योंकि विश्व में भारत सदा से महान योगियों की भूमि रहा है। योगिक अन्तर्दृष्टि से उनका सूक्ष्म अध्ययन विवेक-पूर्ण और स्पष्ट परिणाम पर पहुँचा होगा। यहाँ एक बहुत ही साधारण नियम का प्रयोग किया जा सकता है। तीसरा-भाव छोटे बच्चों का और ग्यारहवाँ-भाव बड़े बच्चों का होता है इनमें से किसी एक मात्र में होने पर अकेला राहु जातक को माता-पिता की सबसे छोटी या बड़ी संतान बनाता है या समलिंगियों में सबसे बड़ा या सबसे छोटा बनाता है।

ग्रहण के कारण राहु दूसरे सहोदर भाई-बहनों के सबसे बड़ा या सबसे छोटा नहीं बनने देता। ग्रहण के कारण राहु सहोदर भाई-बहनों को भी ग्रसित करता है। राहु-केतु कब लाभदायक और कब हानिकारक बनते हैं इसे समझने के कई तरीके हैं।

जिन प्राचीन भारतीयों ने यह खोज की कि कौन ग्रह नहीं है और भविष्य कथन के लिए उनका प्रभावी उपयोग कैसे किया गया उनके उदाहरण यहाँ दिए गये है यह जानकारी शेष विश्व के लोगों को नहीं है।

प्राचीन भारतीयों ने ग्रहों की शक्ति की मात्रा को मापने के लिए अष्टकवर्ग नामक जिस पद्धति का उपयोग किया उसके कुछ उदाहरण मुझे यहाँ देने चाहिए। यदि दशा-पद्धति का प्रयोग करते हुए राहु नामक छाया ग्रह का प्रभाव देखा जाय तो इससे संबंधित सूचनाएं जन्मपत्रियों के अध्ययन से मालूम हो सकती है।

राहु के लाभदायक पहलू भी है। इस संबंध में शिवराज शर्मा ने शोध ग्रन्थ लिखा है वह पुस्तक "*राहु के रहस्य*" नाम से दूसरे विस्तृत संस्करण में प्रकाशित हुई है।

राहु और उसका मस्तिष्क पर दुष्प्रभाव

राहु किस प्रकार मानसिक क्षमताओं को ग्रसता है अवाँछित भावनाएं पैदा करता है, व्यक्ति के जीवन व व्यवसाय को किस तरह गलत दिशा में ले जाता है यह बताने के लिए मैं तीन मापदंड प्रयोग कर रहा हूँ।

१. क्या राहु पाँचवे-भाव में है या पाँचवे-भाव के स्वामी से युक्त (दृष्ट) है?
२. छठे-भाव का स्वामी छठे-भाव को देख रहा है या छठे-भाव में है?
३. पाँचवे और छठे-भाव के स्वामी किसी भी भाव में राहु के साथ हैं?

यदि ऐसी स्थिति जन्मपत्री में है तो सर्प का प्रतीक राहु मस्तिष्क को विषाक्त करता है।

ऐसा होने पर व्यक्ति सन्मार्ग से विचलित हो सकता है। अत्यधिक मानसिक उन्माद पैदा कर सकता है या अत्यधिक ईर्ष्याभाव पैदा कर सकता है। ऐसी ग्रह स्थिति के लोगों को अपनी नाकारात्मक प्रवृत्तियों पर, भावावेश पर और विचारों पर जबर्दस्त
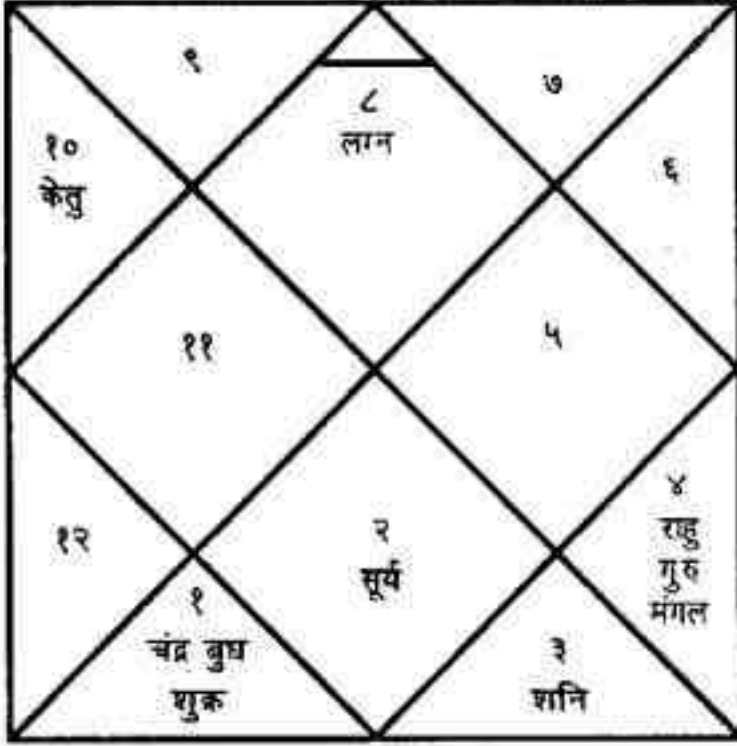
	चंद्र बुध शुक्र	सूर्य	शनि
	दृष्टान्त-२ पुरूष		राहु गुरु मंगल
केतु			
	लग्न		

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
२३° ३१"	००° १०"	०१° ०१"	२९° ५९"	०९° ५९"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
२३° ३५"	०९° २६"	०१° ५९"	१७° ०८"	१७° ०८"
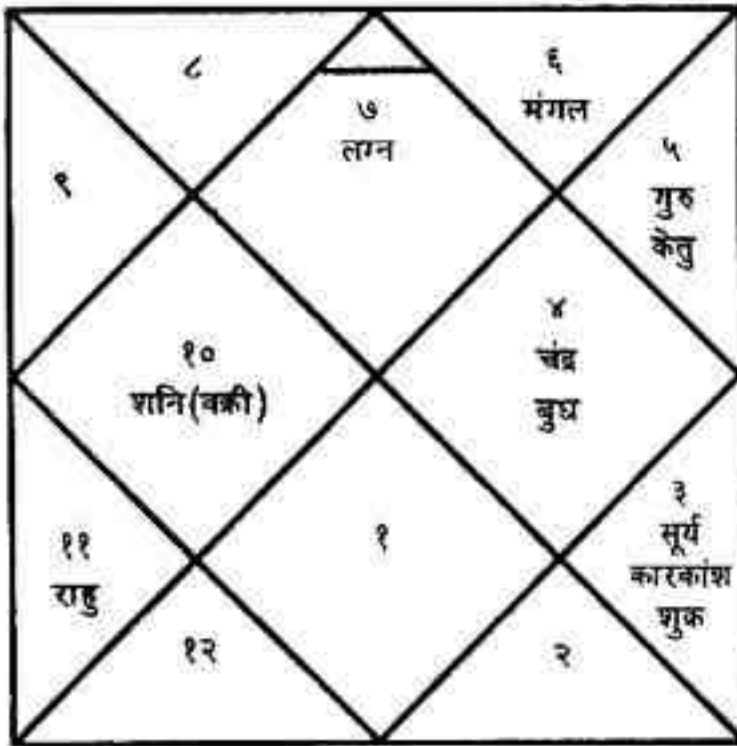
			कारकांश सूर्य शुक्र
राहु	असफल आजीविका दृष्टान्त-३ पुरूष		चंद्र बुध
शनि (वक्री)			गुरु केतु
		लग्न	मंगल

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
२०° १८"	१०° २६"	०६° १५"	०१° ०३"	०४° ५९"
गुरु	**शुक्र**	**शनि (वक्री)**	**राहु**	**केतु**
२३° २०"	२७° ४३"	२२° ४६"	०६° ५९"	०६° ५९"

ऐ.क.	ए.म.के.	बी.के	एम.के.	पी.के.	जी.के.	डी.के.
शुक्र	गुरू	शनि	सूर्य	चंद्र	बुध	मंगल

१ लग्न
२
३ शुक्र केतु
४ शनि
५ चंद्र बुध
६
७
८ गुरु
९ राहु
१० मंगल सूर्य
११
१२

	लग्न		शुक्र केतु
	नवांश		शनि
मंगल सूर्य			चंद्र बुध
राहु	गुरु		

१ लग्न राहु शनि बुध
२ मंगल चंद्र
३
४
५
६ सूर्य
७ केतु
८
९
१०
११
१२ शुक्र गुरु

शुक्र गुरु	राहु शनि लग्न बुध	चंद्र मंगल	
	दशमांश		
		केतु	सूर्य

७ जन्म लग्न शुक्र
८ सूर्य बुध
९ चंद्र मंगल
१० केतु
११
१२
१
२
३
४ राहु
५
६ गुरु शनि

	गुरु और शनि की निकट युति तथा चंद्र-मंगल की निकट युति देखिए		राहु
केतु			
चंद्र मंगल	सूर्य बुध	जन्म लग्न शुक्र	गुरु शनि

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
००° ००"	२४° १९"	१९° ५०"	१९° ५९"	१२° ३१"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
१३° ४०"	२५° ५४"	१४° ४८"	१८° ३१"	१८° ३१"

३३	३२	३३	२७
२०	दृष्टान्त सं. -२ का सर्वाष्टक		३०
२५			२५
३१	२९	२५	२७

नियंत्रण रखने की आवश्यकता होती है। कमजोर या बुरे भाव में होने पर भी बृहस्पति की राहु पर दृष्टि आपत्ति बचा सकती है या कम कर सकती है।

एक उदाहरण देखिए

पाँचवे-भाव का स्वामी बृहस्पति उस राशि में होते हुए दो ग्रहों के दुष्प्रभाव से पीड़ित है वह दुष्प्रभाव राहु ने डाला है जिसने बृहस्पति की बुद्धिमता या पवित्रता, सद्भावनाओं और मानसिक और विवेक के संतुलन को ग्रहण लगा दिया है। पुनः इसके साथ छठे-भाव का स्वामी मंगल है। मंगल नवें-भाव में है जो गुरू और पिता का घर है। यह गुरू-चण्डाल-योग या निंदा और उन्माद का समन्वय है जो शक्ति को नाकारात्मक कार्यों में लगाता है।

यह प्रवृति नवें-भाव के स्वामी चन्द्र के छठे-भाव में होने से अधिक बढ़ जाते हैं चन्द्र से छठे-भाव का स्वामी बुध लग्न से छठे-भाव में है और चन्द्र से पाँचवे-भाव पर शनि की दृष्टि है।

ऐसी स्थिति में पाँचवे-भाव के स्वामी बृहस्पति की दशा में घृणा-ईर्ष्या और हीन भावना चरम सीमा में दिखायी देती है। उसके पश्चात अष्टम-भाव स्थित शनि की दशा आरम्भ होती है। बृहस्पति की दशा में किए गए कर्मो का फल लौटकर प्रहार करेगी जिसे स्पष्ट देखा जा सकता है।

यह स्थिति वृहस्पति जैसे ग्रह की उत्तम दशा में हो जाती है जो राहु के दबाव के कारण और क्षीण मंगल के साथ होने से बनती है।

यह जानने के लिए कि राहु के केवल काल्पनिक बिन्दु नहीं है अपितु महान ज्योतिषीय सत्य है, जिसे भारत के महान भविष्यदर्शी सिद्ध पुरूषों ने खोजा हैं। इसका दूसरा उदाहरण देखिए

असफल रोजगार

कुछ लक्षणों पर ध्यान दीजिए

१. पाँचवे-भाव में राहु है।

२. पाँचवे-भाव पर छठे-भाव के स्वामी की दृष्टि है।

३. पाँचवे-भाव का स्वमी वक्री है।

४. जन्मपत्री का कारकांश मिथुन से फिर राहु (जैमिनीय-दृष्टि से) पाँचवे-भाव को देख रहा है।

५. नवमांश में कारकांश राहु और केतु के नियंत्रण में है।

सर्वाष्टक वर्ग

शनि	३	४	५	४	२	२	१	३	५	४	२	४
वृहसपित	५	४	५	५	५	३	५	५	४	३	४	८
मंगल	४	४	२	४	३	४	४	४	४	३	०	३
सूर्य	६	४	४	४	२	६	२	३	७	४	२	४
शुक्र	४	७	४	३	५	४	४	५	४	३	४	५
बुध	६	५	४	६	४	४	६	४	३	४	४	४
चन्द्र	४	५	३	४	४	४	३	५	४	४	४	५
सर्व	३२	३३	२७	३०	२५	२७	२५	२९	३१	२५	२०	३३

ज्योतिष में लग्न से भावों के बल की मात्रा जानने की तात्कालिक विधि सर्वाष्टक-वर्ग के नाम से जानी जाती है।

१. इस जन्मपत्री के सर्वाष्टक में पाँचवा-भाव सर्वाधिक निर्बल है।

२. मंगल के भिन्नाषक में पाँचवे-भाव के शून्य अंक है। महादशा योजना दिखाती है कि किस प्रकार संस्कार या मनोवैज्ञानिक, धार्मिक और बौद्धिक-प्रवृत्तियां उत्तपन्न होती है यह तथ्य यहां देखिए-

वह शनि की महादशा में जन्मा जो १९४८ में पूरी हुई और बुध की महादशा १७ वर्ष बाद में शुरू हुई। योगकारक दशाओं का सर्वोत्तम भाग जल्दी समाप्त हो गया था। उसके पश्चात आजीविका में एक दम कमी आयी जिसके कारण अपने जीवन में उन्नति करने वालों के प्रति उसमें ईर्ष्या का भाव अधिक हुआ उसके बाद उसने पत्रकारिता अपनायी। उसमें भी वह असफल रहा और कोई उल्लेखनीय उपलब्धि नहीं हुई उसने कोई उल्लेखनीय बातें नहीं लिखी जिसके लिए उसे याद किया जाय।

उसकी भाषा पत्रकारिता में आना और खेल संवाददाता बनना कुछ ऐसी हास्यास्पद बातें हैं जो भारत में होती हैं। कुर्ते-पैजामें में निकृष्ट कोटि के क्रिकेट मैचों

के अलावा उसने कोई अन्य खेल नहीं खेला था। भारतीय पत्रकारिता की परम्परा है कि सहायक संपादक के पदों के लिए खेल-संवाददाताओं का चयन कम ही किया जाता है। जातीय आधार पर इस पद को पाने के लिए उसने चालाकी से काम लिया। यहां आकर उसका रोजगार चौपट ही हो गया।

भावनाओं का द्योतक पाँचवें-भाव में विघ्न आते हैं तो घटनाओं और व्यक्तियों का रूप (विचार) बदल जाता है। यहां राहु ने भय और आशंका पैदा कर दी।

राहु पंचम-भाव में स्थित है और शुक्र लग्न अष्टम-भाव का स्वामी है उसकी नकारात्मक भावनाओं के कारण उसे कोई उपलब्धि नहीं हुई उल्टे उसके लिए समस्याएं पैदा कर दी।

उसकी राहु-शुक्र की दशा १९७९ से १९८२ के मध्य तक रही। उसे १० दिसम्बर १९८० को हृदय का भयंकर दौरा पड़ा जिसके पश्चात उसका आत्मविश्वास पूर्णरूपेण समाप्त हो गया। वह सदा दीन और ईर्ष्यालु व्यक्ति रहा। अब यदि पद में उससे छोटे अधिकारी बेहतर काम कर रहे है तो वह इसे अपना दुर्भाग्य मानकर संतुष्ट हो जाता है। वह स्वयं तो उन्नति नहीं कर पाया और अधिकाधिक चिड़चिड़ा होता गया। उसने समान्य रूप में ज्योतिष का अध्ययन किया और कई सतही (अनुमानित) भविष्यवाणियां की। तदुपरान्त उसने इस अल्प-ज्ञान के आधार पर स्वयं के ग्रहों (जन्मपत्री) को देखने की भूल की तब उसने निराश होने की आदत पाल ली और अपने स्वास्थ्य तथा बच्चों के बारे में सोचकर उदास रहने लगा। उसका वैवाहिक जीवन बहुत सुखमय रहा परन्तु व्यवसायिक रूप से बुरी तरह असफल रहा जो उसे बचपन से जानने में और पढ़ाई में उसकी रुचि जानते थे उन्हें आश्चर्य था कि वह व्यवसाय (आजीविका) में इतना असफल क्यों रहा। इसका कारण उसकी ग्रह-दशायें थी जिनके कारण उसे जीवन में ऊँचा उठने के अवसर नहीं मिले।

आजीविका (रोजगार के दुःखान्त रहने की शुरूआत) उसके अल्प-ज्ञान पर अधारित भयावह ज्योतिषी व्यवसाय से हुई वह नौकरी पर था और अगर प्रवक्ता के रूप में वह काम करता रहा तो उसे अच्छी सफलता मिल सकती थी परन्तु उसने अपनी जन्मपत्री को देखते रहने का निश्चय किया ताकि विवाह के बाद उसकी चमत्कारपूर्ण उन्नति हो सके।

वास्तव में विवाह के पश्चात उसकी आजीविका की उन्नति का मार्ग अवरुद्ध हो गया। उसका विवाह बुध-वृहस्पति की दशाओं में हुआ जिसके बाद उसकी शनि की अन्तर्दशा आरंभ हुई। इस दशा में पिता बनने के बाद वह विशिष्ट भारतीय गृहस्थ बन गया उसकी पारिवारिक जिम्मेदारियां बढ गयी और व्यवसाय रूपी वृक्ष में उन्नति रूपी बसंत कभी नहीं आया और अंकुर फूटने की संभावना से पूर्व ही उसका व्यवसाय रूपी वृक्ष समूल नष्ट हो गया।

४
३ लग्न
२ मंगल बुध केतु
१ सूर्य बुध
५
१२ शनि
६ चंद्र
७
९
११ गुरु
८ राहु
१०
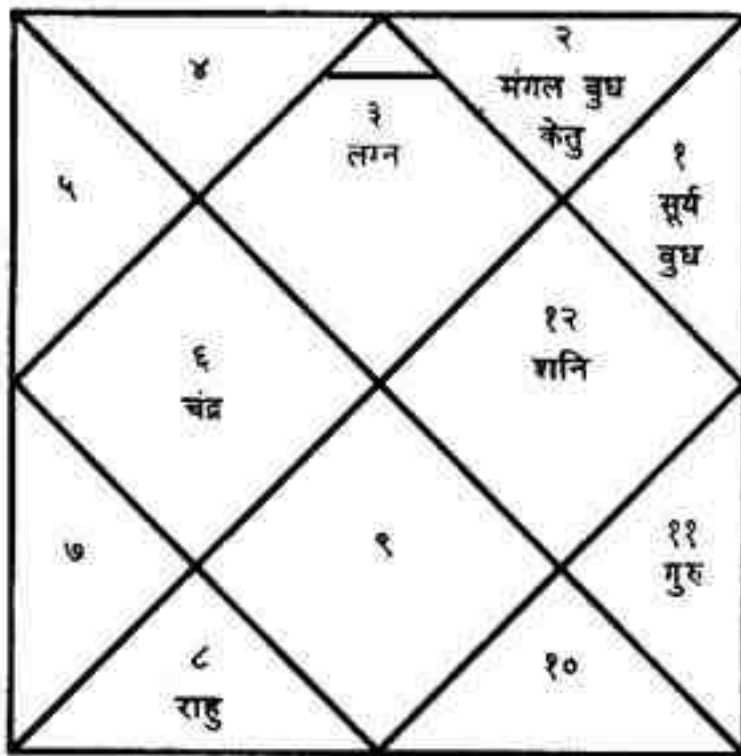
शनि	सूर्य बुध	मंगल शुक्र केतु	लग्न
गुरु	दृष्टान्त सं. - ४ पुरूष १० मई १९३८ ०८:०० प्रात: अक्षांश-२८ उ. ३८ देशान्तर-८५ पूर्व ०८		
	राहु		चंद्र

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
०२°५९"	२५° ४७"	०६° २८"	१८°१२"	०३° ०४"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
०६° ३०"	१९° २१"	१९°५९"	०३° ५४"	०३° ५४"

कई लोगों ने उससे पूछा भी कि उसने अपनी जन्मपत्री में ऐसी कौन सी ग्रह स्थिति देखी जिसके कारण उसे विवाह के बाद अपनी उन्नति के चमत्कार की संभावना देखी। इस प्रश्न का उसके पास कोई उत्तर नहीं था और न उसने ईमानदारी से यह स्वीकार ही किया कि उसकी गणना गलत थी। वह मानसिक शारीरिक और भावनात्मक रूपों में पूर्णतया पलायनवादी बन गया। उसने एक समाचार-पत्र में काम किया जहां पराश्रित होकर जीवन यापन किया जा सकता है।

क्रान्ति (संक्रमण)

यह सब देखने के बाद ग्रह-संक्रमण का महत्व समझा जा सकता है जब १० दिसम्बर १९८० को उसे दिल का दौरा पड़ा।

चन्द्र को ४/१० अंश से देखने वाले वक्री शनि का प्रभाव उसकी सनक और व्यावसायिक जीवन में भयानक अहंकार को बताता है।

अब उसकी नवांश जन्मपत्री देखिए

नवांश में शनि, सूर्य और मंगल के ४/१० धूरी (केन्द्र) पर बने विरोध ने इसे और खराब स्थिति में कर दिया है। ब्राह्मण होने के नाते उसने आजीवन उस इंदिरा गाँधी के प्रति वफादारी की शपथ ले रखी थी जो चतुर महिला राजनीतिज्ञ भी और जिसने यथासंभव हरिजन, मुस्लिम मतों को प्राप्त करने की राजनीति चलाई थी। १९८४ में
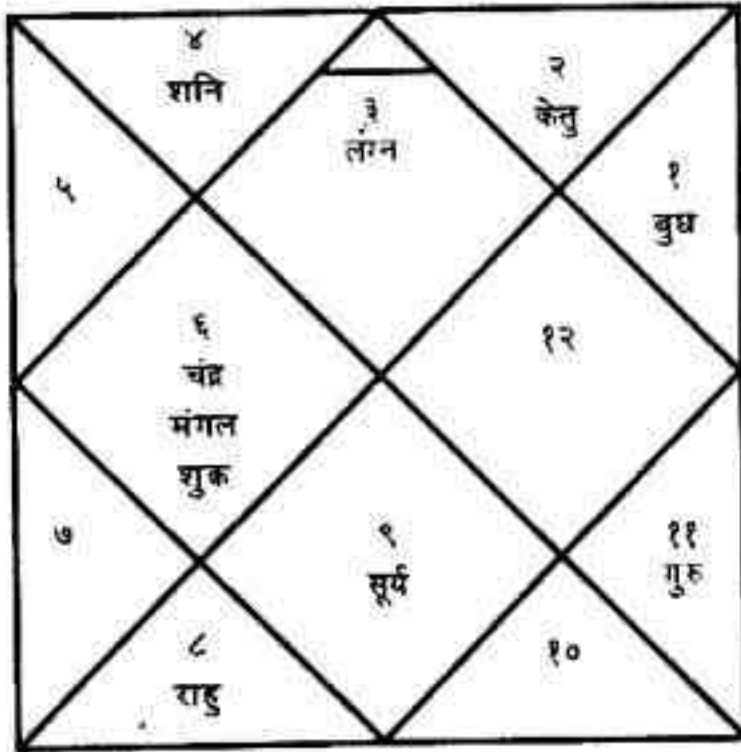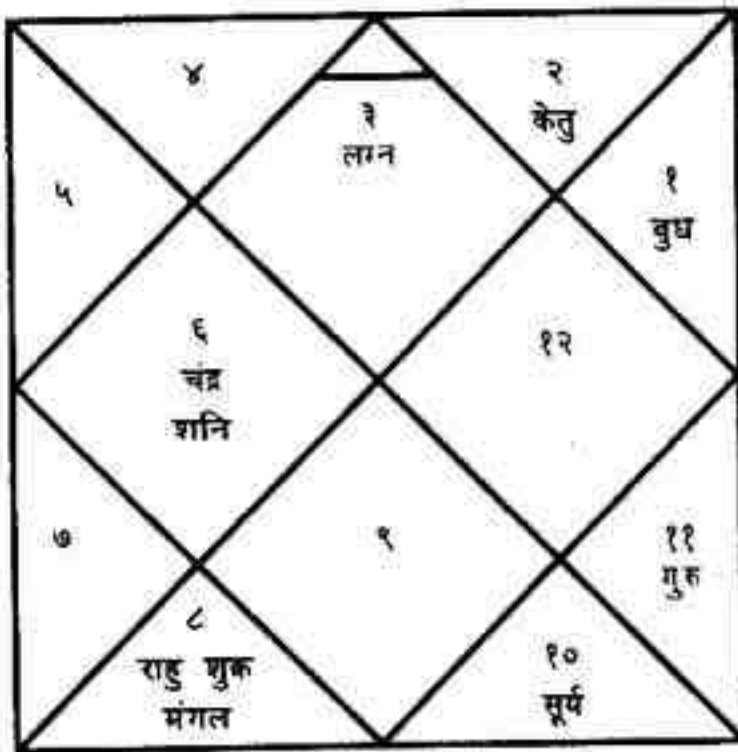
इंदिरा गाँधी की मृत्यु संबंधी मेरी भविष्यवाणी से वह इतना नाराज हुआ कि उसने अनाम से पत्रकार के रूप में एक लेख प्रकाशित किया और इंदिरा युग की समाप्ति की भविष्यवाणी (घोषणा) करने वाले ज्योतिषियों की आलोचना की थी। वह कभी भी अपनी इस सनक को नियंत्रित नहीं कर पाया उसकी कहानी पूर्णरूपेण द्वेष और द्रोह की रही। वह कभी भी कोई रचनात्मक कार्य नहीं कर पाया।

अब दशमांश देखने से तस्वीर और साफ हो जाती है -

१. दशमांश का स्वामी निर्बल और राहु युक्त है तथा तीसरे और छठे-भाव का स्वामी बुध है।

२. दशवें-भाव में न तो कोई ग्रह है और न उस पर किसी की दृष्टि है।

अब देखिए किस प्रकार पाँचवे-भाव स्थित राहु ने और दशमांश में दसवें-भाव के स्वामी ने जीवनवृत्ति (आजीविका) को निर्बल और पनपने नहीं दिया जो बहुत अच्छी हो सकती थी। जन्मपत्री में पाँचवे-भाव में स्थित राहु के होने और दशमांश में
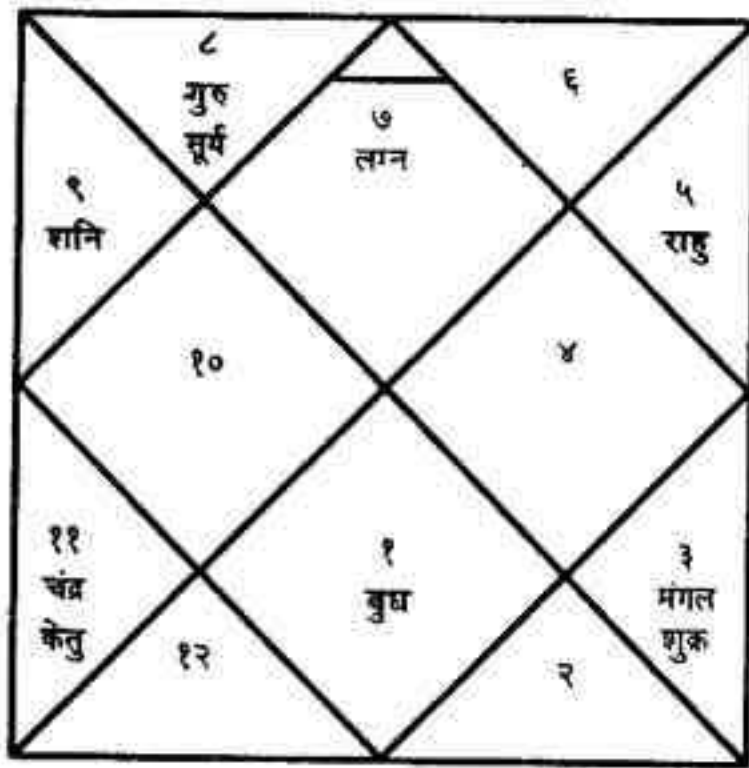
दशवें-भाव के निर्बल स्वामी के दुष्प्रभाव के कारण उसके कार्यकलाप निषेधात्मक रहे वह ईर्ष्यालु चुगलखोर और लापरवाह रहा।

व्यक्तिगत तौर पर मैं नहीं जानता कि बाल्यकाल (विद्यार्थी जीवन) में बहुत होनहार व्यक्ति की आजीविकावृत्ति (रोजगार) इतनी असफल क्यों रही।

दृष्टान्त (संवाद) - चार
अर्द्ध सफल तकनीशियन

१९७९ के लगभग या कुछ पहले मैं उस आदमी से मिला जिसने संयुक्तराज्य अमरीका से उच्च तकनीकी शिक्षा प्राप्त की थी। उन दिनों इस क्षेत्र में कोई प्रतिस्पर्धा भी नहीं थी। अब तो भारत में विद्युतीय तकनीक में दक्ष लोगों की बाढ़ सी आ गई है। अन्य देशों में भी भारतीय इस क्षेत्र में बहुत अच्छा काम कर रहे हैं।

यदि उसने उपलब्ध अवसरों का उपयोग किया होता तो १९८० के दशक के समाप्त होने तक वह उच्च पद पर पहुँच गया होता। १९३८ में जन्म और १९७६ में उच्च शिक्षा पाने वाला व्यक्ति कोई विशेष उपलब्धि नहीं कर पाया इसका स्पष्टीकरण उन दशाओं की सहायता से ज्ञात हो जाता है जिनसे होकर उसे गुजरना पड़ा। पहले वाली घटनाओं में पंचम-भाव स्थित राहु और छठे-भाव के स्वामी वृहस्पति द्वारा देखे जाने की स्थिति थी।

विश्लेषण

१. जन्मपत्री के पाँचवे-भाव का स्वामी शुक्र बड़ी सोचनीय स्थिति में है। पहले दृष्टान्त में छठे-भाव का स्वामी पाँचवे-भाव को देख रहा है जिसमें राहु बैठा हुआ है जिसके कारण वह व्यक्ति चालाक बना किन्तु अपनी अधिकांश शक्ति अनुचित दिशा में लगाई। इस दृष्टान्त में भी पाँचवे और छठे-भाव के स्वामी

४ चंद्र मंगल शुक्र | ३ लग्न | २ बुध शनि | १ गुरु | ५ राहु | ६ | १२ | ७ | ९ सूर्य | ११ केतु | ८ | १०
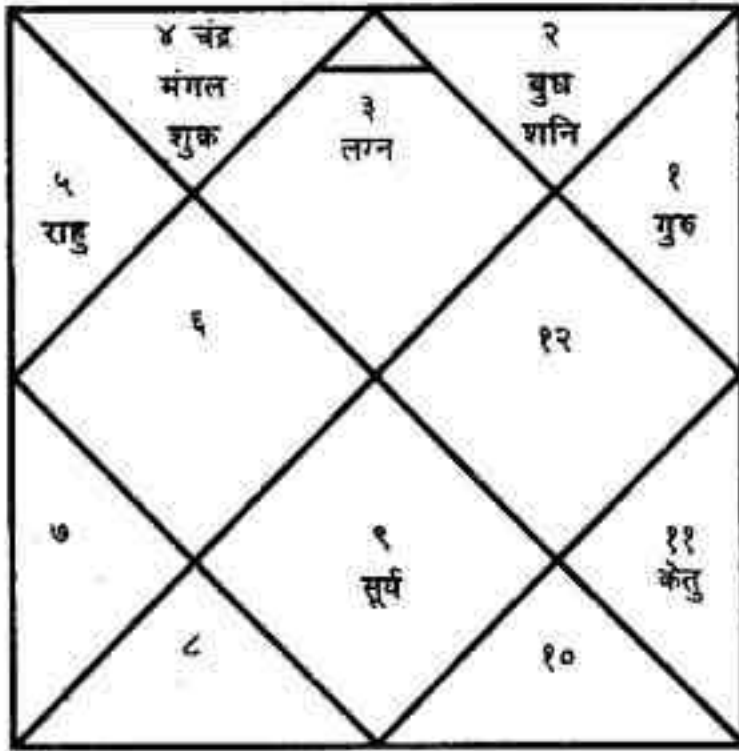
	गुरु	बुध शनि	लग्न
केतु	दशमांश		चंद्र मंगल शुक्र
			राहु
सूर्य			

केतु के साथ है और शनि की दृष्टि में है।

२. पहले दृष्टान्त के विपरीत उच्च तकनीकी शिक्षा प्राप्त इस व्यक्ति को अधिक कष्ट झेलने पड़े क्योंकि उसका चन्द्र भयंकर केमद्रम-योग में है। चन्द्र से पहले या चन्द्र के बाद कोई ग्रह नहीं है।

३. पुन: पहले दृष्टान्त के विपरीत (जहां उस व्यक्ति की उत्तम फलदायक शनि और बुध की दशाएं थी और उसके बाद प्रतिकूल दशाएं आयी) उसकी दशवें-भाव के स्वामी वृहस्पति की दशा ३० वर्ष की आयु के बाद आई किन्तु यह वृहस्पति इसकी विशेष सहायता नहीं कर सका क्योंकि यह चन्द्र से छठे-भाव में शंकट-योग (बैलगाड़ी की चाल) बना रहा था।

खोई-शक्ति

ऐसे सभी असफल आजीविका के मामलों में यह देखा जाना चहिए कि व्यक्ति की बाल्यकाल से कौन सी विंशोत्तरी दशा चली। सूर्य, चन्द्र और मंगल की दशाएं २५ वर्ष की आयु तक चली और उसने स्वयं सुचारू रूप से तकनीशियन व्यवसाय के लिए तैयार किया। देखिए मंगल उसके बारहवें-भाव में है। वह संयुक्तराज्य-अमरीका का ग्रीन-कार्ड-होल्डर है। राहु की दशा से उसके कष्ट आरंभ हुए। छठे-भाव में स्थित और छठे-भाव के स्वामी मंगल दृष्ट होने से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हुई जिसमें हृदय-रोग भी सम्मिलित है।

पहले दृष्टान्त में शुक्र और राहु ने (जिससे एक का संबंध पाँचवे-भाव से था) समस्याएं पैदा की। दोनो दृष्टान्तों में दिल का दौरा पड़ा।

उसने आत्मविश्वास खो दिया जिससे उसकी आजीविका पर कुप्रभाव पड़ा। पहली जन्मपत्री और इसमें समानता देखिये -

४/१० पर शनि चन्द्र युति ने पहले दृष्टान्त की भाँति इसकी आजीविका को
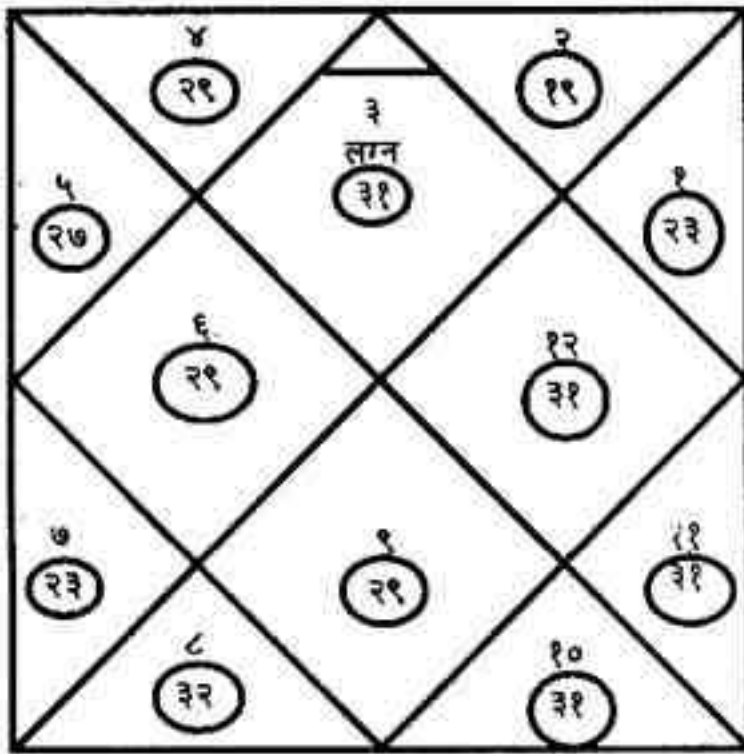
१०वां	३०	१०वें भाव की अपेक्षा ११वां भाव कमजोर, जो खोए हुए अवसर दिखाता है।
११वां	२५	
१२वां	२७	११वें भाव की अपेक्षा १२वां भाव अधिक शक्तिशाली, जो बच्चों के कारण धन हानि दिखाता है।
५वां	२०	सर्वाष्टक लग्न में संक्रमित ५वां भाव, पत्नी द्वारा अनावश्यक नियंत्रण
७वां	३२	

३१	पहले दृष्टांत के समान
२३	
१९	यहां स्थिति ठीक उल्टी है। योग्य संतान अच्छी कमाई करती है और माता-पिता की सहायता करती है।
२३	पहले दृष्टांत के समान
२९	

भी प्रभावित किया जो ४/१० अक्ष पर शनि की चन्द्र पर दृष्टि के कारण हुआ।

नवांश

१. पहले दृष्टान्त में चन्द्र छठे-भाव के स्वामी बुध के साथ चिन्तन-मनन के पाँचवे-भाव में है और उस पर दसवें-भाव में स्थित आठवें-भाव के स्वामी मंगल की दृष्टि है। नकारात्मक रूप में द्वेषपूर्ण बातें करने की उसकी आदत ने उसके जीवन-शक्ति को निरर्थक किया। इस कारण वह निंदक बनता चला गया।

   वर्तमान दृष्टान्त में भी चन्द्र पाँचवे-भाव में केतु के साथ है और शनि द्वारा दृष्ट है। उसने आत्मविश्वास खो दिया और तीव्र गति से उसके अन्दर हीनता का भाव बढ़ता गया। पुन: पाँचवे-भाव के स्वामी पर मंगल की दृष्टि नें उसकी उलझनों को और अधिक बढ़ाया।

२. पहले दृष्टान्त में केवल दसवें-भाव पर हानिकारक प्रभाव था परन्तु ग्यारहवें या दसवें पर इसका काई दुष्प्रभाव नहीं था। वर्तमान दृष्टान्त में नवांश में वृहस्पति दसवें भाव को प्रभावित कर रहा है। इस कारण उसे अपनी आजीविका (व्यवसाय) पर मन को एकाग्र करने को समझाना संभव था। नौवें और दसवें-भावों के स्वामियों को एक दूसरे की राशि में होने से वृहस्पति की दशा में उसे अच्छी सफलता मिली। हांलाकि उसका हीनता भाव और मानसिक उदासीनता पहले की तरह ही रही फिर भी वर्तमान में शनि की दशा में उसमें सुधार हुआ।

   इसका कारण जानने के लिए उसे परेशानी क्यों हुई हमें उसका द्रेष्कोण देखना चाहिए।

१. पीड़ा-कारक (दुष्प्रभावित) चौथे-भाव ने उसे अपने पिता की पैत्रृक संपति में अपना भाग पाने के चक्कर में सगे भाइयों से झगड़ों में फंसाये रखा।
२. उसकी अपनी गणना के अनुसार यदि उसे पैत्रिक संपति में से अपना भाग मिल जाता तो उसे कोई काम करने की आवश्यकता नहीं होती। किन्तु छठे-भाव के स्वामी के चौथे-भाव में होने और उस पर आठवें-भाव के स्वामी शनि की दृष्टि होने से उसे पैत्रिक संपति के अपने भाग से वंचित होना पड़ा। इसका अधिक स्पष्टीकरण चतुर्थांश में देखा जा सकता है।

चौथे-भाव में चन्द्र-शनि के होने से छठे-भाव में शुक्र के साथ राहु-मंगल होने से उसकी पूरी शक्ति का उपयोग जायदाद के झगड़ों तक ही सीमित रह गया। पहले दृष्टान्त के विपरीत पहले उसके दसवें-भाव के स्वामी बृहस्पति की दशा आई और उसके बाद शनि की। इन दशाओं में उसने अपनी (पैत्रिक संपत्ति न मिल पाने की)

कमी पूरी कर ली। किन्तु प्रतिस्पर्धा के युग में सफलता युवाओं को और चालीस के दशक की आयु-वर्ग के लोगों को मिलती है। उसकी आयु अब बढ़ रही थी किन्तु शुभ-दशाओं के समय में उसकी सन्तान ने और विशेषकर पुत्र ने बड़ी सफलताएं पाई।

अच्छी दशा के लाभ ने उसकी खोई शक्ति को उसके सीमित सफलताओं में मोड़ दिया और उसकी संन्तान को महान सफलता दी। पहले दृष्टान्त में अशुभ दशा में उसकी सन्तान की सहायता नहीं की इस लिए दशमांश देखिए।

दशमांश

१. दशमांश के ग्यारहवें-भाव में स्थित वृहस्पति ने खोई शक्ति की प्राप्ति में उसकी सहायता की।
२. बारहवें-भाव में स्थित शनि ने संयुक्तराज्य-अमरीका में लाभ के अवसर दिए।
३. दशमांश की तुलना प्रथम दृष्टान्त के दशमांश से कीजिए जिसमें दशम-भाव का स्वामी निर्बल है और आर.के.ए. के दबाव में है भाग्य इस प्रकार काम करता है।

अब दूसरी और तीसरी जन्मपत्रियों की अन्तिम तुलना कीजिए।

जन्मपत्री में राहु का महत्व

हमने कहानी का आरंभ २४ अक्टूबर १९९५ के ग्रहण (सूर्य-ग्रहण) से किया और राहु का उल्लेख किया था। जन्मपत्री का प्रत्येक ग्रह हमारे पूर्वजन्म के कर्मों का प्रतिनिधि होता है जिसके शुभा-शुभ फल हमें इस जन्म में भोगने पड़ते हैं।

किन्तु सूर्य-ग्रहण का कारण राहु तुम्हारे जीवन पर भी किसी न किसी रूप में ग्रहण लगाता है। इस लिए प्रत्येक जन्मपत्री में निम्नलिखित राहु का प्रभाव देखना चाहिए।

दोनों सर्वाष्टकों का तुलनात्मक अध्ययन

१. यदि राहु अकेला हो और उस पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो तो वह अपनी स्थिति के अनुसार और जन्मकुण्डली वाले की स्थिति के अनुसार फल देगा।
२. यदि राहु किसी ग्रह के साथ है तो वह उसे ग्रसेगा। दूसरे ग्रह का स्वामित्व राहु की छाया के नियंत्रण में आ जाता है।
३. यदि राहु पर एक अधिक ग्रहों की दृष्टि पड़ती है तो देखना चहिए कि किन-किन ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है ऐसी स्थिति में प्राचीन ज्योतिष में लाभ-हानि के विस्तृत वर्गीकरण का प्रभावी प्रयोग किया जा सकता है।
४. हानिकारक ग्रहों को देखे जाने पर राहु की छाया (प्रभाव) हिंसक होता है।

यदि मंगल के साथ हो तो हिंसक प्रभाव डालता है, यदि शनि के साथ हो तो धीमी गति से कभी रचनात्मक प्रवृत्ति दिखाता है तो कभी विनाशात्मक।

५. यदि शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो राहु लाभ पहुँचाता है।

६. पराशर के योग-कारक सिद्धान्तों का प्रयोग करने पर परिणाम में संशोधन (कुछ परिवर्तन) हो सकता है।

कर्म और ज्योतिष की समन्वय योजना को समझने के लिए निम्नलिखित बिन्दु याद रखिए -

१. बुद्धिगम्य बनने के लिए यह जानना चाहिए कि सारे भाव निर्मनिलिखत चार पुरुषार्थ या प्रयासों का प्रतिनिधित्व करते हैं - कर्म, अर्थ, काम और मोक्ष (मुक्ति)।

२. उन भावों के स्वामी उन भावों में स्थित ग्रह, उन भावों पर दृष्टि रखने वाले ग्रह इन पुरुषार्थों को कार्य रूप में परिणीत करने को उत्साहित करते हैं।

३. ऐसा संबंधित दशाओं के आने पर होता है।

यही एक मात्र तरीका है जिससे किसी जन्मपत्री का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया जा सकता है। राहु अपनी जन्मपत्री में जिन्न की तरह का उत्थान या पतन करने वाला तत्व (बिन्दु) है। प्रत्येक जन्मपत्री में राहु का यही काम होता है। इस विषय पर एक मुख्य खोज शिवराज शर्मा ने प्रस्तुत की है। राहु की तरह और ग्रह भी कर्म और ज्योतिष में संबंध सिद्ध करते हैं।

संयुक्तराज्य-अमरीका में मुझे ज्योतिष संबंधी पौराणिक किंवदन्तियों और प्रतीकों की एक पुस्तक दिखाई गई और उस पर मेरी राय (सलाह) मांगी गई। मैंने कहा कि यह पूर्व और पश्चिम के प्रतीकों को भ्रम में डालने वाला मिश्रण है और यह जानने के लिए बिल्कुल उपयोगी नहीं है कि ज्योतिषीय-भविष्य कथन में पौराणिकताओं (किंवदन्तियों) का क्यों और कैसे उपयोग किया जा सकता है। उन सब का एक साथ संग्रह मात्र पढ़ने के लिए रुचिकर हो सकता है परन्तु ज्योतिषियों के लिए उपयोगी नहीं हो सकता।

कर्मों का वर्गीकरण

कर्म की गीता की कई टीकाओं (भाष्य) में और महाभारत में अच्छी व्याख्या की गई है। अन्य धर्म-ग्रन्थों में भी किसी न किसी प्रसंग में इसकी चर्चा की गई है। यहाँ थोड़ा सा सारांश दिया जा रहा है जो कुछ मै यहां प्रस्तुत कर रहा हूँ उसमें कुछ भी मौलिक नहीं है। मै तो भारत के मनीषियों द्वारा लिखी गई टिकाओं के मुख्य बिन्दुओं के आंकड़े प्रस्तुत कर रहा हूँ।

सर्वप्रथम कर्म को तीन भागों में बांटिये

अकर्म

जो पूर्णरूपेण ईश्वर के ध्यान (समाधि) की स्थिति में पहुँच गया हो उसके लिए शेष कर्म करने के अलावा कोई काम करने के लिए नहीं होता। वह कर्म को अकर्म और अकर्म को कर्म मानता है। यह मुक्ति की ओर ले जाने वाले अकर्म की स्थिति है। यह स्थिति तभी संभव है जब कर्म को अनासक्त भाव से किया जाय और किए जाने वाले कर्म के फल की इच्छा न रखता हो। योगिक-विकास की यह उत्तम स्थिति है।

कर्म	विकर्म
क) संचित - पिछले जन्मों के संचित संग्रहीन कर्म।	क) माता-पिता(पितरो) के विपरीत कर्म।
ख) प्रारब्ध- संचित-कर्मों का वह भाग जो जो इस जन्म के लिए नियत है।	ख) परिवार-विरोधी कर्म।
ग) क्रियमाण- वह कर्म जो वर्तमान	ग) समाज-विरोधी कर्म।

जीवन में करते हैं।

घ) आगामी - भावी-जीवन के कर्म यदि आगामी जीवन अन्तिम जीवन न हो। | घ) अमानवीय कर्म

इन कर्मों का परिणाम

क) अकर्म मुक्ति की ओर ले जाता है।

ख) विकर्म नरक तथा भयानक जन्मचक्रों और अनन्त कष्टों की ओर ले जाता है।

ग) कर्म, अकर्म या विकर्म की ओर ले जाता है और विकर्म-तत्व कर्म-बंधन (दासता) की ओर ले जाता है।

कर्म के तत्व

कर्म के चार तत्व होते हैं। जैसा कि पहले सारिणी में दिखाया गया है इसकी व्याख्या नहीं की जा रही है।

संचित कर्म या कुलसंग्रहीत कर्म

केवल मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो कर्म कर सकता है: पशु नहीं। पशु-भोग योनि में या उस रूप में रहता है जिसमें उन्हें पीड़ाएं या आनन्द भोगने होते हैं और जो मानव की तरह न तो कर्मों को कम कर सकता है और न बढ़ा सकते हैं।

संचित कर्म वे कर्म होते हैं जिन्हें मानव ने पिछले जन्म में किया है। ऐसे संचित कर्म दो भागों में बटे होते हैं। प्रारब्ध - संचित कर्मों का वह भाग जो वर्तमान जीवन में भोगने के लिए नियत होता है इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही पहलू होते हैं सकारात्मक पक्ष से आनंद (सुख), उपलब्धि उत्पन्न होती है और नाकारात्मक पक्ष से दु:ख और असफलता उत्पन्न होती है यही एक अच्छा ज्योतिषी देखता है।

संचित के दूसरे भाग को परिस्थितिजन्य प्रेरणा कहा जा सकता है जो वर्तमान जीवन में किसी भी समय प्रवेश कर सकती है। जब कोई व्यक्ति ऐसा काम कर लेता है जिसका कि उसे अनुमान भी नहीं था कि वह कर सकता है। यह कारण या प्रेरणा का परिणाम होता है यह पिछले जन्मों के संस्कारों का परिणाम है।

इस प्रकार मानव-जन्म, प्रारब्ध और प्रेरणाओं (आवेशों) की कहानी है जिसके लिए वातावरण या वंश परम्परा कोई ठोस आधार नहीं है। मानव-व्यवहार चार तत्वों से बना होता है - वातावरण और वंश-परम्परा तथा प्रारब्ध और प्रेरणाएं जिनका मूल पूर्व-जन्म होते हैं।

अनुकूल — मिश्रित — प्रतिकूल
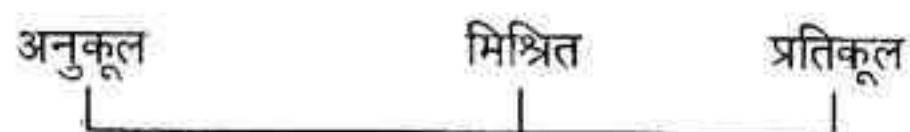
क) अपनी योजनाओं को इच्छा-पूर्वक काम करना।
ख) अपनी योजनाओं को अनिच्छा-पूर्वक से करना।
ग) किसी अन्य की योजनाओं को इच्छा-पूर्वक करना।
घ) किसी अन्य की योजनाओं को अनिच्छा-पूर्वक करना।

इन चार प्रकार के काम करने में मानव का अपना चुनाव नहीं होता। यह भाग्य का दबाव होता है जो उसे यह सब करने को बाध्य करता है।

टिप्पणी

जब मनुष्य यह सब सुख की भावना से रहित होकर करता है तब वह कर्मों को कम करने में सफल होता है। जब वह खिन्न होता है और किसी ऐसी परिस्थिति से स्वयं को बाहर करने का प्रयास करता है तो वह कार्य के जाल में स्वयं को फाँसता जाता है।

यह स्मरण रखना चहिए कोई अपने प्रारब्ध में लिखे को नहीं टाल सकता।

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं क्रम शुभाशुभम्।

कल्याण

प्रारब्ध के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही पक्षों को भोगना पड़ता है। कर्मों के बंधन भोगे बिना मनुष्य हजारों जन्मों में भी मुक्त नहीं हो सकता।

योगी एक बुद्धिमान व्यक्ति की तरह इसे भोगने को तैयार रहता है। भोगी या संसारिक व्यक्ति कर्म-बंधनों से मुक्त होने के लिए अनेक तरीके प्रयोग करता है, ज्योतिषियों, भौतिक-वैज्ञानिकों और तांत्रिकों के जाल में फँस जाता है। फिर भी कर्म-बंधन को नहीं टाल सकता। कुछ योगी दूसरे के कर्म-बंधन पर नियंत्रण करने में सहायता देते हैं परन्तु वास्तव में वे उन कर्म-बंधनों को दूसरे जन्मों के लिए स्थगित करते हैं। यह प्रारब्ध को निष्फल करना नहीं अपितु कुछ समय के लिए 'स्थगित करना है।

क्रियमाण कर्म

यह वह क्षेत्र है जिसमें मनुष्य अपने भाग्य को बना या बिगाड़ सकता है। केवल इस सीमित-क्षेत्र में ही वह काम के आनंद का अनुभव कर सकता है। इस क्षेत्र में किया गया कार्य या तो भविष्य के कर्मों को और जन्मों तथा पुनर्जन्मों के चक्र को बनाता है या कर्म

को कम करके इस जन्म या जन्मान्तरों में मुक्ति के मार्ग को प्रशस्त करता है।

इस सिद्धान्त पर अजमायेंगे कि प्रत्येक व्यक्ति अपना गुरू बन सकता है। संयुक्तराज्य-अमरीका में अवतारवाद के छः चरण है। यह रुपये कमाने की शुद्ध भौतिकवादी प्रतिक्रिया है।

क्रियमाण कर्म

	दृश्य-परिणाम	प्रेरणाएं	अदृश्य-परिणाम
क)	तात्कालिक	शुद्ध और पवित्र	सांसारिक
ख)	बिलम्बित	अशुद्ध और अपवित्र	आध्यात्मिक

यह ज्योतिषियों के असफलता का क्षेत्र है। संभवत: दृश्य-ग्रह कुछ संकेत दे देंगे। इसी कारण वे लोग जो ज्योतिषियों से रोग-निदान की अधिक आशा रखते हैं, दयनीय-प्राणी होते है।

टिप्पणी

केवल क्रियमाण-क्षेत्र में ही नहीं मनुष्य अपनी इच्छानुसार काम करने का सुख पाता है। हालांकि गत-जीवन की प्रेरणाएं और प्रारब्ध प्राय: विरोध की स्थिति पैदा कर देते हैं।

महान योगियों द्वारा सबको दी गयी उत्तम सलाह प्रारब्ध को सहर्ष स्वीकार करना और क्रियमाण-क्षेत्र में अच्छे तथा दानशीलता के काम करना है। वे जानते हैं कि मानव-शरीर छः विकारों (दोषों) से कष्ट पाता है। यही जन्म, स्वरूप-निर्माण, परिवर्तन, वृद्धि, क्षीणता और अंत में विनाश। प्रारब्ध शरीर को भोगना पड़ता है। जिसने अपना मन जीत लिया है और दिव्य-ज्ञान की उच्चावस्था प्राप्त कर ली है वह शरीर के इन छः दोषों को दुख: का कारण नहीं मानता।

ज्योतिष में हम अनुकूल समय विशेषकर योगकारक समय की चर्चा करते हैं। मैंने देखा है कि योगकारक-दशा के पूरे होने पर मनुष्यों को बहुत पीड़ा, पेरशानियां होती हैं क्योंकि योगकारक समय में वे केवल धन एवं शक्ति का संचय करते हैं और हठ (घमंडी) हो जाते हैं। कुछ मामलों में परिणाम जल्दी मिलते हैं और कुछ में देर से।

अच्छे समय में जब उन्हें हर काम में सफलता मिलती है। तब वे नैतिक और मानवीय मूल्यों को त्याग कर वे बहुत उत्साह से भैतिक सुख-साधनों का संग्रह करके परम आनन्द अनुभव करते हैं। उसके बाद जब बुरा समय आता है तो उनके कष्ट द्विगुणित हो जाते हैं। फिर कष्ट (दु:ख) क्या है? यह तुम्हारे सोचने पर निर्भर है।

योगी भी प्रारब्ध का प्रहार सहते हैं परन्तु वे प्रसन्नचित रहते हैं क्योंकि

वे प्रारब्ध को स्वीकार करते हैं।

बंधन और मुक्ति में अन्तर

जन्मों और पूनर्जन्मों का चक्र तभी समाप्त होता है जब सूक्ष्म देह किसी जन्म में समाप्त हो जाती है और मुक्ति मिल जाती है। मुक्ति भौतिक शरीर के समाप्त होने का नाम नहीं है बल्कि सूक्ष्म देह समाप्ति पर मिलती है। हम तीन शरीर की चर्चा करते हैं-

क) भौतिक-शरीर

ख) सूक्ष्म-शरीर

ग) कारण शरीर

हम यहां सूक्ष्म-शरीर की चर्चा करते हैं जो विलीन होने पर कष्टपूर्ण-जीवन को आनन्दमयी स्थिति में ले जाते हैं। जब अकर्म सूक्ष्म-शरीर लिंग या सूक्ष्म-देह में परिणत हो जाता है। प्रत्येक पुनर्जन्म सूक्ष्म-शरीर का अपने पाप और पुण्यों सहित एक भौतिक-शरीर से दूसरे भौतिक-शरीर में स्थानान्तरित होता है।

सूक्ष्म-शरीर ही बंधन और मुक्ति के मध्य की स्थिति है। भारत का धार्मिक साहित्य सूक्ष्म-शरीर के मुक्ति में विलीन होने के आख्यानों से भरा हुआ है। पश्चिम और विशेष कर पश्चिमी समाज की सर्वाधिक उदार-बुद्धि वाले संयुक्तराज्य-अमरीका में एडगरकेसी ने जीवन के समान कई दृष्टान्त पढ़ने-सुनने में आते हैं। कट्टर ईसाई होते हुए भी एडगरकेसी ने मूर्च्छावस्थाओं में देखा कि हर बीमारी का कारण पूर्वजन्म में किये गये किसी कर्मजर्न्य के कारण होती है। इस महान अमरीकन के नाम पर बनी संस्था में नव्बे हजार रिकार्ड किए गये इस प्रकार के दृष्टान्त है। मेरा पसंदीदा उदाहरण महाभारत के महान नायक और भगवान श्रीकृष्ण का सखा अर्जुन है। जब माया के वश में होनें के कारण उसने कुरूक्षेत्र का युद्ध नहीं करना चाहा तो भगवान-कृष्ण ने गीता नामक दिव्यज्ञान का अंश उसे दिया। अर्जुन को विश्वास दिलाने के लिए उन्होंने उसे अपना विश्व-रूप लोंको को समाहित करने वाला रूप दिखाया। फिर भी ऐसा लगता है कि अर्जुन भीष्म, द्रोणाचार्य और अन्य दूसरों के प्रति अपने आदर और लगाव को नहीं छोड़ पाया जो उसके गुरू व परामर्शदाता थे जिनके लिए उसके मन में अपने पितामह जैसा आदर था।

अठ्ारह दिनों तक लड़े गये इस महायुद्ध के एक दिन जब अर्जुन दूसरी जगह लड़ रहा था तब उसका प्रिय-पुत्र अभिमन्यु दुर्योधन की सेना द्वारा घेर लिया गया और मारा गया। अर्जुन जिन लोगों को आदर करता था जब उन लोगों ने उसके पुत्र के साथ ऐसा किया तो तब अर्जुन के पास उन सबसे पूरी शक्ति-कौशल और शौर्य के साथ लड़ने के अलावा कोई रास्ता नहीं रह गया था। गीता के उपदेश की अपेक्षा उसके पुत्र की मृत्यु उस युद्ध में भयंकर रूप से लड़ने की प्रेरणा बना। अब अर्जुन की

तस्वीर आध्यात्मिक-रूप से प्रबुद्ध-शक्ति की न होकर अपने पुत्र की मृत्यु का बदला लेने वाली शोकाकुल पिता की थी।

युद्धोपरान्त जब उसका बड़ भाई युधिष्ठिर सम्राट बन गया तब अर्जुन ने एक दिन भगवान-कृष्ण से कहा कि वह कुरूक्षेत्र के युद्धक्षेत्र में उनके द्वारा दिये गये गीता के उपदेश को भूल गया है और इस उपदेश को उनसे दुबारा सुनना चाहता है।

यत् तद् भगवता प्रोक्तं पुरा केशव सौहृदात्।
तत सर्वे पुरूषव्याघ्र नष्टं में भ्रष्टचेतसः।।

भगवान-कृष्ण का सखा होने का महान सौभाग्य पाने वाले और नैतिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से महान अर्जुन की यह दशा हो सकती है तो हम जैसे तुच्छ सांसारिक-प्राणियों की क्या प्रतिक्रिया हो सकती है?

कृष्ण ने अर्जुन को फटकार और दूसरे ढंग से भागवद्गीता के उपदेशों का सार बताया। एक ब्राह्मण द्वारा दिये गए दृष्टान्तों के माध्यम से इन उपदेशों की पुनरावृति हुई।

क्या अर्जुन को ये उपदेश याद रहे? हमें आध्यात्मिक रूप से अर्जुन की भावी प्रगति देख लेनी चाहिए।

गुजरात में सोमनाथ के निकट प्रभास-पत्तन नामक स्थान में जब भगवान-कृष्ण ने तब नश्वर शररी का त्याग किया उस समय अर्जुन उपस्थित था। उस समय अर्जुन की दशा अत्यधिक दयनीय थी। उसके सर्वप्रिय मित्र ने उसे छोड़ दिया था। अब वह योद्धा अर्जुन नहीं था अपितु हर-पल कृष्ण के ध्यान में रहने वाला समाधिस्थ-योगी था। अब वह कृष्णचेतना की उच्चास्थिति में पहुँच गया था। अब हमेशा उसके मन-मस्तिष्क में कृष्ण के साथ बितायी गयी अतीत् की मधुर स्मृतियां छायी रहती थी पहले की अपेक्षा उसे अब भगवान कृष्ण के सान्निध्य की कहीं अधिक अभिलाषा होने लगी थी यही उसकी गहरी मानसिक वेदना थी। श्रीमद्भागवत् में इसका वर्णन दिया हुआ है।

गीतं भगवता ज्ञानं यत् तत् संग्राममूर्धनि।
कालकार्मतमोरुद्धं पुनरध्यगमद् विभुः।।

(प्रथमस्कंध अध्याय-१५, श्लोक ३०)

गीता के जिन पाठों का उसे उपदेश दिया गया था समय को खो देने, संसारिक-कर्मजाल में फँसने, और आलस्य के कारण वह उन्हें भूल गया था। कृष्णचेतना के उन महान क्षणों ने अब अर्जुन के जीवन में पूर्ण-परिवर्तन कर दिया था।

विशोको ब्रह्मसम्पत्या संछिन्नद्वैत संशय: ।
लीन प्रकृतिनैर्गुण्यादलिंङ.त्वादसम्भव ।।

दिव्यज्ञान प्राप्त कर लेने पर माया का पर्दा छिन्न-भिन्न हो गया दुविधा का भाव समाप्त हो गया। उसकी लिंगदेह लीन हो गई।

अर्जुन अब जन्म और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त हो गया क्येंकि उसकी लिंगदेह समाप्त हो गयी थी। यह उच्च यौगिक उपलब्धि की स्थिति थी जो उसने जीवित अवस्था में प्राप्त कर ली थी। पुन: भागवत दशमस्कंध में लिंगदेह की चर्चा है।

तदानुस्मरण ध्वस्तजीव कोशाष्टमध्यगन् ।

वृन्दावन की गोपियों को (जो कि भगवान-कृष्ण की नारी भक्तिन थी) भगवान ने अपना स्मरण करने के लिए कहा था इसके परिणामस्वरूप उनका जीव-कोश (लिंगदेह) विलीन हो गया था।

लिंगदेह का विलय ही मुक्ति की स्थिति है। ऐसा हो जाने पर जन्मों के चक्र से मुक्ति मिल जाती है इसे केवल अनाशक्ति और विवेक से प्राप्त किया जा सकता है और इसे आध्यात्म अभ्यासी ही प्राप्त कर सकता है।

जन्म-समय प्रारब्ध का पहला प्रकाश स्तंभ है

आजकल एक निरर्थक बहस चल रही है कि जब बच्चे के जन्म का समय गर्भवती मां का आपरेशन करके निश्चित किया जा सकता है तो जन्म-समय और ग्रह-स्थिति भी संयोग न होकर बदली जा सकती है। इस बहस को बाद में ले सकते हैं। यह भी तर्क किया जाता है कि जन्म-समय पूर्व निर्धारित नहीं है।

व्यक्ति के जन्म का समय उसकी पसंद के अनुसार नहीं होता। यह सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा पूर्व निर्धारित होता है।

कुछ परस्पर विरोधी उदाहरण दिखाये जायेंगे। ४ फरवरी १९६२ को भारत या विश्व में कहीं भी किसी भी समय के जन्मों का दृष्टान्त ले लीजिए। मुझे इस समय की कई जन्म-पत्रियां मिली। जब विभिन्न दिनों में केवल लग्न और चन्द्र की स्थितियां ही परिवर्तित हो गयी तब उनकी भविष्यवाणियां करना ज्योतिषियों के लिए बहुत कठिन था। उन दृष्टान्तों में जब लग्न बदल जाता है तो व्यक्तियों के भाग्य के अर्थ पूर्णरूप से बदल जाते हैं। किसी भविष्यवाणी पर निर्णय देने से पूर्व दूसरे तथ्यों पर भी विचार करना होगा। पराशर द्वारा निर्धारित विभिन्न-वर्गीय जन्मपत्रियों का जैमिनी द्वारा निर्धारित जन्मपत्रियों के (गणित-फलित) के साथ मिलाकर देखने से ही समस्या का समाधान हो सकता है।

हर घंटे बाद जन्मसमय बदलते रहिए और ग्रहों की राशियां न बदलकर केवल लग्न बदलते रहिए, चन्द्र के अंश बढ़ जायेंगे और विभिन्न लग्नों का परिणाम विभिन्न

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
२३° ३१"	२१° २१"	०७° २०"	०८° १५"	२४° ४७"
गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
२५° ०३"	२३° ११"	१०° २२"	२४° ४३"	२४° ४३"
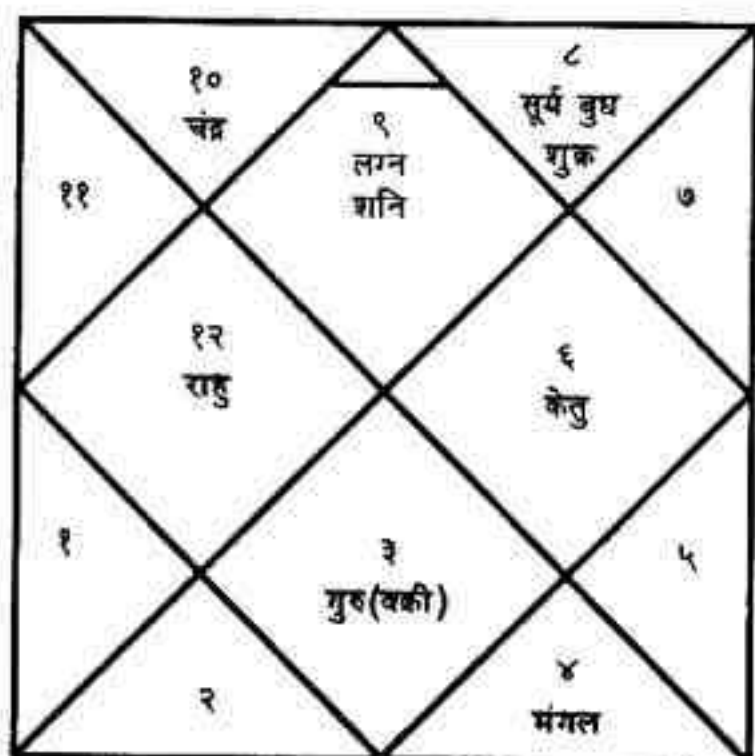
आता रहेगा।

जैमिनी के कारकों की सारणी बनाइए तो तस्वीर भ्रमित करने वाली होगी। अब लग्न बदलते रहिए तो भाग्य बदलता रहेगा। लग्न जन्मसमय पर निर्भर करता है। विश्व में इस दिन किसी भी समय किसी भी स्थिति में जन्मने वाले व्यक्ति क्या अपने जन्म का दिन तथा समय बदल सकते हैं।

कोई भी मनुष्य कभी भी यह निश्चित नहीं कर सकता कि वह कहां किस दिन और किस समय जन्म लेगा। मनुष्य के प्रारब्ध का सांचर (नमूना) उसके जन्म से पूर्व निश्चित हो जाता है।

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल(वक्री)	बुध
०९°५८"	२६°११"	२८°५९"	२४° ३१"	१८° ४७"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
२०° २८"	१०° ४२"	०४° २५"	०८° ३३"	०८° ३३"

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
००° ३२"	०४° २८"	००° १९"	००° २३"	१९° ०२"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
०८° ३२"	१३° १६"	१७° ४६"	०३° ४६"	०३° ४६"

केस – ६

निम्नलिखित को नोट कीजिए:

१. नवें, दसवें और ग्यारहवें-भाव के स्वामियों के बारहवें भाव में होने से वह किसी अन्य देश में जाना सिद्ध करता है।

२. बारहवें-भाव का स्वामी मंगल आठवें-भाव में होते हुए आठवे-भाव के स्वामी

१२
११ लग्न
१० सूर्य
९ बुध शुक्र
१ मंगल
२ केतु
८ राहु शनि
३
५ चंद्र
७
४
६ गुरु(वक्री)
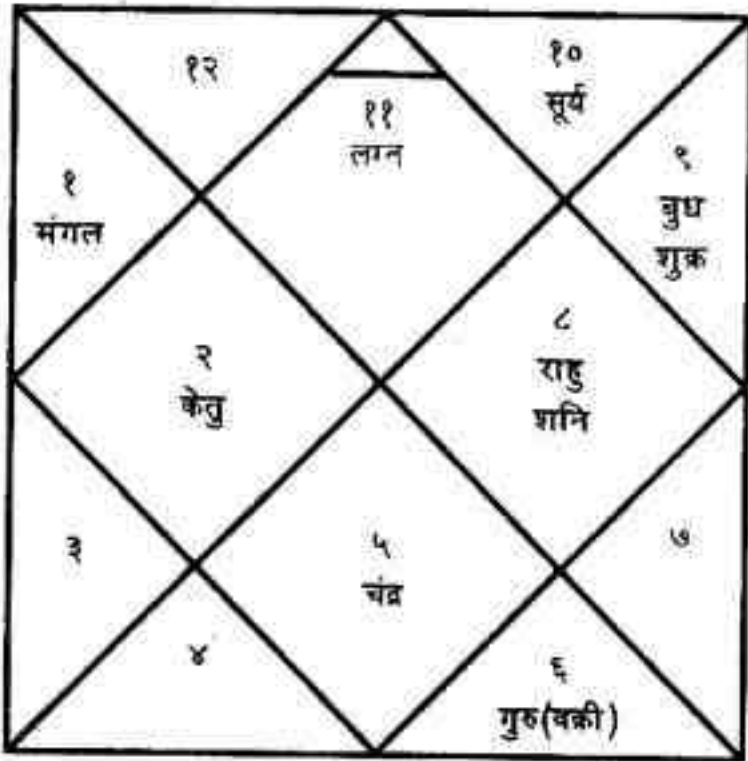
	मंगल	केतु	
लग्न	सं.-९ इंजीनियर १८ फरवरी १९५७ ०९:३५ प्रातः अक्षांश-३२ उ. ५५ देशान्तर-७५ पूर्व ०७		
सूर्य			चंद्र
बुध शुक	राहु शनि		गुरु(वक्री)

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
१२°१६"	०४° ३२"	०१° ४३"	००° २६"	१८°२९"
गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
०८° ३२"	१३° २१"	१७° ४६"	०३° ४२"	०३° ४२"

को द्वितीय-भाव में देख रहा है। इस चन्द्र-मंगल योग ने उसे पैसे के साथ भयानक बाधाएं (प्रेत-बाधाएं) भी दी हैं।

३. शनि और वृहस्पति का विरोध लग्न और द्वितीय-भाव के स्वामियों की युति है जिसने उसे अधिक पैसा दिया।

भारत में सामान्य कलर्क जैसी स्थिति से उन्नति की। विदेश में नियुक्ति हुई, जहां उसने धनसंग्रह किया। उसने अपनी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और धार्मिक क्षेत्र में पदार्पण कियाा परन्तु पैसा कमाने के अवसर नहीं खोए।

क्या यह सब उसने स्वयं किया? नहीं। उन ग्रहों ने उसे धन देना था। धार्मिकता का आवरण ओढ़ना उसके लिए सुविधा-जनक था जो उसे करना ही था। लग्न बदल दीजिए तो उसकी जीवन दिशा भिन्न हो जायेगी।

केस - ७

उसकी केतु-दशा उस समय आरम्भ हुई जब वह एक वर्ष की थी। दुष्प्रभावित नवें-भाव में स्थित केतु अपनी कहानी बताता है चौथे-भाव के स्वामी वृहस्पति का बारहवें-भाव में सूर्य के साथ होना और उस पर मंगल तथा शनि की दृष्टि होना केतु की रहस्यात्मकता कृता को पूरी तरह उजागर कर देता है। उसे माता-पिता दोनों ने त्याग दिया।

क्या यह जन्मपत्री और यह दशा संतुलन उसकी अपनी पसंद थी! कुछ तो पूर्व-निर्धारित था। यदि वह इस बारे में उत्सुक (भावुक) हो भी जाय तब भी वह अब

यह पता नहीं लगा सकती की उसके माता-पिता कौन थे या हैं तो कौन हैं?

जुड़वा बच्चे उनके विभिन्न भाग्य

जन्मत्रियों या मिलती-जुलती जन्मपत्रियों पर विचार करना अपनी ज्योतिष योग्यता की श्रेष्टतम परीक्षा है। यहां दो जुड़वा बच्चों की जन्मपत्रियां है जिनके जीवन कहीं समान और कहीं असमान रहे। किसी जन्मपत्री में प्रारब्ध के तत्वों की खोज में दूसरी महत्वपूर्ण बात प्रकाश में आयी है और वह है चन्द्र।

इस पुस्तक के प्रथम संस्करण के प्रकाशन के पश्चात डॉक्टर किसी असाध्य रोग के कारण मर गया।

जन्म-कालीन चन्द्र और नक्षत्र-मण्डल प्रारब्ध के अन्य प्रकाश-स्तंभ

भारतीय ज्योतिष में चन्द्र का महत्व स्पष्ट रूप में जाना जाता है क्योंकि ग्रहों के साथ हम सत्ताईस - नक्षत्रों का भी प्रयोग करते हैं किसी के भाग्य की रूप-रेखा के वर्णन की योजना इस प्रकार होनी चाहिए:

१. जन्मपत्री के शरीर-लग्न से समझना आरम्भ कीजिए।

२. तब जीवन-शक्ति के प्रतीक चन्द्र को समझिए।

३. सूर्य आत्मा है।

४. दूसरे ग्रह मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु जन्मपत्री रूपी शरीर के खून-मांस जैसे तत्व हैं।

५. **षटवर्गी जन्मपत्रियां** - होरा - धन के लिए, द्रेष्कोण - भाई-बहन के लिए, सप्तांश - संन्तान के लिए और अन्य मामलों के लिए; नवांश - जीवनसाथी और भाग्य को सूक्ष्म और स्पष्ट रूप से समझने के लिए। द्वादशांश - माता-पिता के लिए और अन्य उपयोगों के लिए, त्रिमशांश - पीड़ा (कष्ट) को जानने के लिए होता है परन्तु प्रतिभा की गहराई की भी जानकारी देता है।

चन्द्र का महत्व इस तथ्य से समझा जा सकता है कि भारतीय पंचांग के पाँच तत्व चन्द्र की स्थिति के अनुसार निम्नलिखित कियाा जाता है।

क) तिथि या चन्द्र-दिन - सूर्य से चन्द्र की दूरी इसका आधार है।

ख) नक्षत्र - (चन्द्र का घर) वह नक्षत्र पुंज जिसमें चन्द्र स्थित है।

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
१८°१४"	०९° २९"	२४° ३८"	०६° २०"	२७°५८"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
२२° ४६"	०७°५८"	२२° २६"	००° ४१"	००° ४१"

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
१८° ३१"	२५°५२"	११° ०१"	०५°५६"	२७°५८"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
०१°५४"	०५° ४३"	२६° २६"	२६° १३"	२६° १३"

ग) करण - भी चन्द्र पर आधारित है यह तिथी का अर्ध-भाग है।

घ) योग - योग भी चन्द्र की स्थिति पर निर्भर है।

ङ) जन्मवार - दूसरे ग्रहों पर आधारित है।

सूर्य और चन्द्र ये दो नक्षत्र पँचांग की सभी गणनाओं के मुख्य आधार हैं जिन पर किसी

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
१३° ५०"	२५° ५०"	२४° २४"	०६° ३५"	२७° १७"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
०२° ०४"	०६° ५८"	२६° ३३"	२६° ०४"	२६° ०४"

की जन्मपत्री की भविष्यवाणियां निर्भर होती हैं।

अत: किसी जन्मपत्री में चन्द्र की स्थिति अच्छी और बुरी घटनाओं का स्थायी संकेत देता है तथा विंशोत्तरी के इस पर निर्भर होने के कारण जो भविष्यवाणी हम अच्छे या बुरे समय के बारे में किसी व्यक्ति के लिए बताते हैं वह भी इसी (चन्द्र) पर आधारित होती है।

कैसे और कब तुम्हारी जीवन-शक्ति प्रकट या स्पष्ट होगी यह भी चन्द्र से निश्चित की जाती है। क्योंकि जन्म के समय चन्द्र की स्थिति व्यक्ति-विशेष के हाथों में नहीं होती है इसलिए प्रारब्ध की कहानी में लग्न के बाद चन्द्र सर्वाधिक सीमाचिह्न (तथ्य) है।

जिसे सब बालारिष्ट या बालमृत्यु (अच्छा होगा कि इसे बच्चों के लिए मृत्यु) न कहकर बच्चे के लिए कठिनाइयां (कष्ट कहा जाय) कहते हैं उसमें चन्द्र की मुख्य भूमिका होती है।

केस - १०

यह भारतीय-युवा संयुक्तराज्य-अमरीका में कैंसर से मरा और कोई डाक्टर उसे नहीं बचा सका। वह ११ जून १९८३ को शुक्र/शनि/शुक्र के योग में मरा।

जीवन-शक्ति का प्रतीक चन्द्र, राहु और शनि के मध्य है और उस पर मंगल की दृष्टि है। लग्न का स्वामी शुक्र छठे रोग-भाव का भी स्वामी है। छठे-भाव में शनि

का होना स्थिति के अधिक बिगड़ रहा है। लग्न और छठे-भाव के स्वामी शुक्र की अन्तर्दशा के समय में उसकी मृत्यु हुई।

इस युवा का चन्द्र २४° डिग्री (अंश) और ३८ मिनट पर है जो कि ज्येष्ठा-नक्षत्र में होने से पूरे परिवार को पीड़ा पहुँचाने वाले कुप्रभाव का विशेष महत्व दिखाता है। चन्द्र के साथ जुड़े कई घातक तथ्य है जिनपर पूरी पुस्तक लिखी जा सकती है। इस कुप्रभाव (हानिकारक-पक्ष) पर जोर देने की अपेक्षा यहां स्पष्ट कर दिया जाय कि एक अमरीकन-महिला की पुत्री का चन्द्र ३° डिग्री और १९ मिनट पर वृश्चिक में था और उस पर क्रूर-ग्रहों की दृष्टि थी। मैंने उस महिला का उसकी पुत्री के बारे में ग्रह-जनित-कुप्रभाव को बताने की बात टालनी चाही। इस प्यारी बच्ची के माता-पिता बहुत ही घिनौने रूप में लड़ते थे जिसे हम बालारिष्ट कहते हैं। वह बच्चे की मृत्यु का सूचक नहीं होता (जैसा कि सामान्य अनुवादों में या भारतीयों द्वारा अंग्रेजी में लिखी पुस्तकों में लिखा गया है) अपितु विभिन्न स्रोतों से बच्चे के लिए आने वाले दुःखों का सूचक होता है। भारत के विपरीत संयुक्तराज्य-अमरीका में बच्चे को लम्बे समय तक माता-पिता या दोनों का प्यार नहीं मिलता बालारिष्ट का एक रूप है।

लग्न और चन्द्र अन्तर क्यों दिखाते हैं इसे एक दिलचस्प विरोधाभास से दिखाया जा रहा है।

विरोधाभास

जैमिनी-कारक

अक्टूबर १२	कारक	अक्टूबर १३
बुध	ए. के.	बुध
शनि	ए. एम. के.	शनि
सूर्य	बी. के.	सूर्य
चन्द्र	एम. के.	चन्द्र
मंगल	बी. के.	शुक्र
शुक्र	जी. के.	मंगल
वृहस्पति	डी. के.	वृहस्पति
चन्द्र की डिग्री (अंश)		**लग्न की डिग्री (अंश)**
अक्टूबर १२:११:०१, १८-३१		अक्टूबर १३:२४:२४ १३-५०

भाग्य (डेस्टिनी) के नमूने का अन्तर

अक्टूबर १२	अक्टूबर १३
१. संन्तान में सबसे बड़ा, एक छोटा भाई तब एक बहन।	१. बहन बड़ी तब वह और उसके बाद दो बहनें
२. इतिहास में स्नातकोत्तर डिग्री	२. इंजीनियर

३. उच्च सरकारी-अधिकारी	३. उद्योगपति
४. नवम्बर १९८१ में विवाह	४. अगस्त १९८४ में विवाह
५. दो कन्यायें	५. पहले एक पुत्र तब एक कन्या
६. १९८७ में पिता की मृत्यु	६. पिता जीवित है।

ये परिष्कृत अन्तर

अ) जैमिनी के कारको के अध्ययन से।

ब) केवल लाहिड़ी के अयनांश के द्वारा वर्गीकृत कुण्डलियों के माध्यम से निकले हैं

इन दोनों में इसी रूप में रमन के आयनांश को प्रयोग करके देखें-

अक्टूबर १२		अक्टूबर १३
२७° १७"	सूर्य	२७° १७"
१२° २८"	चन्द्र	२५° ५१"
०७° २३"	मंगल	०८° ०२"
२९° ५६"	बुध	२८° ४४"
०३° २१"	वृहस्पति	०३° ३१"
०७° १०"	शुक्र	०८° २५"
२७° ५३"	शनि	२७° ५९"
२७° ३९"	राहु	२९° ३०"
२७° ३९"	केतु	२७° ३०"
१९° ५०"	लग्न	१५° १७"

वैज्ञानिक पहुँच और भ्रमित करने वाले अयनांश के बीच का अन्तर हर किसी व्यक्ति के सामने स्पष्ट हो जायेगी जो यह अभ्यास कर सकता है।

किन्तु महत्वपूर्ण बिन्दुओं का उल्लेख यहां किया जा रहा है -

क) दोनो के जन्म में ठीक एक दिन का अन्तर है जन्म-समय वही है किन्तु जन्म-स्थान भिन्न है।

ख) लग्न की डिग्रियां भिन्न हैं जिनके कारण जन्मकुण्डली के अयनांश रूपी वर्गीकृत - चार्टों में अन्तर आ जाता है।

ग) चन्द्र की डिग्रियां भिन्न हैं। परिणाम-स्वरूप महादशा का क्रम बदल जाता है।

घ) जैमिनी के कारकों में परिवर्तन आ जाता है जो परिष्कृत अन्तर सामने लाता है।

सन्तान से सुख - पूर्व जन्मों के ऋण

माता का शाप (पृष्ठ - ११८, श्लोक - ४)

सर्वषामेव शापानां प्रतिघातो हि विद्यते।
न तु मात्राभिशप्तानां मोक्षः कंचन विद्यते।।

किसी के शाप के परिणामों का दुष्प्रभाव रोकना संभव है किन्तु माता के द्वारा अभिशप्त व्यक्ति के बचाव की कोई आशा (उपाय) नहीं होता।

पूर्वजन्मों के ऋण

जन्म-कुण्डली से यह भी ज्ञात हो जाता है कि जिस परिवार में हमने जन्म लिया है उससे हमारे पूर्व-जन्म के बंधन और संम्पर्क-सूत्र किस प्रकार के हैं। ग्रहों के सम्पर्क से शुरू करते हुए हम कहानी को एक-एक टुकड़ो में ले सकते हैं। पति-पत्नी अपनी संन्तान से क्या अपेक्षा कर सकते हैं यह उन दोनों की जन्मपत्री के पाँचवे-भाव और पाँचवें-भाव के स्वामियें की स्थिति से ज्ञात हो सकता है। इस बात पर विचार करने से पूर्व मैं पद्मपुराण से एक उदाहरण देना चाहूँगा जिसमें ऋणानुबंधन को संक्षेप में समझाया गया है। ऋणानुबंधन का अर्थ पिछले-जन्म का बिना चुकाया ऋण है। जिसके परिणाम-स्वरूप हम ऐसे परिवार में जन्म लेते हैं जहां पूर्व-जन्म के कर्जदारों के संबंधी मित्र या अधिक घनिष्ट संबंध वाले सदस्य बन जाते हैं।

१. पिछले जन्म में हमने जिन लोगों से ऋण लिये होते हैं वे वर्तमान जन्म में

हमारे संबंधी बन जाते हैं।

२. उनमें से कुछ ऐसे मामले (व्यक्ति) होते हैं जिनकी संपत्ति हमने गैर-कानूनी ढंग से हड़पी होती है।

३. जीवन-साथी, माता-पिता, सन्तान और संबंधी यहां तक की नौकर भी ऋणानुबंधन के फलस्वरूप मिलते हैं।

४. मृत्यु के समय की प्रबल भावना के अनुसार प्राणी का पुनर्जन्म होता है। वर्तमान जन्म में उस भावना (उद्देश्य) की पूर्ति करता है और भयानक दुःख देने के बाद इस संसार से विदा हो जाता है।

५. जो पिछले जन्म में अपनी संपति धोखे से खोता है वह सुन्दर और निपुण-पुत्र के रूप में जन्म लेता है और भयानक पीड़ा देने के बाद चला जाता है।

६. जो दूसरों से ऋण लेता है और बिना ऋण चुकाये जाता है वह ऋणदाता के परिवार में पिता, भाई, पत्नी या मित्र आदि बनता है। उसका व्यवहार राक्षसों की तरह होता है। वह हर एक के साथ बुरा वर्ताव करता है, कटुभाषी होता है दूसरों की कीमत पर जीवन का आनंद लेता है परिवार का सौभाग्य बिगाड़ता है।

७. **सन्तानें**

बुरी-सन्तान - वह शत्रु की तरह वर्ताव करता है, माता-मिता से घृणा करता है, उनका मजाक उड़ाता है, उनकी आलोचना करता है। विवाह के बाद अपने माता-पिता को लूटता-ठगता है।

अच्छी-सन्तान - वह बचपन से ही अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करता है। उम्र बढ़ने पर भी अपने माता-पिता का देख-भाल का ध्यान रखता है उनसे मधुर-भाषा में बात करता है और उन्हें प्रसन्न रखता है। माता-पिता की मृत्यु के बाद परलोक-वासी माता-पिता का श्राद्ध आदि करता है।

उदासीन (तटस्थ)-सन्तान - वह अपने माता-पिता से न तो नाराज रहता है न प्रसन्न, न उन्हें कुछ देता है और न उनसे कुछ लेता है।

किसी के भी जीवन में मानवीय संबंधों में इन बातों को फैलाया जा सकता है। जो कुछ भी हो रहा है वह पिछले जन्मों के कर्मों का परिणाम है।

नैतिक-शिक्षा

दूसरों की संपति का लालच मत करो। हर कर्म का प्रतिफल मिलता है।

ज्योतिषीय-पैमाना (पैरामीटर)

१. किसी भी जन्म-कुण्डली को ले लीजिए और पाँचवे-भाव तथा पाँचवे-भाव के

स्वामी की जाँच कीजिए।

२. केन्द्र-त्रिकोण या बुरे-भाव (छठवें, आठवें, बारहवें) में उनकी स्थिति देखिए।
३. देखिए कि उन पर किन शुभा-शुभ ग्रहों की दृष्टि है और किन शुभा-शुभ ग्रहों से वे युक्त है।

एक नजर में ये तीन पैमाने तुम्हें विश्वास दिला देंगे कि तुम माता-पिता के रूप में अपनी संन्तान से सुख पाने की आशा कर सकते हो क़ि नहीं।

अब पति-पत्नी की जन्म-कुण्डलियां लीजिए और इन तीन पैमाने का विस्तृत प्रयोग कीजिए।

अपनी पुस्तक **"ग्रह और सन्तान"** में दूसरे तरीकों से सन्तान से दुःख पाने के पर्याप्त उदाहरण दिए है।

शनि की महादशा १९७९ में आरम्भ हुई। उसके दो पुत्र और एक पुत्री थी। १९८६ के अन्त में वह और उसकी पत्नी मेरे पास आये।

अब इन तीन पैमानों का प्रयोग कीजिए। विस्तृत जाँच बाद में की जायेगी।

केस नं. १३

१. पाँचवे-भाव के स्वामी पर छठे-भाव के वक्री स्वामी की दृष्टि है इस कारण उसके और उसके बच्चों के मध्य विद्रोह की भावना रहती है।
२. बारहवें-भाव का स्वामी बुध पाँचवे-भाव के स्वामी से युक्त है। ब्रिटेन और संयुक्त-राज्य-अमरीका जैसे देशों में अपने बच्चों की उत्तम-शिक्षा पर उसने खूब धन खर्च किया।
३. दूसरे-भाव का स्वामी दशम-भाव में है और पाँचवे-भाव को देख रहा है जिससे उसके बच्चों की उसके प्रति विद्रोह-भावना बढ़ी।

भारतीय समाज के लिए बच्चों का व्यवहार उत्तेजित करने वाला होता है। पहला पुत्र स्मगलर है जो किसी भी समय गिरफ्तार किया जा सकता है और जो उम्र में १५ वर्ष बड़ी विवाहित-स्त्री के साथ रह रहा है। पुत्री प्रसिद्ध परिवार के धनी व्यक्ति के साथ रहती है और विवाह नहीं करना चाहती। तीसरे पुत्र ने अचानक अच्छी पढ़ाई छोड़ दी और गलत आदतें अपना ली।

यह सब पाँचवे-भाव के स्वामी शनि की दशा में होनी शुरू हुई और मंगल की अन्तर्दशा में चरम सीमा पर पहुँच गई। पिता को स्वयं भारत से बाहर रहना पड़ा क्योंकि भारतीय-कानून के अनुसार उसने कई कानूनों का उलंघन किया था और उसके गिरफ्तारी के समन जारी हो गये थे। योगकारक ग्रहों की दशा में और विशेषकर सांसारिकता से आध्यात्मिक की ओर उन्मुख करने वाले पाँचवे-भाव के स्वामी की दशा में सर्वाधिक परेशानियां आई। परन्तु उसके लिए इस काम के लिए बहुत देर हो चुकी

थी। एक अनुरागी पिता के रूप में उसे आशा थी कि वह गैर कानूनी तरीको से अपनी सन्तान के लिए धन कमा लेगा जो इसे बरवाद कर रहे थे।

केस नं. १४

पाँचवे-भाव और उसके स्वामी की जाँच कीजिए। अपने दो बच्चों सहित उसके दुःख की कहानी स्पष्ट है यह स्थिति शुक्र की दशा में प्रकट हुई।

आठवे-भाव का स्वामी शुक्र पाँचवे-भाव में राहु-युक्त है और आठवे-भाव में स्थित शनि की उस पर दृष्टि है।

केस नं. १५

प्राकृतिक-रूप से पुत्र-कारक वृहस्पति पर और पाँचवे-भाव पर कुप्रभाव देखिए। पाँचवे-भाव के स्वामी मंगल की दशा में सितम्बर १९६८ में उसके पुत्र का जन्म हुआ।

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
१५° १०"	२८° २०"	२४° ५५"	०२° ०१"	२३° ५८"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
२४° १०"	२१° ३९"	००° ५९"	१६° २१"	१६° २१"

बच्चों (सन्तान) से सुख-संबंधी पद्मपुराण का विवरण दूसरी बार पढ़िए।

केस नं. १६

अब पुत्र की जन्म-कुण्डली देखिए।

अब निम्नलिखित तथ्यों की ओर ध्यान दीजिए।

१. लग्न के समीपस्थ राहु को दूसरे और नवें-भाव का स्वामी मंगल छठे-भाव में स्थित होकर देख रहा है। छठा-भाव ऋण (ऋणानुबंधन) का है।

२. लग्न का स्वामी दूसरे और नवें-भाव के स्वामी के साथ ऋण दिखाने वाले छठे-भाव के स्वामी के साथ है छठे-भाव में उनका स्वामी सूर्य भी है।
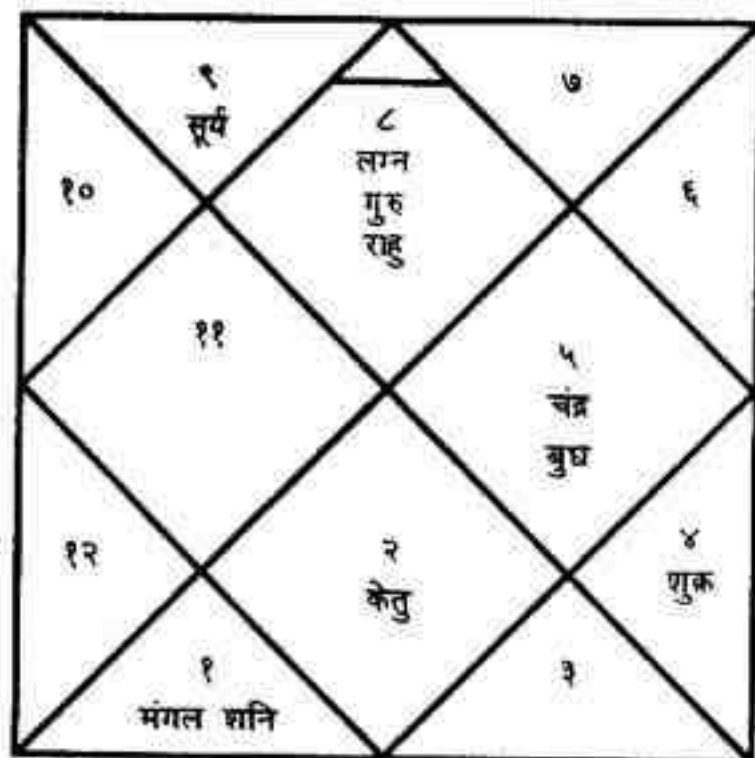
	मंगल शनि	केतु	
			शुक्र
			चंद्र बुध
सूर्य	गुरु लग्न राहु		

सं.-१७ नवांश चार्ट १६ का

३. बच्चे का जन्म द्वितीय-भाव के स्वामी और छठे-भाव में स्थित मंगल की दशा में हुआ। समीपस्थ मंगल से दृष्ट और लग्नस्थ-राहु की अन्तर्दशा थी। द्वितीय-भावस्थ शनि की प्रत्यन्तर-दशा थी।

नोट

किसी भी जन्म-कुण्डली में मंगल की राहु या केतु पर दृष्टि कठिनाइयों का क्षेत्र (कारण) है। इस ढंग से प्रभावित-भाव से यह बात स्पष्ट होगी। यहां यह धनुस्थान-लग्न में है।

यह भी देखना चाहिए कि क्या इस स्थिति की पुनरावृति नवांश कुण्डली में भी हो रहीं है।

पुन: यहां मंगल, लग्न-राहु और द्वितीय-भाव के स्वामी वृहस्पति को दुष्प्रभावित कर रहा है। मंगल छठे-भाव में स्थित होकर नवें-भाव को देख रहा है।

यह ऋणानुबंधन है। बच्चा गूंगा पैदा हुआ। पिता ने उसके इलाज पर बड़ी मात्रा में धन खर्चा किन्तु कोई लाभ नही मिला।

सन्तान और माता-पिता के मध्य ऋणानुबंधन पर मैंने अपनी मां के कहेनुसार कई जन्म-कुण्डलियों पर विस्तार-पूर्वक काम किया।

एक जन्म-कुण्डली के विस्तृत अध्ययन के लिए लगभग दो दिन का समय लग जाता है। इस काम को विभिन्न जन्म-कुण्डलियां (षष्टवर्ग/अष्टवर्गी) तैयार करके करना चाहिए इसमें केवल एक ही बात सिद्ध करनी होती है कि पदमपुराण क्या कहता है। अब पति-पत्नी की जन्म-कुण्डलियों का सम्मिलित अध्ययन कीजिए।

पति	पत्नी
१. पाँचवे-भाव का स्वामी वृहस्पति	१. पाँचवे-भाव का स्वामी वृहस्पति

संक्रमण की स्थिति में है।

२. पाँचवे-भाव का स्वामी पीड़ित (दुष्प्रभाव में) नहीं है।

३. नवें-भाव का स्वामी चन्द्र दसरे-भाव में है और उस पर वृहस्पति की दृष्टि जो सन्तान के साथ आदर्श ऋणानुबंधन पर दिखा रहा है।

पीड़ित है। (दुष्प्रभाव में) है।

२. पाँचवे-भाव का स्वामी पीड़ित (दुष्प्रभाव में) नहीं है।

३. पाँचवे-भाव का स्वामी वृहस्पति उच्च-राशि में चन्द्र के साथ है।

दोनों ही कुण्डलियों में पाँचवे-भाव का स्वामी निर्दोष वृहस्पति दसवें-भाव में है और यह माता-पिता का सौभाग्य था कि वे सभी आठ बच्चों को स्वस्थ्य (सकुशल) देख पाये।

क) उनके जीवन-काल में किसी की मृत्यु नहीं हुई। पिता की मृत्यु १९६१ में हुई और मां की मृत्यु १९८४ में। आठ में से पहला बच्चा १९८८ के बाद मरा। १९२० और १९६० के मध्य बाल-मृत्यु के लिए प्रसिद्ध भारत में एक ही परिवार रहा होगा जिसमें बच्चे की मृत्यु नहीं हुई हो य लूला न हुआ हो। इस मामले

में सभी बच्चे स्वस्थ्य उच्च-शिक्षा प्राप्त और अच्छे पदों पर आसीन रहे।

ख) सभी आठों बच्चों ने अपनी योग्यतानुसार माता-पिता की खूब सेवा की और उनके प्रति आदर सम्मान का भावना रखा।

ग) पाँचवे-भाव के स्वामी के दशम-भाव में होने से सभी बच्चों की अपेक्षाकृत अच्छे सहायक साधन मिले वह भी भारत जैसे देश में जहां रोजगार के अधिक अवसर नहीं थे।

जन्म-समय बढ़ाना

जन्म-समय को बढ़ाकर किसी स्त्री या पुरूष का महान बच्चा जन्म ले सकता है विशेषकर इन दिनों में जबकि (ज़न्म-समय से पहले जन्म-समय निश्चित करना संभव है) मुहूर्त की तरह अकाशीय-ग्रहों की स्थिति अनुकूल हों। सिद्धान्त-रूप में कहा जा सकता है कि ऐसा करना संभव है। व्यावहारिक-रूप में यह एक असफलता है इसे इस रूप में समझा जा सकता है कि मैंनें पचास से अधिक जन्मपत्रियों पर इस रूप में काम किया है। एक उत्तम केस स्टडी देने से पूर्व मैं कहना चाहूँगा कि जो मैंने पाया, वही मैं कह रहा हूँ।

१. जैसा मुहूर्त में होता है वही स्थिति यहां है। सर्वोत्तम मुहूर्त साधने पर भी ज्योतिषी से कुछ गलतियां हो जाती हैं जिनका हो जाना स्वाभाविक ही है। उत्तम मुहूर्त साधने पर भी हम बरवादी देखते हैं, विशेषकर विवाह के और रोजगार के मामलों में।

२. बहुत प्रतिभाशाली बच्चों का जन्म तभी हो सकता है जबकि माता-पिता की जन्म-कुण्डलियों में ऐसे बच्चों के जन्म होने की संभावना हो।

३. मैंने बच्चों के जन्म के लिए सर्जिकल-ऑपरेशन (सीजेरियन) का कई लोगों को समय दिया। १० वर्ष के बाद ऐसे बच्चे औसत बच्चों से कुछ ही बेहतर सिद्ध हुए। मैंने ऐसे दूसरे बच्चों के बारे में नहीं जान सका क्योंकि भारत-सरकार का एक अधिकारी होने के नाते पूरी सर्विस के दौरान मुझे एक-स्थान से दूसरे-स्थान पर स्थानान्तरित किया जाता रहा। अब यह प्रबल-विरोधाभास का विषय बन गया है। अत: मुझे इस विषय में रूचि होने लगी है अन्यथा न तो मुझे इस विषय में कोई प्रोत्साहन ही मिला न इस विषय में विशेष रूचि ही हुई।

४. कई मामलों में जन्म के लिए निश्चित किये गये समय पर प्रसव (बच्चे का जन्म) नहीं हो पाया क्योंकि आपरिहार्य कारणों से विलम्ब हो गया। ऐसी स्थिति में कुछ मामलों में कुछ मिनटों की और कुछ मामलों में कई घंटों का अन्तर आ गया। या तो जन्म-कुण्डली ही बदल गई या कई महत्वपूर्ण तथ्य बदल गए।

५. इस काम को करने के लिए माता-पिता दोनों की जन्म-कुण्डली की विस्तृत जाँच होनी चाहिए। प्रतिभाशाली बच्चों के जन्म के लिए दोनों जन्म-कुण्डलियों में समान्य समय पाना देखना कम ही संभव है। ऐस्ट्रो-जेनेटिक्स ऐसा क्षेत्र है जिसमें डॉक्टर-ज्येतिषियों को महान खोज के लिए अपने औषधि-विज्ञान में बहुत मेहनत करनी चाहिए।

जिसकी रूप-रेखा मैं यहां दे रहा हूँ उस विधि को अपनाने से मुझे अच्छे और ठीक परिणाम मिले है। परन्तु इस रूप-रेखा से पहले महान हिन्दू परम्परा का स्मरण कर देना आवश्यक है।

क) अच्छी सन्तान के लिए आध्यात्मिक तपस्या करना।

ख) बच्चे के जन्म के लिए ज्योतिषीय दृष्टि से पवित्र समय में संभोग करना। मैंने इस विषय पर काम नहीं किया परन्तु जन्मपूर्व कुण्डली या गर्भाधान लग्न भारतीय ज्योतिष का सर्वाधिक उपेक्षित भाग है। एक ज्योतिषी स्वयं के बच्चे के जन्म-काल को अपनी सुविधा (इच्छा) के अनुसार बढ़ाने के उपाय में लगा रहा। यह आज के समय का सबसे बड़ा धोखा (भ्रम) है। फिर भी अन्य ज्योतिषियों को शास्त्रीय-विधि से इस विषय पर काम करना चाहिए।

ग) इसका परिणाम यह है कि बच्चे का जन्म उत्तम ग्रह स्थिति में होगा। जिन माता-पिताओं के परिवारों में प्रतिभाशाली बच्चे है उन्हें यह याद रखना आवश्यक है कि यह उनके पूर्व-जन्मों के आध्यात्मिक-गुणों का फल है जिसने उन्हें ऐसा बच्चा दिया है जिस पर वे गर्व कर रहे हैं। उनकी जन्म-कुण्डलियां हमेशा यह सिद्ध करेगी।

बच्चों के जन्म की एस्ट्रो-जेनेटिक अध्ययन की प्रक्रिया - *एक अनोखा व्यक्ति अध्ययन*

१९९५ में जब मै इस विषय के बारे में लिख रहा हूँ उस बात को बीते इस समय २२ वर्ष बीत चुके हैं जिसे मैं अपना महत्वपूर्ण भविष्यवाणी मानता हूँ।

पृष्टभूमि

अपनी सरकारी-नौकरी के दौरान जब मेरी नियुक्ति पटना शहर में हुई तो मेरा एक डॉक्टर मित्र तथा दूसरे लोग ज्योतिष पर चर्चा करते थे। यह १९७२ की बात है। एक बार उस डाक्टर ने मेरे से पूछा कि क्या वह उच्च-अध्ययन के लिए ब्रिटेन जाने का अवसर पायेगा? मैंने उसे बताया कि उसे जल्दी ही यह अवसर मिलेगा।

एक दिन डॉक्टर ने बताया कि उसकी पत्नी गर्भवती है गर्भस्थ-शिशु लड़का होगा या लड़की? मैंने उससे कहा ऐसी भविष्यवाणियां मैं विश्वासपूर्वक नहीं कर सकता फिर भी यह कहने का साहस कर दिया कि पुत्र होगा।

तब एक दिन डॉक्टर ने गर्भस्थ-शिशु के जन्म हेतु मुझसे सीजेरियन आपरेशन का ऐसा मुहूर्त निकालने के लिए कहा जिसमें लग्न और ग्रह की स्थिति अनुकूल हो।

लड़का हो या लड़की मैंने अनुकूल लग्न एवं ग्रह-स्थिति वाली जन्मकुण्डली बनाकर उसे सीजेरियन-आपरेशन का मुहूर्त बता दिया।

४ मंगल | ३ लग्न बुध गुरु | २ शनि सूर्य | ५ राहु | १ शुक्र | ६ | १२ चंद्र | ७ | ९ | ११ केतु | ८ | १०

चंद्र	शुक्र	शनि सूर्य	लग्न बुध गुरु
केतु	संख्या-२० ८ जून १९४२		मंगल
			राहु

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
१५° ४४"	२३° ३४"	१८°५७"	०३° १०"	००° ४३"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
०६° २४"	१३°५१"	१०° ४९"	१५° २५"	१५° २५"

७ | ६ लग्न | ५ | ८ राहु | ४ गुरु शुक्र | ९ | ३ बुध | १० चंद्र मंगल शनि | १२ | २ केतु | ११ | १ सूर्य

	सूर्य	केतु	बुध
	दृष्टांत-२१ सप्तांश		गुरु शुक्र
चंद्र मंगल शनि			
	राहु		लग्न

क) बच्चे के जन्म के बाद वह पत्नी-बच्चे सहित विदेश जायेगा।

ख) बच्चे की विदेश में अच्छी-शिक्षा होगी। पहले डॉक्टर की जन्म-कुण्डली देखिए।

जन्मकुण्डली में-

क) पाँचवे-भाव पर वृहस्पति, शुक्र और मंगल की दृष्टि है।

ख) पाँचवे-भाव का स्वामी शुक्र ग्यारहवें भाव में है और अपने घर (भाव) को देख रहा है।

ग) जैमिनी का पुत्र-कारक वृहस्पति, दाराकारक-बुध के साथ मिलकर राजयोग बना रहा है और दशम-भाव स्थित अमात्यकारक-चन्द्र द्वारा देखा जा रहा है।

घ) अन्त में छठे-भाव के स्वामी मंगल को देखिए जो पाँचवे-भाव पर दृष्टि रखने से ऋणानुबंधन दिखा रहा है।

अब सप्तांश देखिए

१. पाँचवे-भाव में उच्च-राशि का मंगल शनि और चन्द्र के साथ है और ग्यारहवें भाव में स्थित उच्च-राशि के बृहस्पति तथा शुक्र द्वारा देखा जा रहा है।
२. जन्म-कुण्डली में छठे-भाव का स्वामी पाँचवे-भाव को देख रहा है और सप्तांश के पाँचवे-भाव में भी ऋणानुबंधन की पुष्टि होती है।
३. ऋणानुबंधन का लाभदायक पहलू जो मंगल के शनि के साथ होने से और सप्तांश में ऋणानुबंधन दिखाने वाला ग्रह ऐसे बच्चे को जन्म देता है तो माता-पिता के प्रति अपने व्यक्तित्व का निर्वाह कर्तव्यपरायणता-पूर्वक और आध्यात्मिक-उत्साह के साथ करेगा।

वह शुक्र की दशा के मुख्य-भाग से गुजर रहा था जो कि पाँचवे-भाव का स्वामी है और पाँचवे-भाव पर दृष्टि रखने वाले बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही थी और प्रत्यान्तर-दशा नवम भावस्थ केतु की चल रही थी जो विदेश-यात्रा करवाता है। शुक्र जो कि बारहवें-भाव का स्वामी है वह भी विदेश-यात्रा करवाने वाला विश्वसनीय ग्रह है।

सीजेरियन-ऑपरेशन की तारीख १४ दिसम्बर १९७३ निश्चित की गई। यह मेरी ज्योतिषीय सलाह थी अब रही जन्म-समय की बात?

एक ज्योतिषी को याद रखना चाहिए मुहूर्त की तरह जन्म-समय में भी ग्रहों की उत्तम-स्थिति नहीं मिलती। उपलब्ध-स्थिति में ग्रहों का श्रेष्टतम ताल-मेल चुनना महत्वपूर्ण तथ्य मुहूर्त की तरह यहां भी लग्न ही सर्वाधिक होता है।

इस लिए मैं १४ दिसम्बर १९७३ के ग्रह बिना लग्न चुने चार्ट में रख रहा हूँ। इनकी स्थिति इस प्रकार थी-

अनुकूल-तथ्य थे

१. तीन शुभ-ग्रह बृहस्पति, शुक्र और चन्द्र केन्द्र में थे।
२. बुध वर्गोत्तम में था।
३. मंगल अपने घर(भाव) मेष में था जो उसका मूलत्रिकोण है।
४. चन्द्र बुध के नक्षत्र में था जो वर्गोत्तम में था।

विचारणीय तथ्य

१. यह ग्रह-स्थिति बच्चे को जल्दी ही विदेश-यात्रा में सहायता करेगा।

२. यह ग्रह-स्थिति बच्चे को शिक्षा के लिए बहुत अच्छा समय देगा।

३. यह ग्रह-स्थिति पिता के लिए सौभाग्यशाली सिद्ध होगी और स्वयं की विदेश-यात्रा के लिए भी अच्छी रहेगी।

४. यह ग्रह-स्थिति बच्चे के स्वास्थ्य के लिए अच्छी होगी। मकर-लग्न कैसा रहेगा? और यह लग्न सुबह नौ बजे के लगभग उदय होगा जो किसी भी अस्पताल में ऑपरेशन के लिए अनुकूल रहेगा।

अगला प्रश्न होगा कि मकर-लग्न के अन्तर्गत कौन सा समय ठीक रहेगा। तब मै बिना लग्न साधे नवांश और पुन: बिना लग्न साधे द्वादशांश तैयार किया।

मैंने निश्चय किया कि नवांश-लग्न मेष होगा और द्वादशांश-लग्न मिथुन होना चाहिए। यह स्थिति ९:३० प्रात: संभव होगी।

मैंने (सीजेरियन-ऑपरेशन के लिए) यही समय निश्चित किया और जन्म से पूर्व अग्रिम-भविष्यवाणियां की जिन्हे मै पहले दे चुका हूँ।

बच्चे का जन्म बुध, राहु, शुक्र की दशा, अन्तर्दशा प्रत्यन्तर्दशा में होगा।

अन्य विचारणीय बातें जो मुझे उल्लेखनीय लगी इस प्रकार थी-

क) वर्गोत्तम के बुध की दशा में बच्चे का जन्म होगा बुध ग्यारहवें-भाव में है जो पिता के लिए लाभदायक होगा क्योंकि छठे-भाव का स्वामी होने के साथ-साथ नवें-भाव का स्वामी है।

ख) बारहवें-भाव में स्थित राहु विदेश-यात्रा को सुनिश्चित करता है।

ग) बारहवें-भाव का स्वामी बृहस्पति पाँचवे-भाव के स्वामी शुक्र के साथ है जो शिक्षा के विदेश-यात्रा सुनिश्चत करता है।

घ) नवांश भी साथ-साथ शुभ फल देगा।

१. यहाँ प्रथम-भाव के स्वामी और दूसरे-भाव के स्वामी का परस्पर राशि-पतिवर्तन

शुभ है।

२. बुध वर्गोत्तम में है।

३. पाँचवे-भाव का स्वामी सूर्य का बारहवें-भाव में होना विदेश में शिक्षा प्राप्ति दिखाता है।

४. नवांश में बृहस्पति चन्द्र को देख रहा है जबकि जन्म-कुण्डली में गजकेसरी-योग बनता है।

द्वादशांश की स्थिति

१. बुध की अभुक्त-दशा का शेष लगभग पाँच वर्ष और सात महीने होगा।

२. केतु-दशा लगभग १९८६ तक होगी उस समय बच्चे की आयु तेरह वर्ष की होगी।

३. तब जीवन (व्यवसाय) बनने का समय आता है जो कि बच्चों से अत्यधिक प्यार करने वाले माता-पिता के लिए परीक्षा का समय होता है।

क्या घटित हुआ?

मेरे पास कोई दूसरा साधन (प्रोत्साहक) नहीं था। मेरा पटना से स्थानान्तरण हो गया और उसके साथ (डॉक्टर के साथ) सम्पर्क टूट गया। परन्तु भारतीय परम्परावादी और आध्यात्मिक-भावना के होने के कारण मुझे डॉक्टर और उसका परिवार याद रहा। हमारा संबंध परस्परिक सहयोग और आदर का था।
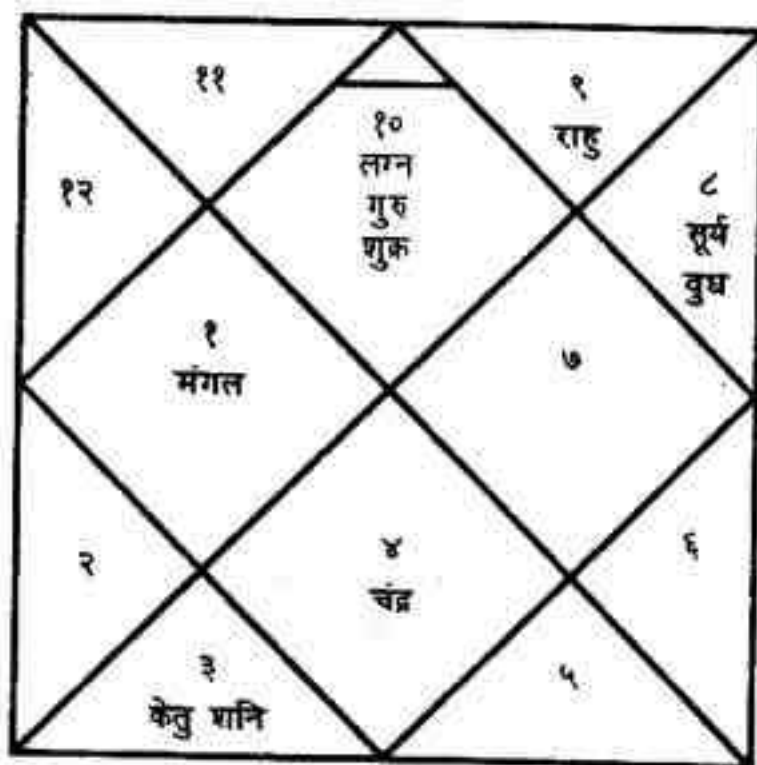
	मंगल		केतु शनि
	दृष्टांत-२३ १४ दिसम्बर १९७३ ०९:३० प्रात: २५ उ. ३६ ८५ पूर्व ०८		चंद्र
लग्न गुरु शुक्र			
राहु	सूर्य बुध		

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
१२° ३४"	२८° ३१"	२५° ३६"	०३° ५१"	१४°१८"
गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
१७°१९"	१०°५०"	०८° ३०"	०५° २१"	०५° २१"

भाव	ग्रह
१	लग्न शुक्र
२	मंगल राहु
३	गुरु
४	
५	
६	
७	
८	बुध केतु
९	शनि
१०	
११	चंद्र
१२	सूर्य

सूर्य	लग्न शुक्र	मगल राहु	गु.
चंद्र	दृष्टांत-२४ केस नं. २३ का नवांश		
शनि	बुध केतु		

भाव	ग्रह
३	लग्न
४	गुरु
५	केतु
६	शनि
७	सूर्य
८	
९	
१०	
११	राहु
१२	
१	बुध
२	मंगल चंद्र शुक्र

	बुध	मंगल चंद्र शुक्र	लग्न
राहु	दृष्टांत-२५ केस २३ का द्वादशांश		गुरु
			केतु
		सूर्य	शनि

१९९२ में किसी समय डॉक्टर भारत आया और मेरा पता लगाया और मुझे बताया कि-

१. उनका लड़का पढ़ाई में बहुत अच्छा चल रहा है।
२. पुत्र के जन्म के दो वर्ष के अन्दर वह स्वयं ९ दिसम्बर १९७५ को ब्रिटेन चला गया।
३. जैसा कि मैंने भविष्यवाणी भी की थी उसने १९९० में "रायल कालेज ऑफ सर्जन्स" कोर्स में फेलोशिप कर ली।
४. नेत्र-विशेषज्ञ के रूप में उसने एफ.सी. आपथेलमोलॉजी नामक दूसरी उच्च डिग्री भी प्राप्त कर ली।

फिर वह मुझे एक वर्ष बाद मिला और बताया कि उसके पुत्र ने इग्लैंड में एक संयुक्त परीक्षा प्रथम-श्रेणी में प्रथम-स्थान पाकर उत्तीर्ण कर ली है और पाँच विश्व-विद्यालय उसे अग्रिम पढ़ाई के लिए प्रवेश देने को तैयार हैं। उसका पुत्र न केवल उस वर्ष

का ही विशेष योग्यता वाला पुत्र था अपितु उसने कई पुराने शैक्षिक रिकॉर्ड को भी तोड़ा था।

बच्चे के जन्म से पूर्व १९७३ में दी गई भविष्यवाणियों से और बीस वर्ष १९९३ में पाये गये विवरण से मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई।

केवल यह एक केस है जिसके २० वर्षों के परिणामों को मै देख सका। मुझे इस बात की जानकारी है कि मेरी -

१. यही व्यक्तिगत अध्ययन था जिसकी पूरी जानकारी मैं पा सका।
२. जन्म-समय चुने जाने वाला एक मात्र यही एस्ट्रो-जैनिटिकल केस था । किन्तु पिता की जन्म-कुण्डली की जाँच के बाद जिसमें प्रतिभाशाली बच्चों का जन्म लेना पहले ही सुनिश्चित था। इसका अर्थ यह है कि यदि मैं ऐसा जन्म-समय नहीं भी चुनता तब भी उसका पुत्र वैसा ही होता जैसा कि वह है।
३. अन्य कुछ केसों में जहां ज्योतिषियों द्वारा पुष्टि और डॉक्टरों द्वारा निश्चित समय पर बच्चे का जन्म हुआ उसके परिणाम चमत्कारी नहीं हुए। ऐसे मामलों में माता-पिता की जन्म-कुण्डलियां अधिक सहायक सिद्ध नहीं हुई। अत्यधिक प्रतिभाशाली बच्चे के होने की उसमें विश्वसनीयता नहीं थी। जन्म-समय निश्चित करने से केवल माता-पिता की जन्म-कुण्डलियों की कमी की जानकारी मिलना था।

इस प्रश्न के संबंध में मेरा स्पष्ट उत्तर है *- भले ही ऑपरेशन से जन्म-समय थोड़ा सा आगे-पीछे कर दिया जाय, परन्तु भाग्य बिल्कुल नही बदलता। यह सब मामूली संशोधन हैं जो कि क्रियमाण-कर्म के क्षेत्र में आता है।*

समयचक्र

बरबादी बरबादी नहीं है, सौभाग्य सौभाग्य नहीं है। बरबादी भगवान विष्णु को भूल जाना है। सर्वोत्तम पवित्रता भगवान नारायण को स्मरण करना है

(विष्णुपुराण)

अच्छा समय या बुरा समय क्या है! इसकी परिभाषा आपकी व्यक्तिगत हो सकती है। कर्म का नाटक (परदा) खुलता रहता है, दु:खान्त-सुखान्त दृष्य तेजी से आते जाते रहते हैं। समय दर्पण की तरह आपकी आखों के सामने आपके अच्छे-बुरे कर्म दिखाता रहता है।

कुछ पाने पर अभिमान करना, असफल होने पर निराश न होना आध्यात्मिक संतुलन की निशानी है।

फिर भी ज्योतिष महादशा-पद्धति से दिखाता है कि किस प्रकार व्यक्ति मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक रूप से भावों की अभिव्यक्ति करता है।

मनुष्य-रूप में जन्म लेने के कारण आध्यात्मिक उजाले की तरफ झुकाव होना चाहिए न की पदार्थों और सनक की उपलब्धियों पर, जबकि उच्च तकनीक के इस युग में प्रशंसा (यश) पाने के लिए बहुत सी असंगत युक्तियां सूझती है।

संतुलित बुद्धि का व्यक्ति कौन है?

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केनचित् ।
अनिकेत: स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नर: ।।

(गीता अध्याय १२ श्लोक १९)

जिसके लिए निन्दा और स्तुति समान है, जो सन्तुष्ट है, जिसका रहने को कोई घर नहीं है (भौतिक इच्छाएं नहीं है) जो स्थिर बुद्धि है ऐसा भक्त मुझे प्रिय है।

यह उन्नति की दुर्लभ-स्थिति है। इसको कोई बुद्धिमतापूर्ण आत्मः निरीक्षण से या दैवी-बुद्धि संपन्न लोगें की संगति से इस स्थिति में पहुँच सकता है परन्तु मुख्यतया आध्यात्मिक अभ्यास से इस स्थिति में पहुँचा जा सकता है।

समय ईश्वर है जो कभी बहुत निर्दय हो जाता है और कभी अत्यधिक दयालु बनकर प्रकट होता है। वह समय हिन्दू-ज्योतिष बताता है जिसमे कई प्रकार की दशा-पद्धतियां हैं।

पूर्व (पृष्टभूमि की) सूचना

उसने मेरे बारे में सुना था और मेरे एक वकील मित्र के माध्यम से मुझसे मिलना चाहता था। जब हमारी मुलाकात का समय निश्चत हो गया तब वह मेरे निवास-स्थान पर आया। उसके बारें में जो एक मात्र पूर्व-सूचना मुझे मिली वह यह थी कि वह भारत के उच्चतम-न्यायालय के जज जैसे ऊँचे पद से सेवानिवृत हुआ था।

उसने मुझे दो जन्म-कुण्डलियां दिखाई जिसमें से एक का लग्न वृष था और दूसरे का मिथुन। क्योंकि मुझे मालूम हो गया था कि वह सुप्रीम-कोर्ट के जज के पद से सेवानिवृत हुए थे, अतः मुझे यह बताने में कोई झिझक नहीं हुई की उनका वृष लग्न और न्याय के प्रतीक सभी ग्रह नवें-भाव में होने चहिएं।
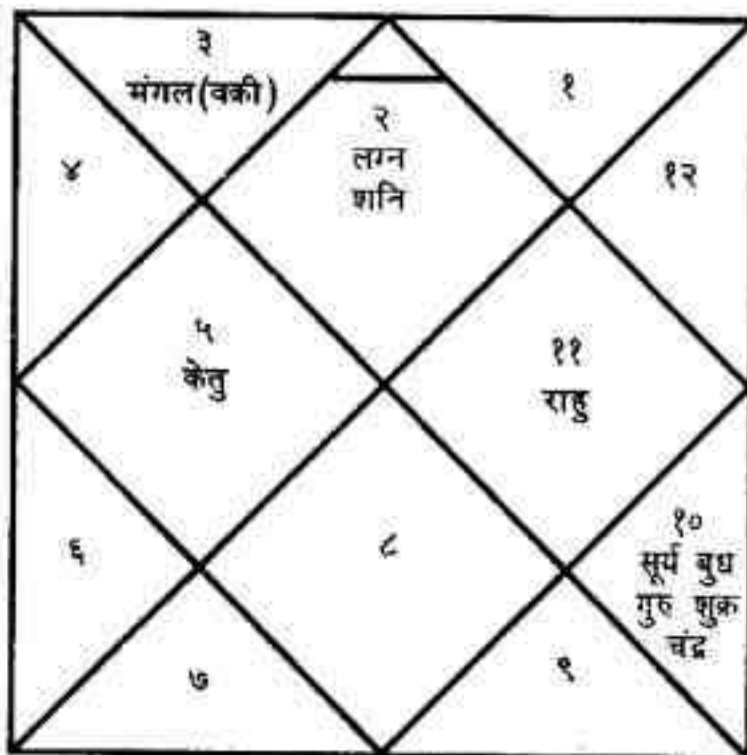
		लग्न शनि	मंगल(वक्री)
राहु	दृष्टांत-२६ भारत के उच्चतमन्यायालय के अवकाश प्राप्त जज		
सूर्य बुध गुरु शुक्र चंद्र	२५ जनवरी १९१४ ०१:४५ दोपहर अक्षांश-३३ उ. ११ देशान्तर-०७३ पूर्व ४६		केतु

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
१५°२९"	११°५३"	००°५७"	१५°१८"	११°५२"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
०८°१३"	०७° ४०"	१०°५०"	२२°५१"	२२°५१"

	सूर्य बुध गुरु शुक्र	केतु	
	दृष्टांत-२७ केस २७ का चतुर्थांश		
चंद्र			
मंगल	लग्न राहु शनि		

लेकिन तब मैंने कुछ संशोधन करके जन्म-पत्री बनाई जिसके आधार पर जो भविष्यवाणियां की वे निम्नलिखित हैं। वे भविष्यवाणियां सही निकली। लेकिन यहां चर्चा का विषय समयचक्र है न कि वे भविष्यवाणियां।

यह सब करने के लिए मैंने उनसे अतीत से संबंधित कुछ प्रश्न पुछे विशेषकर परेशान करने वाली (क्रूशियल) राहु-दशा के बारे में।

पहले सभी नकारात्मक लक्षणों पर ध्यान दीजिए

क) बुध पूरी तरह क्षीण है।

ख) एक साथ (पास-पास) होने से गुरू-शुक्र भी क्षीण हैं।

ग) यह जन्म अमावस्या को हुआ था।

घ) द्वितीय-भाव में स्थित मंगल २२वें द्रेष्कोण को पूर्ण-दृष्टि से देख रहा है तथा नवें-भाव स्थित सभी ग्रहों को देख रहा है।

ङ) दसवें-भाव में स्थित राहु को शनि देख रहा है। अत: व्यवसाय पहले वकील के रूप में और तब जज के रूप में बनने के आसार है। मैंने उनके व्यवसाय के बारे में जो कुछ कहा उन्होंने सहमति जताई।

तब मैं अत्यन्त-महत्वपूर्ण प्रश्न पर आया। राहु-शुक्र की दशा पर ध्यान एकाग्र करें।

अब चतुर्थांश देखिए

राहु-दशा २० फरवरी १९३५ से २० फरवरी १९५३ तक और राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा १९४५ से १९४९ तक रही। नवें-भाव पर मंगल की दृष्टि का कुप्रभाव महत्वपूर्ण है। मुझे मालूम था कि वह उस प्रदेश के हैं जहां १९४७ के साम्प्रदायिक-दंगों में सर्वाधिक रक्तपात हुआ। उन्होंने और उनके परिवार ने उस प्रदेश से भागने की कोशिश जरूर की होगी। किन्तु यह राहु-शुक्र की दशा का समय था और नवें-भाव

का स्वामी वक्री होकर लग्न में भी है।

चतुर्थांश में लग्न में राहु द्वितीय-भाव में मंगल और छठे-भाव में शुक्र का होना बहुत गूढ़ अर्थ दिखाता है। मैंने दूसरे वर्गों पर और तब जैमिनी-दशा पर भी सार (भाव) निकालने का प्रयास किया। बहुत रक्तपात का समय दूसरों ने जैसा देखा उससे भी कहीं अधिक रक्तपात का समय मैंने उनसे पूछा।

अक्टूबर १९४७ के लगभग माता-पिता और सभी भाई-बहन मुस्लिम भीड़ द्वारा काट दिये गये, वे बच निकले और यह सब देखने के लिए जीवित रहे।

मुझे अमावस्य के समय जन्म का अर्थ याद आया, साथ ही ग्रहों के क्षीण (ज्वलनशील) होने और ग्रहों के आपसी युद्ध का अर्थ भी समझ आया। संभवत: उसके जन्म के तुरन्त बाद विश्व-युद्ध में सभी देश कूद पड़े थे। यह सब सर्वाधिक प्रतिकूल समय में घटित हुआ।

तब शनि की दशा-समय में वे भारत के सर्वोच्च-न्यायधीश के पद पर पहुँच गये।

पाँचवे, नवें और दसवें-भाव के स्वामियों के एक साथ नवें-भाव में होने से कई राजयोग बने और उन्होंने योगकारक-शनि की दशा में अपना उत्तम फल दिया।

पाँचवे और नवें-भाव के स्वामियों का एक-दूसरे के भाव में होने से सुपरिणाम भी उनको मिले।

एक ऐसा भी समय था जब उनका भाग्य बहुत निर्दयी बना और फिर वह समय भी आ गया जब वे भारत के सर्वोच्च-न्ययधीश के पद पर आसीन हुए।

भाग्य उठाता है और......?

वे मुझे १९८५ में मिले और मुझे अपनी जन्म-कुण्डली दिखाई और मुझसे पूछा कि वह कभी भारत के सर्वोच्च-न्यालय में न्यायाधीश का पद पाने की आशा कर सकते हैं?

मैंने बीती हुई कुछ घटनाओं की पुष्टि की। एक मुख्य बात है कि वे १९८१ में राहु-शुक्र की दशा में उच्च-न्यायालय के न्यायधीश बने। पिछले केस से तुलना करने पर विरोधाभास स्पष्ट दिखाई देता है। नवें भाव के स्वामी शुक्र ने उन्हें इच्छित पद दे दिया प्रतिष्ठा और पहचान के प्रतीक ग्यारहवें-भाव का स्वामी वृहस्पति की दशा में उन्होंने इस पद की आशा की। ग्यारहवें-भाव में स्थित चन्द्र वृहस्पति के साथ अच्छा गजकेसरी-योग बना रहा था १९९१ में किसी समय उनके नाम की चर्चा हुई और वे उच्चतम-न्यायालय के न्यायाधीश बने।

वे दिल्ली में थे और मुझसे मिलना चाहा। इसकी तुरन्त आवश्यकता तो नहीं थी फिर भी उन्होंने मिलना उचित समझा परन्तु हमारी भेंट कभी नहीं हो सकी।

मैंने समाचार-पत्र में पढ़ा कि २९ मई १९९२ एक भयानक दुर्घटना में उनकी

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
२१°५६"	०७° ३२"	१७°१२"	१७° ४७"	०१° ००"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
१६° ३२"	२२°१०"	१६°५१"	०३° १६"	०३° १६"

मृत्यु हो गयी। मैंने उनकी जन्म-पत्री ढूंढ निकाली और मृत्योपरान्त उनके ग्रहों पर विचार किया।

१. लग्न का स्वामी बारहवें-भाव में है और उस पर वृहस्पति की दृष्टि है।
२. राहु लग्न में है और उस पर मंगल की दृष्टि है। इस पर विचार कीजिए।
३. आठवें-भाव में स्थिति वृहस्पति की महादशा चल रही थी।
४. बारहवें-भाव में स्थित शनि की अन्तर्दशा चल रही थी। और वाहन के प्रतीक चतुर्थ-भाव पर मंगल की दृष्टि थी।

दशम-भाव में स्थित मंगल में निर्देशन की शक्ति थी किन्तु मंगल के लग्न में स्थित राहु पर भी दृष्टि है। मंगल को दोनों कार्य करने होंगे ऊपर उठाना और फिर...?

षोडशांश

१. वृहस्पति छठे-भाव का स्वामी है और उस पर मंगल की दृष्टि है।
२. शनि छठे-भाव में है जिस पर मंगल की दृष्टि है।
३. बुध यात्रा के तीसरे-भाव का स्वामी होकर छठे-भाव के स्वामी के साथ है और मंगल की उस पर दृष्टि है।

विश्लेषण

१. द्वितीय-भाव स्थित मंगल २२वें द्रेष्कोण को देख रहा था।
२. शनि की साढ़े-साती चल रही थी।

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
१८°१४"	१४° ३०"	०९° ०२"	२४° ०६"	११° ४०"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
१२°०५"	१०° २१"	२४° ४४"	०७° ०४"	०७° ०४"

यह पहले केस की विपरीत स्थिति थी। पहले व्यक्ति ने पीड़ा-परेशानी झेली और बाद में उतनी ही उन्नति की जितनी इस व्यक्ति ने और धन का उपभोग करने के लिए लम्बे समय तक जिए और पुन: कई जाँच-कमीशनों के चेयरमैन का कार्य किया और दूसरे व्यक्ति ने जीवन का पूरा आनंद लिया। शायद ही कभी पीड़ा-परेशानी झेली हो। उसके पास में विदेशी-कार थी जिसे वह तीव्र-गति से चलाता था।

मै किसी को भी बधाई नहीं देता जिस स्थिति में पड़कर मुझे यह करना पड़ा उसे मैंने पूरी लग्न से किया। मै गीता के पाठों को याद करता हूँ

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
०४° २४"	२९° ३०"	०२° २६"	०८° २६"	२५°५०"
गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
१६°११"	१३° २१"	२२° २१"	१४° ३१"	१४° ३१"

ए.के	ए.मके	वी.के	एम.के	पी.के	जी.के	डी.के
सूर्य	बुध	शनि	गुरु	शुक्र	मंगल	चंद्र

एक व्यक्ति का प्यार दूसरे व्यक्ति का भाग्य

कैसे और कब ईश्वर भाग्य को बदलता है कैसे एक रूखे-व्यवहार वाला व्यक्ति ब्रिटेन का राजा बना, उसे किन समस्याओं का सामना करना पड़ा उसके राज्य में क्या घटित हुआ यह सब इंग्लैंड के राजा जॉर्ज की जन्म-पत्री से भली-भाँति प्रकट होता है।

ध्यान दीजिए

१. वर्गोत्तम राहु-केतु।

२. चन्द्र अत्यधिक-क्षीण (दुर्बल) है और दसवें-भाव का स्वामी है।

३. जन्म-कुण्डली में उच्च-राशि का शनि नवांश में क्षीण हो गया है।

लग्न के ये ऑकड़े रमन की उल्लेखनीय जन्म-कुण्डली से लिए गये हैं परन्तु मै लाहिडी के (चित्रा-पक्ष) अयनांश का उपयोग कर रहा हूँ।

पिता के बजाय भाई से उसने राज्य कैसे लिया इस पर डॉ. रमन की व्याख्या इस प्रकार है -

राजनीति-संबंधी ग्रह चन्द्र लग्न से दसवें-भाव में भ्रातृ-कारक मंगल के साथ है जबकि दसवें-भाव के स्वामी चन्द्र को मंगल से संबंधित तीसरे-भाव का स्वामी उच्चराशि का बृहस्पति देख रहा है।
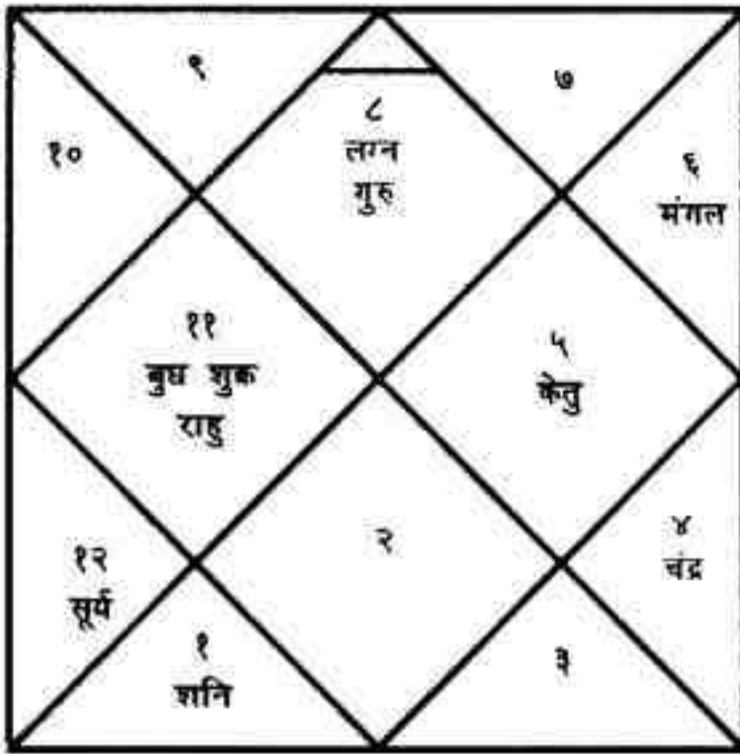
सूर्य	शनि		
बुध शुक्र राहु	संख्या-३२ नवांश क्षीण शनि नहीं बल्कि दोनों जन्मकुण्डलियों के चौथे भाव का स्वामी और नवांश		चंद्र
			केतु
	लग्न गुरु		मंगल

केवल जन्म-कुण्डली पर आधारित रमन का तर्क इस मुख्य घटना का विश्लेषण करने में अधिक संतोष-जनक नहीं है। फिर भी उनके कहने का अभिप्राय -

क) चन्द्र से दसवें-भाव का स्वामी सूर्य है जो कि लग्न से तीसरे-भाव का स्वामी और भाई के प्रतिनिधि मंगल के साथ है।

ख) चन्द्र से दसवें-भाव का स्वामी स्वयं चन्द्र है जो कि लग्न से तीसरे भाव के स्वामी वृहस्पति द्वारा देखा जा रहा है।

ग) पुन: चन्द्र भाई के प्रतीक मंगल के साथ है।

नोट

१. रमन के अयनांश के अनुसार सूर्य ००-५७ अंश पर धनु राशि में होना चाहिए। इसलिए सूर्य के मंगल के साथ होने का मुख्य तर्क गलत हो जाता है विशेषकर जब सूर्य और मंगल के बीच की दूरी २० अंश से अधिक है और वे दो विभिन्न राशियों में है।

२. यहां ग्यारहवें-भाव के स्वामी की चर्चा होनी चाहिए न कि तीसरे-भाव के स्वामी की क्योंकि उसने बड़े भाई से राज्य पाया था।

३. दूसरे-भाव में दूसरे-भाव के स्वामी के साथ नौवें, दसवें और ग्यारहवें-भाव के स्वामी है जो बड़े भाई से लाभ दिखाता है इस महत्वपूर्ण तथ्य को डॉ. रमन भूल गए।

इसलिए यह व्याख्या घुमावदार है। एक सीधी और सरल बात आवश्य देखी जानी चाहिए। यह कार्य षष्टवर्गी (अष्टवर्गी) जन्म-कुण्डलियों के बिना नहीं किया जा सकता। डॉ. रमन ने अपने पूरे जीवन में यह काम कभी नहीं किया। यहां वर्गीकृत सारणियों का उपयोग किया जा रहा है।

नोट

केतु, राहु, मंगल की स्थिति (घटनाओं में जिनकी व्याख्या की गई है)

१. यहां ग्यारहवें-भाव का स्वामी सूर्य बुध के साथ है बारहवें-भाव का स्वामी दसवें-भाव में है जो बड़े को हानि दिखाता है।

चंद्र गुरु	मंगल		लग्न शनि
बुध	संख्या-३६ षष्ट्यांश १/६० वर्ग		राहु
केतु			
शुक्र		सूर्य	

२. आठवे-भाव का स्वामी शुक्र ग्यारहवें-भाव को देख रहा है।

३. शनि ग्यारहवें-भाव को देख रहा है।

४. फिर भी क्योंकि शुक्र ग्यारहवें-भाव को देख रहा है और वृहस्पति ग्यारहवें-भाव के स्वामी को देख रहा है, सूर्य दसवें-भाव में है इसलिए ड्यूक इंग्लैंड का राजा बन गया। उसके बाद सामान्य-स्त्री के प्रति प्यार के कारण उसे गद्दी छोड़नी पड़ी।

इस लिए बुध की दशा में होने और राहु से १/७ धूरी पर होने से उसकी पुत्री का जन्म हुआ जो अब इंग्लैंड की रानी है।

दशमांश सम्पूर्ण घटनाक्रम को पूर्ण रूप से दिखाता है।

१. छठे-भाव का स्वामी मंगल ग्यारहवें-भाव में है।

२. पाँचवे-भाव का स्वामी बुध क्षीण बली होकर पंचम-भाव में है।

३. ग्यारहवें-भाव का स्वामी वृहस्पति (भावुक) ४/८ अंश से सातवें-भाव के स्वामी शुक्र को देख रहा है जिसके कारण बड़े भाई का प्यार जनता में विवाद का कारण बना।

४. केतु और राहु २/८ धूरी में बैठे हैं। केतु पर मगल की दृष्टि है दो हानिकारक-ग्रह द्वितीय-भाव में या एक हानिकारक-ग्रह द्वितीय-भाव में है जिसके द्वारा देखा जा रहा है जो कि धनहानि सुपरिचित संयुति है।

ब्रिटिश-शासन की परम्पराओं के अनुसार राज-परिवार में हुए जन्मों को बहुत घ्यान से लिखा जाता है किसी भी जन्म-कुण्डली में षष्ठांश पर विचार करना जोखिम भरा काम है। किन्तु यह भी किया जा सकता है क्योंकि जन्म-समय पूर्णरूपेण सही लिखा होता है।

यहाँ दो लक्षणों पर ध्यान दीजिए

१. दसवें-भाव में उत्तम गजकेसरी-योग

२. लग्न और नवें-भाव के स्वामी का परस्पर एक दूसरे की राशि में होना।

घटनाएं

१. उसका जन्म वृहस्पति, राहु, बुध की दशा में हुआ था। उच्चराशि का वृहस्पति दसवें-भाव में अन्तर्दशा में राहु जो पाँचवे-भाव में था प्रत्यान्तर-दशा बुध की जो जन्म में (लग्न में) था। जन्म-समय यह ग्रह स्थिति उसे लक्ष्य की ओर ले जाने वाली ग्रहों की राजसी स्थिति थी।

२. तुला-लग्न वालों के लिए शनि-बुध दशा उत्तम मानी जाती है किन्तु कोई उल्लेखनीय बात इनकी दशाओं में नहीं हुई। शनि की दशा का समय जनवरी माह में पूरा हुआ और बुध दशा का समय १९१६ में पूरा हुआ। बुध की महादशा और मंगल की अन्तर्दशा में उसका विवाह हुआ।

३. इंग्लैंड की वर्तमान रानी एलिजाबेथ का जन्म बुध राहु-शुक्र (जैमिनी का पी. के शुक्र है) इसके अलावा सप्तांश में बुध लग्न में है और राहु सातवें-भाव में है।

४. ऐलिजाबेथ का वृहस्पति कुंभ में है जो राजा (उसके पिता) का पाँचवा-भाव है। वक्री शनि मीन-राशि में रहते हुए तुला-राशि में काम कर रहा है (प्रभावित हो रहा है)। राजा का शनि पाँचवे-भाव का स्वामी था।

५. वह ग्यारहवें-भाव में स्थित केतु की दशा थी जो कि उसके (राजा के) लिए महत्वपूर्ण थी। निम्नलिखित लक्षणों पर ध्यान दीजिए-

क) महादशा का स्वामी केतु वर्गोत्तम में है और बड़े भाई का ग्यारहवें-भाव में है। केतु-राहु-मंगल दशाएं उसके लिए महत्वपूर्ण थी।

ख) राहु प्रतिष्ठा के प्रतीक पाँचवे-भाव में है।

ग) जन्म-कुण्डली में वृहस्पति दसवें-भाव में है और दशमांश में दसवें-भाव में है।

घ) षष्ट्यांश (६०वां वर्ग) में उत्तम गजकेसरी-योग दसवें-भाव में बनता है।

ङ) चतुर्थांश (भाग-४) में वृहस्पति और शुक्र चतुर्थ-भाव में है जिसके कारण उसे राजसिंहासन मिला जिसका वह अधिकारी नहीं था।

च) केतु-राहु-मंगल की दशाएं होने पर द्रेष्कोण का महत्व बढ़ जाता है क्योंकि उसने अचानक राजसिंहासन पा लिया। केतु धनुराशि में तीसरे-भाव में है और पाँचवे-भाव के स्वामी शनि तथा राहु के द्वारा देखा जा रहा है। वृश्चिक-राशि स्थित मंगल नवें-भाव को स्थित शनि को देख रहा है। पांचवे और सातवे-भावों के स्वामियों का राहु-युक्त होना उसका साधारण स्त्री पर मोहित होना दिखाता

है जिससे वह प्यार करता था। उसे राजगद्दी छोड़नी पड़ी और दिसम्बर १९३६ अचानक जार्ज राजा बन गया। उत्तम स्थितियों के वृहस्पति और वर्गोत्तम राहु-केतु को उसे राज्य देना पड़ा।

शुक्र-महादशा

शुक्र-राहु की दशाओं में हर काम में सावधानी वरतनी पड़ती है। इस सम्यावधि में राजा को ब्रिटिश-सम्राज्यं का विनाश देखना पड़ा जब १५ अगस्त १९४७ को भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की।

जन्म-कुण्डली में राहु पंचम-भाव में पराशर के अनुसार पदच्युति या पद की हानि दिखाता है। शुक्र आठवें-भाव का स्वामी है। भारत का किंग इम्पेरर का पद भारत के स्वतंत्र हो जाने से समाप्त हो गया।

मई १९४४ से क्षीण चन्द्र का प्रभाव स्पष्ट होने लगा जब राहु दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा शुरू हुई। चतुर्थांश देखिए जहां दसवें-भाव का स्वामी चन्द्र क्षीण है।

शुक्र-वृहस्पति की दशा में (जिनमें एक आठवें-भाव का स्वामी है और दूसरा छठे-भाव का स्वामी है) राजा बीमार पड़ा और मर गया।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि समय भाग्य को कैसे बनता-बिगाड़ता है। परम्परागत-उत्तराधिकारी न होने पर भी वह राजा बना। ब्रिटिश-साम्राज्य का विनाश देखने का दुर्भाग्य भी उसे देखना पडा। जिस साम्राज्य में सूर्य कभी अस्त नहीं होता था। जब इंग्लैंड के ऊपर सूर्य आता है तब इंग्लैंड की चमक को कुहरे और धुन्ध से उसी प्रकार धूमिल पड़ जाती है जैसे चिता जलने पर आस-पास का वातावरण धुएं और उदासी से धूमिल हो जाता है।

समय ईश्वर है।

प्रारब्ध (भाग्य) पर विश्वास करने के लाभ

सकारात्मक	नकारात्मक
१. व्यक्ति प्रारब्ध को पूर्ण-रूप से स्वीकार करना फिर भी विचारित कर्तव्यों करते रहना जैसे योगी करते हैं और जुआ खेलने से पूर्व युधिष्ठिर करते थे।	१. वे डरते हैं कि जब हर चीज पूर्व को निर्धारित है तों मानवीय कर्तव्य करने की कोई आवश्यकता नहीं है।
२. वे नहीं जानते कि अपना गुण करते हैं।	२. यह स्वीकार करना कि गुणों को अब अपना भी अपना काम करना होगा। (गीता..)
३. उनकी आन्तरिक प्रसन्नता बराबर बनी रहती है और ऐसे व्यक्ति निराश की स्थिति से बाहर रहकर चिन्तन करते हैं।	३. वे अपनी आन्तरिक प्रान्नता खो देते हैं, उदासी तथा स्थायी थकान के लक्षण उनमें बढ़ते रहते हैं।
४. उन्हें ज्योतिष की आवश्यकता नहीं होती, घटित होने वाली बातों को ईश्वर इच्छा समझकर स्वीकार करते हैं।	४. उन्हें पूर्ण-रूप से ज्योतिषीय सलाह की आवश्यकता होती है।

नोट्स

प्रारब्ध और बुद्धिमान व्यक्ति

हर बुद्धिमान व्यक्ति *प्रारब्ध* को स्वीकार करता है। मैंने अपनी पुस्तक

"*योगी प्रारब्ध और कालचक्र*" में रोकडिया हनुमान बाबा की चर्चा की है जिनसे मैं राजकोट-गुजरात में मिला करता था। वे एक बार गिर गये थे और उनकी जांघ में गहरा घाव हो गया था। उन्होंने मेरी दवाई कभी नहीं ली, बल्कि एक मैले कपड़े से उसे ढक दिया। हमारे विरोध करने और अनुरोध करने पर उन्होंने केवल एक बार डॉक्टर से घाव की मरहम-पट्टी करवायी।

मुझे अपने भाग्य की पीड़ा सहने दो उन्होंने केवल यही कहा। मैनें इससे भी अधिक पीड़ा देने वाली अन्य घटना, बाबा नागरीदास की देखी जो लगभग एक वर्ष से शारीरिक पीड़ा से ग्रस्त थे और कोई दवाई नहीं ले रहे थे। ऐसी स्थिति में अन्य कोई व्यक्ति मर चुका होता।

महाभारत में हमें नैतिक श्रेष्ठता के प्रतीक और अप्रतिम छवि वाले युधिष्ठिर को पाते हैं जिसमें जुआ खलने जैसी घातक कमी है। दुर्योधन ने उनकी इसी कमी का लाभ उठाया और अपने मामा शकुनि के साथ मिलकर षडयन्त्र रचा। युधिष्ठिर (जो अपने ताऊ धृतराष्ट्र की आज्ञा मानता था) को जुए की बाजी में भाग लेने के लिए कहा गया। अपने राज्य, भइयों और पांचो भाइयों की पत्नी द्रौपदी को दॉव पर लगाने की नैतिक विवशता और अपने सिद्धान्तवादी व नैतिकवादी चाचा (विदुर) की आज्ञा मानने की दुविधा से संकट में फॅस गया। फिर भी उसने जुआ खेला और हार गया। नैतिकता के दूसरे प्रतीक अपने छोटे भाई विदुर द्वारा जुए में हारने के भयानक परिणामों की न्यायोचित चेतावनी सुनने के बाद धृतराष्ट्र ने पांडवों का राज्य वापस कर दिया। परन्तु दुर्गुणों के प्रतीक दुष्ट और दुराग्रही धृतराष्ट्र-पुत्र दुर्योधन ने अपने पिता को धमकी दे दी कि यदि उन्होंने युधिष्ठिर को पुनः जुआ खेलने की आज्ञा नहीं दी तो वह आत्महत्या कर लेगा। आदेश सुनने पर युधिष्ठिर ने कहा था कि उसका प्रारब्ध उसे इस काम में डाल रहा है। सच्चाई यह थी कि महर्षि नारद ने और फिर महर्षि वेदव्यास ने पहले ही बता दिया था कि बारह वर्षों के लिए अपरिहार्य संकट आयेगा जिसमें पाण्डव कष्ट झेलेंगे। युधिष्ठिर उस प्रारब्ध का सामना करने के लिए तैयार थे।

वाल्मीकि रामायण में हम दैव की सुन्दरतम परिभाषा पाते हैं जो कि प्रारब्ध नामक तत्व का पर्याय है जो कि अचानक प्रकट होकर सारी योजनाओं को बिगाड़ देता है। भगवान राम राजा बनने के स्थान पर वन जाना स्वीकार कर लेते हैं। उनका छोटा भाई लक्ष्मण क्रोधित होता है और अपने पिता दशरथ और भाई भरत को युद्ध की धमकी देता है। परन्तु भगवान राम स्थिति को बुद्धिमानी से स्वीकार करने को कहते है।

भगवान राम और युधिष्ठिर दोनों ने ही अपनी परम्परा के नैतिक व्यवहार का उल्लंघन न करके प्रसन्नता-पूर्वक कष्ट सहे। अपना खोया राज्य वापस मिला और

आदर्श राजाओं के रूप में स्मरण किये जाने वाले अमर नायक बन गए। इसकी चर्चा पुस्तक के प्रारम्भिक भाग में की जा चुकी है।

भाग्य और निष्क्रियता

भाग्य को स्वीकार करने के बावजूद कोई मनुष्य निष्क्रिय नहीं रह सकता। उसके अन्दर विद्यमान तत्व सत्व, रज और तम गुण उसे सदैव कर्म करते रहने को बाध्य करते हैं। भाग्य को स्वीकार करने पर व्यक्ति निष्क्रिय जो जाता है। यह तर्क धूर्तपूर्ण उद्देश्यों के लिए ब्रिटिश-साम्राजय-वासियों ने भारत के विरूद्ध प्रयोग किया था। यह बात संक्रामक-रोग की तरह भारतीयों में फैल गई। अब भी कई असंगत विचार के लोग है जो यह सोचते हैं कि भाग्य को स्वीकार कर लेने पर व्यक्ति निष्क्रिय हो जाता है।

गुण व्यक्ति को कार्य करने को कैसे बाध्य करता है इस बात को गीता में भली-भाँति समझाया गया है। निम्नलिखित नोट को देखिए -

गुण और मानव के क्रियाकलाप

गीता के पाँचवे अध्याय के पाँचवे श्लोक में यह बताया गया है कि कोई मनुष्य कभी भी बिना कर्म के नहीं रह सकता। कारण यह है कि वह प्रकृति द्वारा बाध्य किया गया है चाहे वह उसकी अन्त:-प्रकृति से हो या वाह्य-प्रकृति । प्रकृति तम, रज और सत्व नामक तीन गुणों की तीन स्तरों वाली बाध्यता है। सुप्त, स्वप्न, जागृत और अन्य सभी अवस्थाओं में मनुष्य कर्म करता रहता है। मनुष्य के जीवन में एक भी पल ऐसा नहीं होता जब वह कोई न कोई कर्म काम न कर रहा हो। अज्ञानी व्यक्ति जो कि कर्म के विभिन्न स्तरों में या कर्मों में अन्तर नहीं देख सकता केवल शारीरिक कर्म को ही कर्म मानने की भूल करता है।

सभी स्तरों पर कर्म तो होता रहता है। मनुष्य शरीर वाणी और मन (बुद्धि) से नैतिक या अनैतिक जो कुछ करता है वह कर्म है इसकी परिभाषा गीता के पंद्रहवें श्लोक में दी गई है।

कर्म पाँच प्रकार के होते हैं

१. कर्म - पूजा और धार्मिक-कर्म जो मनुष्य की आध्यात्मिक-रूप से उन्नति करते हैं।
२. नैमित्तिक - कर्म हिन्दू परम्परा के १६ संस्कारों से सम्बंधित है जैसे जन्म-संस्कार, विवाह-संस्कार और दाह-संस्कार आदि।
३. काम्यकर्म - वे कर्म हैं जिन्हें मनुष्य यश धन कमाने और अपनी आर्थिक, शारीरिक बाधाओं पर विजय पाने के लिए करता है।

४. प्रायश्चित-कर्म - वे कर्म हैं जो किए गए पापों को धोने के लिए तपस्या (पूजा) के रूप में किये जाते हैं।

५. कर्तव्य-कर्म - आजीविका हेतु किये जाने वाले कर्म जिन्हें प्रत्येक मनुष्य को करना चहिए।

ये पाँच प्रकार के कर्म - सात्विक, राजसिक और तामसिक के भेद हैं इसे लिम्नलिखित सारिणी से स्पष्ट किया जा सकता है।

सारिणी १ (पूरक) कर्मो का प्रयोग

कर्म के भेद	प्रकार (कैसे)	कर्मसम्पन्न करने के माध्यम	शरीरिक स्थिति जिसमें किये जाते है
१. नित्य	क) सत्त्व	शरीर	जाग्रत अवस्था में
	ख) रज	वाणी	सुप्तावस्था में
	ग) तम	बुद्धि (मन)	स्वप्नावस्था में
२. नैमित्तिक	क) सत्त्व	शरीर	जाग्रत अवस्था में
	ख) रज	वाणी	सुप्तावस्था में
	ग) तम	बुद्धि (मन)	स्वप्नावस्था में
३. काम्य	क) सत्त्व	शरीर	जाग्रत अवस्था में
	ख) रज	वाणी	सुप्तावस्था में
	ग) तम	बुद्धि (मन)	स्वप्नावस्था में
४. प्राश्चित	क) सत्त्व	शरीर	जाग्रत अवस्था में
	ख) रज	वाणी	सुप्तावस्था में
	ग) तम	बुद्धि (मन)	स्वप्नावस्था में
५. कर्तव्य	क) सत्त्व	शरीर	जाग्रत अवस्था में
	ख) रज	वाणी	सुप्तावस्था में
	ग) तम	बुद्धि (मन)	स्वप्नावस्था में

इस सारिणी से यह स्पष्ट हो जाना चहिए कि ऐसी कोई अवस्था नहीं है जिसमें कर्म नहीं किया जा रहा हो सड़क खोदने वाला मजदूर भी कर्म कर रहा है एकाग्रमन (समाधिस्थ) हो कर ध्यान करने वाला भी कर्म कर रहा है। विषयों में रत-भोगी भी कर्म कर रहा है। दवा लेने वाला रोगी भी कर्म कर रहा है (भोगी शारीरिक स्थिति के अनुसार जीवन का अनंद उठाता है। रोगी बीमार आदमी है)।

ज्योतिषीय स्पष्टता

मीन-लग्न वाले जिस व्यक्ति का वृहस्पति छठे-भाव में और मंगल दसवें-भाव में है वह

उन भावों से संबंधित कर्म वृहस्पति की महादशा और मंगल की अन्र्तदशा में कर रहा है।

योगी गहन ध्यान में जाने की तैयारी कर रहा है। भोगी पैसों संबंधित मुकदमें में उलझा हुआ है। सत्त्व गुण से संबंधित प्रसन्नता (सुख) को सात्विक कहा जाता है इसमें दु:ख नाम की कोई भी चीज नहीं होती आरम्भ में इसका अभ्यास कठिन है परन्तु अन्तोगत्वा अमृत-तुल्य है। जो आरंभ में प्रसन्नता देती है पन्तु प्राणघातक जैसी स्थिति पैदा कर देती है राजसिक कहलाती है।

नींद आलस्य और नैतिक व्यवहार के प्रति लापरवाही आरंभ में सुख देती है परन्तु उलझनों और आसक्ति का गहरा जाल पैदा करती है उसे तामसिक कहते हैं।

विश्वास और अविश्वास के मध्य झूलना

साकारात्मक पक्ष	नाकारात्मक पक्ष
१. वैदिक ज्योतिष का अध्ययन करेगा और पायेगा कि केवल एक ही नियम काम करता है। सर्वशक्तिमान का नियम।	१. नशीली दवाइयां शराब या दूसरे पलायनवादी वादी मार्ग अनजाने भय से बचने के लिए अपनायेगा।
२. सही भविष्यवाणियों को याद करेगा और मानसिक संतुलन बनाये रखेगा।	२. सही और अच्छी ज्योतिषीय भविष्यवाणियों को भूल जायेगा और ज्योतिषियों की असफल (झूठी) भविष्यवाणियों को याद करेगा।
३. धार्मिक ग्रंथ पढ़ेगा। ईसामसीह द्वारा स्वयं को दिये जाने वाले धोखे के बारे में पढ़ेगा जिसके बारे में उन्होनें स्वयं भविष्यवाणी की थी, युधिष्ठिर की बुद्धिमानी।	३. मात्र अपने शरीर की सुरक्षा के प्रति सावधानी रखेगा और महापुरूषों द्वारा कही गई निरर्थक बातों को ही अपनी बरवादी के लिए अपनायेगा।

नोट्स

जब ईसामसीह ने अपने शिष्य से कहा था कि वह (शिष्य) सुबह होने से पूर्व उनसे विश्वासघात करेगा। वे अपने भाग्य के बारे में कह रहे थे जिसे उन्होंने महायोगी होने के कारण स्वीकार कर लिया था।

हिन्दू धर्म ग्रन्थों में ऐसे सैकड़ो दृष्टान्त है। भगवान राम और युधिष्ठिर के बारे में मैं पहले ही चर्चा कर चुका हूँ। मैंने अपनी पुस्तक इस प्रकार की कई घटनाएं दी है जिन्हें मैंने पहली बार देखा समझा।

भाग्य को विचार करके स्वीकारना

सकारात्मक पक्ष	नकारात्मक पक्ष
१. ज्योतिषीय परामर्श लेता है परन्तु उन पर	१. उदास हो जाता है। वह इस बारे में

अंधविश्वास नहीं करता। कभी-कभी ऐसा निर्णय लेना बुद्धिमानी होती है क्योंकि कभी ज्योतिषी भी गलत निर्णय दे सकता है।	विचार नहीं करता कि ज्योतिषी गलत जन्मसमय भी ले सकता है। या गलत निर्णय दे सकता है
२. ज्योतिषीय सलाह पर बुद्धिमानी पूर्वक योजना बनाता है फिर भी पूर्णरूपेण उसपर निर्भर नहीं रहता।	२. निष्क्रिय हो जाता है या आधे मन से प्रयत्न करता है।

नोट्स

प्रतिभाशाली व्यक्ति जानता है कि ज्योतिषी गल्तियां करते हैं क्योंकि अध्ययन नियमों में या तो वे गलत जन्मसमय ले लेते हैं अथवा किसी तथ्य को भूल जाते हैं या उसकी पुनरावृत्ति करते हैं।

नकारात्मक पक्ष में जो व्यक्ति ज्योतिषी की ज्ञान सीमा नहीं जानते उसकी बात को बहुत गंभीरता से लेते हैं बुरी ज्योतिषीय भविष्यवाणियों को अपने लिए परेशानी बना लेते हैं।

भाग्य को अस्वीकार करना

जब समझदारी बढ़ती है	जब अज्ञान बढ़ता है
१. जब कोई प्रत्याशित घटना घटती है तो वह बुद्धिमान व्यक्ति की तरह उसका कारण जानने का प्रयास करता है। पवित्रता का मूल्य और अपनी छिपी हुई आध्यात्मिकता खोजना उसका उद्देश्य हो जाता है।	१. वह दूसरों में कमियों निकालता है किसी बलि के बकरे को ढूंढता है और प्रतिहिंसक तथा नीच बन जाता है।
२. बड़ी बुद्धिमानी से आध्यात्मिकता से इलाज ढूंढता है।	२. उसका व्यवहार असंगत और सनकी हो जाता है।
३. अनासक्ति के माध्यम से आत्मविश्लेषण सीखता है।	३. क्रोध में रहकर अपनी असंगतता से (दुराग्रह) विचार करता है।
४. उसका जीवन ऊँचा होता है	४. निरन्तर अपने दुर्भाग्य को अपमानित करता है।

नोट्स

भगवान राम और युधिष्ठिर के दृष्टान्त दिये जा चुके है कि प्रबुद्ध (ज्ञानी) व्यक्ति होने के कारण वे जानते थे कि सदैव ईश्वरीय नियम लागू होते हैं।

जीवन में होने वाली अप्रत्याशित घटनाओं से बुद्धिमान व्यक्ति इन ईश्वरीय

नियमों का पता लगा लेता है। धीरे-धीरे उसे मालूम हो जाता है कि दुनिया में जो नियम चला है ईश्वरीय नियम है। संसारिक धरातल वह जीवन को यथावत् स्वीकार कर लेता है। प्राकृतिक और अलौकिक नियमों के सरल और समुचित नियम उसका जीवन दर्शन बन जाता है यही सच्ची और पवित्र प्रवृति है।

निष्कर्ष

ज्योतिष- बंधन या मुक्ति?

तस्मादशक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोन्ति पूरूषः।।

(गीता अध्याय १९ श्लोक ३७)

इसलिए बिना आसक्ति के अपने कर्तव्य कर्म करो बिना आसक्ति के किया गया कर्म परमात्मा में विलय की ओर ले जाता है।

ज्योतिषी का कर्तव्य-कर्म

मैंने कई स्थानों पर लिखा है कि मैंने कई बार ज्योतिष का काम छोड़ना चाहा परन्तु मेरे गुरू स्वामी परमानन्द सरस्वती ने मुझे ऐसा करने की अनुमति कभी नहीं दी। बाद में स्वामी मूर्खानन्द जी ने मुझसे स्पष्ट रूप में कहा कि मुझे ज्योतिष कर्म करते रहना चाहिए। मेरे ज्योतिष गुरू और मंत्र गुरू ने तथा बाद में स्वामी मूर्खानन्द जी ने मुझे उस अन्तर्राष्ट्रीय मिशन के बारे में बताया जिसे मुझे पूरा करना था यह प्रारब्ध है जिससे मुझे उऋण होना है।

मैं बिना टिप्पणी दिये दो जन्मकुण्डलियां दे रहा हूँ इससे प्रारबध से उऋण होने का महत्व स्पष्ट हो जायेगा।

महान गुरू ही कर्म के रहस्य को समझते हैं। स्वामी रामकृष्ण परमहंस अवतार माने जाने वाले स्वामी ओंकारनाथ सीताराम ने नारद लीलामृत नामक पुस्तक

रहस्यात्मक अनुभवों पर आधारित सुन्दरतम बंगला में लिखी है। उनके एक शिष्य को गृहस्थ के रूप में उऋण होने के लिए पहले वापस भेजा गया। पहले गुरु की जन्मकुण्डली देखिए -

योगी सीताराम ओंकारनाथ

अब उनके शिष्य की जन्मकुण्डली देखिए

ऋण होने से बचे कर्म

सन्यास ले लिया था परन्तु कर्मों से उऋण होने के लिए वापस गृहस्थी में भेज दिया गया।

उन्हे किसी अन्य गुरू द्वारा सन्यास लेने की प्रेरणा दी गई जब उन्होंने अपने गुरू को इस बारे में बताया तो गुरू ने उन्हे बताया कि जब तक कर्मों का भार नहीं उतर जाता साधना ठीक ढंग से नहीं की जा सकती। कुछ सांसारिक इच्छाएं और अभिलाषाएं मन में उठती रहेंगी और उसे भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों ही रूपों में नष्ट कर देगी। हर किसी को जीवन की चुनौतियां स्वीकार करनी चहिए उनका सामना करना चाहिए भले ही सफलता मिले या असफलता इस समयावधि में उसे कर्म फल से निरासक्त होने का अभ्यास करना चाहिए। केवल ऐसा करने पर ही वास्तविक सन्यास की पृष्टभूमि बनती है। महान गुरू का कथन सही सिद्ध हुआ। जन्मकुण्डली में निहित कर्मबंधन के अनुसार और धन योग के कारण इस सुयोग्य शिष्य ने खूब धन कमाया।

कुछ वर्षों के बाद जब उसकी बुध दशा आरंभ हुई वह उत्तम श्रेणी का सन्यासी बन गया।

इस प्रकार एक महान गुरू को अपनी साधना के आरंभिक दिनों में अपने कर्मों से उऋण हो जाना चाहिए। एक जन्म के अल्प समय की एक छोटी छलांग से ही मुक्ति प्राप्त नहीं की जा सकती। संचित कर्म पूरे हो जाने चाहिए और भौतिक शरीर के रहते हुए सूक्ष्म शरीर समाप्त हो जाना चहिए (मर जाना चाहिए)। शारीरिक मृत्यु तो व्यक्ति विशेष के जन्म जन्मान्तरों के भ्रमजाल के लम्बें इतिहास के बड़े अध्यायों में से एक छोटा अध्याय मात्र है। यहां केवल गुरू और शिष्य की ही जन्मकुण्डलियां यह बताने के लिए दी जा रही है कि उन दोनों ने वही किया जैसा कि सच्चा साधक करता है।

बिना आसक्ति (निष्काम-भाव) से किया गया ज्योतिष कार्य ज्ञानमार्ग सिद्ध हो सकता है। यह बात मेरे मंत्र गुरू ने कई बार बताई।

पिछले तीन दशकों से मैंने भारत में रहते हुए हजारों भारतीयों और विदेशियों के लिए ज्योतिष कार्य किया है। संयुक्तराज्य-अमरीका में उन्होंने मुझे पैसे लेने के लिए बाध्य किया क्योंकि उन्हें मेरे खर्च उठाने होते थे, और फंड इकट्ठे करने होते थे।

मैंने इस पैसे का उपयोग भारत में कई दान कार्यो में किया और ऐसी फीस देने का स्वागत किया। संग्रहीत धन बंधन पैदा करता है और धन दान करने से ये बंधन नष्ट हो जात है।

डालराइटिज (डालरीय-फीस)

भारत के विपरीत संयुक्तराज्य-अमरीका में हर बात की फीस ली जाती है भारत के दान की धारणा का (अंग्रेजी पर्याय चैरिटी 'दान' शब्द का सही भाव नहीं देता) आध्यात्मिक अर्थ नहीं लिया जाता। मैंने देखा है कि भारत की तरह अमरीका में भी ज्योतिष का प्रारंभिक (अपूर्ण) ज्ञान रखने वाले अमरीकन ज्योतिषी आधे घंटे का समय

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
१६°५२"	२०° ४५"	२७°१८"	१९°५२"	१५°१६"
गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
०३° १७"	०५° ४१"	०२° ४४"	१६° ३७"	१६° ३७"

देने पर कम से कम चालीस डालर फीस लेते हैं।

ये ज्योतिषी स्वयं को कर्मजाल में फसाते हैं और दावा करते हैं कि वे अपने ग्राहको को आध्यात्मिक दिशा निर्देश देते हैं।

अमरीकन डालराइटिज का भारतीय रूपान्तरण है - एक निश्चित मात्रा में फीस लेना और रत्नों तथा नगों के रूप में महंगा इलाज बताना। वे जौहरियों से इस काम का ताल-मेल रखते हैं कि ग्राहकों को रत्नों और नगों को बताने के लिए उन्हें (ज्योतिषियों को) कमीशन की एक निश्चित मात्रा अदा की जायेगी। अपनी स्वार्थपूति का लक्ष्य मानने वाले ये ज्योतिषी भारतीय ज्योतिष के ऊँचे आदर्शों की बात करते हैं और आध्यात्मिक विषयों पर भी लिखते हैं।

शैक्षिक समूह

इसी बीच मेरे चारों ओर ऐसे ज्योतिषियों का समूह बन गया जो मुझसे विश्व की सबसे बड़ी ज्योतिष कक्षाएं चलाने का अनुरोध करने लगे। एक प्रख्यात ज्योतिषी ने इस योजना को पहली बार १९८९ में और दूसरी बार १९९४ में विगाडने की कोशिश की। मुझे कठिन निर्णय लेने पड़े। मैंने सोचा कि यदि मैं भारत की श्रेष्टतम संस्था और भारतीय विद्याओं का प्रसार करने वाले भारतीय विद्या भवन को ज्योतिष कक्षाएं चलाने के लिए सहमत कर सकूं तभी अपनी रचना (कार्यों) से स्वयं को निलिप्त रखना मेरे लिए संभव हो सकेगा। सबसे बड़ा काम यह होगा कि इस प्रतिष्ठित पाठ्यक्रम को चलाने के लिए आवश्यक साधन भारतीय-विद्या-भवन के पास है। अब नये समूह के आ जाने से "*ज्येतिष जर्नल*" चलाना भी संभव हो गया है।

कुछ पुराने सहयोगियों ने जो (कोई शोध कार्य नहीं कर रहे थे परन्तु उच्च पदों पर बने रहना चाहते थे) मुझे छोड़ दिया और एक अलग संगठन बनाया। ज्योतिष के उन्नायक दिखाकर अपने तथाकथित स्वाभिमान को संतुष्ट करना चाहते थे। मैं भारत सरकार से मान्यताप्राप्त भारतीय विद्याभवन जैसी प्रतिष्ठित संस्था चाहता था जो पूरी तरह से मेरी लिखी रचनाओं की देखभाल कर सके। ऐसा होने पर ही इच्छानुसार अपनी रचनाओं से स्वयं को अलग रखना संभव हो पायेगा। इससे बड़ी टकराव वाली स्थिति पैदा हो गई और वे सभी मेरे विरुद्ध झूठे आरोपों का अभियान चलाने में संलग्न हो गये। इससे बड़ी दु:खद घटना मैंने यह देखी कि विशेषज्ञता किए बिना ही तकनीकी लोग व्यावसायिक ज्योतिषी आल्पज्ञानी ज्योतिष लेखक बन गए।

अनैतिकों का समूह

मैं यह चर्चा इसलिए कर रहा हूँ कि धनलोलुप ज्योतिषियों और आत्मसंतुष्टि चाहने वाले मुखियाओं ने ज्योतिष की वृद्धि (प्रचार) के लिए कभी रूचि नहीं ली। वे इस विषय में या किसी अन्य शैक्षिक विद्या में रूचि नहीं लेते थे। उनमे से कुछ रचनात्मक (प्रतीकों) बुद्धि रखते थे परन्तु भ्रमित बुद्धि हो गये थे। उनमें से एक ज्योतिष संबंधी लक्षण वाले रहस्यमय विषयों पर हेर-फेर करके लिखता है। दूसरा वर्षा-विज्ञान पर कुछ शोध कार्य करता है। वह इतिहास और घटनाओ की जाँच की परवाह नहीं करता। एक बार उसने १७वीं शताब्दी के कवि-ज्योतिषी भड्डरी को (ईसा की पाँचवी शताब्दी अथवा ईसा से ६०० वर्ष पूर्व के) बराह मिहिर का प्रतिभाशाली पुत्र बता दिया था।

सूखे (अनावृष्टि) के लिए प्रसिद्ध वर्षों को उसने अच्छी वर्षा वाले वर्ष सिद्ध कर दिया। ज्योतिष की पुस्तकों या लेखों के पाठकों का शोषण करना अनैतिकता है किन्तु अनैतिकता दिखाने वाले समूह का कोई क्या कर सकता है। ज्योतिष पर कोई

खोज (शोध) किए बिना पाठकों में भ्रमित करने वाला दुष्प्रभाव पैदा करते है।

क्योंकि हम ज्योतिष और कार्य पर चर्चा कर रहे है अत: नैतिकता के कई प्रश्न उठते हैं।

१. क्या परामर्श देने वाला ज्योतिषी स्वयं को कभी आध्यात्मिक कह सकता है। यह प्रश्न मुख्य रूप से आध्यात्मिक संदर्भ में आता है। गीता पुन: इस [illegible] करती है।

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रता: ।।

(गीता अध्याय ७, श्लोक २८)

क) जिनके पिछले जन्मों के संचित पाप नष्ट हो चुके हैं।
ख) केवल वे ही व्यक्ति
ग) जीवन की दुविधाओं के प्रति जिनकी आसक्ति नष्ट हो चुकी है
घ) वे दृढ़ निश्चिय होकर मेरी पूजा करते हैं।

परामर्श शुल्क लेने वाला अपने कर्मों के फलों में आसक्त ज्योतिषी नहीं हो सकता। ज्योतिष कार्य तो आध्यात्मिक संगति से या शैक्षिक संगति से किया जा सकता है। इस क्षेत्र में काम करने वाले अन्य लोग गलत तरह से प्रशिक्षित, लालची या कपट पूर्वक शोषण करने वाले होते हैं।

प्राचीन महान परम्परा में ज्योतिष संबंधी परामर्श का कोई शुल्क नहीं होता था। ज्योतिषीय परामर्श हेतु आने वाला अपनी इच्छानुसार फल, फूल या पैसा भेंट के रूप में लाता था।

ज्योतिषियों का वर्गीकरण

अर्थ-प्रधान युग के बदलती परिस्थितियों में ज्योतिषियों को सरलता से वर्गीकृत किया जा सकता है।

आध्यात्मिक वर्ग

इसे अब समाप्तप्राय: वर्ग कहा जा सकता है।

शैक्षिक वर्ग

जो व्यक्तिगत रूप से अपने शोध कार्य की योजनाओं के लिए कभी-कभी धन इकट्ठा करते हैं। इस क्षेत्र में मैंने दूसरों की रचनाओं के प्रकाशन में सहायता के लिए खूब धन इकट्ठा किया है। भारतीय विद्या भवन की हमारी कक्षाओं में ऐसा वर्ग तेजी से

बढ़ रहा है। भविष्य के महान ज्योतिषी इस सहायता से उभरेंगे क्योंकि इन छात्रों की शानदार (शैक्षिक पृष्ट-भूमि) पहले से ही है। तकनीशियन, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउटेंट्स और एम.बी.ए. होने से इनका शोध कार्यों के लिए अनुशासित, तीक्ष्ण और शोध के लिए जिज्ञासापूर्ण रुझान रहता है। वे ज्योतिष के कई ऐसे सिद्धान्तों को मिथ्या सिद्ध कर सकते हैं जिन्हें हमारे ज्योतिषीय शास्त्रों में सही अर्थों के लिए प्रसिद्ध माना जाता है। फिर भी मैंने देखा है कि इस वर्ग में कइयों के लिए ज्योतिष ज्ञान के प्रकाश का अलौकिक स्रोत नहीं होगा जैसा कि होना चाहिए। कुछ तो अशोभनीय (अपरिपक्व) व्यवसायी बन भी चुके हैं।

धनलोभी वर्ग

इनकी उपश्रेणियां (उप वर्ग) हैं।

पहला श्रेणी उन लोगों की है जो परम्परागत रूप में प्रशिक्षित है जिनके भविष्य कथन का ढंग कुछ अच्छा है। दूसरी श्रेणी उन लोगों की है जो कम-प्रशिक्षित और खूब विज्ञाषित ज्योतिषी है। आज के युग का ऐसा ज्योतिषी एक प्रकार का खतरा है। तीसरी श्रेणी कम-विज्ञापित और लगभग अशिक्षित ज्योतिषी – ऐसे ज्योतिषी भारत की महान ज्योतिषीय परम्परा को रचनात्मक ढंग से दूषित करने वाले है।

अनैतिक वर्ग

जो अहं-संतुष्टि और ग्राहकों को लुभाने के लिए ज्योतिष की दुकानें चला रहे हैं। इनमें वे भी आ जाते हैं जो भ्रमित और मोहित करने वाले ज्योतिष लेखक हैं।

शिक्षा (पाठ) जो ज्योतिषी सीखता है

एक सफल और शुद्ध अन्तरात्मा वाले ज्योतिषी को अपने ग्राहकों को भाग्यवादी नहीं बनाना चाहिए और विशेषकर तब, जब ज्योतिषीय भविष्यवाणियां सत्य सिद्ध हो गई हों और लोग ज्योतिष में अन्धविश्वास करने लग गये हों। ऐसा करना ज्योतिष के अलौकिक विज्ञान होने की उन्नति के लिए और स्वयं ज्योतिषियों के लिए बुरा है, जो कि अपनी भविष्यवाणी पर अधिक बल देकर किसी ग्राहक का शोषण करता है। हर भविष्यवाणी का अन्तिम परिणाम ज्योतिषी को कुछ सबक सीखाता है।

जो सबक मैंने सीखे हैं और उन्हें मैं यहां पर संक्षेप में बताना चाहता हूँ। जो ज्योतिषी से दिशा निर्देश पाना चाहते हैं उन्हें सुस्पष्ट श्रेणियों में बैठाया जा सकता है।

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
०१° २०"	२९° १४"	२२°५८"	१९° ४१"	१५° १३"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
२१° ४६"	१३° ३९"	२२° ११"	२६° १०"	२६° १०"

१. *धैर्यवान (साहिष्णु)*

मैंने एक भारतीय के लिए महत्वपूर्ण भविष्यवाणी की थी कि वह उच्च पद पायेगा और उसने वह पद पाया। उच्च महत्वाकांक्षी व्यक्ति होने के कारण वह कुछ दिन बाद आया और स्वदेश तथा विदेश में उसके द्वारा लड़े दो चुनाओं के परिणामों के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए पूछा। मैंने अपने देश में लड़े हुए चुनाव में हार की और विदेश में लड़े हुए चुनाव में जीत की भविष्यवाणी कर दी। मेरी भविष्यवाणियां गलत सिद्ध हुई। वह स्वदेश के चुनाव में जीता और विदेश में लड़े गए चुनाव में हारा। बुद्धिमान व्यक्ति होने के कारण उसने फिर भी मेरे ज्योतिषीय ज्ञान की प्रशंसा की और कहा कि संभवत: मैंने अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर दशाओं की ठीक से जाँच नहीं की। उसकी बात सच निकली। अगर मैं सावधानी बरतता तो मैं इस गलती से बच सकता था, किन्तु यह मेरा **प्रारब्ध** था।

२. *अधीर (असहिष्णु)*

एक राजनीतिज्ञ के मामले में (जिसकी पत्नी थोड़ा-बहुत ज्योतिष जानती थी) मैंने उसकी पत्नी को बताया था कि एक बार सूर्य की अन्तर्दशा में और दूसरी बार सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में उसके पति की अवनति होगी। दोनों बार जब भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई तो वह मुझसे नाराज हो गई। इसके बाद उसने मुझे अपने परिवार के बारे में ज्योतिषीय अध्ययन हेतु विश्वास में लाना चाहा जो मैंने उसके पश्चात् नहीं किया।

३. अशुभ या हानिकारक पक्ष की उपेक्षा करने वाले

मैंने एक आदमी को एक बीमारी के बारे में बताया परन्तु व्यवसायिक रूप में अच्छा समय बताया। तब उसे एक अच्छा काम मिला था उसके बाद उसे दिल का दौरा पड़ा। उसने और उसकी पत्नी ने मुझे दोषी बताया। मैंने उन्हें कहा कि जब-जब मैंने स्वास्थ्य के बारे में सावधान रहने के लिए कहा तो बीमार होने के बारे में भी बता दिया था जैसा कि मैंने देखा था। मुझे हानिकारक भविष्यवाणी पर जोर देकर लोगों को डराने की आदत नहीं थी। उन्होंने मुझसे कहा कि उन्हें बीमारी की भविष्यवाणी के बारे में जोर देकर बता देना चाहिए था। मैंने उनसे कहा कि वे भविष्य में मेरे पास ज्योतिष संबंधी परामर्श के लिए न आएं।

केतु-शनि की दशा में रोजगार के माध्यम से और अन्य कामों में पैसा लगाने से आमदनी बढ़ेगी, ऐसी भविष्यवाणी मैंने की थी और वह सत्य सिद्ध हुई। अगली अन्तर्दशा बुध की आयेगी, जो आठवें-भाव का स्वामी होने के कारण दो हानियाँ पहुँचायेगा। १९८८ में उसकी साढ़े-साती भी चल रही होगी। इस लिए मैंने दोनों भविष्यवाणियां की - वही हुई आमदनी और स्वास्थ्य समस्या। उसे १९८५ के पहले भाग में रोजगार मिला। उसके बाद मेरा उससे संम्पर्क टूट गया। १९८६ के उत्तरार्द्ध में उसे दिल का दौरा पड़ा। भविष्यवाणी स्पष्ट थी। फिर भी ग्राहक की आशायें कि केवल अच्छी बातें ही होनी चाहिए, झुठी आशा देनी होगी। बीमार होने की भविष्यवाणी पर जोर देना उसके उत्साह (पहल करने की क्षमता) को सुखा देने के समान है। एक हल्की सी चेतावनी या इशारा काफी होता है।

४. बुद्धिमान

मैंने एक आदमी को बताया कि उसके जीवन में जो दुखदायक घटनाएं घट रही हैं उसे अपना प्रारब्ध समझकर स्वीकार कर लेना चहिए, क्योंकि उसकी कोई सहायता नहीं कर सकता। बाद में ये सब उसके बीते वर्षों की कहानी बनकर रह जायेंगी।

उसने मेरी सलाह के अनुसार काम किया। जब वह एक अवसर पर मुझसे मिला तो उसने मुझसे ज्योतिष संबंधी कोई प्रश्न नहीं किया। उसका सधा हुआ उत्तर है, कि उसने अपने जीवन का सुन्दरतम पाठ सीख लिया है, होने वाली घटनाओं को स्वीकार करो और गीता के कथन के अनुसार फिर भी अपने कर्मों को मनोयोग से करते रहो। उसके पश्चात् ज्योतिष का उसके लिए अधिक महत्व नहीं रहा। गीता की शिक्षाओं से बढ़कार कोई अन्य चीज श्रेष्ट नहीं है, वह कहता है और दूसरों को भी बताता है।

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
०२° ४७"	०९° ०६"	०३° ४०"	२२° ०७"	२६° ५२"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
०३° ३३"	२६° ४४"	२९° १२"	२४° ०८"	२४° ०८"

५. *प्रणय सम्बंधी आशाएं*

एक स्त्री को मैंने बताया कि उसकी एक ऐसे पुरुष से भेंट होगी जो उसे आकर्षित करेगा। कुछ दिन बाद उसने मुझे बताया कि जिस खूबसूरत डॉक्टर को पाने का वह प्रयत्न कर रही थी उसने मुंह मोड़ लिया है। मैंने उसको बताया कि मेरी भविष्यवाणी का आशय यह नहीं था कि जिस डॉक्टर को पाने का प्रयत्न कर रही थी वह उसकी पकड़ में आ ही जायेगा।

स्त्रियों द्वारा पूछे जाने वाला यह सर्वोपरि (सामान्य) प्रश्न होता है जो कि दोषपूर्ण है।

अल्पशिक्षित ज्योतिषी (लो ब्रीड)

अल्पशिक्षित ज्योतिषी भी दिल्ली में देखे जा सकते हैं, उनमें से कुछ ज्योतिष-पत्रिकायें भी प्रकाशित करते हैं। वे प्रतिभाशाली ईमानदार और तकनीकी ज्योतिषियों से अधिक निन्दक (अपशब्द बोलने वाले) होते हैं। उनकी शिक्षा बहुत कम होती है। अच्छी शिक्षा की पृष्ठभूमि के बिना ऐसे ज्योतिषी नीमहकीम (झूठी भविष्यवाणी करने वाले) ही हो सकते हैं। इसके बावजूद ऐसे ही ज्योतिषियों का प्रभाव है और वे ही लोगों को सबसे अधिक आकर्षित करते हैं। सबसे अधिक हानि ये ज्योतिषी अशुद्ध जन्मपत्रियों पर विश्वासपूर्वक राजनैतिक भविष्यवाणियाँ करते हैं। **नेहरू-वंश** नाम पुस्तक में मैंने इस प्रकार की काफी घटनाएं दी हुई हैं। जब कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति इनके जाल में फॅस

जाता है तो वे ऐसी भविष्यवाणियाँ करते हैं, जो झूठ सिद्ध होती हैं, लेकिन वे कभी यह स्वीकार नहीं करेंगे कि उन्होंने कभी ऐसी गलती की है। एक बहुत अच्छा उदाहरण दिखा रहा हूँ।

ऊपर की जन्मकुण्डली (संख्या ४२, पुरुष, २४ मई १९२६) में मई १९८४ तक बुध की दशा का मुख्य भाग चल रहा था और केतु की अन्तर्दशा चल रही थी।

मैं जानता था कि उसने इस समयावधि में ऐतिहासिक असंवैधानिक निर्णय लिया था; जिस कारण उसका राजनीतिक जीवन समाप्त हो गया था। मैंने उससे पूछा कि उसने ऐसा क्यों और किसलिए किया? उसने मुझे बताया कि उसके ज्योतिषी के अनुसार उसकी कुछ बुध/शुक्र की दशाएं चल रही थी जो कि उसके लिए बहुत शुभ था। मैंने उसे बताया कि दशा के मामले में उसके ज्योतिषी की गणना भिन्न थी।

बहुत दिन पश्चात् वह अपने ज्योतिषी से एक पत्र लेकर मेरे पास आया जिसमें उसके ज्योतिषी ने लिखा था कि जिस जन्मकुण्डली का मैं प्रयोग कर रहा हूँ वह दो रूपों में गलत थी। पहली गलती कि बुध वृष राशि में होना चहिए न कि मेष में जैसा कि मैंने दिखाया था और अप्रैल १९८४ में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही थी। मैने एक ज्योतिषी को फोन किया और अनुरोध किया कि वे हस्तलिखित गणना करके मुझे बतायें। उस ज्योतिषी का उत्तर था कि बुध मेष में होना चहिए जैसा कि मैंने दिखाया था और अप्रैल १९८४ में केतु की अन्तर्दशा चल रही थी।

लेकिन उस कुतर्की ज्योतिषी ने मेरे लिए कुछ अपशब्द प्रयोग किये और अपने महत्वपूर्ण ग्राहक की जन्मकुण्डली में कुछ परिवर्तन नहीं किए जिसके लिए मैंने भविष्यवाणी की थी कि सितम्बर १९९३ तक बुध वृहस्पति की दशा में उसके राजनीतिक जीवन में कुछ अच्छा परिवर्तन होगा। उसके ज्योतिषी ने फिर मुझे गालियां दी और जोर देकर कहा कि यह बरबादी का समय होगा। सितम्बर १९९३ में सुधारात्मक परिवर्तन हुआ जैसा कि मैंने भविष्यवाणी की थी।

किसी ज्योतिषी की भविष्यवाणी आत्मप्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं है। हम सभी गलतियाँ करते हैं क्या इन कमजोरियों को स्वीकार करने में कोई बुराई है। दिए गए विवरण के अनुसार कोई भी जन्मकुण्डली की गणना करने और चित्रापक्षीय-अयनांश का प्रयोग करके देखें कि क्या की गई गणनाएं सही हैं या नहीं?

सही अयनांश कौन सा है?

जन्मपत्री बनाने में वह अयनांश चुनना चाहिए जिसकी जाँच सूक्ष्मता से की जा सके। यदि रमन आयनांश का प्रयोग किया जाता है तो लग्न कारक में बदल जाता है और चन्द्र के अंश १४°५२'' होंगे।

चित्रापक्षीय आयनांश प्रयोग कीजिए तो लग्न मिथुन होगा और चन्द्र मृत्युभाग

में होगा। मैने इस युवक को शैक्षिक जीवन में बरबादी ([illegible]) [illegible]। [illegible] हानिकारक था, क्योंकि उसके पिता का बहुत ही उत्तम-को[illegible] [illegible] और अपने सेवा काल में वे बहुत ऊँचाई पर पहुँचे थे। यह युव[illegible] [illegible] बरबादी का सूचक था। वह मादक-द्रव्यों (ड्रग्स) का सेवन करने लगा, [illegible] दम छोड़ दी, जिससे उसके हिन्दू पिता को गहरा सदमा पहुँचा।

इस परिवार के लोगों को ज्योतिष का सामान्य ज्ञान था अतः लग्न [illegible] में तर्क-वितर्क भी हुआ।

क) मैनें पिता को बताया कि नवें-भाव में गजकेसरी-योग उनकी स्वयं की उन्नति दिखाता है।

ख) पाँचवे-भाव के स्वामी का छठे-भाव में होना और उस पर वक्री मंगल की दृष्टि शिक्षा बिगाड़ने वाली स्थिति दिखाता है। फिर तर्क दिया कि चौथे-भाव से शिक्षा पर विचार करते हैं। मैंने उन्हें कहा कि वे गणना द्वारा इस बात को सिद्ध करें । हमने इसका सैकड़ों जन्मपत्रियों में सिद्ध-प्रयोग (निरीक्षण) किया है। जैमिनीय ज्योतिष भी पाँचवे-भाव से ही शिक्षा दिखाता है।

ग) तब यह मुख्य प्रश्न उठा कि वृहस्पति चंद्र की दशा में शिक्षा में बिगाड़ (बाधा) क्यों हुआ, जो कि सामान्य रूप में देखने पर उत्तम समय होना चाहिए था। परिवार के लोगों ने रमन अयनांश का प्रयोग किया था, जबकि चित्रापक्ष अयनांश का प्रयोग करने पर चंद्र मृत्युभाग में आता है।

जो अयनांश वर्गीय जन्मकुण्डलियों में और जैमिनीय ज्योतिष में ठीक नहीं बैठता (बिगड़ जाता है) उसे अवैज्ञानिक मानते हुए अस्वीकृत कर देना चहिए। इस (चर्चित) केस में जन्मकुण्डली में चन्द्र यह अन्तर स्पष्ट कर देता है।

आध्यात्मिक पृष्टभूमि (संस्कार) युक्त ज्योतिषी को ऐसे अयनांश का प्रयोग नहीं करना चहिए जो जन्मकुण्डली का गलत फलादेश देता हो। यह ज्योतिष प्रेमियों को बहुत बड़ी हानि पहुँचाता है। स्वभाव में दुराग्रह (हठ) उनकी आध्यात्मिकता की कमी, और उनकी धनलोलुपता दिखाता है। गलत अयनांश पर बने और गलत ढंग से बनी पुस्तकें और पंचाग (भारत में ६०० से अधिक पंचाग प्रयुक्त होते हैं) मान्य नहीं होने चाहिए। वर्गीय जन्मकुण्डलियों और जैमिनीय ज्योतिष के द्वारा भविष्यवाणी के सूक्ष्म प्रयोग को इन गलत अयनांश वाले पंचागों व पुस्तकों ने बरबाद किया है, नुकसान पहुँचाया है। प्रगतिशील ज्योतिष से जीवन रहस्यों को खोलने के प्रयत्नों को, गलत अयनांशों पर आधारित पंचाग व पुस्तकें हानि पहुँचाता है। यह कई दशाब्दियों का हिन्दू ज्योतिष का कटु सत्य है।

ज्योतिषी की मुखाकृति और व्यवहार

कभी-कभी ज्योतिषी की मुखाकृति बहुत तामसिक दिखाई देती है। भारत में अमरीकी शैली पर स्वयं को दर्शाने वाले निर्दय मुखाकृति वाले, चिड़चिड़े ढंग से बात करने वाले और ज्योतिष का अल्प-ज्ञान रखने वाले ज्योतिषी सफल होते दिखाई देते हैं। यह ढंग बढता जा रहा है। उनमें से कई अपने लिए मार्किट बनाने के लिए अमरीका की तरह तथाकथित ज्योतिषीय संगोष्ठियों में जाते हैं। उनमें से किसी के पास भी पहले से दी गई जन्मकुण्डलियों पर, समाचारपत्र में भविष्यवाणी देने का साहस नहीं होता। एक महिला पत्रकार को यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ। उसने मुझसे पूछा कि यदि ये लोग ज्योतिष जानते हैं तो पत्रिका में भविष्यवाणी देने से क्यों डरते हैं? मैने उनसे पूछा कि वह क्यों मानती हैं कि वे ज्योतिष जानते हैं। कुछ ज्योतिषीय पत्रिकाएं और ज्योतिष पर कुछ किताबें छपवाकर और अपने को इस सस्ते ढंग से विज्ञापित करवाकर उन्होंने अपनी साख बना ली है। मार्केटिंग में उनके इस ढंग से उन्हें खूब धन मिलता है। पुस्तकव्यापार के प्रकाशकों और वितरकों का ऐसे ज्योतिषियों से सम्पर्क रखना उनके गिरे हुए निम्नस्तर की नैतिकता दिखाना है। मार्केट को अपने निष्ठुर (ठोस) नियम होते हैं और लेखक ऐसे प्रकाशकों और वितरकों से अपना शोषण करवाने से नहीं बच सकते। सही कार्य में कौन विश्वास करता है?

ऐसे धनलोलुप ज्योतिषी कानून द्वारा दण्डित होने चाहिए। यह सच है कि ऐसे व्यवसायिक ज्योतिषियों को एक सीमा तक सफलता मिली है। फिर भी यह देखा गया है कि एक बार जब वे धनलोलुप बन जाते हैं (जैसा कि धन व्यक्ति को बना देता है) उनका व्यवहार अधिकाधिक तामसिक बन जाता है।

ईश्वरीय विधान में विश्वास

उत्तम नैतिकता वाला ज्योतिषी वेदांग से वेदान्त की ओर चलता है। वह ज्योतिष में उस सत्य को देखता है जो यौगिक ध्यानस्थिति में पाया जाता है। इससे वह अधिक ऊँची आध्यात्मिक प्रेरणाओं की ओर बढ़ता है। ज्योतिष का यह मौलिक उद्देश्य हमारे भ्रष्ट और धनलोलुप युग में पराजित हो चुका है। यदि भारत में यह दशा है तो अमरीका में मुझे यह स्थिति और भी बुरी दिखायी दी। ज्योतिषी ईश्वर के स्थान पर कुबेर की पूजा करने लगे हैं यह हमरे युग की विडंबना है, परन्तु क्या तब ज्योतिषी कर्म में कुछ भी विश्वास करेंगे?

प्रायः मुझसे पूछा जाता है कि अध्यापन के माध्यम से सुप्रशिक्षित जयोतिषियों को सामने लाने में और ज्योतिष शिक्षक बनाने से क्या ज्योतिष में पहले से कहीं अधि क व्यावसायिकता नहीं आई है? यह सत्य है कि ऐसा हुआ है और हमारे पास पहले से अधिक व्यावसायिक लेखक हैं। किन्तु वे इस क्षेत्र के कई ठग ज्योतिषियों से अच्छे

और श्रेष्ठ है। दूसरी ओर ज्ञानहीन, धनहीन ज्योतिष लेखक हैं जो नहीं होने चहिए। कई सम्बंधित ग्रन्थों (पुस्तकों) से संकलन करके अपने नाम पर नई पुस्तक लिखने वाले ज्योतिष लेखकों ने ऐसी पुस्तकें संयुक्तराज्य-अमरीका में ले जाकर ऊँचे मूल्य पर बेचकर धन कमाना शुरू कर दिया है, परन्तु जैसा मैंने कहा कि ऐसी स्थिति में क्या ज्योतिषी कर्म के नियमों पर विश्वास करेंगे? क्या वे स्वयं ज्योतिष में अपनी कुण्डलियों में और अपनी जन्मकुण्डलियों के दसवें-भाव के स्वामी में विश्वास करेंगे?

वेदान्त के ग्रह वृहस्पति का अच्छा होना आवश्यक है, क्योंकि यह वेदांग का ग्रह भी है। गुरु-चण्डाल-योग वाला ज्योतिषी पवित्र परंपरा वाले ज्योतिष में सम्मान के निकट भी नहीं आता। पुन: अच्छा दसवां-भाव अच्छा द्वितीय-भाव और अच्छी दशा सफल ज्योतिषी के लिए आवश्यक है। वेदांग और वेदान्त का प्रतीक निर्दोष वृहस्पति शुद्ध पंचम-भाव निष्कलक पाँचवे-भाव का स्वामी दूसरे-भाव की व दूसरे भाव के स्वामी की अच्छी स्थिति वाला ज्योतिषी सामान्य से अच्छा होता है। इसका क्या अर्थ है? आध्यात्मिक भाव वाले ज्योतिषी अब नगण्य (बहुत कम) हो गए हैं।

पूर्णरूपेण सफल, आधी सफल या असफल भविष्यवाणियाँ ज्योतिषी को यह महत्वपूर्ण सबक सिखाती हैं - *केवल ईश्वरीय विधान सर्वोपरि है। वेद का एक आवश्यक अंग होने के कारण ज्योतिष वेदांग माना जाता है। द्वन्द्व-मुक्ति की जिस ऊँची स्थिति में योगी पहुचता है वेदान्त कहलाती है। यही कारण है कि वृहस्पति की अच्छी स्थिति के बिना कोई अच्छा ज्योतिषी नहीं बन सकता।*

मैं यह कहते हुए निष्कर्ष दे रहा हूँ कि भाग्य और इच्छा संबंधी चर्चा अन्तहीन है। महाभारत से देखिये कि क्यों प्रयत्न आवश्यक है और यह भी देखिऐ कि क्यों कुछ घटनाएं पूर्वनिर्धारित (भाग्य में लिखी) होती है?

दैवे पुरुषकारे च लोकोऽयं सम्प्रतिष्ठित: ।
तत्र दैवं तु विधिना कालयत्तेन लभ्यते।।

संसार प्रयत्नों और भाग्य पर निर्भर है भाग्य (पूर्वनिर्धारित) फल तभी मिलते हैं जब सही समय पर प्रयास किये जाँय।

युद्धं च क्षत्रशमनं पृथिवीक्षयकारणम।
किंचिदेव निमित्तं च भवत्यत्र क्षयावहम्।।

जब अश्वमेघ यज्ञ किया जाता है तब ऐसी स्थिति बनती है, जो भयंकर युद्ध के माध्यम से विश्व के विनाश का कारण बन जाती है। यह क्षत्रियों और विश्व के विनाश का कारण बन जाता है।

(ऋषि नारद युधिष्ठिर को समझाते हैं)

४ राहु | ३ लग्न | २ | ५ मंगल | १ | ६ | १२ | ७ | ९ सूर्य | ११ गुरु चंद्र | ८ शुक्र | १० शनि केतु बुध

			लग्न
गुरु चंद्र	संख्या-४३		राहु
शनि केतु बुध	३१ दिसम्बर १९६२ ०६:३० शाम को अक्षांश-२८ उ. ३९ देशान्तर-७७ पूर्व ३१		मंगल
सूर्य	शुक्र		

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
२९° ०९"	१६° ०२"	१३° २४"	०१° १६"	०४° ४५"
गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
१५° ३५"	०१° ३३"	१६° ३५"	०६° १६"	०६° १६"

जब शिशुपाल भगवान कृष्ण द्वारा मार दिया गया तब युधिष्ठिर ऋषि व्यास से पूछता है क्या भविष्यवाणी के अनुसार बुरे परिणाम समाप्त हो गए है? उनका उत्तर था -

त्रयोदश समा राजन्नुत्पातानां फलं महत्।
सर्वक्षत्रविनाशाय भविष्यति विशाम्पते।।

इन महान उत्पातों का परिणाम १३ वर्षों तक अनुभव किया जाता रहेगा। यह क्षत्रियों को नष्ट करेगा।

त्वामेकं कारणं कृत्वा कालेन भारतवर्षभ।
समेतं पार्थिवं क्षत्रं क्षयं यास्यति भारत।
दुर्योधनापराधेन भीमार्जुनबलेन च।।

तुम भाग्य के चुने हुए उपकरण बनोगे, जिससे सही समय पर विश्व के राजाओं का विनाश होगा। इसका कारण दुर्योधन के अपराध होंगे और अर्जुन तथा भीम विनाश को पूर्ण करेंगे।

समय कैसे बचाता है

न कालो दण्डमुद्यम्य शिरःकृन्तन्ति कस्यचित्।
कालस्य बलमेतावद् विपरीतार्थदर्शनम्।।

समय डंडा या तलवार लेकर नजर नहीं रखता। **समय** व्यक्ति की बुद्धि को विपरीत बना देता है।

तारे तोड़कर लाने वाले और धन कमाने वाले महत्वाकांक्षी ज्योतिषियों के साथ नहीं होता है। किन्तु हम इस सबमें विश्वास रखते हैं और क्या कलियुग के हम लोग ऋषियों की सन्तान होने का दावा कर सकते हैं?

हिन्दू ज्योतिष में पुनर्जन्म

प्रस्तावना

"*ज्योतिष और कर्म*" पर मैंने जो पुस्तक लिखी उसे मेरे मित्रों ने मेरी सर्वश्रेष्ठ पुस्तक बताया (कारण वे ही जानते होंगे)। "*पुनर्जन्म और परम्परा*" का यह यह जुड़ा हुआ अंश उसी भाव (विषय) का विस्तार माना जाना चाहिए। भारत और विश्व के कुछ अन्य देशों में पुनर्जन्म में परम्परागत विश्वास तथा सामूहिक और परीक्षित, वैयक्तिक अध्ययन दोनों ही है। हाल के वर्षों में वर्जीनिया विश्वविद्यालय, संयुक्तराज्य-अमरीका के स्टीवेंसन ने उल्लेखनीय काम किया है। हालांकि कई भारतीय इससे भी बहुत बेहतर काम कर सकते थे, परन्तु सामान्य भारतीयों की असफलता की प्रकृति के कारण और संसाधनों की कमी व उदासीनता के कारण ही वे असफल हुए होंगे। स्टीवेंसन का कार्य प्रशंसनीय है क्योंकि एकदम भिन्न संस्कृति और ठोस वैज्ञानिक पृष्टभूमि से जुड़े होने के बावजूद, उन्होंने अपनी भावना की उस कमी को जीतने का प्रयास किया, जो हजारों परिवारों के अनुभवों पर आधारित और हिन्दू-जीवन-दर्शन की सामान्य और जीवित तथा शाश्वत परम्परा है।

महाकाव्य रामायण में भगवान राम के चौदह वर्षों के वनवास के जिन अनुभवों को लक्ष्मण ने भीलों के राजा निषादराज को बताया, उन्हें आवश्यकता वश उद्धघृत करते हुए मुझे अपनी बात आरंभ करनी चाहिए।

(आध्यात्म रामायण)

"कोई भी व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के सुख या दु:ख का कारण नहीं है। इसका कारण किसी व्यक्ति के पूर्व जन्म के कर्म है। कोई दूसरा सुख या दु:ख नहीं देता। ऐसा कहना अज्ञानता है। "मैं करता हूँ" ऐसा सोचना ही अज्ञानता है, हर व्यक्ति अपने

कर्मों के बंधन में रहता है। व्यक्ति अपने व्यवहार द्वारा स्वयं ही मित्र, शत्रु, तटस्थ या ईर्ष्यालु व्यक्ति बनता है। अपना प्रारब्ध मानते हुए मनुष्य को दुःख या सुख स्थितियों में प्रसन्नचित रहना चाहिए। जहाँ तक मेरा संबंध है, तो न मुझे सांसारिक सुख भोगों की इच्छा है न त्यागने की। ये सुख भोग मुझे जीवन में मिलें या न मिले मैं इनके वशीभूत नहीं हूँ। कहीं भी और कभी भी किए गए पाप-कर्मों या पुण्य-कर्मों के फल अपरिहार्य रूप में भोगने पड़ते है। तब न तो अभिमान करना चहिए और न तो दुःखी होना चाहिए क्योंकि ईश्वरीय विधानों का उल्लंघन कोई नहीं कर सकता। मनुष्य सुख और दुख से घिरा रहता है, क्योंकि मानव-जन्म पाप और पुण्य कर्मों का मिश्रित परिणाम है। दुःख के बाद सुख आता है, और सुख के बाद दुःख आता है। सुख में दुःख निहित होता है और दुःख में सुख। ये दोनों पानी और कीचड़ की तरह परस्पर मिश्रित रहते हैं, इसलिए समझदार व्यक्ति यह सोचकर इच्छाओं की पूर्ति पर अभिमान नहीं करता है, और इच्छापूर्ति न होने पर कभी भी निराश नहीं होता है।

(मुक्त अनुवाद पृष्ट-८)

जन्म और पुनर्जन्म के चक्र में ईश्वरीय माया के प्रभाव के कारण हम भूल जाते हैं कि हमें अपने कर्मों के परिणामस्वरूप मित्र या शत्रु मिलते हैं। मानव ज्ञान के इस क्षेत्र में एक ज्योतिषी को दूसरे से अधिक बुद्धिमान होना चहिए। परन्तु अधिकांश धनलोलुप और ज्योतिष-कार्य से अपनी आजीविका चलाने वाले न इस तथ्य को जानते हैं, न जानना चाहते हैं। यही कारण है कि ज्योतिष गलत ज्ञान प्राप्त धूर्तों द्वारा उपयोग में लाई जाती रहेगी, जैसा कि प्राचीन काल में भी होता रहा है।

हमारे यह बताने के लिए पर्याप्त प्रमाण हैं कि हर युग में और हर देश में ज्योतिष का तिरस्कार होता रहा है, फिर भी यह पनपती रही है क्योंकि इसका अलौकिकं वैज्ञानिक आधार है। हर युग में योगियों और सन्यासियों के रूप में ठग भी रहे हैं। झूठे भविष्यवक्ता भी रहे हैं। ऐसे कट्टरधर्मी भी हैं जो अपने धर्म को सतही और अन्धविश्वासी बताने वाले प्रमाण को दबा देते हैं (नष्ट कर देते हैं)। हमारे पास ऐसे भौतिक विज्ञानी (अपने ज्ञान पर अंधविश्वास करने वाले) भी हैं जो कूप-मंडूको के समान ये नहीं जानते कि जिस ज्ञान-रूपी सीमित कूप में उन्होंने निपुणता प्राप्त की है उसके बाहर असीमित मानव ज्ञान है। ये कुएं उनकी प्रयोगशालायें है। संक्षेप में कहें तो इस कारण ही जो वैयक्तिक अध्ययन मैंने किये हैं वे संख्या में सीमित होते हुए भी विवाद रहित हैं। भारत में, और विशेषकर संयुक्तराज्य-अमरीका दोनों में ही बहुत से मित्रों ने मेरी सहायता का प्रस्ताव रखा किन्तु वे मुझे इस बात का विश्वास नहीं दिला सके कि ज्योतिष सम्बन्धी खोजों की उनकी सामग्री दिखावटी (अविश्वासनीय) नहीं है। संयुक्तराज्य-अमरीका में मुझे दी गई सामग्री अप्रमाणिक थी। प्रमाणिकता से मेरा अभिप्राय है कि किसी व्यक्ति के दोनों जन्मों की जन्मकुण्डलियां

सही होनी चाहिए और मेरे अलावा किसी अन्य को यह प्रमाणित करना चाहिए कि वे वास्तविक और वैध हैं। इस पुस्तक में प्रस्तुत वैयक्तिक अध्ययन में मैंने यह दिखाया है।

एक ज्योतिषी के लिए यह जानना आवश्यक है कि वेदांग का प्रतीक ग्रह वृहस्पति वेदांत को भी नियन्त्रित करता है (विदों के छ: अंगों मे से ज्योतिष एक है)। वृहस्पति दैविक बुद्धि देता है। जिस ज्योतिषी की जन्मकुण्डली में वृहस्पति की स्थिति अच्छी नहीं होती वह आत्म-प्रशंसा में, पर निन्दा लिखने में, अपने से अधिक योग्य और प्रसिद्ध ज्योतिषी पर ईर्ष्यापूर्ण आक्रमण जैसी माया में खो जाता है। ऐसी ही ईश्वर की माया भी होती है। अच्छे ज्योतिषियों के ज्योतिषीय ग्रह संयोगो के बारे में कई लेखक अज्ञानपूर्ण लेख लिख चुके हैं। उनमें से अधिकांश ने वृहस्पति के महत्वपूर्ण ग्रह होने की उपेक्षा की है। दैवीय ज्ञान के प्रतीक वृहस्पति की जन्मकुण्डली में उत्तम स्थिति होनी चाहिए। उसके बाद गणित, खगोल-विज्ञान और ज्योतिष के प्रतीक ग्रह बुध का महत्व है। ज्योतिष में मौलिक वेदान्त विषय जानने-समझने के लिए इन दो ग्रहों का आध्यात्मिक भावों से जुड़ा होना आवश्यक है। वाणी के प्रतीक द्वितीय-भाव में वृहस्पति का होना या उसकी पुष्टि होने से वाणी में सच्चाई आती है, जिससे वॉक् सिद्धि या भविष्यवाणी कथन का आध्यात्मिक उपहार मिलता है जो आध्यात्मिक ज्योतिषी बनने के लिए आवश्यक है। किन्तु पाप-ग्रहों से युति (संयोग या दृष्टि) इसे गुरू-चण्डाल-योग में परिवर्तित कर देता है। ऐसे ज्योतिषियों के लिए ज्योतिष जैसा अलौकिक विज्ञान मुक्ति-मार्ग न होकर, नरक-मार्ग बन जाता है। ऐसे ज्योतिषी नरक से भी नहीं डरते हैं, वे धनी और प्रसिद्ध हैं, क्योंकि ज्योतिषीय ज्ञान की कमी हाने से और धन-यश की लिप्सा होने के कारण वे नैतिकता के सभी मान-दण्डों का उल्लंधन कर देते हैं। ज्योतिष का मौलिक भारतीय अर्थ दृष्टि-विज्ञान है। वेदों से निकलने वाले इस दिव्य-प्रकाश को वे ज्योतिषी अनदेखा कर देते हैं जिनके लिए ज्योतिष मात्र सौभाग्य-दुर्भाग्य देखने की विद्या है। ज्योतिष के इस पवित्र उद्देश्य को भूल जाना उनके लिए स्वाभाविक है, क्योंकि उनके लिए ज्योतिष परम-सत्य की खोज न होकर मानव-ज्ञान की आजीविका कमाने की एक मात्र शाखा है।

मैं ज्योतिष की आत्म योग्यता की बात कर रहा हूँ, क्योंकि मैंने यह जानने की पूरी कोशिश की कि, क्या ज्योतिष की किसी विधि द्वारा इस बात का ज्ञान निश्चित रूप से संभव हो सकता है, कि किस लोक से मनुष्य वर्तमान रूप में अवतरित हुआ और मृत्यु के बाद वह किस लोक में जायेगा। मेरे स्वर्गीय ज्योतिष-गुरू योगी भास्करानंद जी और मेरी स्वर्गीय माता ने बिना किसी जन्मकुण्डली के इस सम्बन्ध में व्यावहारिक संकेत सा दिया था। अन्य कोई मुझे व्यावहारिक संकेत (ज्ञान) इस सम्बन्ध में नहीं दे पाया। स्वयं मै भी ऐसी कोई तकनीकी रचना नहीं ढूंढ पाया।

इसलिए मैंने एक व्यक्ति की दोनों जन्मों की कुण्डलियों पर विचार किया ताकि किसी प्रकार विश्वासनीय आँकडे प्राप्त किये जा सकें। ईश्वर ने मेरी सहायता की। आज मैं ज्योतिष की दृष्टि से हल्का सा संकेत देने में समर्थ हूँ, कि पुनर्जन्म की हमारी खोज में, पराशर और बराहमिहिर के सिद्धान्तों पर निर्भरता हो सकती है। एक छोटे से अध्याय में इन सिद्धान्तों का सार दिया जा रहा है।

पुनर्जन्म भारतीय परम्परा का एक अंग है, मात्र इसलिए पुनर्जन्म को वास्तविकता नहीं कहा जा रहा है बल्कि, ज्योतिष के अलावा कई अन्य बौद्धिक क्षेत्रों में इस विषय पर गहन खोज हो रही है।

जिन वैयक्तिक अध्ययनों की चर्चा यहाँ हो रही है उनमें से पाँच (वास्तव में दस) १९९४ और १९९५ में प्रस्तुत किये गये थे, परन्तु १९९४ में भारतीय विद्या-भवन में मेरे विद्यार्थियों के सामने इसको पहले प्रस्तुत किया गया। ज्योतिषीय अनुसंधानों और हमारी पुस्तकों के नामों को चुराने की भद्दी प्रवृति बन गई है। ऐसे वातावरण में ज्योतिष में वास्तविक और ईमानदारीपूर्ण अनुसंधानों (खोजों) की आशा कम ही है। ज्योतिष में साहित्य की चोरी उतनी ही निन्दनीय है जितनी जमाखोरी। ज्योतिष की दृष्टि से पुनर्जन्म को मानव-अस्तित्व सिद्ध करने में और प्रसिद्ध केसों में दोनों जन्मों में कड़ी दिखाने के लिए एक से अधिक केसों के माध्यम से दिखाया जाने वाला प्रयास है ऐसा मेरा मानना है लेकिन यह प्रयास संतोष-जनक रूप से सारगर्भित नहीं है, यह बात मैं स्वीकार करता हूँ। किन्तु यह प्रयास ज्योतिषीय अनुसंधानों पर बहस शुरू करने के लिए किया जा रहा है। मेरे मर जाने के बाद किसी मोड़ (अवसर) पर दूसरे लोग अधिक सफलता प्राप्त कर सकते हैं। मुझे इस बात पर जोर देना चाहिए कि इस दिशा में मेरी यह शुरूआत मात्र है। इस कार्य को पूरा करने में दशाब्दियों तक का समय लगेगा, क्योंकि किसी व्यक्ति विशेष की दोनों जन्मों की जन्मकुण्डलियों का गैर-ज्योतिषीय अनुसंधानों के समर्थन से पुनर्जन्म का केस होने की सच्चाई सिद्ध करना कोई आसान काम नहीं होगा।

अगली शताब्दी में जब मनुष्य का दृष्टिकोण अधिक परिवर्तित होगा तब ज्योतिष श्रेष्टतम-विज्ञान या विज्ञानों में श्रेष्ठ-विज्ञान का स्थान ले लेगा। तब मेरे द्वारा किए गए ज्योतिषीय अनुसंधान गहन शोधों के लिए दिशा-निर्देश बनेंगे। पहले की तरह इस समय भी कुछ लोग मेरी निंदा करेंगे और कुछ लोग प्रशंसा, ऐसी मेरी मान्यता है।

पाँचवे-भाव का निर्दोष स्वामी, दूसरे-भाव की और उसके स्वामी की सुखद-स्थिति, एक अच्छे ज्योतिषी की पहचान हैं। इसका मतलब क्या है? आध्यात्मिक ज्योतिषी इस समय नहीं के बराबर है।

सभी ज्योतिषीय-भविष्यवाणियां चाहे वे पूरी तरह सत्य हैं, अर्धसत्य हैं या झूठी वे ज्योतिषी को महत्वपूर्ण सबक सिखाती हैं। केवल ईश्वरीय विधान ही सर्वोपरि है।

वेदों के अंगों में से एक भाग ज्योतिष वेदांग के रूप में जाना जाता है। द्वन्द-रहित ऊँची-स्थिति जिस पर योगी पहुँचते हैं वेदान्त कहलाती है। यही कारण है कि अच्छे वृहस्पति के बिना कोई अच्छा ज्योतिषी नहीं बन सकता। एक अच्छे ज्योतिषी को सबसे पहले ज्योतिष में विश्वास होना चाहिए। यदि उसकी जन्मकुण्डली में ऊँची आदर्शवादिता और आध्यात्मिकता नहीं है तो वह केवल कटु-भाषी धनलोलुप होगा।

लेकिन तब क्या हमें यह स्मरण नहीं करना चाहिए कि हम कलियुग में जी रहे हैं।

(के.एन. राव)

शास्त्रीय परंम्परा और पुर्नजन्म

गीता की श्रेष्ठतम शिक्षाएं – गीता और पुनर्जन्म

गीता का विषय दिव्यता का चमकता हुआ प्रकाश है। इसके उपदेश अत्यधिक आशावादी हैं जिनमें बताया गया है कि केवल दिव्य प्रकाश ही जन्मों के चक्र से मुक्ति और आजादी दिला सकता है। यही कारण है कि गीता इस पृथ्वी पर सर्वोत्तम ग्रन्थ है, और रहेगा।

गीता का संदेश स्पष्ट है – "यदि प्राणी स्वयं ईश्वर को समर्पित हो जाता है, तो मुक्ति उसका जन्मसिद्ध अधिकार है।

गीता का विषय जन्मों और पुनर्जन्मों के चक्र की समस्या से मुक्ति के इर्द–गिर्द घूमती है। प्रधान धर्मों द्वारा दिखाये गये (बताये गये) नरक की शाश्वत आग (कष्टों) के भय के विपरीत गीता में प्रत्येक के लिए मुक्ति की आशा विद्यमान है। पापी और पतित कहे जाने वालों के लिए भी गीता में भुक्ति की उतनी ही आशा (संभावना) है जितनी दूसरों के लिए। स्वयं को और स्वयं के कर्मों को ईश्वर को समपर्ण ही मुक्ति का प्रकाश मार्ग है। गीता मानव को कर्म करने से नहीं रोकती। गीता का अध्ययन करने के पश्चात मनुष्य अपना कर्तव्य मन लगाकर करता है और फल की इच्छा न करने का निश्चय कर लेता है।

पुनर्जन्मों के बारे में गीता क्या कहती है, इसका सारांश यहाँ दिया जा रहा है।

अध्याय २

अर्जुन के मन में यह भयानक वेदना उत्पन्न हो गई थी कि कुरूक्षेत्र के मैदान में वह

अपने चचेरे-भाइयों, चाचा, ताऊ, मामाओं, गुरूओं और पूजनीय बुजुर्गों के विरुद्ध कैसे लड़ेगा। तब उसे अपने मन की इस भावना पर विजय पाने के लिए भगवान-श्रीकृष्ण ने तीन मुख्य तथ्यों को स्पष्ट करते हुए, मानवों के लिए अब तक का श्रेष्ठ उपदेश देना आरंभ किया।

जीवन और मृत्यु क्या है?

१. *जीवन क्या है? यह जानने से पहले यह जानना जरूरी है कि मृत्यु क्या है? यह जानना आवश्यक है कि मृत्युशोक से उत्पन्न मोह पर विजय पाना आवश्यक है। बचपन, यौवन और वृद्धावस्था जीवन के पड़ाव हैं जिनसे होकर प्रत्येक को गुजरना पड़ता है।*

२. यह निश्चित है कि जो जन्म ले चुके हैं उन्हें अवश्य मरना है, और पुनर्जन्म लेना है। अत: इन अपरिहार्य-स्थितियों (घटनाओं) पर किसी को शोक नहीं करना चाहिए।

३. *स्थिर चित्तवृत्ति वाला व्यक्ति अपने कर्मों का फल त्याग देता है, जन्म के बन्धनों से स्वयं को मुक्त करता है, और मोक्ष को प्राप्त करता है।*

(श्लोक १३, २७, ४३, ५७, ५०, ५१)

अध्याय ४
जीवन से पहले जीवन

भगवान अर्जुन को बताते हैं कि उनके और अर्जुन के कई जन्म हो चुके हैं जिन्हें केवल वे जानते हैं जबकि अर्जुन नहीं जानता।

भगवान अजन्मा है किन्तु अपनी योगमाया से (दैविक शक्ति जो भ्रमित करती है) प्रकट हो जाते हैं किन्तु अपनी प्रकृति (स्वभाव) को नियंत्रण में रखते हैं। सज्जनों की रक्षा और दुष्टों का नाश, अवतार लेने का उद्देश्य होता है। इसी उद्देश्य के लिए भगवान हर युग में अवतार लेते हैं। भगवान का अवतार और लीलाएं दैवीय होते हैं। जो इस तथ्य को जानते हैं वे जन्मों के चक्र से मुक्त हो जाते हैं।

ऐसी मन-स्थिति बन जाने पर भक्त की सारी आसक्तियाँ समाप्त हो जाती है। यह-स्थिति दिव्य-ज्ञान प्राप्त हो जाने पर होती है वह मुक्ति पा लेता है।

(श्लोक ५,६,७,८,२३)

अध्याय ६
आध्यात्मिक अभ्यास में स्थिरता या अस्थिरता के फल

अर्जुन इस प्रसंग में बहुत उपयुक्त प्रश्न रखता है- क्या एक व्यक्ति सांसारिक और

आध्यात्मिक भावों के मध्य झूलते हुए अन्तर्मन में स्वयं को क्षत-विक्षत नहीं पाता है?

भगवान क्रम से इस लक्ष्य को स्पष्ट करते हैं - जो आध्यात्मिक मार्ग पर चलता है, उसका अन्त बुरा नहीं होता। यदि किन्हीं कारणों से वह अपनी आध्यात्मिक साधना पूरी नहीं कर पाता तो भले ही वह मोक्ष न पा सके फिर भी वह स्वर्ग जैसे लोकों में पहुँचता है, और अपने सुकर्मों के फलस्वरूप वहां सुखपूर्वक रहता है। तत्पश्चात् वह पुण्यात्मा और सुसंस्कृत परिवार में जन्म लेकर अपनी अपूर्ण साधना को पूर्ण करने के अनुकूल वातावरण पाता है।

अथवा ऐसे व्यक्ति का पुनर्जन्म किसी प्रसिद्ध योगी के परिवार में होता है हालांकि ऐसा बहुत कम देखने में आया है।

ऐसे परिवार में जन्म लेने पर और साधना-मार्ग पर चलने के लिए, अनुकूल वातावरण पाने पर, वह पूर्वजन्म के आध्यात्मिक अभ्यास के प्रभाव से वह स्थिर बुद्धि हो जाता है और अपने कर्मों के फल की पाने की इच्छा नहीं रखता, क्योंकि उसका आध्यात्मिक ज्ञान वास्तविक होता है।

(श्लो ३८, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५)

मृत्यु के समय के विचार

मरणासन्न व्यक्ति के मस्तिष्क (मन) में जो विचार होते हैं वे उसके पुनर्जन्म को निश्चित करते हैं। अगर वह ईश्वर का ध्यान-मनन करता है तो उसे मोक्ष मिल जाता है।

मृत्यु के समय जिस वस्तु (व्यक्ति) के बारे में सोचता है वही जन्म वह मृत्यु के बाद पाता है। मृत्यु के समय का मुख्य विचार ही भावी जीवन के भाग्य को निश्चित करता है।

इस लिए व्यक्ति को हर समय कर्म करते रहना चाहिए और सांसारिक कामों में मन लगा होना चाहिए।

जिसका मन-मस्तिष्क इस प्रकार अपने ध्येय पर लगा रहता है वह मोक्ष पा जाता है।

इसलिए प्राणायाम के माध्यम से किये जाने वाले योगाभ्यास के कारण व्यक्ति मृत्यु के समय अपना ध्यान भवों के बीच में (तिलक/बिंदी लगाने के स्थान पर) केन्द्रित कर देता है, और ईश्वर-स्मरण में लीन स्थिर बुद्धि मोक्षमार्ग पर ले जाती है।

मोक्ष की उच्च-स्थिति में पहुँचने वाले महान व्यक्ति इस संसार में फिर जन्म नहीं लेते, क्योंकि कुल मिलाकर यह संसार दुःखों का घर है और अनित्य है।

यह स्मरण रखना चाहिए कि ऊँचे लोग भी प्रकट होते हैं और लोप हो जाते हैं किन्तु जो ईश्वर पर ध्यान केन्द्रित कर देता है उसका पुनर्जन्म नहीं होता है।

योगी का मार्ग और उसका इस संसार से महाप्रस्थान दोनों तथ्य जानने आवश्यक है। उत्तरायण में (जब सूर्य मकर से कर्क के मध्य घूमता है अर्थात् जनवरी से जुलाई तक) दिन के समय और शुक्ल-पक्ष में यौगिक स्थिति में योगी अपना शरीर त्यागता है। इसके विपरीत जब दक्षिणायन (जब सूर्य कर्क से मकर के बीच घूमता है), कृष्णपक्ष में यौगिक-स्थिति में योगी अपना शरीर त्यागता है तो उसका पुनर्जन्म होता है।

(यह प्रतीकात्मक व्याख्या है। योगी इसकी व्याख्या भिन्न प्रकार से करते हैं।)

(श्लोक ५,६,७,८,९,१०,१५,१६,२३,२४,२५)

इसी प्रकार का उदाहरण वाल्मीकि रामायण में भी देखिए। सभी शास्त्रों (धार्मिक-ग्रन्थों) में बड़े सुन्दर ढंग से इन विचारों को दुहराया गया है।

राम के उच्च-चरित्र वाले छोटे भाई भरत (वनगमन के बाद चित्रकूट में) उन्हें वापस चलने और अयोध्या के राजसिंहासन पर बैठने का अनुरोध करने आये थे। राम से वार्तालाप के मध्य उन्होंने कहा था –

अन्तकाले हि भूतानि मुह्मन्तीति पुरा श्रुति:
राज्ञैव कुर्वतो लोके प्रत्यक्ष से श्रुति:कृता।

ऐसा कहा जाता है कि आसन्न-मृत्यु के समय मनुष्य मोहित हो जाता हैं व अपना विवेक खो देते हैं। ऐसा कठोर निर्णय लेने से (राम को राज्य छोड़कर वनगमन के लिए कहकर) राजा दशरथ ने यह सत्य सिद्ध कर दिया। "जब आप स्वयं दयनीय स्थिति में हों तब आप दयनीय-स्थिति में पड़े दूसरे व्यक्ति पर क्यों दया कर रहे हैं। पानी के बुलबुले जैसे (क्षण भंगुर) मानव शरीर में रहते हुए दूसरों के लिए किये गए निर्णय में मनुष्य कितना दयनीय हो जाता है।" (पृष्ठ-७३०)

यथा काष्ठं च काष्ठं च समेयातां महार्णवे।
समेत्य तु व्यपेयातां कालमासाद्य कंचन।।
एवं भार्याश्व पुत्राश्च ज्ञातश्च वसूनि च।
समेत्य व्यवधावन्ति ध्रवो ह्येषां विनाभव:।।

(वाल्मीकि रामायण-पृष्ठ-४५९)

पुत्री, पुत्र, परिवार और धन मिलते हैं और पृथक हो जाते हैं। जैसे समुद्र में तैरते हुए दो तख्ते कभी जुड़ जाते हैं और कभी अलग हो जाते हैं क्योंकि ऐसा पृथक होना अपरिहार्य है।

महाभारत से उदाहरण

१. जो व्यक्ति मरे हुए के लिए शोका-कुल होता है, वह न तो मर सकता है और न मरे हुए व्यक्ति से मिल सकता है। जब संसार की ऐसी प्राकृतिक स्थिति है तब शोका-कुल होने से क्या लाभ? काल प्रत्येक का अन्त इसी प्रकार करता है। काल का न तो कोई प्रिय है और न ही वह किसी से घृणा करता है। (पृष्ठ-४३७७)

२. हम हजारों बार जन्म ले चुके हैं और हजारों माता-पिता, स्त्रियों और बच्चों का प्यार पा चुके हैं। किन्तु क्या हम जानते हैं कि अब उनका सम्बन्ध किससे है और उनमें से किससे हमारा सम्बन्ध है?

३. परेशानी हजारों स्थानों से उत्पन्न होती हैं। भय के भी सैकड़ों कारण हैं। वे मूढ़ व्यक्तियों को प्रभावित करते हैं बुद्धिमान को नहीं।

४. मनुष्य को अपनी मानसिक-परेशानियों को अपने विवेक से और शारीरिक रोगों को दवाइयों से नियंत्रित करना चाहिए। यह विज्ञान की शक्ति है मनुष्य ऐसा कैसे कर सकता है।

विदुर द्वारा दिया गया उत्तर

बुद्धिमान व्यक्ति को केवल उस काम का अभ्यास करना चाहिए जो उसे सुख और दु:ख के द्वन्द (दुविधा) से मुक्त कर सके। आसक्ति रहित व्यक्ति की दृष्टि में महानता ख्याति तथा उपलब्धियों में और समान शक्ल के लोगों में कोई अन्तर नहीं होता।

शरीर की तुलना नष्ट होने वाले घर से की जाती है। जो अमर है वह आत्मा है... मनुष्य का इस संसार में जीवित रहना और जीवित न रहना उसके पूर्व जीवन के कर्मों पर निर्भर होता है। जब संसार की यह प्राकृतिक स्थिति है तो चिन्ता कैसी?

जो बुद्धिमान व्यक्ति सात्विक बन जाता है, वह दूसरों का हित चाहता है। प्राणियों के इस संसार में आवागमन को कर्म के विधानों से नियंत्रित मानता है और मोक्ष की स्थिति प्राप्त करता है।

विश्व की प्रकृति

यह समझने के लिए कि कौन मुक्तावस्था को प्राप्त कर सकता है, जिस संसार में हम रहते हैं उसकी प्रकृति को, समझने के लिए विदुर पहले एक कहानी और उसकी प्रतीकात्मकता बताता है।

कहानी

एक ब्राह्मण विषैले और हिंसक जन्तुओं से भरे वन से होकर यात्रा कर रहा था।

गरजते हुए सिंहो, भयंकर-भेड़ियों, विशालकाय-हाथियों और भालुओं ने उस वन को भयजनक स्थान बना दिया था। मांसाहारी पक्षी एक स्थान से दूसरे स्थान पर उड़ कर जाते रहते थे। अत्यधिक व्याकुल ब्राह्मण के मन में अनेक प्रकार के भय बढ़ने लगे। उनसे बच निकलने के लिए ब्राह्मण ने बहुत प्रयास किये परन्तु उन्होंने पीछा करना नहीं छोड़ा। इसी बीच उसने स्वयं को एक भयानक नारी के भुजपास में बंधा हुआ पाया। वन में घास और तिनके से ढका हुआ एक कुआं था ब्राह्मण कुएं में गिर पड़ा परन्तु अंगूर के बेलों और अन्य लताओं में अटक जाने के कारण वह कुएं की तली तक नहीं पहुँचा। वह औंधे मुंह गिरा था उसका मुंह नीचे की ओर और टांगे ऊँपर की ओर थी। कुएं में उसने दूसरा खतरा देखा। उसने कुएं (गढ्ढे) में एक विशालकाय कोबरा सर्प देखा। कुएं की जगत के पास उसने छः मुखों वाला विशालकाय हाथी देखा। हाथी सफेद रंग का था और वह पैरों से चल रहा था। जिन लताओं में ब्राह्मण फॅस गया था वे मधुमक्खियों से भरी थीं जो छत्तों से टपकने वाले शहद को पी रही थीं।

जिन लताओं में वह झूल रहा था उन्हें चूहें कुतर रहे थे फिर भी शहद पीते रहने की इसकी ललक उसे नहीं छोड़ रही थी। उसके मन को छः प्रकार के भय सता रहे थे।

पहला वन के भयानक सर्पों का भय, दूसरा वन की सीमा पर उसकी प्रतीक्षा करती एक भयानक नारी का भय, तीसरा वन के उस कुएं तली में बैठे कोबरा सर्प का भय, चौथा कुएं की जगत के चारों ओर घूमते विशालकाय हाथी का भय, पाँचवा जिन लताओं पर वह लटका था उन्हे चूहों द्वारा काट दिये जाने के कारण कुएं में गिरने का भय और छठा मधुमक्खियों द्वारा काटे जाने का भय।

विदुर धृतराष्ट्र को इस कहानी के प्रतीकों को (भावों को) समझाते हुए कहते हैं कि यह कहानी इस तथ्य का एक उदाहरण है कि निराशक्ति की भावना के बिना कोई मुक्ति नहीं पा सकता।

प्रतीकों के अर्थ

वन जिस संसार में हम जन्में है और रह रहे हैं, यही विशाल वन है।

सर्प विभिन्न प्रकार की बीमारियां ही सर्प हैं।

नारी हमारी शक्ति को क्षीण करते, बुढ़ापे के नजदीक ले जाने वाली और मृत्यु के समीप लाने का प्रतीक है।

कूप मानव शरीर ही कूप का प्रतीक है।

लतायें कुएं की लतायें वे इच्छायें और आशाएं हैं जिनसे मनुष्य आजीवन चिपका रहता है।

कोबरा कुएं की तली में बैठा कोबरा काल है, जो जीवन-यात्रा की समाप्ति

का प्रतीक है।

हाथी छः मुखों वाला हाथी वर्ष का प्रतीक है जिसमें छः ऋतुएं होती हैं। उसके बारह पैर बारह महीनों का प्रतीक हैं।

चूहे रात और दिन लताओं को काटने वाले चूहे हैं जो हमारी जीवन-अवधि को कम करते हैं और हमें शारिरिक अन्त के बिन्दु तक खींच कर ले जाते हैं।

मधुमक्खियाँ नाना प्रकार की इच्छाएं ही मधुमक्खियां हैं।

शहद छत्तों से टपकने वाला शहद मानव-अभिलाषाओं का काल्पनिक आनन्द-गृह है।

जो बुद्धिमान-व्यक्ति संसार की इस प्रकृति और विषयों को जानते हैं वे निरासक्ति का विकास करते हैं और मुक्ति प्राप्ति की प्रबल-इच्छा रखते हैं।

नोट

गीता में सामान्य संसारिक मनुष्य को इच्छाओं के हजारों बंधनों में बंधा हुआ बताया गया है। आध्यात्म रामायण में ऐसी शक्ति को कोबरा सर्प के मुंह में फॅसे उस मेंढक के समान बताया गया है, जो आसन्न मृत्यु देखते हुए भी कुछ कीटों (मच्छरों) को खाने की इच्छा रखता है।

ईश्वर और देवताओं के अवतार

पुनर्जन्म में हिन्दुओं का विश्वास देवताओं के अवतारों पर आधारित है।

इस विषय पर पहले ही चर्चा हो चुकी है कि जब धरती पर पापों का भार असहनीय हो जाता है तो संतुलन बनाने के लिए (धर्म-स्थापना के लिए) ईश्वर हमारे इस मृत्युलोक में अवतार लेते हैं। ईश्वर के अवतार को जन्मों के चक्र में फँसे सामान्य मानव की दु:ख परेशानियां झेलने से अलग रखना होगा। मानव रूप में अवतार लेने पर ईश्वर भले ही मानवोचित्-व्यवहार करते हैं फिर भी उनके सर्वशक्तिमान होने की झलकियां मिलती रहती हैं।

ईश्वर के अवतारों की कथाएं हिन्दुत्व के रूप में प्रचलित भारतीय-धर्म या सनातन-धर्म को सर्वाधिक आशावादी, सर्वाधिक रंगीन (आकर्षक), संगीतमय, आनन्दमय और पर्वों जैसी बहुरंगी, आभायुक्त बना देता है। अपने मतानुसार हर धर्म व्यक्ति को आध्यात्म की ओर ले जाता है। हिन्दुओं में ऐसे कई पंथ हैं और उनमें से कई बड़े आकर्षक (मनोहारी) हैं। सभी पंथों (मत-मतान्तरों) में अपना-अपना आकर्षण है। इसी कारण हिन्दुओं को किसी धर्म में ऐसी कोई नई बात नहीं दिखाई देती जिसे वे पहले से ही न जानते हों।

ईश्वर के अवतार लेने के कारण अलग-अलग हो सकतें है। ये कारण एक महाकल्प (मनुष्य के खरबों वर्षों का एक महान युग) से दूसरे महाकल्प में अलग हो सकता है। ये कथाएं पढ़ने में रुचिकार और भक्ति के लिए प्रेरक हैं। ऐसी स्थिति में सामान्य जन ईश्वर को अपने पारिवारिक घेरे में मानता है, हालांकि वह ईश्वर को अनुपम और महान भी मानता रहता है।

उदाहरण के रूप में भगवान राम के बारे में विभिन्न रूपान्तर देखिए.
(गीता प्रेस गोरखपुर, वाल्मीकि रामायण के पृष्ठ ५६ से)

भगवान विष्णुं का अवतरित होना

राजा दशरथ के पुत्रों के जन्म के लिए किये गए पुत्रेष्ठि-यज्ञ के सम्पन्न होने पर ऋषि "ऋष्यश्रृंग ने कहा था" आपके चार पुत्र होंगे। ठीक उसी प्रकार भगवान ब्रह्मा को देवता बता रहे थे कि राक्षसराज-रावण बहुत शक्तिशाली हो गया है, और अपने अनैतिक कर्मों से विश्व का विनाश कर रहा है। ब्रह्माजी ने बताया कि उनसे वर मांगते समय राक्षसराज-रावण ने अनुरोध किया था कि उसकी मृत्यु गंधर्व, यक्ष, राक्षस या देवता के हाथों न हो। रावण को यह वर दे दिया गया। रावण को यह मिथ्याभिमान था कि कोई मनुष्य उसे नहीं मार सकता, क्योंकि मनुष्य इतना निर्बल है कि उसे (रावण) कोई हानि नहीं पहुँचा सकता। अपने वरदान को सत्य बनाये रखने के साथ-साथ रावण का वध करने के लिए भगवान ब्रह्माजी ने भगवान विष्णु से राजा दशरथ के चार पुत्रों के रूप में चार रूपों में जन्म लेनें की प्रार्थना की। ये मानव रूप होंगे जो यदि रावण को मार देते हैं, तो रावण को दिया गया वर अक्षुण्ण बना रहेगा।

भगवान विष्णु ने उपस्थित देवताओं और भगवान ब्रह्माजी को आश्वस्त किया कि वे राजा दशरथ के परिवार में जन्म लेंगे। रावण के परिवार का नाश करेंगे और मानव संसार पर ग्यारह हजार वर्षों तक शासन करेंगे। भगवान विष्णु की सहायता करने के लिए (जिन्होंने चार रूपों में राजा दशरथ के पुत्र रूप में जन्म लेने का निश्चय कर लिया था।) अन्य छोटे देवताओं ने बन्दरों और भालूओं के रूप में शूरवीर सन्तानों को जन्म दिया।

लंका युद्ध में भगवान राम के पक्ष में लड़ने वाले कुछ प्रसिद्ध योद्धाओं के पिताओं का विवरण निम्नलिखित है।

	पिता	पुत्र
१.	भगवान ब्रह्माजी	जाम्बवान (भालू)
२.	इन्द्र-देव	बालि (वानर)
३.	सूर्य-देव	सुग्रीव (वानर)
४.	वृहस्पति-देव	तार (वानर)
५.	कुबेर-देव	गँधमादन (वानर)
६.	विश्वकर्मा-देव	नल (वानर)
७.	अग्नि-देव	नील (वानर)
८.	अश्विनी-कुमार (दो-देवता)	मयन्द और द्विविद (वानर)
९.	वरूण-देव	सुषेण (वानर)

और उनमें सर्वोत्तम शूरवीर हनुमान जी वायु-देव के पुत्र थे।

भगवान ने मानवेत्तर रूप में अपनी कई दिव्यशक्तियों के रूप में अवतार लिया।

सभी प्राणियों में दिव्यता (अलौकिकता) होने का हिन्दुओं का विश्वास अवतारों की ऐसी कथाओं से चला आ रहा है।

भगवान विष्णु को राम-रूप में अवतार क्यों लेना पड़ा?

मृत्यलोक में भगवान के अवतार की हर कथा के पीछे एक आकर्षक कथा है। प्राचीन काल में देवताओं और दैत्यों के मध्य युद्ध के दौरान दैत्यों ने महर्षि भृगु की पत्नी का अपहरण कर लिया था। वास्तव में ऋषि-पत्नी ने दैत्यों को शरण दी थी जिस कारण कुपित विष्णु ने अपने अस्त्र सुदर्शनचक्र से उसका सिर काट दिया था। इस पर भृगु कुपित हो गये और उन्होंने विष्णु को शाप दिया कि उन्हें मर्त्यलोक में मानव-रूप में जन्म लेना होगा और कई वर्षों तक पत्नी-वियोग सहन करना होगा। भगवान विष्णु ने यह शाप सहर्ष स्वीकार कर लिया। उन्होंने राम-रूप में जन्म लिया और दो बार अपनी पत्नी सीता के वियोग की वेदना सहनी पड़ी। पहली बार जब रावण ने सीता का अपहरण किया और दूसरी बार जब स्वयं उन्होंने अपने महल से जाने के लिए आज्ञा दी। महर्षि-दुर्वाशा ने इन घटनाओं के घटित होने से बहुत पहले राजा दशरथ को ये सब बातें बता दी थी।

फिर भी ईश्वर भाग्यनिर्धारण के अपने विधान का उल्लंघन नहीं करेंगे

(आध्यात्म रामायण से)

भगवान विष्णु ने ब्रह्माजी को यह विश्वास दिलाया कि ऋषि कश्यप की तपस्या से प्रसन्न होकर उन्होंने उनके परिवार में जन्म लेने का निश्चय किया है। कश्यप राजा दशरथ के नाम से शासन कर रहे थे। वे उनकी तीन स्त्रियों से चार रूपों में जन्म लेंगे। (पृष्ठ-२७) ब्रह्माजी ने देवताओं से वानर परिवारों में जन्म लेने को कहा।

(वाल्मीकि रामायण से)

सीता पूर्व-जन्म में कौन थी?

राक्षसराज-रावण ने एक बार बहुत सुन्दर नारी को कठिन आध्यात्मिक तपस्या करते हुए देखा। उसकी अलौकिक सुन्दरता देख कर रावण ने उसको अपनी पत्नी बनाने का प्रस्ताव रखा था, किन्तु वेदवती नामक उस कुमारी ने उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया। उसने बताया कि वह वृहस्पति के पुत्र कुशध्वज की कन्या है। उसके जन्म के समय उसके पिता प्रतिदिन वेदपाठ करते थे और उसे वेदों का ज्ञान हो गया था, अत: उसका नाम वेदवती रखा गया। जब वह नवयौवना हुई तो उसके साथ विवाह करने के लिए

कई बड़े और शक्तिशाली परिवारों के युवकों के प्रस्ताव आए। किन्तु उसके पिता की इच्छा थी कि वह केवल भगवान-विष्णु की पत्नी बने। यह जानकर एक दैत्यराज ने एक रात्रि को उसके पिता की हत्या कर दी। तब उसके माता ने भी अपना शरीर छोड़ने का निश्चय कर लिया और अपने पति के मृत शरीर के साथ ही चिता की अग्नि में प्रवेश कर गयी। तब से वेदवती ने भगवान-विष्णु को पतिरूप में पाने का निश्चय कर लिया था।

यह बात रावण को अच्छी नहीं लगी, और उसने वेदवती की बेणी (बाल) पकड़ ली। वेदवती ने तुरन्त रावण के द्वारा छुए हुए बाल काट दिये और शरीर-त्याग करने के लिए अग्नि में प्रवेश कर लिया। मरने से पहले उसने कहा था कि -

१. उसका पुनर्जन्म होगा और वह उसकी (रावण की) मृत्यु का कारण बनेगी।
२. शारीरिक-शक्ति से एक नारी पुरुष का वध नहीं कर सकती वह उसको शाप देकर अपनी संचित, आध्यात्मिक-शक्ति का नाश नहीं करना चाहती थी।
३. वह आयोजन के रूप में एक पवित्रात्मा पिता की पुत्री बनकर जन्म लेगी।
४. अगले जन्म में वह एक कमल से उत्पन्न हुई। रावण ने उसे शीघ्र पहचान लिया और उसे अपने महल में ले गया। पर एक बुद्धिमान-मंत्री ने शिशु को देखा और रावण को बताया कि उस कन्या में उसके राज्यं को नष्ट करने के सभी लक्षण हैं। रावण ने तुरन्त उस कन्या को समुद्र (पानी) में फेंक दिया जहां से उसका शरीर तैरता हुआ राजा जनक के राज्य के एक खेत में पहुँच गया। खेत जोतते समय उसका पता लगा और वह राजा जनक की पुत्री बनी। सतयुग में वह वेदवती थी, और त्रेतायुग में वह सीता बनी। खेत को जोतते समय हल की फाल से जो लकीर बनती है उसे सीता कहते हैं। कुछ लोग हल के फाल के अगले भाग को सीता कहते हैं। इस प्रकार वेदवती अपने अगले जन्म में सीता नाम से प्रसिद्ध हुई, और रावण तथा उसके राज्य के विनाश का कारण बनी।

(आध्यात्म-रामायण से)

एक बार ज्योतिषी ऋषि-नारद राजा जनक के पास आये और उन्हें बताया कि भगवान ने राक्षसराज-रावण को मारने के लिए राजादशरथ के चार पुत्रों के रूप में अवतरित होने का निश्चय कर लिया है। सीता के रूप में देवी योगमाया ने उनके (जनक के) घर जन्म लिया है और उन्हें सीता का विवाह राम से करना है।

मृत्युशय्या पर राजादशरथ वे उत्तम लोक में कैसे गए?

अपने पिता राजा दशरथ के उत्तराधिकारी बनने के बजाय भगवान राम को वन जाना पड़ा। यह बड़ी वेदना-जनक बात थी कि मृत्युशय्या पर पड़े राजा दशरथ को अपने

किए गए पापों की याद आई। उस समय की उनकी स्थिति को वाल्मीकि ने राहु द्वारा ग्रस्त सूर्य के समान बताया है। राज अपनी पत्नी कौशल्या से कहते हैं-

यदाचरति कल्याणि शुभं वा यदि वाशुभम्।
तदेव लभते भद्रे कर्ता कर्मजमात्मनः।।

(अयोध्याकाण्ड पृष्ठ-३५७, श्लोक-६)

जो भी शुभ या अशुभ कर्म मनुष्य करता है तदानुसार ही उसे सुख व पीड़ा मिलती है।

राजा को युवावस्था में किया गया पाप याद आया जब उनके पिता जीवित थे। वे आँखों पर पट्टी बाँध कर शब्दभेदी बाण चला सकते थे। वर्षा के मौसम की एक अंधेरी-रात में जंगल से गुजरते हुए राजा दशरथ ने तलाब से घड़ा भरते समय हाने वाली गड़-गड़ जैसी ध्वनि सुनी। अंधेरे के कारण देखने में असमर्थ उन्होंने सोचा कि कोई हाथी तालाव से पानी पी रहा है और शब्दभेदी-बाण चला दिया। तब उन्होंने मनुष्य की आवाज सुनी "मैं एक तपस्वी (आध्यात्मिक-व्यक्ति) हूँ और पानी लेने के लिए यहां आया था। अपने पर निर्भर वृद्ध माता-पिता की सेवा करता था। राजा दशरथ ने (आपने) उसे मारकर एक साथ तीन मानवों की हत्या की है। वह महानपुत्र जिसके मर जाने के बाद पुत्र शोक में उसके माता-पिता भी मर जायेंगे। बाण लगने से असमर्थ होने के कारण वह अपने प्यासे माता-पिता के पास नहीं पहुँच सकता। उसका पिता उसे बचाने में उसी प्रकार असमर्थ है जैसे आंधी से गिरता हुआ वृक्ष दूसरे वृक्ष की शाखाओं को टूटने से नहीं बचा सकता। उसने राजा से कहा कि वह यह दुःखद सुचना उसके दुर्बल और अंधे माता-पिता को दें, ताकि वह (राजा) उनके शाप के कारण होने वाली दर्दनाक मृत्यु से बच सके। तब उस आहत तपस्वी ने राजा से कहा कि वह शारीरिक पीड़ा झेलते हुए नहीं मरना चाहता। यदि उसके शरीर से बाण निकाल दिया जाय तो वह तुरन्त मर जायेगा। ऐसा न करने पर उसकी शारीरिक पीड़ा सहने योग्य नहीं रह जायेगी। उसने राजा से पूछा कि वह ध्यान की शांत-स्थिति में अपने शरीर को छोड़ने की तैयारी करना चाहता है। उसने बताया कि वह ब्राह्मण नहीं था। "मेरा जन्म एक वैश्य-पिता और शूद्र-मां से हुआ है"। इसलिए ब्राह्मण को मारने का पाप उसने (राजा ने) नहीं किया है। इसलिए उसे (राजा को) इस भय से अपना मन निश्चिन्त कर देना चाहिए कि उसने ब्राह्मण की हत्या की है। राजा ने तपस्वी के हृदय में घुसे अपने बाण को खींच लिया और ध्यान की उच्च और दिव्य स्थिति में लीन वह तपस्वी स्वर्ग चला गया।

घबराया हुआ राजा उस आश्रम में गया जहां पानी लेकर आने वाले तपस्वी युवक की उसके माता-पिता प्रतीक्षा कर रहे थे। तब तपस्वी के महान आध्यात्मिक पिता ने कहा

कि यदि राजा अपने पाप को स्वीकार नहीं करेगा तो वह उसे शाप देगा जिसके प्रभाव से उसके (राजा के) शरीर के हजारों टुकड़े हो जायेंगे। तब उन्होंने राजा से कहा कि वह उन्हें उस तालाब के पास ले जाए जहां उनके मृत पुत्र का शरीर पड़ा हुआ है। वहां ले जाये जाने पर वृद्ध माता-पिता ने अपने निष्पाप पुत्र को उत्तम लोंको की प्राप्ति का आशीर्वाद दिया। तब उनका पुत्र दिव्यरूप में उनके सामने प्रकट हुआ और उनसे कहा कि अपने माता-पिता की आदरपूर्वक सेवा करने से उसने उच्च दिव्यावस्था प्राप्त कर ली है और उसके माता-पिता को भी शीघ्र ही उसके पास पहुँच जाना चाहिए। तब बूढे तपस्वी ने राजा से कहा जैसे दानदाता को उसके दान के अनुरूप फल मिलता है उसी प्रकार वह भी (राजा भी) अपने पुत्र द्वारा छोड़कर चले जाने से दयनीय-स्थिति में मरेगा। तत्पश्चात् वृद्ध दम्पति उत्तमलोक (स्वर्ग) के लिए चले गए।

इस दु:खद घटना का स्मरण करते हुए राजा दशरथ की मृत्यु वेदनापूर्ण स्थिति में हुई।

क्योंकि उनका पुत्र राम ने विशिष्ट (लोकोपकार के) कार्य किये अत: दशरथ को इन्द्रलोक (उच्चलोक) मिला। लंकायुद्ध के पश्चात् भगवान राम से मिलने उच्चलोकों से जो विभूतियाँ आई उनमें दशरथ एक थे। अब आकर ज्ञात हुआ कि भगवान स्वयं उनके पुत्र के रूप में अवतरित हुए।

नैतिक शिक्षा

सन्तान द्वारा किए गए नैतिक और आध्यात्मिक कार्यों से उनके पूर्वजों की मुक्ति होती है।

शरभंग ऋषि का दिव्य अन्त

रामायण में शरभंग ऋषि की कथा है जिनको भगवान राम ने वनवास के वर्षों में देखा था। दिव्य गुण सम्पन्न ऋषि उस समय राम के आने की प्रतीक्ष कर रहे थे जब वे अपने संचित महान आध्यात्मिक गुणों के प्रभाव से अपना शरीर त्याग कर उच्च ब्रह्मलोक जाने की तैयारी कर रहे थे। तब राम से कुछ समय रुकने का अनुरोध करके उन्होंने योग से अग्नि उत्पन्न की। मंत्रों का उच्चारण किया और भगवान राम के सम्मुख अपना शरीर छोड़ दिया। उनका शरीर देव रूप में परिवर्तित हो गया और वे ब्रह्मलोक को चले गए।

नैतिक शिक्षा

जो निर्दोष (निष्कलंक) आध्यात्मिक जीवन बिताते हैं उन्हें अपने अन्त का ज्ञान हो जाता है, और ईश्वर चिंतन में मन अर्पित करके वे अपने अन्त की तैयारी करते हैं।

नोट

मैंने अपनी पुस्तक "योगी प्रारब्ध और कालचक्र" में उन योगियों की चर्चा की है जिन्हें मैं मिला था।

जटायु (पक्षी) का दिव्य अन्त

वीर जटायु ने रावण को देवी सीता का हरण करके ले जाते हुए देखा था। भगवान राम घायल जटायु के पास पहुँचे और उसे बताया कि जो अग्निहोत्र यज्ञ करते हैं युद्ध में नायकों की तरह लड़ते हैं, और पीठ दिखाकर नहीं भागते, जो भूमिदान करते हैं वे उच्चलोकों में जाते हैं। यदि भगवान उसका दाहसंस्कार करदें तो वह उत्तमलोक को चला जायेगा।

नैतिक शिक्षा

कर्तव्यपरायण और आध्यात्मिक जीवन वाले व्यक्ति के अन्त समय में दाहसंस्कार (अन्तिमसंस्कार) को भली-भाँति करने वाला व्यक्ति उसके निकट पहुँच जाता है, और उसका अन्तिम संस्कार करता है। गुणी और आध्यात्मिकता से सम्पन्न व्यक्ति द्वारा किये गए अन्तिम संस्कार का अपना आध्यात्मिक महत्व है।

राक्षस कबंध का दिव्य अन्त

वनवास की अवधि में राम और लक्ष्मण की मुठभेड़ कबंध नामक राक्षस से हुई जो उस समय बहुत भूखा था। वह विशालकाय था उसकी भुजाओं में अनन्त शक्ति थी राम ने उसका दाहिनी भुजा काट दी और लक्ष्मण ने बांई भुजा काट दी। धराशायी होते समय राक्षस ने अनुभव किया कि उसकी भेंट असाधारण पुरूष से हुई है तब उसने उनका परिचय पूछा। फिर उसने अपनी कथा सुनाई।

उसकी बलिष्ट भुजाएं आध्यात्मिक जीवन में बाधा की तरह उसके लिए वास्तविक शाप था

वह अपने पूर्व जीवन में तेजस्वी और शक्तिशाली व्यक्ति था किन्तु उसने वन में रहने वाले ऋषियों को राक्षस की वेश-भूषा बनाकर डराने की गलत आदत पड़ गई थी। एक दिन उसने स्थूलशिरा नामक महान ऋषि को भी डराने का प्रयत्न किया। इससे अप्रसन्न होकर ऋषि ने उसे राक्षस के उसी भयानक रूप में बने रहने का शाप दे दिया। भयभीत राक्षस ने उनसे विनती करके कहा कि वे बतायें कि इस शाप से उसे मुक्ति कैसे मिलेगी? ऋषि ने कहा कि जब राम और लक्ष्मण उसकी भुजाएं काट देंगे तब वह अपने पहले रूप में आ जायेगा। राक्षस ने उन्हें (राम-लक्ष्मण को) बताया

कि पूर्वजन्म में उसने घोर आध्यात्मिक तपस्या के बाद [illegible] था। अपने स्वाभाविक अहंकार के कारण एक बार उसने [illegible] परन्तु ब्रह्माजी के वर के कारण जान से नहीं मरा। तब उसे [illegible] दी गयीं, ताकि जंगल में जानवरों को हाथों से पकड़कर खा सके। [illegible] भी आश्वासन दिया कि जब राम और लक्ष्मण उसकी भुजायें काट देंगे [illegible] लोक को चला जायेगा।

कबन्ध ने कहा कि यदि भगवान राम उसका अन्तिम संस्कार कर देंगे तो [illegible] एक अच्छे मित्र से उनका परिचय करा देगा तथा कुछ संकेत इस बात के भी दे देगा कि उनकी अपहृत पत्नी सीता कहाँ है। कबंध ने कहा कि इस भयानक रूप में उसकी दिव्यशक्तियाँ काम नहीं करेंगी।

जब उसका शरीर गढ्ढे में रखा जायेगा और शास्त्रोक्त विधियों से उसे दफनाया जायेगा तभी उसकी दिव्यशक्तियाँ वापस मिल सकेंगी और वह कुछ सहायक हो सकेगा। जब कबंध को उसकी इच्छानुसार दफनाया गया तब उसे दिव्यरूप मिल गया और उसने कहा:-

१. **सन्धि:-** शत्रुओं के साथ मित्रता का समझौता।
२. **विग्रह:-** शत्रु के विरुद्ध युद्ध घोषणा।
३. **यान:-** शत्रु पर आक्रमण।
४. **आसन:-** पहल करने (काम करने) के लिए उचित अवसर की प्रतीक्षा।
५. **द्वेधिभव:-** छल-कपट।
६. **समाश्रय:-** अधिक शक्तिशाली राजा की शरण लेना।

राम को अपनी जैसी मानसिक स्थिति के व्यक्ति से मित्रता करनी चाहिए। उस समय अपने भाई बालि द्वारा गृह से निष्कासित वानरराज सुग्रीव ऐसी स्थिति में था वह वैयक्तिक शौर्य वाला अच्छा और चरित्रवान व्यक्ति था। वह राम की सहायता करेगा। तब कबंध ने पहले जैसा सुन्दर और शक्तिशाली रूप पा लिया।

नैतिक शिक्षा

यह वास्तविक मृत्यु का दृष्टान्त नहीं है, अपितु कलुषित मानसिक स्थिति के अन्त का दृष्टान्त है, जिसमें कोई भी रह सकता है। जब उस पर दैवी आशीर्वादों की वर्षा होती है, तब वह कलुषित मानसिकता से मुक्ति पा जाता है। अच्छे आध्यात्मिक व्यवहार के पश्चात राक्षस जैसा जीवन हो जाना, और शारीरिक मृत्यु से पूर्व पुनः आध्यात्मिक जीवन में लौट आना मुक्ति मार्ग को प्रशस्त करता है।

अस्पर्श्य नारी शबरी का दिव्य अन्त

कबंध के निर्देशानुसार राम और लक्ष्मण सुन्दर पंपासरोवर पहुँचे जहां वे अस्पर्श्य नारी शबरी से मिले जिसका आध्यात्मिक अभ्यास अपनी सुन्दरतम पराक्राष्ट पर पहुँच गया था। भगवान राम के अतिथ्यसत्कार (सेवा) के पश्चात् उसने उच्चलोकों में पहुँचने हेतु अपना भौतिक शरीर त्यागने की राम से अनुमति मांगी ताकि वह प्रतीक्षारत उन ऋषियों से मिल सके जिनकी उसने सेवा की थी।

तब शबरी ने पवित्र अग्नि तैयार की और भगवान राम की उपस्थिति में उस अग्नि में भस्म हो गई। उसने दिव्यरूप प्राप्त किया और उच्चलोकों की ओर चली गई।

नैतिक शिक्षा

ईश्वर और आध्यात्म पर उच्चवर्णों (जातियों) का ही एकाधिकार नहीं है। जो वास्तविक आध्यात्मिक मार्ग पर चलता है उसे मुक्ति मिल जाती है।

भगवान हनुमान की अलौकिक शक्ति की चमत्कारपूर्ण वापसी

जब इस विषय पर चर्चा हो रही थी कि विस्तृत समुद्र को कौन लाँघेगा, जिसने लंका को आर्यावर्त (भारत का प्राचीन नाम) महाद्वीप से अलग किया हुआ है, तो जामवन्त ने हनुमान जी को उनके जन्म की कथा सुनाई।

पुंजकिस्थला नामक एक प्रसिद्ध परी (अप्सरा) थी। शाप के कारण उसे वानर का रूप मिला था। उसका नाम अंजना था और उसके पति का नाम केसरी। एक बार वायुदेव उसकी सुन्दरता पर मोहित हो गये और मानसरूप से (संकल्प से) हनुमान को जन्म दिया जिसमें अपार शक्ति थी। एक बार बालक हनुमान को बहुत भूख लगी थी और उनकी मां कहीं गई हुई थी। अपनी क्षुधा शांत करने के लिए उसने कुछ चीज खानी चाही। उसने चमकते सूर्य को देखा और उसे भूल से खाद्यपदार्थ समझते हुए सूर्यलोक में गए। वहां उसने राहु को देखा। उसे खाद्यवस्तु समझकर हनुमान जी उसकी ओर लपके। भयभीत होकर राहु इन्द्रदेव के पास भागता हुआ गया और इस घटना का विवरण देते हुए विशिष्ट चन्द्र दिनों (अमावस्य को) में सूर्य को ग्रसने के अपने अधिकार का स्मरण कराया, जिसे अब एक बच्चे ने चुनौती दे दी थी।

इन्द्रदेव बालक हनुमान पर कुपित हो गये और उन्होंने अस्त्र वज्र से हनुमान की ठोड़ी (संस्कृत में हनु कहते है) तोड़ दी। इन्द्र के इस कार्य से वायुदेव कुपित (अप्रसन्न) हो गए और उन्होंने पवनों का चलना बन्द कर दिया जिससे संसार में भय व्याप्त हो गया।

तब देवताओं ने अपनी भूल में संशोधन किया और और हनुमान जी को सभी प्रकार से ज्ञान और बुद्धिमानी प्रदान कर दी। ठोड़ी (हनु) टूटने और फिर ठीक कर

दिये जाने से तब से उनका नाम हनुमान पड़ गया।

हनुमान जी अपने असाधारण गुणों के लिए प्रसिद्ध हैं। हालांकि प्रस्तुत प्रसंग से इनका सीधा सम्बन्ध नहीं है फिर भी उनके असाधारण तेज के बारे में लिखना उचित है।

उस समय तक हनुमानजी अपनी असीम-शक्तियों के बारे में अनभिज्ञ थे जो उन्हें देवताओं ने प्रदान की थी। इन्द्र के वज्र की चोट जब ठीक हो गई तो उन्हें देवताओं और ब्रह्माजी से अमर होने का वर मिला। स्वभाव से अधिक शरारती होने के कारण वे आध्यात्मिक साधना में लीन ऋषियों की साधना में विघ्न डालते थे। ऋषि अपने बचाव के लिए बालक हनुमान को रोकने में असमर्थ थे क्योंकि वे जानते थे कि उन्हे ब्रह्माजी सहित लगभग सभी देवताओं ने महान वरदान दिये है। बालक हनुमान की शरारतों से ऋषि कुपित हो गये और बालक हनुमान पर शाप का आवरण डाल दिया कि बहुत लम्बे समय तक उन्हें अपनी असीम शक्ति का ज्ञान नहीं रहेगा। कई वर्षों तक हनुमान आश्रम में एक साधारण और नम्र बालक की तरह घूमते रहे। उनकी शरारतें बंद हो गई वे भूल गए थे कि सात्विक शक्ति में वे अनुपम थे। भगवान सूर्य के आशीर्वाद से विद्वता में भी वे अनुपम थे क्योंकि किसी भी विषय को अल्पसमय में ही याद कर लेते थे। वे दिव्य बुद्धि सम्पन्न थे इसी कारण उन्हें ज्ञानिनां अग्रगण्यम् (ज्ञानियों में प्रथम और सर्वश्रेष्ठ) माना जाता है। तब लम्बे समयान्तराल के पश्चात् जब उपयुक्त समय आयेगा तो उन्हें भगवान राम के काम जैसे महान कार्य की पूर्ति के लिए उनकी असीम-शक्ति का स्मरण कराया जायेगा।

लंका युद्ध से ठीक पहले उन्हें जब जामवन्त द्वारा उनकी महान शक्तियों का स्मरण कराया गया। तब विराट-रूप धारण करके हनुमान ने आसानी से समुद्र लांघकर सीता का पता लगाने का काम किया।

नैतिक शिक्षा

दिव्यता का स्मरण तुम्हारे कामों में चमत्कार ले आता है किन्तु तुम्हारे ऊपर डाला गया शाप का आवरण इस दिव्यता को (उजागर करने का अवसर आने तक) विस्मृति के बादल से ढक देता है।

नोट

हनुमान को कई नामों से जाना जाता है जैसे - अंजनिपुत्र (अंजना का पुत्र) और केसरीनन्दन (केसरी का पुत्र)।

हनुमान और अन्यों की अमर उपस्थिति

अपने मूललोक को जाने से पूर्व (महाप्रयाण से पूर्व) भगवान राम ने हनुमान को रामनाम का प्रचार करने के लिए मृत्युलोक में रहने का आदेश दिया। कलियुग के अन्त तक हनुमान जी के साथ रहने के लिए जिन लोंगो को कहा गया था वे थे - जामवन्त, विभीषण, मयंद और द्विविद जो भक्तों को मुक्ति-प्राप्ति के लिए दिव्य-निर्देश देते हैं।

इन पांच अमरों के साथ तीन अन्य अश्वत्थामा, बलि और व्यास थे।

---

१. ऋषि ऋष्यश्रृंग (जो विशुद्ध ब्रह्मचारी थे) ऋषि विभन्द के पुत्र थे। एक बार उनके आश्रम के पास से श्रेष्ठ अप्सरा उर्वशी गुजरी तो उसे देखकर ऋषि विभन्द कामातुर हो गए। उनका वीर्य पानी में तैर रही हिरणी के मुख में चला गया उस हिरणी से जन्म लेने के कारण अपनी मां की तरह ऋष्यश्रृंग के दो सींग थे।

(आद्यरामायण पृष्ठ-२८)

पुनर्जन्म के बारे में एक परिवार की कहानी

गाय स्त्री के रूप में
वह अपने दो पूर्व जन्मों में क्या थी?

बिना किसी ज्योतिषीय खोज के इस मामले का व्यक्तिगत परिचय आवश्यक है। ज्योतिषीय खोज संभव भी नहीं है क्योंकि पिछले जन्मों की कुण्डलियां उपलब्ध नहीं है। मै इस काम को व्यक्तिगत गर्मजोशी और गुणग्राहकता की भावना से कर रहा हूँ क्योंकि इसका सम्बन्ध मेरे एक घनिष्ठ मित्र एस.सी. आनन्द आई ए.ए.एस.[१] से है जो उसी सरकारी सेवा के हैं जिससे मैंने नवम्बर १९९० में सेवानिवृति ली। मैं और आनन्द १९५९ से मित्र हैं। वे कई वर्षों से ज्योतिषीय भविष्यवाणियों के लिए मेरे पास आते रहे हैं। मैने उनके दोनों पुत्रों, पुत्र-वधुओं के बारे में भविष्यवाणियां की हैं। जब मैं ज्योतिष और पुनर्जन्म पर काम कर रहा था, तो उन्होंने अपने से ठीक पहले की बड़ी बहन की जन्मपत्री देते हुए, इस विषय में मेरी सहायता करने का आश्वासन भी दिया। [२]मैंने उनसे इस बारे में अपने ढंग से पूरा विवरण लिख कर देने को कहा और इसे अपनी लिखी जा रही पुस्तक में उपयोग करने की भी अनुमति मांगी।[३]

इसमे पहले मैं उनके दिए गए विचार का उल्लेख कर रहा हूँ, और तब उनकी बड़ी बहन (स्वर्गीया) की जन्मपत्री का बिना अपने विचार दिए उल्लेख कर रहा हूँ।[४] उनकी बड़ी बहन का नाम रतन आनन्द था जिसे अपने दो पूर्वजन्मों की याद थी। इसके भाई द्वारा इस सम्बन्ध में दिया गया विवरण नीचे दिया जा रहा है। जन्मकुण्डली

पर यहां चर्चा नहीं की जा रही है क्योंकि इस मामले में कोई ज्योतिषीय खोज नहीं है।

घटना

लाहौरवासी हरनामदास आनन्द और उनकी पत्नी श्रीमती पार्वती आनन्द के चार पुत्र थे। डॉ. कुशलचन्द आनन्द तीसरे पुत्र थे जो डॉक्टरी का काम कर रहे थे। सबसे बड़े पुत्र गिरधारीलाल आनन्द उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद नगर में वकालत करते थे। दूसरे पुत्र प्रीतमदास आनन्द पश्चिम उत्तर प्रेदश में अध्यापक थे और अधिकतर समय मेरठ में रहते थे। चारों में सबसे प्रतिभाशाली चौथे पुत्र बशेश्वरदास आनन्द को छोटी आयु में ही टी.वी. का रोग हो गया था। १९०३ में जब लाहौर[५] में प्लेग फैली थी तो हरनामदास आनंद की कम आयु में ही मृत्यु होने के कारण उनके परिवार को बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ा। मेडिकल व्यवसाय में होने के कारण तीसरे पुत्र डॉ. कुशलचन्द आनन्द ने बशेश्वरदास के विवाह का विरोध किया क्योंकि पंजाब के तत्कालीन रीति-रिवाज के अनुसार उनकी मां ने वायदा किया था कि वह समय पर चारों पुत्रों का विवाह कर देंगी। परिणामस्वरूप लाहौर की मात्र १५ वर्षीया सरस्वती सूरी के साथ बशेश्वरदास का विवाह कर दिया गया। विवाह के एक वर्ष और तीन महीने बाद, जुलाई १९१८ में, बशेश्वर की मृत्यु हो गई। सरस्वती गर्भवती थी और पति की मृत्यु के बाद उसने १८ सितम्बर १९१८ को एक बच्चे का जन्म दिया।

मृत्यु के समय तीसरे पहर बेहोश बशेश्वरदास होश में आया और उसने कहा "*अब मेरा समय आ गया है और मैं जा रहा हूँ*" परिवार के लिए कठिनाईयों का समय अब आरम्भ हो रहा है, परन्तु धीरे-धीरे सब ठीक हो जायेगा और मैं वापस आऊगां, क्योंकि हमारा सम्बन्ध अनन्तकाल से चला आ रहा है और अनन्तकाल तक चलेगा।[६]

अपने भाई की आँखो में कुछ अविश्वास देख कर उसने कहा "*मेहरबानी करके यह मत सोचिये कि मैं बेहोशी में बोल रहा हूँ मै पूरे होस हवास में हूँ। मेरी मृत्यु का समय नोट कर लीजिए। मेरी मृत्यु के बारह घंटे बाद लाहौर में भूकम्प आयेगा*"[७] इतना कहने के बाद तीसरे पहर दो बजकर कुछ मिनट पर उसने अन्तिम सांस ली और ठीक बारह घंटे बाद लाहौर में भूकम्प आया। लाहौर निवासी और पेशावरी खत्री डॉ. कुशलचन्द आनन्द और वजीरावाद निवासी उनकी पत्नी रामप्यारी (ये दोनों शहर अब पकिस्तान में हैं) १९१४ मं हापुड़ में आकर बस गए तब तक उन्होंने कलकत्ता में मेडिकल कोर्स कर लिया था और रामप्यारी से विवाह के बाद डाक्टरी प्रेक्टिस शुरू कर दी थी। विवाहित जीवन के ५२ वर्षों में उनकी छः कन्यायें और उनके बाद दो पुत्र हुए। अन्त में डॉ के.सी. चन्द्र १९२२ में मेरठ में बस गए। उनकी तीसरी कन्या की शैशवा-वस्था में ही मृत्यु हो गई, और दूसरा पुत्र अब जवान हो गया है।

कहानी का केन्द्रीय व्यक्तित्व

छठी कन्या (अर्थात बड़े होने वालों में पांचवी) रतनरानी आनन्द का जन्म २९ सितम्बर की रात १:३० बजे प्रातः मेरठ में हुआ।[८] आरम्भ से ही वह बहुत प्रतिभाशाली थी और उसने बचपन में बहुत जल्दी बोलना शुरू कर दिया था।

वह कहा करती थी कि पूर्व जन्म में वह गाय थी?[९] अंगूठा चूसने की उसकी आदत छुड़वाने की सारी कोशिशें असफल रही। उसने ४५ वर्ष की आयु से भी कुछ अधिक समय तक अंगूठा चूसना जारी रखा।[१०] पहली फरवरी १९७६ को हृदय-गति रूक जाने से उसकी मृत्यु हुई और अपने पीछे अपने पति, एक कन्या और तीन पुत्र छोड़ गई।

पूर्व-जीवन (पुनर्जन्म)

पिछले जन्म की बातें बताते समय वह कहा करती थी कि वह पूवर्ती पटियाला रियासत के निकट अमरगढ़ के गाँव चौंढा के पंडित बालकराम के घर जन्मी थी। वह बताया करती थी कि पिछले जीवन में उसने कितने बछड़ों को जन्म दिया था। वह पंडित बालकराम के परिवार के बारे में विस्तार से बताया करती थी। पिछले जन्म में गाय के रूप में जब वह मरने वाली थी तो बालकराम ने ईश्वर के सम्मुख प्रार्थना करते हुए कहा था "*तुम इसे भी ले जा रहे हो कृपया अगला जन्म किसी अच्छे आदमी के घर में देना*"। उसने डॉ. कुशलचन्द आनन्द को पूछा था *बाबूजी क्या आप अच्छे आदमी है?*[११]

"उसके जीवन की दूसरी महत्वपूर्ण घटना यह थी। बशेश्वरदास की विधवा सरस्वती जब घूमने के लिए मेरठ में डॉ. कुशलन्द के घर आई हुई और उसका पुत्र बालकृष्ण[१२] (घर का नाम गोपालदास) परीक्षा देने के लिए अपने नाना-नानी के पास लाहौर में रुक गया था। यह छोटी बच्ची (रतन) अत्यधिक प्रसन्न होकर सरस्वती की गोद में बैठी और उसे चूमते हुए कहने लगी "*तुम मेरी पत्नी हो और मैं तुम्हारा पति हूँ मेरा पुत्र गोपाल दास आ रहा है।*" उपस्थित हर व्यक्ति उसकी बात पर हंस पड़े और कहा कि गोपाल कैसे आ सकता है। परन्तु कुछ समय बाद जब डा. कुशलचन्द अपने क्लिनिक गए तो उन्होंने अचानक गोपाल को आया हुआ, और अपने पैर छूते हुए पाया। जब उससे आने का कारण पूछा गया तो उसने बताया कि लाहौर में दंगे और अन्य प्रकार के उपद्रव हो रहे थे और परीक्षा स्थगित हो गई थी।[१३] इस लिए उसने अपने चाचा के पास आकर अपनी मां के साथ रहने का निश्चय किया।

डा. कुशलचन्द आनन्द ने मजाक करते हुए कहा कि घर जाकर अपने पिता से मिले जो उसका इन्तजार कर रहा है। जब बालकृष्ण अपने चाचा के घर पहुँचा तो रतन नामक बच्ची फिर अत्यधिक प्रसन्न मुद्रा में उससे कहने लगी "*तुम मेरे पुत्र*

हो मैं तुम्हारा पिता बशेश्वरदास हूँ" यह स्थिति कुछ मिनट तक चलती रही और तत्पश्चात् वह बच्चे की तरह सामान्य काम (खेल आदि) करने लगी।

पिछले जन्म की स्मृति

डा. कुशलचन्द की बड़ी कन्या सुशीलादेवी का विवाह पटियाला रियासत के मूल निवासी एक भवन-निर्माता पूरणचन्द बट्टा के साथ १९३३ में हुआ था। जब बारात[१४] विवाह मण्डप में आई तो रतनरानी की आयु तीन वर्ष से कम की थी। उसने बारात में आये पंडित बालकराम को तुरन्त पहचान लिया और उनकी गोद में बैठकर उन्हे याद दिलायी कि वह उनकी गाय थी। पंडित ने सभी तथ्यों को सत्य बताया। दूल्हा पूरणचन्द गाँव चौढा का रहने वाला था और बालकराम उसका बचपन का साथी था। जब रतनरानी को कांठी ले जाया गया तो उसने बालकराम के परिवार के सदस्यों को गले लगाया और उस स्थान की ओर संकेत किया जहां पूर्वजन्म में गाय के रूप में उसे बाँधा जाता था।

हस्तरेखा शास्त्र की ईश्वरीय देन

दूसरी विचित्र घटना उस समय की है जब वह स्कूल में पढ़ती थी। उसने हस्तरेखा शास्त्र कभी नहीं सीखा था परन्तु जब एक दिन कुछ समय के लिए उसका व्यवहार विचित्र हो गया और अंगूठा चूसते हुए तथा ध्यान लगाते हुए उसने किसी की हथेली देखी और कुछ भविष्यवाणी की।[१५] सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया मेरठ के मैनेजर पी.डी. कोहली को उसने बताया कि *"भाई साहब तुम्हे दस्त और अतिसार की तकलीफ होगी। तुम्हारी तवीयत इतनी खराब हो जायेगी कि एक बार तो हर कोई तुम्हारे जीवित रहने की आशा ही छोड़ देंगे परन्तु तुम मरोगे नहीं। तुम्हें लम्बे समय तक यह तकलीफ रहेगी और शेष जीवन तक तुम्हें लगी रहेगी।"* यह भविष्यवाणी एक दम सत्य सिद्ध हुई। श्री कोहली अमिबीयासिसं रोग (अतिसार) से पीड़ित हुए १९४४ में उनकी स्थिति चिन्ताजनक हो गई। किन्तु उनकी स्थिति में सुधार हो गया और साठ के दशक के अन्तराल जीवित रहे। इसी प्रकार जब वह रघुनाथ कन्या हाईस्कूल (अब कन्याओं का स्नात्तकोत्तर कालेज) की छात्रा थी जो उनकी प्रधानाचार्य श्रीमती लक्ष्मी शर्मा की कन्या और रतन की कक्षा-सहपाठी अपना हथेली दिखाने के लिए रतन को तंग करने लगी। रतन ने पहले तो मना कर दिया परन्तु शर्मा की कन्या द्वारा लगातार तंग किये जाने पर उसने उसकी हथेली[१६] पर सरसरी नजर डालते हुए कहा *"भविष्यवाणी क्या? तुम्हारी परसों मृत्यु हो जायेगी"*। स्वस्थ्य और तन्दुरूस्त लडकी ठीक ४८ घंटे बाद अचानक मर गई। इससे स्कूल की प्रधानाचार्य के लिए कुछ समस्याएं पैदा हो गई। उसने अपनी पुत्री की मृत्यु का दोष रतन आनन्द पर लगाया। वह[१७] हमेशा कहा करती थी कि वह

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध(वक्री)
११° २६"	१३° ०३"	१५° २५"	२६° २०"	२९° १८"
गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
२५° १३"	२८° ०७"	१२° ४१"	००° ५६"	००° ५६"
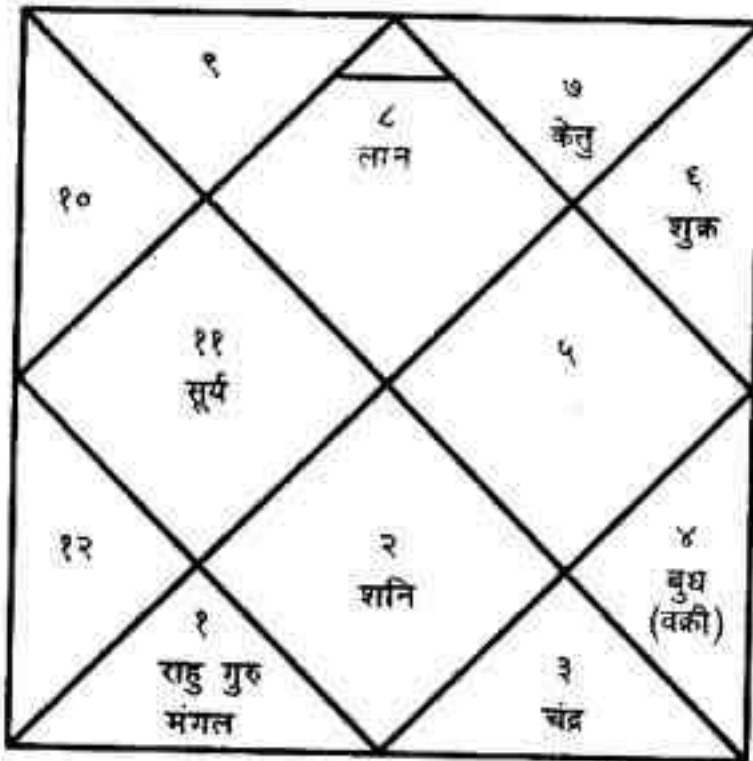
लम्बे समय तक नहीं जियेगी और सचमुच हृदय के आकार के बढ़ जाने से कम आयु में ही उसकी मृत्यु हो गई। पूर्व जन्म में "उसके गाय होने की बात दूर-दूर तक फैल गई और उसके मातृपक्ष के सभी रिस्तेदार अब भी उसको गाय कहते हुए पूछते हैं, *"गाय के बच्चे कैसे हैं।"*

सूक्ष्म मूल्यांकन

ज्योतिषीय ऑकड़ों की प्रामाणिकता पर कोई संदेह नहीं है। अन्य चर्चित मामलों की तरह इसको मुझे एक बहुत पुराने मित्र ने दिया है, जिसके परिवार का इतिहास और परिवार के सदस्यों को मैं भली-भाँति जानता हूँ। एस.सी. आनन्द द्वारा दिए गए विवरण की घटनाओं के बारे में कई लोग जानते हैं। मैने केवल एक स्पष्ट कारण से इसे सम्मिलित करने का निश्चय किया है। जब हम किसी व्यक्ति की इस जन्म की जन्मकुण्डली का विश्लेषण स्पष्ट और विकसित विधि से करने में सफल हो जायेंगे तब हम ऐसी सामग्री का उपयोग कर सकते हैं। तब तक इसे केवल एक प्रामाणिक ऑकड़े के रूप में सुरक्षित रखा जा सकता है, क्योंकि पूर्वजन्म या पूर्वजन्मों की कुण्डलियां प्राप्त नहीं की जा सकती अत: हम इसका उपयोग नहीं कर सकते। पूर्वजन्म में गाय के रूप में अवतरित होने की जन्मपत्री और उससे भी पूर्वजन्म में एक पुरूष के रूप में अवतरित होने की जन्मपत्री पूर्वजन्मों के बारे में हमे एक दिलचस्प और प्रामाणिक अन्तर्दृष्टि देती है। क्या आत्मा दो भिन्न जन्मों में मानव और मानवेत्तर रूपों में अवतरित हो सकती है? हिन्दूओं की हैसियत से हम पुराणों की ऐसी कई कथाओं से परिचित हैं जो इस प्रकार के नये जन्म सम्बन्धी घटनाओं को पुष्ट करती है। दूसरे धर्मों के अनुयायी और पुनर्जन्म में विश्वास करने वालों का प्रश्न होगा कि वे ऐसे मामलों को प्रमाणिक रूप में स्वीकार कर सकते हैं? इसे स्वीकार करने के अलावा उनके पास कोई दूसरा रास्ता नहीं है, क्योंकि उनके साहित्य और विशेषकर बौद्ध और

जैन साहित्यों में इस प्रकार की कई घटनाएं मिलती हैं जो कि हमारी अटूट धार्मिक परम्परा का अंग है। झगड़ा उन धर्मों से है, जो न केवल अपने धर्म के अनुयायियों को पुनर्जन्मों के सिद्धान्त स्वीकार करने को हतोत्साहित करते हैं, क्योंकि ऐसा न करने से उनके अधिकांश उपदेशों के नष्ट और पराजित होने की संभावना है, तथा वे अपनी स्थिति को बचाने में लाचार और असमर्थ हो जायेंगे। इसके अलावा उन्हें अपना धर्म मुड़ा-तुड़ा और हल्का लगने लगेगा। यही कारण है कि उन्होंने पुनर्जन्म पर की गई उत्तम खोजों पर अपने धार्मिक मंच पर कभी चर्चा नहीं की। वे अपने अनुयायियों को अंधेरे में रखना चाहते हैं। अपनी कही बातों को ईसामसीह के उपदेश समान अपरिवर्तनीय और अकाट्य सत्य के रूप में स्वीकार करना चाहते हैं। यह दिव्यज्ञान का प्रचार नहीं है, अपितु तानाशाही और इससे भी अधिक धार्मिक कट्टरता है। परन्तु ऐसे अधिकांश धर्म एक पुस्तक और एक पैगम्बर पर आधारित मात्र है। वैज्ञानिक स्थापनाओं को चाहिए कि वे इस धार्मिक कट्टरता का बहिष्कार करें विशेषकर ऐलोपैथी डाक्टरों का जो इस तथ्य को स्वीकार नहीं करते कि प्रत्येक रोग किसी व्यक्ति के पूर्वजन्मों के या इस जन्म के कर्मों का परिणाम है।

अंकित (चिह्नित) नोट्स

[1] दूसरी सेवाओं की तरह भारतीय लेख और परीक्षा सेवा (इंडियन ऑडिट एण्ड अकाउंट्स सर्विस) में भी अखिल भारतीय प्रतियोगी परीक्षा के आधार पर चयन किया जाता है। कई हजारों में कुछ सौ का वरीयता के आधार पर चयन किया जाता है।

आर ४/७, राजनगर गाजियाबाद २०१-२०२

[2] मैने उसको और उसके परिवार को कुछ श्रेष्ठतम भविष्यवाणियां दी हैं। आनन्द मार्किट सम्बन्धी पुस्तकें और वित्तीय सूचनाएं देकर मेरी सहायता करता है जिनसे मैं लोगें को ज्योतिषीय दृष्टि से मार्गनिर्देशन करता हूँ। हालंकि यह मार्गनिर्देशन अपेक्षाकृत अधूरा होता है क्योंकि वित्तक्षेत्र व मार्किट क्षेत्र में मेरा ज्योतिषीय अधिकार नहीं रहा।

[3] मैंने उसकी भाषा या विवरण को नहीं बदला है किन्तु उन्हें अलग-अलग अनुच्छेदों में तोड़ दिया है और कुछ भागों पर अधिक बल देकर उपयुक्त उपशीर्षक देकर तिरछे अक्षरों में दे दिया है।

[4] एस.सी. आनन्द के परिवार की मेरे पास बीस से अधिक जन्मकुण्डलियां है किन्तु प्रस्तुत पुस्तक के विषय की दृष्टि से यह सर्वाधिक मूल्यवान अंश है।

[5] **वंश का स्मरण करते हुए** : हरनामदास आनन्द और पार्वती आनन्द के चार पुत्रों में गिरधरलाल आनन्द वकील थे, दूसरा पुत्र प्रीतमदास आनन्द अध्यापक थे, तीसरा कुशलचन्द आनन्द डाक्टर थे और मेरे मित्र एस.सी. आनन्द के पिता थे। और चौथा पुत्र बशेश्वरदास आनन्द था जो युवावस्था में ही मर गया था। यहां वर्णित घटनाओं का केन्द्र डा. कुशलचन्द आनन्द की पुत्री थी।

[6] वह महान भारतीयों की पीढ़ी थी जिन्होंने ईमानदारी और आध्यात्मिकता का जीवन यापन किया था

जीवन काल के उनके अनुमान और पूर्वानुमान योगियों की तरह थे।

[७] इस तरह की घटनाओं में मेरी पुस्तक "***योगी प्रारब्ध और कालचक्र***" में देखिए जिसमे मैंने एक ग्वाले की कन्या की चर्चा की है जिसने मुझे १९६२-६३ में शिलांग में भूकंप की चेतावनी दी थी।

[८] यह जन्मकुण्डली इस अध्ययन के अन्त में दी गई है।

[९] यह बात मदर टेरेसा सहित कुछ ईसाई-मिशनरियों पर ठीक बैठता है जो यह मानते है कि केवल मानव में ही आत्मा होती है पशुओं में नहीं होती। संभवतः जानबूझकर की गई इस उपेक्षा से वे पशुवध और मांसाहारी भोजन को सही नहीं ठहरा सकते।

[१०] यह आदत पूर्वजन्म में गायक के रूप में अवतरित होने से थी

[११] परमात्मा (भगवान) को ईमानदार भक्त की प्रार्थना पूरी करनी पड़ती है भले ही वह किसी पशु के अगले जन्म के बारे में ही क्यों न हो।

[१२] जीवन के उत्तरार्द्ध में वह प्रसिद्ध डाक्टर बने और भारत के सबसे बड़े आयुर्विज्ञान संस्थानों का प्रमुख रहे। वे प्रायः मुझसे परामर्श लिया करते थे और भविष्यवाणियां पूछते थे। जन्म सम्बन्धी विवरण है - १९ सितम्बर १९१७ प्रातः २:३० बजे लाहौर में (जो अब पाकिस्तान में है)। उनका जन्म पिता की मृत्योपरान्त हुआ था। यहां रतन आनन्द स्पष्ट रूप में बताती है कि वह डाक्टर बालकृष्ण आनन्द की पिछले से पिछले जन्म में पिता थी, इस जन्म में स्त्री बनी दूसरे जन्म में वह पुरुष थी बाद में गाय बनी और अब स्त्री है।

[१३] १९४०-४३ में डा. आनन्द मेडिकल छात्र थे। अंग्रेजों की "फूट डालो और राज करो" नीति के परिणामस्वरूप लाहौर हिन्दु-मुस्लिम के मध्य दंगे का केन्द्र था। इससे १९४७ में भारत-विभाजन का मार्ग प्रशस्त हुआ और अब लाहौर पाकिस्तान में है।

[१४] **विवाह पार्टी** : हिन्दु विवाहो में सभी मित्रों और रिस्तेदारों की बड़ी भीड़ होती है। इससे विवाहित जीवन में कुछ तनावों के बावजूद शादियां टूटने से बचती हैं क्योकि ऐसे विवाह में सामाजिकता का भाव पैदा होता है। भारतीय शादियां सुखमय और सफल होती है क्योंकि पारिवारिक नियंत्रण के साथ-साथ सामाजिक नियंत्रण नहीं टूटा है बच्चे परिवारों को जोड़े रखते हैं।

१५ मात्र एक जन्म में ज्ञान, विशेषकर दिव्यज्ञान या अलौकिक ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता है। ५०, ६०, ७०, ८० या इससे भी अधिक आयु के ज्योतिषी असफल ज्योतिषी हैं भले ही उन्होंने विज्ञापनों के माध्यम से प्रसिद्धि पा ली हो। ऐसे ज्योतिषियों को जान लेना चाहिए कि किसी ने ज्योतिष सीखने में भले ही कुछ वर्ष या बहुत वर्ष लगायें हो तब भी वे अच्छे ज्योतिषी नहीं हो सकते क्योंकि ज्योतिष तो कई जन्मों में कई वर्ष सीखने के लिए लेती है।

[१६] उसे शर्मा की कन्या के भविष्य के बारे में आवश्य ही कोई दैवी प्रेरणा मिली होगी क्योंकि उसने तो उसकी हस्तरेखा देखने और भविष्य बताने से इन्कार कर दिया था। इससे सिद्ध होता है कि किस प्रकार पिछले जन्मों का ज्ञान और प्रतिभा इस जीवन में संस्कार उत्पन्न करता है।

[१७] रतनचन्द स्वयं के बारे में भी जानती थी वह कितना जियेगी। इस समय १९४७ में उसकी दस वर्षीया पोती पूर्ण रूप से उसके समान है।

दूसरी पारिवारिक कहानी
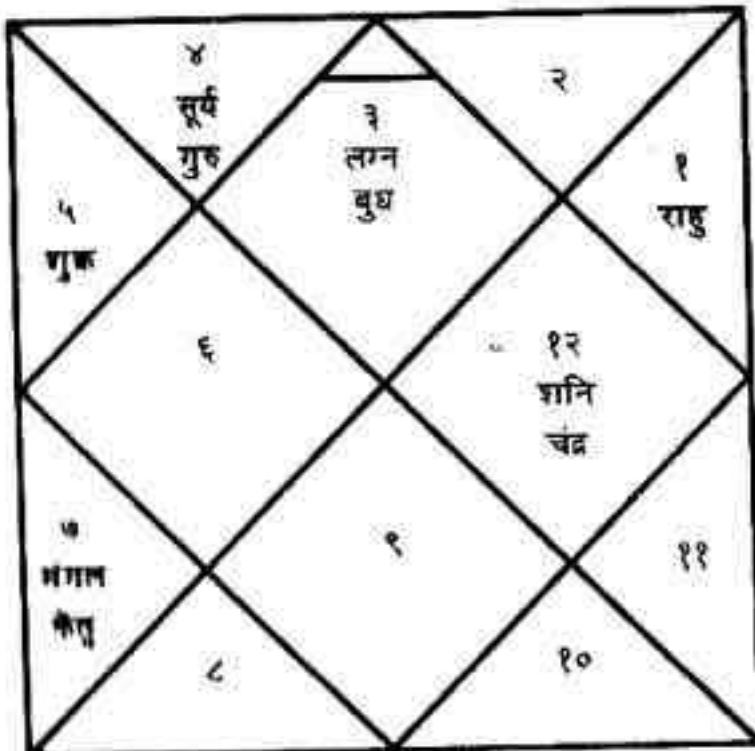
एक परिवार विश्वास करता है कि उनकी जो कन्या इस समय अपने जीवन में भली-भाँति रह रही है वह पूर्वजन्म में उनका सगा बड़ा भाई था।

पारिवारिक कहानी है - ५ दिसम्बर १९६४ को जन्मा लड़का बालकनी से गिरा और गंभीर रूप से घायल हो गया। जब उसकी मां उसे देखने पहुँची तो वह होश में था। उसने उसे बताया कि चिन्ता न करें क्योंकि वह उसकी कन्या के रूप में फिर जन्म लेने वाला है। ऐसा कहा जाता है कि उसने यह भी बताया कि वह १९६७ में पैदा होगा। २८ जुलाई १९६७ को स्वर्गवासी लड़के की मां ने एक कन्या को जन्म दिया।

दोनों जन्मों की जन्कुण्डलियां शैक्षिक उद्देश्य से दी जा रही हैं इन पर मैंने कोई शोध नहीं किया है।

इस मामले में उल्लेखनीय बात यह है कि लड़के/लड़की की मां ने कई ज्योतिषियों से परामर्श लिया था। ज्योतिष पर दृढ़ विश्वास होने के कारण उसने अपने परिवार के सदस्यों की कई जन्मकुण्डलियां बनवायी थी। कुछ मामालों में तो गर्भाधान लग्न भी निकलवाया था।

मैं उससे नहीं मिल पाया। मुझे पूर्ण आशा है कि किसी दिन इस उल्लेखनीय परिवार का विस्तृत मौलिक विवरण मिलेगा।

तीसरी परिवारिक कहानी

पहले दो केसों की तुलना में यह केस अलग है, क्योंकि कई असाधारण और विषम बातें उसके जीवन में दिखाई दी, जिसके बारे में ६ जून १९९७ को उसके पिता उनके पड़ोसी भारतीय रेलवे की एक महिला अधिकारी ने बताई, जो कि उस लड़के सहित मेरे निवास स्थान पर आए थे।

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
०१° २०"	२९° १४"	२२° ५८"	१९° ४१"	१५° १३"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
२१° ४६"	१३° ३९"	२२° ११"	२६° १०"	२६° १०"

विस्तृत ब्यौरे की अभी पुष्टि होनी है।

पुस्तकों में ज्योतिषीय माप-दण्ड

कई ज्योतिषीय-पुस्तकों में इस बात के संकेत दिए गए हैं कि कौन किस लोक से इस जीवन में आया है और मृत्योपरान्त किस लोक में जायेगा। ज्योतिषीय सिद्धान्तों का प्रयोग करते हुए कुछ लेखकों ने कुछ पुनर्जन्म के केसों पर चर्चा की है। उनमें से अधिकतर ने दो जन्मों सम्बन्धी एक केस लिया है और यह तर्क देने का प्रयास किया है कि इस सिद्धान्त को सिद्ध करने में सुसंगत प्रमाण की आशा नहीं कर सकते जब तक कि दोनों जन्मों सम्बन्धी दस केस अर्थात् सही बीस जन्मकुण्डलियों का संकलन न करें। दोनों जन्मों का विवरण भी सही होना चहिए-

१. पराशर और वारहमिहिर द्वारा दिए गए ज्योतिषीय माप-दण्डो की वैधता।
२. कर्मफल (कर्मों का परिणाम)।
३. पूर्वजन्म के कार्यों के प्रभाव के कारण बने मनोवैज्ञानिक लक्ष्णों या कर्म-संस्कारों का पता लगाया जा सकता है।

सूर्य या चन्द्र?

पूर्वजन्म

एक सिद्धान्त यह है कि पुरुष की जन्मकुण्डली में सूर्य और स्त्री की जन्मकुण्डली में चन्द्र केन्द्रीय और महत्वपूर्ण प्रभाव दिखाते हैं। इस सिद्धान्त से कुछ माप-दण्ड बनते हैं किसी जन्मपत्री में यह देखना है कि -

१. सूर्य और चन्द्र में से कौन अधिक बली है?
२. वे किसके द्रेष्कोण में है?

३. यदि वे निम्नलिखित ग्रहों के द्रेष्कोण में है तो वह व्यक्ति उस ग्रह से सम्बन्धित लोक से आया है -

वृहस्पति - दिव्यलोक से।

शुक्र या चन्द्र - पितृलोक या चन्द्रलोक से जो दूसरा श्रेष्ठ लोक है।

सूर्य या मंगल - मर्त्यलोक से।

बुध या शनि - नीचे के लोक से।

इस वर्गीकरण से भी ग्रहों के बलाबल जैसे - श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर, निर्बल - निर्बलतर जैसा वर्गीकरण करना पड़ता है। इस वर्गीकरण में राहु-केतु सम्मिलित नहीं किए जाते।

अगला जन्म

मनुष्य मृत्योपरान्त किस लोक में जायेगा, इसको भी द्रेष्काण के छठे, सातवें और आठवें - भावों में ग्रहों की स्थिति से तय किया जाता है। यदि बढ़ते द्रेष्कोण के इन भावों में कोई भी ग्रह सर्वाधिक बलवान नहीं हो तो इस पर भी विचार किया जायेगा।

नोट

इन द्रेष्काणों का उपयोग कैसे किया जायेगा और द्रेष्कोण के किस भेद का उपयोग किया जायेगा यह स्पष्ट नहीं है।

वृहस्पति का विशेष महत्त्व

मनुष्य की मुक्ति की अभिलाषा में वृहस्पति को विशेष महत्व दिया गया है। उच्चराशि का वृहस्पति आध्यात्मिक जीवन के लिए सहायक कहा गया है जब वह केन्द्र में (१, ४, ७, १० में) या छठे या आठवें-भाव में हो।

नोट

इस योजना (विधि) में २, ३, ५, ९, ११ और १२ भाव सम्मिलित नहीं है।

केन्द्र में तीन या चार गहों के साथ बली वृहस्पति आध्यात्मिक जीवन के लिए बहुत सहायक होता है।

मृत्यु के समय की जन्मकुण्डली

मृत्यु के समय के लग्न और ग्रहस्थिति को विशेष महत्व दिया गया है। इस लिए दो जन्मकुण्डलियों पर साथ-साथ विचार करना चहिए - जन्मकुण्डली और मृत्युकुण्डली। अच्छी ग्रह-स्थिति बिगड़ सकती है, और बुरी ग्रह-स्थिति का समाधान हो सकता है।

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए दोनों समय की जन्पत्रियां एक साथ देखी जाती है।

कुछ अन्य ग्रहयुतियाँ

१. यदि किसी जन्मपत्री में उच्चराशि के उन्नति कारक ग्रह हो तो यह इस बात का संकेत है कि व्यक्ति उच्चलोक का आनन्द लेकर इस संसार में आता है। दो, तीन या चार ग्रह उच्चराशि के, या साथ ही हो, तो भी यही स्थिति दिखाते हैं।

२. कारक वृहस्पति हमेशा शुभ होता है।

पाँचवे और बारहवें भाव और उनके स्वामी

पाँचवा-भाव मंत्र, शिक्षा, संतान और सत्ता (पद) से पतन (दसवें-भाव से आठवें भाव होने के कारण) के लिए देखा जाता है। और बारहवें-भाव से व्यय, शत्रुओं का व्यवहार, मुक्ति और पूर्वजन्म देखा जाता है। पूर्वजन्म जानने हेतु जन्मकुण्डलियों की जाँच के समय इनमे से कुछ माप-दण्डों का प्रयोग और अन्य खोजें की जा सकती है।

विगत जीवन या जीवनों की याद किसे आती है?

प्राय: यह प्रश्न पूछा जाता है कि
पिछले जन्म की याद किसे आती है?

स्पष्ट रूप से ऐसे लोगों के दो वर्ग है:- आध्यात्मिक और सांसारिक जिनकी अस्वाभाविक (आकस्मिक) मृत्यु होती है। उन्हें पिछले जीवन की याद आती है उपलब्ध केसों के आधार पर उनमें अधिकतर लोग दूसरे वर्ग में आते हैं।

आध्यात्मिक प्रवृति के लोग अपने विगत जीवनों की चर्चा कम ही करते हैं। जो इस स्थिति को कठिन और स्पृहणीय आध्यात्मिक अनुशासन से प्राप्त करते हैं। ऐसे लोग ***जातिस्मार*** कहलाते हैं।

कोई व्यक्ति आन्तरिक और बाहरी रूप से पूर्व पवित्र जीवन तथा तपस्या और किसी भी प्राणी के प्रति शत्रुता भाव के न रहने पर ही *जातिस्मार* बनता है।

(मनुस्मृति)

जो अपनी मृत्यु के समय सत्वगुण की पवित्र और उच्च-स्थिति में रहते हुए ईश्वर चिन्तन में लीन होते हैं वे ही पूर्व मानसिक सन्तुलन बनाए रख सकते हैं और अपने विगत जीवन को याद कर लेते हैं। इससे पूर्ण विरक्ति की स्थिति बनती है और मोक्षमार्ग प्रशस्त होता है।

शरीरसंक्षये यस्य मन: सत्त्वस्थमीश्वरम्।
अविप्लुतमति: सम्यक् स जातिस्मरतामियात्।।

(याज्ञवल्क्य स्मृति पृष्ठ [illegible])

यौगिक साधना के द्वारा जो व्यक्ति अपने संस्कार देखता है उसे पूर्व जीवनों की पूर्णरूप से स्मृति रहती है।

(पतांजलि योग सूत्र)

यदि पूर्ण अपरिग्रह (सारी भौतिक इच्छाओं का त्याग और कुछ भी संग्रह न करने की आदत) की स्थिति प्राप्त कर ली जाय, तो उस व्यक्ति को पूर्व जीवनों की जानकारी होती है।

अपरिग्रहस्थैर्य पूर्वजन्मकथन्तासम्बोध: ।

(पातंजलि योग सूत्र-पृष्ठ, ४३१)

कुछ पवित्र आत्मा व्यक्ति *जातिस्मार* बन जाते हैं यदि वे सभी आध्यात्मिक नियमों का पालन करते हुए सच्ची भावना से तीर्थयात्रायें करते हों। मैं कुछ ऐसे महान पुरूषों को जानता हूँ जिन्होंने अपने कुछ शिष्यों को किसी तीर्थ-विशेष की यात्रा करने की मनाही की। जब मैंने उनसे इसका कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि तीर्थ-विशेष में जाने पर उनकी पूर्वजन्मों की स्मृति जग जायेगी और उनमें मृत्यु इच्छा बलवती हो जायेगी। उन्हे पुनर्जन्म लेने की अपेक्षा पहले अपने कर्मों को क्षय होने देना चाहिए। और इस जीवन में साधना पूरी कर लेनी चहिए। असमय प्राप्त किया गया आध्यात्मिक अनुभव बहुत हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

तदहं ते प्रवक्ष्यामि श्रृणु तत्वं समाहिता।
ये मृता: सहसा मर्त्या जायन्ते सहसा पुन:।
तेषां पौराणिकोऽभ्यास: कंचित् कालं हि तिष्ठति।।

भगवान शिव पार्वती को बताते हैं कि कैसे लोग अपने पूर्व जीवन को याद करते हैं। जो व्यक्ति अचानक मर जाता है, और पुन: अचानक जन्म ले लेता है उसकी पुरानी आदतें और संस्कार कुछ समय के लिए बने रहते हैं।

तस्माज्जातिस्मरा लोके जायन्ते बोधसंयुता: ।
तेषां विविर्धतां संज्ञा स्वप्नवत् सा प्रणश्यति ।
परलोकस्य चास्तित्वे मूढानां कारणं त्विदम् ।।

(महाभारत-षष्ठस्कंध-पृष्ठ ५९७७)

यही कारण है कि वे पिछले जन्म की स्मृति लेकर पैदा होते हैं और *जातिस्मार* कहे जाते हैं। लेकिन ज्यों-ज्यों वे बड़े होते जाते हैं उनकी पुरानी स्मृतियां स्वप्नों की तरह लुप्त हो जाती है। ऐसी घटनाएं मूढ़ बुद्धि लोगों को दूसरे लोकों मृत्योपरान्त

(दूसरे-जन्म) में विश्वास करने का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

अधोलोक से कौन आया है - इस तथ्य को जानने का तरीका

(कल्याण परलोक और पुनर्जन्म पृष्ठ-६१४)

परनिन्दा कृतघनत्वं परमभावघट्टनम्।
नैष्ठुय निर्घृणत्वं च परदारोपसेवनम्।
परस्वापहरणाशौचं देवतनां च कुत्सना।
निवृत्या वंचनं नृणां कार्पण्यं च नृणां वधः।
यानि च प्रतिषिद्धानि तत्प्रवृतिश्च संतता।
उपलक्ष्याणि जानीयान्मुक्तानां नरकादनु।।

मार्कण्डेय पुराण में अधोलोक या नरक से आने वालों के लक्षण इस प्रकार बताये गए है :-

१. ईर्ष्यापूर्ण परनिन्दा में रत रहना।
२. कृतज्ञता के भाव की कमी।
३. दूसरों की गोपनीयता को बताना।
४. निर्दयता और कठोरता।
५. परस्त्री गमन और विवाहेतर सम्बन्ध।
६. धूर्ततापूर्ण तरीकों से दूसरों को उनके अधिकारों से वंचित करना।
७. अशुद्ध रहना।
८. दैवी और आध्यात्मिक जीवन की निन्दा करना।
९. दूसरों को छल-कपट से ठगना।
१०. कृपणता।
११. दूसरों का वध करना।

वैयक्तिक अध्ययन (केस हिस्ट्रीज)

यहां चर्चित वैयक्तिक अध्ययनों का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है। ये व्यक्ति मेरे परिचित हैं। यदि उनसे सम्बन्धित विशेषकर दु:खद घटनाओं की विस्तृत चर्चा की जाती है तो वे आहत अनुभव कर सकते हैं।

यह तथ्य शाश्वत-रूप से सत्य है कि, कर्मफल से कोई नहीं बच सकता है। इससे मुझे निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँचने में सहायता मिली है।

१. जो कुछ इस जीवन में घटित हो रहा है उसकी पृष्ठभूमि एक सीमा तक पिछले जीवन की जन्मकुण्डली में देखते हैं।
२. इस जीवन के कुछ संस्कार पिछले जीवन में स्पष्ट-रूप से देखे जा सकते हैं। यह तथ्य मुझे इतना स्पष्ट लगा कि मुझे गरुड़पुराण की बातें सत्य और एकदम ठीक लगी। पुन: ये बातें इतनी संवेदनशील है कि इसकी ओर संकेत मात्र ही कर देना ठीक है। हालांकि इन पर मैं विस्तृत चर्चा कर सकता हूँ। इस जन्म की जन्मकुण्डली में मुझे अधिक विस्तृत और नये अर्थों की जानकारी मिली है। अब मुझे अनुभव होता है कि पश्चिमी-जगत और विशेषकर संयुक्तराज्य-अमरीका में जन्मकुण्डली की मनोवैज्ञानिक समझ एक शुद्ध और सहज धोखा या छलना है।
३. जन्मकुण्डली में कुछ भावों के स्वामियों के सबल और निर्बल होने और ग्रहों के वक्री होने के लाभ और हानिकारक-दृष्टि की गहरी समझ आवश्यक है। मुझे यह बहुत चमत्कारपूर्ण लगा। मैं यहां जिस बात पर बल दे रहा हूँ कि जिनकी जन्मकुण्डलियों में पाँचवे, दसवें और तीसरे-भावों के स्वामी निर्बल हैं

उन्हें अपने कर्मों की शैली में स्वयं सुधार करना चाहिए।

शांति-देवी का केस

यहां एक प्रामाणिक वैयक्तिक अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है हालांकि मैं कानपुर के अपने एक मित्र उमाशंकर-दुबे द्वारा कुछ वर्ष पूर्व इस दिशा में किए गये प्रयासों से अवगत हूँ। दिल्ली के समीप गाजियाबाद में स्थित *"पुनर्जन्म-शोध-संस्थान"* में कार्यरत श्री के.एस. रावत से मुझे यह जन्मकुण्डली मिली। श्री के.एस. रावत ने पुनर्जन्म पर ज्योतिष से अलग ढंग से किए गए शोध कार्य के अन्तर्गत इस जन्मकुण्डली को लिया था और मुझे दे दिया। मैंने इस केस के दोनों जन्मों पर विस्तृत कार्य किया और दोनों जन्मों में कुछ चमत्कारपूर्ण सम्बन्ध देखे। मेरे पास उसके दूसरे जन्म की जन्मकुण्डली थी क्योंकि वह अपने भविष्य के बारे में जानने के लिए मरे पास आया करती थी, विशेषकर प्रौढ़ावस्था में।

यह कहानी भगवान श्रीकृष्ण से जुड़ी मथुरा नगरी से शुरू होती है। परम्परा के महान प्रभाव के कारण इस नगरी के अधिकांश लोग बहुत आस्तिक होते हैं। वे प्रसिद्ध द्वारकाधीश मंदिर के भगवान श्रीकृष्ण की उपासना (पूजा) करते हैं। इस शताब्दी (बीसवीं शताब्दी) के आरम्भ में श्रीकृष्ण के जन्मस्थान पर बना और कृष्ण-जन्मभूमि-मंदिर के रूप में विख्यात मंदिर नहीं बना था।

इस स्त्री की जन्मकुण्डली और जीवन की कुछ घटनाओं के अतिरिक्त कोई विस्तृत जानकारी इस केस की हमारे पास नहीं है। ज्योतिषीय खोजों में इस स्त्री की जन्मकुण्डली मेरा आरंभिक बिन्दु थी। मैंने पहले इस केस को भारतीय विद्या भवन के अपने छात्रों को दिया और बाद में दो चार संयुक्तराज्य-अमरीका के ज्योतिष संस्थान के छात्रों को दिया। १० नवम्बर १९९५ की जिस रात्रि को मैं यह जन्मकुण्डली संयुक्तराज्य-अमरीका के पेनसिलवानिया में स्थित आर्ष-विद्या-गुरूकुलम् मंदिर में प्रस्तुत की वह रात्रि बड़ी उत्कर्षपूर्ण-रात्रि बताई जाती है।

पृष्ठभूमि

यह बात सत्य है कि जन्मपत्री का विश्लेषण सम्बन्धित व्यक्ति की निजी और सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर किया जाना चहिए। यद्यपि हमारे पास विस्तृत जानकारी नहीं है और केवल सही जन्मकुण्डली है जिससे ज्ञात होता है कि इन नारी का जन्म १९०२ में प्रसिद्ध रूढ़िवादी, तीर्थ-नगरी मथुरा में हुआ था। इस बात की कल्पना की जा सकती है कि उसने ब्रिटिश शासन काल की अत्यधिक रूढिवादी दशाब्दी में सामान्य नारी की तरह जीवन बिताया था।

याद रखने योग्य पहला तथ्य यह है कि १९०१ में जनगणना रिपोर्ट के अनुसार

नारी साक्षरता-प्रतिशत ००.५० प्रतिशत और पुरूष-साक्षरता १० प्रतिशत थी।

उस समय हमारा निरक्षरों का राष्ट्र था किन्तु मौखिक रूप में सीखी जाने वाली सांस्कृतिक और शैक्षिक परम्परा यहां के स्त्री-पुरूषों को बुद्धिमान और आध्यात्मिक बनाती थी। वे पश्चिमी सभ्यता से अछूते और हर बात में पूर्णरूप से कट्टरवादी, उच्चकोटि के लोग थे। इस नारी में यह विशेषता दो कारणों से अधिक होनी स्वाभाविक थी। पहला कारण वह उस युग की एक नारी थी और दूसरा कारण कि वह उत्तर-भारत के अत्यधिक रूढीवादी तीर्थनगरी मथुरा की थी।

उसके जीवन के लक्ष्य क्या और कैसे थे? ये लक्ष्य आवश्य ही दो रहे होंगे-रसोई में भोजन बनाना और परिवार की देखभाल करना। उन दिनों में लड़कियों का विवाह कम आयु में ही हो जाता था। सन उन्नीस सौ तीस-चालीस के मध्य अंग्रेज शासकों द्वारा बाल-विवाह को कानूनी रूप से प्रतिबंधित करने वाला (अठारह वर्ष की आयु से पहले विवाह करना) शारदा एक्ट अस्तित्व में नहीं था। हालांकि तब से शारदा-एक्ट कानून की पुस्तकों में है। इसके बावजूद भारत के गाँवों में बाल-विवाह अब भी होते हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि लुगदी नाम से पहचानी जाने वाली इस स्त्री का विवाह भी तत्कालीन हिन्दू परम्परा के अनुसार कम आयु में ही हो गया होगा। उसके माता-पिता ने उसके वर्ण की किसी भी जाति में उसका परम्परागत रूप से विवाह कर दिया होगा।

जब हम इस केस का ज्योतिषीय अध्ययन करते हैं, तो देख सकते हैं कि उसका विवाह भी कम आयु में हो गया होगा। जो उपयोगी सूचना हमें ज्ञात हुई वह यह थी कि विवाह के बाद जल्दी ही वह मां बन गई थी। उसके बाद क्या हुआ इसे पहले ज्योतिषीय दृष्टि से देखा जाना चाहिए।

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि वह उस युग की रूढ़िवादी स्त्री थी अत: यह दो-तीन वर्षों के नियमित अन्तराल के बाद गर्भवती हो जाती होगी। गर्भावस्था में वह अपने सकुशल प्रसव और अपने जीवन की सुरक्षा के लिए भगवान से प्रार्थना भी करती होगी। वे उपनिवेशवाद के दिन थे जब अंग्रेज विश्वसनीय (अच्छी) चिकित्सा सुविधा देने में रुचि नहीं लेते थे जैसा कि इस समय भारत में है जिसके कारण गर्भवती महिलाओं की मृत्युदर बहुत कम हो गई है। हमें सदा यह याद रखना चाहिए कि वह १९०२-१९२० के आसपास के भारत में रहती थी, जब भारत में शिशु मृत्युदर सबसे अधिक थी और अप्रशिक्षित किन्तु अनुभवी दाइयों से जरा सी लापरवाही हो जाने पर बच्चे के जन्म के समय गर्भवती महिलाओं की मृत्यु हो जाती थी। शिशु के सुरक्षित जन्म के लिए प्रयुक्त की जाने वाली एंटीवायोटिक या अधिक प्रभावकारी दवाइयां तब उपलब्ध नहीं थी।

देखने की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह चन्द्र की महादशा और राहु

की अन्तर्दशा का समय था। जिसके सप्तांश में राहु पर मंगल की दृष्टि है, राहु चन्द्र से आठवें-भाव में है। जन्मकुण्डली में चन्द्र छठे-भाव का स्वामी है जो राहु-केतु के दुष्प्रभाव में होने से और मंगल की दृष्टि होने से अधिक खराब हो गया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि एक बच्चे के जन्म के समय वह बहुत बुरे समय से गुजर रही थी। पहले बच्चे के जन्म के बाद (जितना कि हम जानते हैं) पुनः मां बनने की स्थिति अधिक घातक बन गई थी इसे ज्योतिषीस दृष्टि से देखा जा सकता है। १९२५ में २३ वर्ष की आयु में वह दूसरे या तीसरे बच्चे की मां बनने वाली थी। १९२४ की ग्रहस्थिति स्पष्ट रूप से बता रही थी, कि वह गर्भवती थी और फिर मां बनने वाली थी। क्या छठवें-भाव के स्वामी दूषित चन्द्र की अशुभ महादशा और चन्द्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा उन वर्षों में क्या भारत में सुरक्षा देने वाली थी?

४ अक्टूबर १९२५ को उसके कुंभ लग्न से ग्रहों की संक्रमण पर दृष्टि डालनी चाहिए -

१. वृहस्पति की पंचम-भाव पर दृष्टि थी।
२. तुला में स्थित वक्री शनि की पंचम-भाव पर दृष्टि थी।
(मेरी पुस्तक **ग्रह और सन्तान** देखिए)
३. हम जानते हैं कि वह गर्भवती थी परन्तु ग्रह संक्रमण की घातक स्थिति पर ध्यान दीजिए -

क) चन्द्र जन्मकालीन चन्द्र की राशि (स्थिति) में आया था जो मृर्त्युदायक संक्रमण है, और जीवन लीला समाप्त होने की स्थिति है।
ख) पाँचवे-भाव का स्वामी बुध कुंभ से आठवें-भाव में था और सूर्य तथा मंगल से युक्त (दुष्प्रभावित) था।
ग) शनि-मंगल सहित जन्मकालीन चन्द्र को पीड़ित कर रहा था यह मृत्यु-सूचक विशेष स्थिति थी। वह उसी दिन मर गई थी। विंशोत्तरी में चन्द्र-दशा थी राहु की अन्तर्दशा थी और प्रत्यन्तर-दशा केतु की थी।

उसकी मन: स्थिति

पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति पाने के लिए मन:स्थिति एक आवश्यक तथ्य है जो शताब्दियों के अनुभव पर आधारित सर्वविदित हिन्दू विश्वास है। जब गर्भ (प्रसव) पीड़ा दारुण यातना दे रही थी। क्या उस स्थिति में लुगदी ईश्वर के बारे में सोच सकती थी या उसका मन आध्यात्मिक स्थिति में लीन रह सकता था? उसके जीवन के विभिन्न अंशो से यह स्पष्ट है। पिछले जीवन की याद सम्बन्धी मामलों में जो रिकार्ड उपलब्ध है उससे पता चलता है कि ऐसे लोगों की मृत्यु पूर्वजन्म में निश्चितरूप से भयानक (दुर्घटना जैसी) हुई थी। पिछले जन्म में मृत्यु के समय की पीड़ा गहनता आने वाले

जन्म में प्रारंभिक वर्षों तक याद रह जाती है फिर यह याद नहीं रहती या इतनी धूमिल हो जाती है कि व्यक्ति को पिछले जन्म की याद नहीं रहती। संयुक्तराज्य अमरीका में मनोचिकित्सको ने बाल्यकाल में किये हुए दुर्व्यवहार की याद को ताजा करवाते हुए व्यक्ति-विशेष से पैसे भी ऐठें और परिवारिक रिश्तों में घृणा भी फैलाई। मनोचिकित्सा की कोई भी पद्धति निदान या चिकित्सा बाल्यकाल के दुर्व्यवहार (कष्टों) की खोज पर आधारित होती है। यदि बाल्यकालीन दुर्व्यवहार की याद दिलाने में सफलता मिल भी जाय तो इससे बीमरी के ठीक होने या सामान्य स्थिति में आने में क्या सहायता मिलेगी?

ज्योतिष ज्ञान की बहुत श्रेष्ठ विद्या है। कुंठा या मन की दबी बातें ६० प्रतिशत मामलों में सफल ज्योतिष की सहायता से और ज्योतिषी के प्रश्न का संम्बन्धित पार्टी द्वारा स्वेच्छा से खुलासा करके मालूम की जा सकती है। यह काम एक मनोचिकित्सक तब तक नहीं कर सकता, जब तक वह ज्योतिष नहीं सीखता और उसका प्रभावी उपयोग नहीं करता। मनोचिकित्सकों द्वारा रोग निदान के लिए अपनाये गए ऐसे अप्रिय और उबाऊ मामलों की जानकारी मुझे है। जो मूर्खतापूर्ण या निरर्थक सिद्ध हुई और जिनमें ग्राहको को ठगने-लूटने के स्पष्ट इरादों को छिपाया गया है।

ऐसे ग्राहकों (पार्टियों) में से कुछ को मैंने सलाह दी थी कि यदि वे मनोचिक्तिसकों के पास न जांय तो उनका इलाज हो सकता है। संयुक्तराज्य-अमरीका के तीन मामलों में और विशेषकर ईस्ट कोस्ट में मेरी सफलता चमत्कारपूर्ण थी। कारण स्पष्ट था ग्राहक द्वारा अपनी परेशानियां बताने से पहले से आश्चर्य में डालने वाले सही-सही प्रश्न कर देता था। दृष्टान्त के तौर पर बताये जाने वाले हजारों केसों में से मै अब बहुत से केसों को उद्धघृत नहीं करूंगा परन्तु शिकागो के वकील के केस की चर्चा करूंगा। मैंने उसकी जन्मपत्री देखी और बताया कि उनका कानूनी व्यवसाय होना चाहिए। उन्होंने इस बात की पुष्टि की। फिर मैंने उन्हे बताया कि वे स्वयं एक कोर्ट केस में फॅसे हुए हैं जिसे संयुक्तराज्य-अमरीका में अनैतिक वकालत कहा जाता है। उन्होंने सिर पर हाथ रखकर (अर्थात् सोचने की मुद्रा में) कहा कि यह बात स्पष्ट हो गई है कि ज्योतिष समस्या का पता लगा सकता है जबकि मनोवैज्ञानिक अपने ग्राहक के मन में समस्या पैदा करके लगभग पक्की-पार्टी (ग्राहक) बनाता है जो ग्राहक को सही समस्या बताये बिना ही, प्रतिघंटे कम से कम एक सौ डालर फीस लेता है।

इस प्रकार लुगदी दो बच्चों को जन्म देने के बाद और तीसरे बच्चे को जन्म देते समय १९२५ में भयानक यंत्रणा में मर गई।

अब मृत्यु के समय उसके मन की स्थिति का विश्लेषण कीजिए -

१ जन्मकुण्डली में शनि की पाँचवे-भाव पर दृष्टि है और पाँचवे-भाव का स्वमी मंगल और सूर्य के मध्य बारहवें-भाव में है।

२. सन्तान का प्रतीक वृहस्पति दुर्बल और दाहक है।
३. वृहस्पति से पाँचवे-भाव का स्वामी शुक्र अच्छी स्थिति में है।
४. सप्तांश में शनि पाँचवे-भाव को देख रहा है जबकि पाँचवे-भाव का स्वामी वृहस्पति बारहवें-भाव में बुरी स्थिति में है।
५. चन्द्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा जो सप्तांश में सातवें-भाव में है और मंगल से दृष्ट है।
६. २२वें द्रेष्कोण वाला आठवां-भाव अक्टूबर १९२५ में बहुत कष्टकर स्थिति में था।
७. यह तीसरी दशा थी जो जीवन में थोड़े समय के लिए अशुभ होती है।
८. इन सब तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यह बहुत पीड़ादायक गर्भावस्था थी

उसी गर्भावस्था में उसकी मृत्यु हो गई, जो निम्नलिखित कारणें से भी स्पष्ट है-

उन दिनों गर्भवती महिलाओं को दी जाने वाली मेडिकल सुविधाएं नहीं के बराबर थी। उन दिनों सामान्य मृत्यु-दर और शिशु-मृत्यु-दर इस नब्बे के दशक या इस शताब्दी के अन्तिम दशक में प्राप्त सुविधाओं को देखते हुए अनुमान की जा सकती है।

ये तथ्य संस्कारों के महत्व को बताते हैं जो उसके अगले जन्म के लिए बनते हैं जो अन्य बातों के अलावा दो मुख्य रूप से है - विवाह और गर्भावस्था का भय।

इस पृष्ठभूमि में पुरनी दिल्ली में चाँदनी-चौक में रहने वाले कायस्थ परिवार में जन्मी कन्या के जीवन को ध्यान में रखते हुए समझी जा सकती है। नीचे एक जन्मकुण्डली दी जा रही है -

यह कन्या चार या पाँच साल की आयु में चर्चा का विषय बनी जब उसने बताया कि वह पिछले जन्म में मथुरा की लुगदी थी। यह पुनर्जन्म सम्बन्धि इस शताब्दी का सर्वाधिक चर्चित केस था क्योंकि महात्मा गाँधी ने इस केस में रुचि ली थी।

विवाह के लिए उसकी जन्मकुण्डली अच्छी नहीं थी।

इसके लक्षण देखिए-

१. मंगल दूसरे भाव में था।
२. नवांश लग्न से सातवें-भाव का स्वामी चन्द्र बहुत दुष्प्रभावित था।

गर्भावस्था की पीड़ा की स्मृति उसके अवचेतन मन में थी।

१. अत्यधिक दुष्प्रभावित पाँचवे-भाव और पाँचवे-भाव के स्वामी को देखिए।
२. वृहस्पति से पाँचवे-भाव का स्वामी शुक्र बारहवें-भाव में दुष्प्रभावित है।

विगत जीवन में मृत्यु के समय के विचारों ने उसके मन में विवाह और प्रसवपीड़ा का भय पैदा कर दिया था। इसे पूवर्जन्म का संस्कार कहा जाता है। अगले

जन्म में उसने विवाह करने से मना कर दिया जब उसका नाम शांतिदेवी था और उसे गर्भावस्था जैसी पीड़ा होती थी।

विगत जन्म की पीड़ा उसके अगले जन्म तक आई। इसी कारण ज्योतिष का उपयोग मनोविश्लेषण द्वारा रोग निदान में प्रमुख उपकरण के रूप में किया जाना चहिए। अब पुनः उसके विगत जीवन के जन्मकुण्डली देखिए -

१. बारहवें-भाव में ग्रहों का केन्द्रित होना देखिए।
२. पाँचवे-भाव का स्वामी बुध भी मंगल और सूर्य के बीच में बारहवें-भाव में है।
३. वृहस्पति दुर्बल और दाहक है।
४. केन्द्र में वृहस्पति के अतिरिक्त कोई शुभ ग्रह नहीं है।

अगले जन्म में वह विश्वविख्यात शांतिदेवी बनी। वह पुरानी दिल्ली के चाँदनी-चौक में रहती थी जहां से संभवतः उसका अपना निवास स्थान नई दिल्ली के ग्रेटर-कैलाश में बदला।

उस समय मेरे पास उसके पूर्वजन्म की जन्मकुण्डली नहीं थी। अब जब उसकी पूर्वजन्म की जन्मकुण्डली मेरे पास है तब उसे लुगदी कहा जाता था। उसकी सप्तांश को देखकर जाना जा सकता है, कि वह भावनात्मक रूप से विवाह और मातृत्व के विरुद्ध क्यों थी।

वह भविष्य-कथन के लिए कई बार मेरे पास आई। वह अविवाहित थी। एक बार मैंने उससे विवाह न करने का कारण पूछा। भावुक होकर और अश्रपूरित नेत्रों से उसने कहा - विवाह करना अच्छा है बशर्तें गर्भ का भय और पीड़ाएं सहनीय हों।

अपने पूर्वजन्म में उसे प्रसव के समय भयानक पीड़ा हुई। बार-बार वह गर्भवती हुइ और उसने अनुभव किया कि गर्भावस्था मृत्यु का संदेशवाहक है।

उसे ज्योतिष का कुछ ज्ञान था और भविष्य-कथन भी करती थी।

१. जन्म चन्द्र और मृत्यु के समय के चन्द्र की स्थिति और अंश देखिए।
२. मृत्यु के समय अष्टम-भावस्थ ग्रहों और जन्मकुण्डली के पाँचवे-भाव के स्वामी को देखिए।
३. चन्द्र-दशा तृतीय थी जो अल्प-आयु के लिए अशुभ होती है।
५. जन्मकुण्डली में केन्द्र में कोई शुभ-ग्रह नहीं था।
५. चन्द्र-राहु दशाओं में उसकी मृत्यु हुई। सप्तांश में सप्तम-भाव गर्भावस्था के दौरान मृत्यु का संकेत देता है।
६. केतु और राहु के शिकंजों में जन्मकुण्डली का पंचमेश दुष्प्रभावित है।
७. छठे-भाव का स्वामी चन्द्र जन्मकुण्डली में पीड़ित है।
८. पुत्र-कारक वृहस्पति जन्म-कुण्डली में दाहक है।

इसलिए जन्मकुण्डली को विवाह और सन्तान की दृष्टि से सूक्ष्म रूप में देखना चाहिए।

हमें उसके जन्म के बाद की विंशोत्तरी-दशा अवश्य देखनी चाहिए। चन्द्र सोलह अंश और छब्बीस मिनट पर था और उसका जन्म शुक्र की महादशा में हुआ था जो १९१७ में समाप्त हो गई थी। तब पन्द्रह वर्ष की आयु होने पर सप्तमेश सूर्य की दशा शुरू हुई। जैमिनी की चर दशा और वृष (राशि-दशा) में जब मकर की अन्तर्दशा में उसका विवाह हो जाना चाहिए था और यदि विलम्ब हो जाता तो अठारह वर्ष की आयु में सन १९२० में उसे विवाहित स्त्री हो जाना चाहिए था। तब सूर्यदशा शनि की अन्तर्दशा (जो सप्तांश में पंचम-भाव को देख रहा है) वह मां बन सकती थी और बुध की अन्तर्दशा से पूर्व (बुध जन्मकुण्डली में पाँचवे-भाव का स्वामी है) उसे फिर मां बन जाना चाहिए था।

दूसरी बार चन्द्र की दशा में (जैसा कि अब ज्ञात हो गया है) जन्मकुण्डली के नवम-भाव स्थित राहु की अन्तर्दशा में जब वह सप्तांश में १/७ धुरी पर थी वह गर्भवती थी।

सन्तान के जन्म के दृष्टि से जन्मकुण्डली कितनी शुभ थी?

१. जन्मकुण्डली में पाँचवे-भाव का स्वामी बुध बारहवें-भाव में बुरी स्थिति में था।
२. नवांश में पाँचवे-भाव में स्थित केतु पर अष्टम-भाव स्थित शनि की दृष्टि थी।
३. दशमांश में पंचमेश बारहवें-भाव में राहु-केतु के मध्य है और छठें-भाव में स्थित मंगल की उस पर दृष्टि है।
४. सप्तांश में पंचमेश बारहवें-भाव में है और पाँचवे-भाव पर शनि की दृष्टि है। पाँचवे-भाव का स्वामी उच्चराशि का होकर बारहवें-भाव में चन्द्र के साथ है जो सन्तानोत्पति के लिए शुभ है। किन्तु दूषित पंचम-भाव और पाँचवे-भाव के स्वामी की अशुभ स्थिति खतरे का स्पष्ट सूचक है।

२. पूरणसिंह का केस

जब मैं ज्योतिष और पुनर्जन्म पर काम कर रहा था तब मेरे मित्र सुमित बाली का पर्यटन व्यापार करने वाला कोलम्बिया-वासी मित्र एक दिन मेरे पास आया। हमारे वार्तालाप के मध्य उसे ज्ञात हुआ कि मैं उस व्यक्ति के दोनों जन्मों की कुण्डलियां एकत्रित करने में रुचि ले रहा हूँ, जिसे पिछले जन्म की याद हो, और जिस परिवार से वह अपना सम्बन्ध बताता है, वह परिवार इन बातों की पुष्टि करता हो। भारत में हम इन बातों की अधिक चर्चा इसलिए नहीं करते कि हम लोग ऐसी घटनाओं से परिचित हैं, कुछ लोग किसी व्यक्ति की पूर्वजन्म की स्मृतियों को समस्याएं बढ़ने के कारण नहीं बताते। उदाहरण के लिए दो वर्ष की कुरान की आयतों का उच्चारण करने वाली लड़की के घबराये हुए माता-पिता ने यह बात दबा दी। मुसलमानों को

सिखाया जाता है कि वे पुनर्जन्म में विश्वास न करें। छोटी लड़की ने पिछले जन्म में मुस्लिम बहुल क्षेत्र में स्थित अपने परिवार का विस्तृत विवरण भी दिया किन्तु यह बात दूसरे तक नहीं पहुँचने दी, क्योंकि ऐसा करने से हिन्दू-मुस्लिम दंगे भी हो सकते थे।

कोलम्बिया-वासी ने मुझे बताया कि उसकी सिख-पत्नी का एक छोटा भाई था जो पूर्वजन्म में उसका चाचा पूरणसिंह था। तब उस कोलम्बिया-वासी की पत्नी स्वयं मेरे पास आयी और मुझे अपने छोटे भाई देविन्दर जीत सिंह (इस जन्मकुण्डली में पूरणसिंह द्वितीय) का जन्म सम्बन्धी विवरण बताया। कुछ दिन बाद देविन्दर जीत सिंह स्वयं मेरे पास आये और मुझे बताया कि उसे पिछले जन्म में वर्मा में रहने की धूमिल सी स्मृतियां हैं। मैं एक दिन की छुट्टी लेकर वर्मा से भारत आया था और एक दुर्घटना में मर गया। लुगदी-शांतिदेवी की तरह यहां भी उन्हें पूर्वजन्म की याद है, जो पूर्वजन्म में दुर्घटना या असमय मृत्यु से मरे। देविन्दरजीत सिंह-पूरणसिंह केस भी ऐसा ही है।

वह कोलम्बिया-वासी बहुत सहायक सिद्ध हुआ और पूरणसिंह के बारे में मुझे निम्नलिखित विवरण दिया जो इस जन्म में देविन्दरजीत सिंह है।

वह एक बुरा विद्यार्थी किन्तु जल्दी क्रोधित होने वाला व्यक्ति था, जिसने १९४३ में एक कत्ल कर दिया था। जब एक बुरे चरित्र का व्यक्ति गाँव में आया और उसने गाँव की लड़कियों का पीछा करना शुरू कर दिया। पूरण सिंह ने उसे ऐसे काम करना बंद करने को कहा लेकिन जब उस गुण्डे ने पूरणसिंह की बात पर ध्यान नही दिया तो पूरणसिंह ने उसको मार दिया। यह संभवत: राहु-मंगल की दशाओं का समय रहा होगा। पुलिस द्वारा पकड़े जाने के भय से घरवालों ने उसे सेना में भर्ती होने की सलाह दी। द्वितीय-विश्व-युद्ध चरम सीमा पर चल रहा था और अंग्रेज शासक अधिक रंगरूट चाहते थे। जन्मकुण्डली में दशम-भाव पर मंगल की दृष्टि उसके सेना में शामिल होने की पुष्टि करता है। दशमांश में मंगल तीसरे भाव में है और राहु-केतु ४/१० धुरी पर है। इस स्थिति के कारण उसे वर्मा में नियुक्ति मिली। जहां युद्ध समाप्ति तक उसने नौकरी की उसके बाद वह वहीं बस गया, और अर्ध-शिक्षित परन्तु धनी सिक्ख की पुत्री के साथ १९४७ में उसका विवाह हो गया। यह निश्चित रूप से वृहस्पति-शनि-दशा का समय होगा। नवमांश में शनि सातवें-भाव में है। उसकी आठ सन्तानें हुई जैसा कि सप्तांश से स्पष्ट है। १९५२ के बाद उसने सेना की नौकरी छोड दी थी।

उसका एक फार्म था और वह सम्पन्न हो गया था। उसकी एक लाल-रंग की मोटरसाइकिल थी और एक फर का ओवरकोट था जिसे वह सावधानी पूर्वक कपड़ों की आलमारी (कप-बोर्ड) में रखता था।

वह अपनी बहन के विवाह में सम्मिलित होने भारत न आ सका, इसका उसे

१० गुरु सूर्य मंगल बुध
१२
११ लग्न शुक्र
१ चंद्र केतु
९ शनि
२
८
३
५
७ राहु
४
६

	चंद्र केतु		
लग्न शुक्र	लुगदी जो अपने अगले जन्म में शांतिदेवी बनी		
गुरु सूर्य मंगल बुध	स्त्री लुगदी १८ जनवरी १९०२ १०:००:०० प्रात: मथुरा		
शनि		राहु	

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
२८° ४२"	०४° ०४"	१६° ०३"	२०° १५"	१४° ५४"
गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
०२° २६"	०९° ५५"	२७° १४"	१७° ४४"	१७° ४४"

(चंद्र-राहु-शुक्र की दशाओं में ४ अक्टूबर १९२५ को मृत्यु हुई। अगला जन्म राहु-बुध की दशाओं में हुआ)

४ मंगल
३ लग्न
२ बुध
५ चंद्र
१
६ केतु
१२ राहु
७
९ शनि शुक्र
११ सूर्य
८
१० गुरु

राहु		बुध	लग्न
सूर्य	नवांश		मंगल
गुरु			चंद्र
शनि शुक्र			केतु

८
७ लग्न
६ मंगल
९
५ शनि चंद्र केतु
१० सूर्य गुरु
४
११ राहु शुक्र
१
३
१२
२ बुध

		बुध	
राहु शुक्र	द्रेष्काण		
सूर्य गुरु			शनि चंद्र केतु
		लग्न	मंगल

हमेशा मलाल रहा। वह उससे छोटी थी और वह उसके लिए वर्मा से बहुत से उपहार भेजा करता था। वह १९६६ में भारत आया। तेज रफ्तार से मोटरसाइकिल चलाने की आदत के कारण वह (परिवार के लोगों द्वारा दिए गए विवरण के अनुसार) दिन के ११ बजकर ४० मिनट पर १९ मई १९६६ को दुर्घटना में मर गया।

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
२२° ४४"	२५° ४२"	१३° २३"	११° ४८"	०४° ५४"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
२९° ३९"	००° ३२"	०८° ०९"	१४° २७"	१४° २७"

(दशा क्रम: राहु-बुध, चंद्र-गुरु, पूर्वजन्म में चंद्र-राहु-शुक्र दशाओं में मृत्यु हुई)
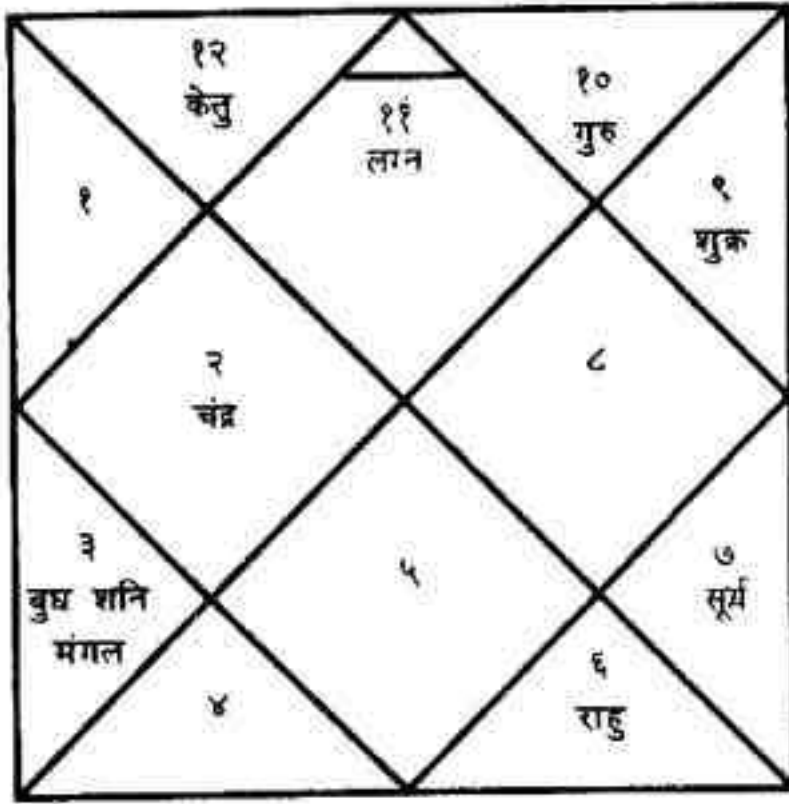
३. जयपुर केस

१९९५ में जयपुर में भ्रमण के समय जब एक ज्योतिष से प्यार करने वाले एक व्यक्ति को ज्ञात हुआ कि मैं पिछले जन्म की याद रखने वाले व्यक्तियों की जन्मकुण्डलियों का संग्रह और विशेषकर दोनों जन्मों की कुण्डलियों का संग्रह करने में रुचि लेता हूँ तो उसने मुझे दो जन्मकुण्डलियां दी। उनमें निम्नलिखित सूचना थी -

१. सम्बन्धित व्यक्ति २७ जुलाई १९७४ को एक सड़क दुर्घटना में मरा था।
२. जब मेरी पत्नी गर्भवती थी तो मेरे दो वर्षीय पुत्र ने दो बार बताया कि उसका चाचा उनके पुत्र के रूप में जन्म लेने वाला है।
३. कई लोगों ने भविष्यवाणी की थी कि मेरा छोटा भाई मेरे पुत्र के रूप में जन्म लेगा।
४. जयपुर के एक तान्त्रिक ने घोषणा की थी की मृतक व्यक्ति (जो मेरा भाई था) मेरे पुत्र के रूप में जन्म लेगा।
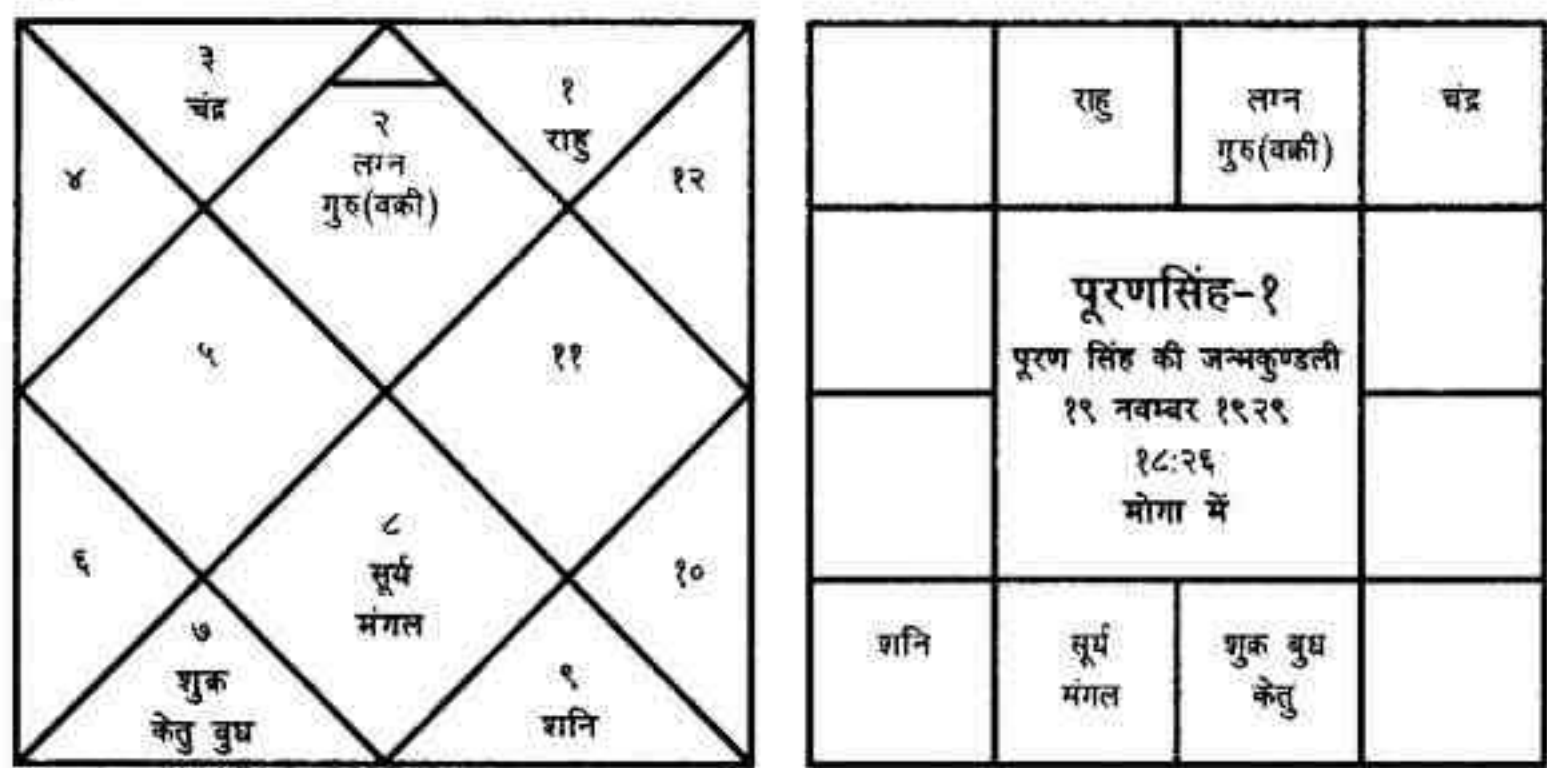
लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
२०° ०१"	०३° ५०"	०८° २३"	०७° ४९"	२९° १४"
गुरु(वक्री)	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
२०° २२"	१४° ५१"	०५° ५७"	१९° १६"	१९° १६"
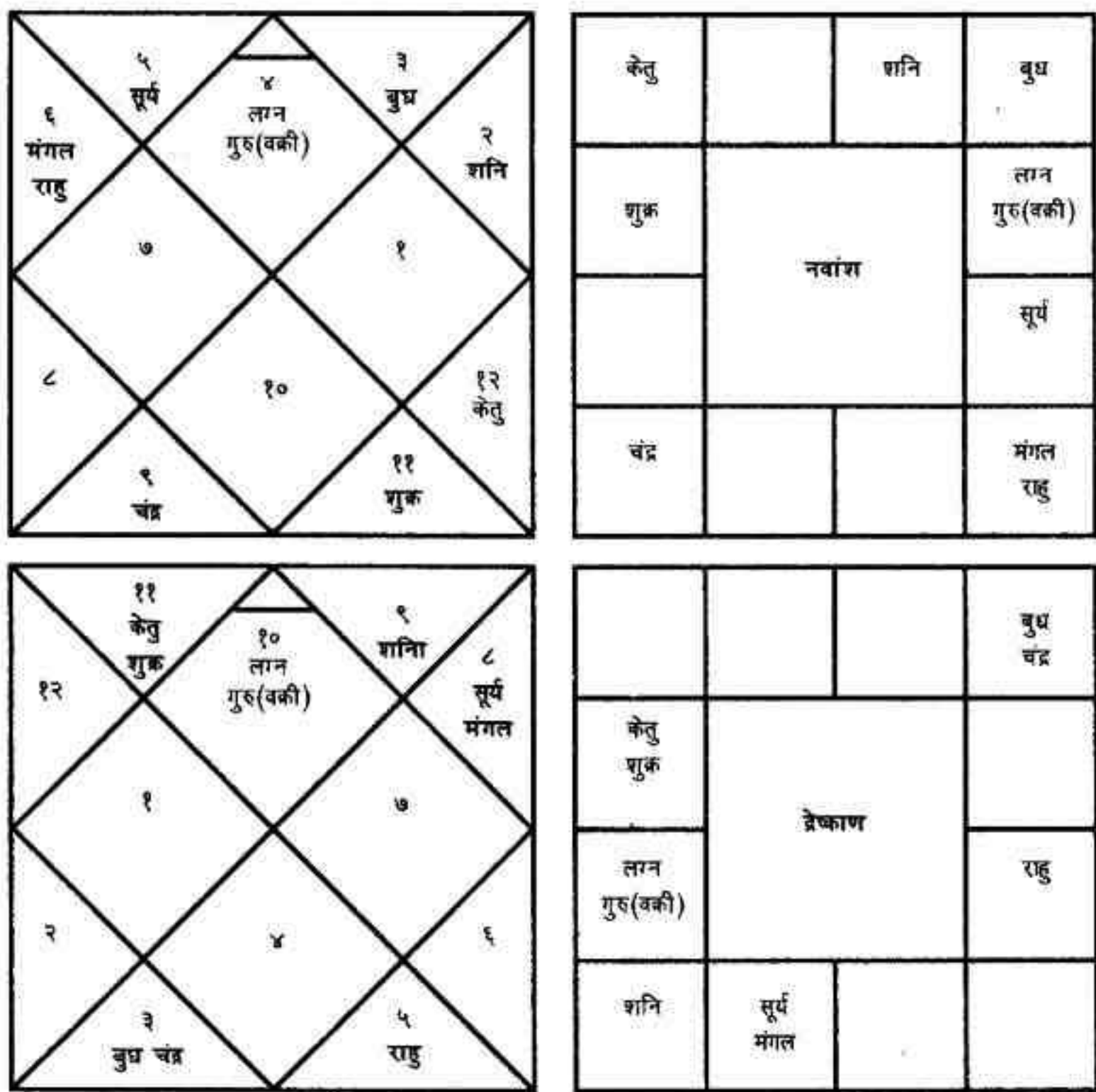
शुक्र		केतु	
मंगल शनि	द्वादशांश		
लग्न गुरु(वक्री)			
सूर्य	राहु		चंद्र बुध

२१ मई १९६६ को दुर्घटना का शिकार हुआ और शनि-बुध-राहु की दशा में मृत्यु हो गई।

शुक्र शनि	चंद्र मंगल बुध	सूर्य राहु	लग्न गुरु
	१९ मई १९६६ जब वह दुर्घटना में मरा		
	केतु		

मीन में मृत्यु के समय शनि के अंश- ०४° ३२"
मेष में मृत्यु के समय चंद्र के अंश - २०° ३५"

५. हम भगवान सूर्य की प्रार्थना करते थे।
६. जन्म के तुरन्त बाद उसने अपने दादा की ओर एक मिनट तक ध्यान से देखा।

४. आर.पी. सिंह का केस

अपनी पुस्तक "*कर्म और पुनर्जन्म*" के पृष्ठ ११६ पर प्रोफेसर बलवीर सिंह ने अपने परिवार में पुनर्जन्म के एक केस की चर्चा की है।

उनके अपने छोटे पुत्र रामप्रताप सिंह उनकी इच्छानुसार मेडिकल व्यवसाय

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
१३° २५"	२३° ३०"	०६° ५३"	२४° २३"	२४° ३१"
गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
०९° ५४"	०५° २३"	२५° २५"	१३° ०९"	१३° ०९"

शनि-बुध दशा में जन्म । शनि-बुध दशा में अगले जीवन में जन्म

१२ गुरु | ११ लग्न शुक्र बुध सूर्य शनि (वक्री) | १० | १ केतु | ९ | २ | ८ | ३ | ५ मंगल | ७ राहु | ४ | ६ चंद्र

गुरु | केतु | लग्न सूर्य बुध शुक्र शनि (वक्री) | नवांश | मंगल | राहु | चंद्र

१२ | ११ लग्न | १० शुक्र केतु | १ | ९ | २ मंगल | ८ शनि (वक्री) | ३ | ५ | ७ | ४ सूर्य बुध चंद्र राहु | ६ गुरु

मंगल | लग्न | सूर्य बुध चंद्र राहु | द्रेष्काण | शुक्र केतु | शनि (वक्री) | गुरु
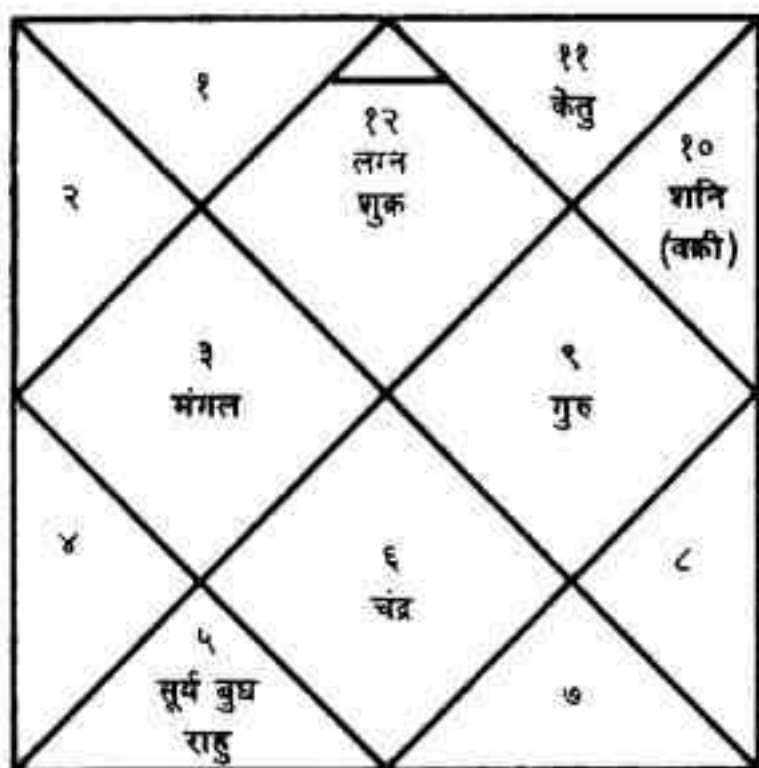
शुक्र लग्न			मंगल
केतु	द्वादशांश		
शनि (वक्री)			सूर्य बुध राहु
गुरु			चंद्र

नहीं करना चाहते थे और व्यापार करने के लिए दिल्ली से आसाम के लिए रवाना हुए। वहां ६ फरवरी १९८३ में एक घातक दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई।

प्रोफेसर बलवीर सिंह (जो आत्माओं से सम्पर्क करके उनसे संदेश पाते थे) को अमरीका की एडगर केशी इन्स्टिट्यूट द्वारा एक शोध कार्य लेने के लिए आमंत्रित किए गए। उन्होंने दिल्ली यूनिवर्सिटी से दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर के रूप में सेवानिवृति प्राप्त की थी और आध्यात्मिक तथा दार्शनिक विषयों पर लगभग नौ पुस्तकें लिखी।

प्रोफसर बलवीर सिंह स्मरण दिलाते हैं कि उनके परिवार के लोगों ने मेरी इस बात पर विश्वास किया कि उनका पुत्र रामप्रताप सिंह उपस्थित है और उससे बात की जा सकती है। आध्यात्मिक (दार्शनिक) विषयों पर आयेजित सभा में रामप्रताप सिंह ने कहा वह प्रोफेसर के परिवार में आ रहा है। दार्शनिकों (आध्यात्मिवादियों) की पिछली सभा(सेमिनार) के संपर्क किए जाने पर रामप्रताप सिंह पर रिकार्ड की गई बातें इस प्रकार हैं -

आर.पी. सिंह - "पिता जी मैं आज अत्यधिक प्रसन्न हूँ। मैं अपनी प्रसन्नता शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। मै सचमुच आनन्दित हूँ"।

प्रोफेसर - "इस प्रसन्नता का क्या कारण है"?

उत्तर - पिताजी मुझे वापस जाने को कहा जा रहा है। मैं परिवार में फिर जन्म ले रहा हूँ। मैं पिछले जन्म में (इनकार्लेशन) में आपका भाई था और मैं १९५३ में अस्पताल में अचानक मर गया था। १९५८ में मैं आपका पुत्र था और अब मैं अपने भाई कृष्ण के पुत्र के रूप में आपका पौत्र बनूगां।

प्रोफेसर - "तुम यहां वापस कब आ रहे हो"?

उत्तर - ७ जनवरी १९८४ को

प्रोफेसर बलवीर सिंह बताते हैं कि सचमुच रामप्रताप सिंह का जन्म ७ जनवरी

६ फरवरी १९८३ को सूर्य-मंगल या राहु दशा में मृत्यु हुई । अगले जीवन में शनि-मंगल दशा में जन्म हुआ।

१
१२ लग्न
११ केतु
२ शनि
१० बुध
३ चंद्र
९ शुक्र
४ गुरु
६
८ मंगल
५ राहु सूर्य
७

लग्न		शनि	चंद्र
केतु	नवांश		गुरु
बुध			राहु सूर्य
शुक्र	मंगल		

४ राहु
३ लग्न सूर्य
२
५ बुध
१
६
१२
७ शुक्र
९
११ शनि
८ गुरु चंद्र
१० मंगल केतु

			लग्न सूर्य
	द्वादशांश		राहु
शनि			
मंगल केतु			बुध
	गुरु चंद्र	शुक्र	

के बजाय १० जनवरी को हुआ था।

मैंने अपने मित्र भूषण की सहायता से आर.पी.एस. के दोनों जन्मों का विवरण प्राप्त किया। मैं एक बार प्रोफेसर बलवीर सिंह से मिला और उनसे कुछ समय तक बातचीत भी की थी। उन्होंने अपनी पुस्तक मुझे उपहार रूप में दी जिसमें उन्होंने लिखा है कि दो वर्ष तक बालक आर.पी.एस. को अपने पूर्वजन्म की भयानक ट्रक दुर्घटना की याद उसके अवचेतन मन में इतनी ताजा थी कि पुनर्जन्म के दो वर्ष बाद तक वह अच्छी नींद नहीं सो पाया।

मैं सूक्ष्मरूप से उसके वर्तमान जन्म के व्यावहारिक लक्षणों का निरीक्षण करता रहा और उनकी तुलना उसके पिछले जन्म से करता रहा। मोटे तौर पर वे समान थी।

प्रोफेसर बलवीर सिंह ने अपनी सुन्दर पुस्तक में बहुत अच्छा निरीक्षण किया है। *"किन्तु एक बात मेरे सामने बहुत स्पष्ट हुई कि प्रार्थनाएं शोकाकुल व्यक्ति को*

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध(वक्री)
२३° ४५"	२५° ३०"	१२° १३"	०५° ५३"	०६° ४७"
गुरु	**शुक्र**	**शनि**	**राहु**	**केतु**
०४° २०"	१७° २३"	२१° ०२"	२१° ४२"	२१° ४२"

६ फरवरी १९८३ को सूर्य-मंगल तथा राहु दशा में मृत्यु हुई । अगले जीवन में शनि-मंगल दशा में जन्म हुआ।

३ बुध; २ लग्न गुरु; १ शनि; ४ राहु; १२; ५; ११; ६; १० केतु; ८ मंगल सूर्य; ७ चंद्र; ९ शुक्र

	शनि	लग्न गुरु	बुध
	नवांश		राहु
केतु			
शुक्र	मंगल सूर्य	चंद्र	

८; ७ लग्न मंगल; ६; ९ गुरु बुध; ५ सूर्य; १० राहु; ४ केतु चंद्र; ११; १; ३ शनि; १२ शुक्र; २

शुक्र			शनि
	द्रेष्काण		केतु चंद्र
राहु			सूर्य
गुरु बुध		लग्न मंगल	

तथा मृत-आत्मा दोनों को ही अत्यधिक शांति देती हैं"।

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
१६° २०"	२०° ५६"	०२° ३२"	२८° २८"	१७° ०५"
गुरु(वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	केतु
२९° ०५"	०५° ३२"	०९° ४०"	१४° २७"	१४° २७"

मृत्यु- बुध-शनि की दशा में । पुनर्जन्म- शनि-बुध की दशा में
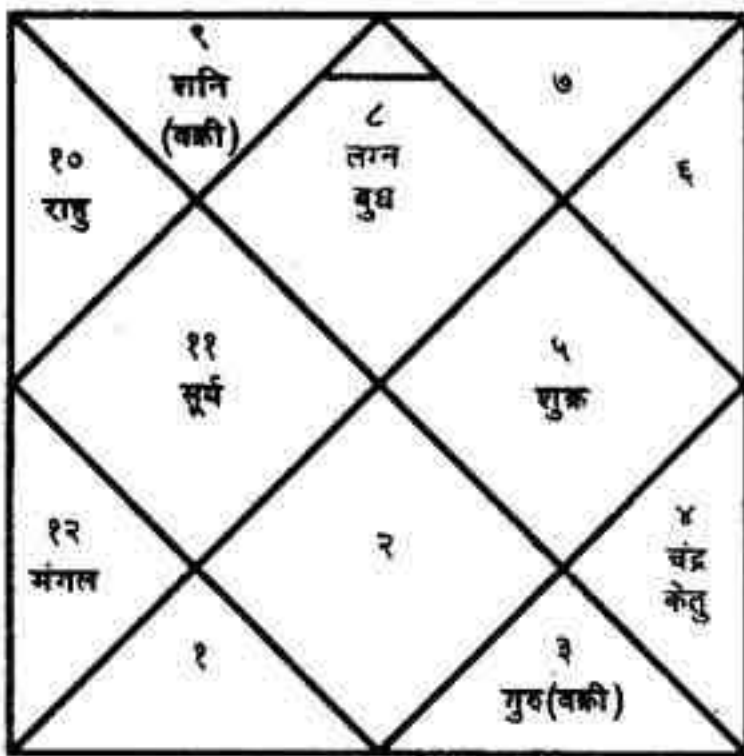
९ बुध
८ लग्न केतु
७
१०
६
११
५
१२ मंगल
२ शुक्र राहु
४ चंद्र
१ सूर्य
३ शनि (वक्री) गुरु (वक्री)
मंगल
सूर्य
शुक्र राहु
शनि (वक्री) गुरु (वक्री)
चंद्र
नवांश
बुध
लग्न केतु
९ शनि (वक्री)
८ लग्न बुध
७
१० राहु
६
११ सूर्य
५ शुक्र
१२ मंगल
२
४ चंद्र केतु
१
३ गुरु (वक्री)
मंगल
गुरु (वक्री)
सूर्य
चंद्र केतु
द्रेष्काण
राहु
शुक्र
शनि (वक्री)
लग्न बुध
११ सूर्य राहु
१० लग्न बुध
९
१२ शनि (वक्री)
८
१
७ शुक्र
२
४
६ गुरु (वक्री)
३ शुक्र
५ चंद्र केतु
शनि (वक्री)
शुक्र
सूर्य राहु
द्वादशांश
लग्न बुध
चंद्र केतु
शुक्र
गुरु (वक्री)

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
१६° १९"	०६° १३"	०६° ४६"	२६° ४०"	२८° ३२"
गुरु	शुक्र	शनि(वक्री)	राहु	केतु
१२° २३"	०६° ५७"	२९° ०९"	०४° ३०"	०४° ३०"

७
सूर्य
शुक्र
६
लग्न
चंद्र
५
८
राहु
४
मंगल
बुध
९
३
१०
शनि
(वक्री
१२
गुरु
२
केतु
११
१
गुरु
केतु
मंगल
बुध
द्वादशांश
शनि (वक्री
राहु
सूर्य
शुक्र
लग्न
चंद्र
५
सूर्य
शुक्र
४
लग्न
चंद्र
३
६
२
मंगल
७
शनि (वक्री)
राहु
१
केतु
बुध
८
१०
१२
गुरु
(वक्री)
९
११
गुरु (वक्री)
केतु
बुध
मंगल
लग्न
चंद्र
द्रेष्काण
सूर्य
शुक्र
शनि (वक्री)
राहु

कुछ अन्य ऑकड़ों के प्रयोग की आवश्यकता

जिन व्यक्तियों के दोनो जन्मों की जन्मकुण्डलियां उपलब्ध हो सकी और जिनका उपयोग इस पुस्तक में हुआ है उन्हे विधिवत यहां सजाया गया है। सभी जन्मकुण्डलियों का विभाजन इस प्रकार किया गया है-

१. **जन्मसमय की कुण्डलियां** - प्रारम्भिक विश्लेषण में यह जानने के लिए उपयोग में लाई जाने वाली जन्मकुण्डलियां सही है या नहीं?

२. **नवांश का उपयोग** - जन्मकुण्डली की गहन जाँच के लिए करना चाहिए।

३. **द्रेष्कोण** - पराशर और वराहमिहिर दोनों ने द्रेष्कोण का उपयोग विगत और अगले जन्मों के बारे में भविष्य-कथन के लिए करने को कहा है। गत जीवन के लिए सूर्य और चन्द्र के आधार पर और अगले जीवन के लिए छठें-भाव और आठवें-भाव के स्वामियों के आधार पर।

४. **द्वादशांश** - इसके बाद मैंने द्वादशांश का प्रयोग सर्वाधिक उपयोगी पाया। कुछ विधियों में मैने "नष्ट-जातकम्" के नियमों से बहुत उपयोगी संकेत पाये हैं। इन चार कुण्डलियों का उपयोग दोनों जन्म सम्बन्धी केसों में किया गया है।

अतिरिक्त कुण्डलियाँ

५. **मृत्युसमय-की-कुण्डली** - पहले (गत) जीवन के केस में मृत्युसमय की कुण्डली प्रयोग की जाती है हालांकि यह कभी एकदम सही नहीं हो सकती क्योंकि

एकदम ठीक मृत्युसमय कोई नोट नहीं करता। फिर भी यदि लग्न सही है तो यह बहुत सहायक होता है। मृत्यु समय-चक्र की स्थिति ने मुझे सदैव अन्य केसों में सहायता दी है।

६. **सप्तांश** - लुगदी (अगले जन्म की शांति-देवी) के केस में सप्तांश का उपयोग अगले जन्म में साथ चलने वाले संस्कारों का पता लगाने के लिए किया गया है, क्योंकि इस केस में (लुगदी के केस में) पूर्वजन्म में जब वह गर्भवती थी तो मृत्युसमय में हुई भयंकर पीड़ा का भय और आशंका अगले जन्म में (शांतिदेवी के रूप में जन्म लेने पर भी) बनी रही।

७. **ग्रहों का संक्रमण** - मृत्यु-समय की जन्मकुण्डली में ग्रहों के संक्रमण का उपयोग जन्मकुण्डली के ग्रहों को देखने में किया जाय तो इससे बहुमूल्य संकेत मिल सकते हैं।

८. **मृत्यु-समय की दशा (विंशोत्तरी)** - मृत्यु के समय की दशा का उपयोग गत जीवन के लिए भी बिना बदले किया जा सकता है।

९. अगले जन्म की विंशोत्तरी का उपयोग भी बिना बदले किया जाना चहिए।

विमशांश और अन्य संशोधित वर्गीकृत कुण्डलियों के ऑकड़ों का भी उपयोग किया जा सकता था, किन्तु यहां उनका उपयोग नहीं किया गया क्योंकि जो केस हमारे पास हैं वे पुनर्जन्म के केस हैं और उनकी मुक्ति नहीं हुई है।

पश्चिमी देशों के कई लोग विशेषकर संयुक्तराज्य-अमरीका के **न्यू एज आन्दोलन** के लोग पूछते हैं कि क्या उन्हें इस जन्म में ज्ञान या मुक्ति मिल सकती है? पश्चिमी जगत के कई ऐसे लोगों का यह सामान्य प्रश्न होता है, जो अपने वासनामय और भोगवादी जीवन को नहीं छोड़ना चाहते फिर भी आशा करते हैं कि वे अपने तथाकथित ध्यान (योग) से (जो कि ऑखें बन्द करके की जाने वाली शारीरिक कसरत मात्र है) ज्ञान और मुक्ति दोनों को पा सकते हैं। वे नहीं जानते कि आध्यात्मिक जीवन क्या है? न ही उनका ऐसा रुझान ही है।

(सदैव गीता का बारहवां अध्याय पढ़ते रहें)।

फिर भी यह स्पष्ट है कि पश्चिम के देशों के कई लोग जो ऐसे प्रश्न कल्पना मात्र से करते हैं या सीधेपन में करते हैं उनमें अगले जन्म में सुधार होगा क्योंकि उन्होंने आध्यात्मिक जीवन की शुरुआत किसी न किसी रूप में की है, भले ही वास्तविक आध्यात्मिक जीवन को समझे बिना की हो।

ऑकड़ों का विश्लेषण

हम पहले शान्तिदेवी का केस लेंगे

१. **लुगदी का द्रेष्कोण** - छठे, सातवें या आठवें-भाव में केवल बुध है जो पुनर्जन्म दिखाता है।

२. **शान्तिदेवी का द्रेष्कोण** - बुध के घर में बली चन्द्र है और हम इस तथ्य को जानते हैं कि वह पूर्वजन्म में लुगदी थी।

३. **मृत्युसमय की कुण्डली** - क्योंकि मृत्युसमय ज्ञात नहीं है अत: कोई टिप्पणी नहीं दी जा सकती। फिर भी जो हम जानते हैं कि उसने शान्तिदेवी के रूप में जन्म लिया है और उसे मुक्ति नहीं मिली।

दूसरा केस पूरणसिंह

१. **पूरणसिंह का द्रेष्कोण** - बुध के द्रेष्काण में चन्द्र और बुध के होने से मुक्ति या मृत्योपरान्त उच्च लोकों की प्राप्ति का संकेत नहीं मिलता।

२. **देविन्दर का द्रेष्कोण** - सूर्य और चन्द्र का चन्द्र के घर में होना यह तथ्य स्पष्ट दिखाता है कि वह मृत्युलोक से ही आया है।

३. **मृत्युसमय की जन्मकुण्डली** - जो मृत्युसमय दिया गया था वह इतना दुविधापूर्ण था कि उस पर सही टिप्पणी देना कठिन है। यह सिंह लग्न भी हो सकता था क्योंकि पहले दुर्घटना हुई और मृत्यु कुछ घंटे बाद हुई।

तीसरा केस जयपुर

जयपुर-१, जो दुर्घटना के बाद जयपुर-२ के रूप में जन्मा (२२ अगस्त, १९९५)

हमारी जाँच स्वाभाविक रूप में दोनों जन्मों के द्रेष्काण से शुरू होनी चाहिए।

१. **जयपुर-१ का द्रेष्कोण** - बुध के द्रेष्कोण में दूषित और वक्री बृहस्पति का होना मृत्योपरान्त मुक्ति का उच्च लोकों की प्राप्ति नहीं दिखाता।

२. **जयपुर-२ का द्रेष्कोण** - चन्द्र का अपने घर में होना और सूर्य का अपने घर में होना स्पष्ट रूप से यह तथ्य निश्चित करता है कि वह मृत्युलोक से आया है।

३ **मृत्युसमय की कुण्डली** - दिया गया मृत्युसमय इतना दुविधापूर्ण (अस्पष्ट) है कि उस पर टिप्पणी करना कठिन है। यह सिंह लग्न का समय भी हो सकता है क्योंकि दुर्घटना पहले हुई थी और मृत्यु कुछ घंटे बाद हुई।

कुछ सिद्धान्तों का परीक्षण - प्रथम

ज्ञात प्रसंग के आधार पर ज्योतिषीय पैमाने को यहां पहले प्रस्तुत किया जा सकता है।

सूर्य या चन्द्र? पिछला जन्म

एक सिद्धान्त यह है कि पुरुष-जन्मकुण्डली में सूर्य का और स्त्री-जन्मकुण्डली में चन्द्र का मुख्य और सर्वाधिक महत्व होता है। इससे कई पैमाने बनते हैं :-

१. ज्ञात करो कि सूर्य और चन्द्र में से कौन अधिक बली है?

२. यह भी देखें कि ये दोनों किसके द्रेष्कोण में है।

३. यदि वे निम्नलिखित के द्रेष्कोण में है तो संबंधित व्यक्ति अपने गत जीवन में उन ग्रहों का द्योतक ग्रहों (लोकों) में था-

वृहस्पति - दिव्यलोक।

शुक्र या चन्द्र - पितृलोक या चन्द्रलोक।

सूर्य या मंगल - मर्त्यलोक।

बुध या शनि - अधोलोक।

इस वर्गीकरण के अन्तर्गत ग्रह के बल और क्षीणता के अनुसार श्रेणियां है। जैसे अच्छा, उससे अच्छा और सबसे अच्छा। इस पद्धति में राहु-केतु सम्मिलित नहीं है।

अगला जीवन - मृत्यु के बाद मिलने वाले लोक का निर्णय भी द्रेष्कोण के छठे, सातवें भावों में ग्रह-स्थिति पर निर्भर होता है। यदि इन भावों में कोई ग्रह नहीं है तो इन भावों के उदय होने वाले सर्वाधिक बली द्रेष्कोण के इस तथ्य का निश्चय किया जायेगा।

मेरी जाँच (निरीक्षण)

मैं द्रेष्कोण की तीन विधियां जानता हूँ। मैंने यहां सर्वाधिक लोकप्रिय (प्रचलित) विधि दी है। मैंने अन्य दो विधियों का प्रयोग करने का प्रयास किया किन्तु परिणामों के बारे में आश्वस्त नहीं रहा, क्योंकि कोई भी व्यक्ति किसी के विगत और भावी जीवन के सभी तथ्यों की पुष्टि नहीं कर सकता।

फिर भी अपने शोध पर आधारित जांच निष्कर्ष को देने से पहले एक प्रयत्न किया जा रहा है।

टिप्पणी

यह स्पष्ट नहीं है कि इन द्रेष्काणों का प्रयोग (उपयोग) कैसे किया जाना चाहिए और इन द्रेष्काणों के कौन से रूपों का उपयोग किया जाना चाहिए। कहा जाता है कि यदि वृहस्पति केन्द्र में (१, ४, ७, १० भावों में) या छठे या आठवें-भाव में हो तो आध्यात्मिक जीवन के लिए ये सहायक है।

वृहस्पति का विशेष महत्व

मुक्ति की प्रेरणा के लिए वृहस्पति को विशेष महत्व दिया गया है। यदि उच्चराशि का वृहस्पति केन्द्र (१, ४, ७, १० भाव) में छठे या आठवें-भाव में हो तो आध्यात्मिक जीवन के लिए सहायक होता है।

टिप्पणी

इस पद्धति में २, ३, ५, ९, ११ और १२वां भाव सम्मिलित नहीं है।

बली वृहस्पति के साथ-साथ तीन-चार ग्रहों का केन्द्र में होना आध्यात्मिक जीवन के लिए बहुत सहायक होता है।

चौथा केस रामप्रताप सिंह

१ **रामप्रताप सिंह-१ का द्रेष्कोण**- आठवें-भाव पर सूर्य की दृष्टि होना कोई महत्व नहीं रखता।

२ **रामप्रताप सिंह-२ का द्रेष्कोण** - चन्द्र का अपनी राशि में होना और सूर्य का अपनी राशि में होना सिद्ध करता है कि वह मृत्युलोक से आया है।

३ **मृत्युसमय की कुण्डली** - मुझे बताया गया था कि यह संदिग्ध सूचनाओं पर आधारित थी।

कुछ सिद्धान्तों का परीक्षण - द्वितीय

दोनों जन्मों में शनि की लग्न में स्थिति

यह भी एक सिद्धान्त है कि पूर्वजन्म में शनि वर्तमान जीवन में शनि की स्थिति से पहले भाव में है जो सही नहीं लगता।

नाम	पूर्वजन्म	अगला-जन्म
लुगदी/शान्तिदेवी	धनु	वृश्चिक
जयपुर. केस	धनु	कुंभ
पूरण सिंह	धनु	मीन
रामप्रताप सिंह	धनु	तुला

दोनों जीवनों में वृहस्पति की लग्न में स्थिति

एक सिद्धान्त यह है कि पूर्वजन्म का वृहस्पति वर्तमान जीवन के वृहस्पति से पहले भाव में या उसके समीप है, यह सिद्धान्त सही लगता है।

नाम	पूर्वजन्म	अगला-जन्म
लुगदी/शान्तिदेवी	मकर	मकर
जयपुर केस	तुला	वृश्चिक
पूरण सिंह	वृष	कन्या
रामप्रताप सिंह	वृश्चिक	धनु

मेरी जाँच (निरीक्षण)

मैंने इसका परीक्षण किया और इसे बहुत ही असन्तोष-जनक पाया हालांकि महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी "***काटवे***" ने वर्तमान-जीवन में शनि या वृहस्पति की पूर्वजन्म में स्थिति को वर्तमान-जीवन में लग्न में रखकर पूर्वजन्म के अध्ययन के लिए उपयोगी बताया है, कुछ ज्योतिषी इस उद्देश्य के लिए वृहस्पति को प्राथमिकता देते है।

अधोलोक से आने वाले मनुष्यों की पहचान

हिन्दू-शास्त्रों में अधोलोक से आने वालों के कुछ लक्षण बतायें गए हैं। आत्म-विश्लेषण के लिए इनका उपयोग कीजिए -

परनिन्दा कृतघनत्वं परमर्मावघट्टनम्।
नैष्ठुर्य निर्घृणत्वं च परदारोपसेवनम्।।
परस्वापहरणाशौचं देवतानां च कुत्सना।
निवृत्या वञचनं नृणां वधः।।

यानि च प्रतिसिद्धानि तत्प्रवृत्तिश्च संतता।
उपलक्ष्याणि जानीयान्मुक्तानां नरकादनु।।

(कल्याण के परलोक और पुनर्जन्म अंक का पृष्ठ-५१४)

मार्कण्डेय पुराण में अधोलोक या नरक से आने वाले मनुष्यों के कुछ-लक्षण इस प्रकार बताये गये हैं -

१. ईर्ष्यापूर्ण आलोचना में रत रहना।
२. कृतज्ञता के भाव की कमी।
३. दूसरों की गोपनीयता प्रकट करना।
४. निर्दयता और कठोरता।
५. व्यभिचार और विवाहेत्तर संबंध रखने की प्रवृति।
६. दूसरों के साथ छल-कपट करके उन्हें उनके अधिकारों से वंचित करना।
७. मलिन रहना।
८. दैवीय और आध्यात्मिक जीवन का तिरस्कार करना।
९. दूसरों को छल-कपट से ठगना।
१०. कृपणता।
११. वध करना।

उत्तम लोकों से आने वाले मनुष्यों की पहचान

उत्तम लोकों से आने वाले व्यक्तियों के निम्नलिखित नक्षण बताये गए हैं -

१. दानशीलता।
२. सुसंस्कृत और मृदु-भाषी।
३. पूजा-उपासना करने वाला।
४. ब्राह्मणोचित्, आध्यात्मिक और सात्विक लोगों की सेवा और आदर करने वाला।

पूर्वजन्म के कर्मो का महत्व

रिकार्ड किए गए कुछ केसों में पूर्वजीवन में किये गए कर्मों के परिणाम इस जीवन में देखे गए हैं। पुराण और वाल्मीकि रामायण ऐसी घटनाओं से भरे हुए हैं और जिनके दृष्टान्त इस पुस्तक के आरंभ में दिए गए हैं। पुनर्जन्म के दो केसों में "जिनके दोनों जन्मों की कुण्डलियां मेरे पास हैं" में पूर्वजन्म के कर्मों को भली-भाँति पा सकता हूँ। उनसे कुछ स्पष्ट अनुमान (संकेत) निम्नलिखित हैं -

प्रारब्ध

१. जन्मसमय, जन्मचन्द्र और जन्मनक्षत्र समूह सहित कुण्डली के योग स्पष्ट सूचक

होते हैं। किसी कुण्डली का गहन अध्ययन बताता है कि कोई व्यक्ति विनाशकारी कर्मों में पूरी तरह क्यों डूब जाता है? क्यों जानबूझकर पाप करता है? क्यों कृतघ्नता दिखाता है? और क्यों बुरे कर्मों के जाल में फँसता है? ज्योतिष का अध्ययन इसी उद्देश्य से किया जाता था, और ज्योतिषीय सलाह आध्यात्मिक जीवन में सुधार लाने के उद्देश्य से दी जाती थी। ज्योतिष के कई रहस्य हैं जो पुस्तकों में नहीं दिए गए हैं। ऋषि तुल्य ज्योतिषी पहले इसी पहलू से कुण्डली देखते हैं।

२. कुण्डली देखने का बहुत सरल नियम है कि पहले क्षीण (दुर्बल) ग्रह को, उसके स्वामी को, और उसकी स्थिति को देखिए। किसी भाव के स्वामी का नीचत्व दूसरी राशि में भी जाता है। इस प्रकार की ग्रह-स्थिति (ग्रह-युति) वाले व्यक्तियों को उनकी स्थिति का कारण उन्हें बताना चाहिए और इसका दुष्प्रभाव कम करने का प्रयास करने की सलाह देनी चाहिए। इस तथ्य को कई ज्योतिषी समझते भी नहीं।

३. पाँचवे-भाव और पाँचवे-भाव के स्वामी की स्थिति (दशा) क्या है? यदि पाँचवे-भाव पर, उसके स्वामी पर शुभ ग्रह या अशुभ ग्रह की दृष्टि है य पंचमेश वक्री हो और अशुभ ग्रह की उस पर दृष्टि भी हो तो इसे ***"प्रारब्ध"*** कहा जाता है, जिसे भोगना पड़ता है और इसके शान्ति का उपाय भी नहीं होता।

४. दसवें-भाव के स्वामी का दुर्बल (क्षीण) होना और नवें-भाव के स्वामी पर अशुभ ग्रह की दृष्टि होना पिछले जन्म के बुरे कर्मों का वर्तमान जीवन में भी चलते रहना दिखाता है। उच्चराशिस्थ शुभ ग्रह का लाभ केवल आध्यात्मिक दृष्टि से है। यदि ऐसा शुभ ग्रह वक्री हो और अशुभ ग्रह द्वारा देखा जा रहा हो तो दोहरे व्यक्तित्व के अंकुर (बीज) दृष्टिगोचर होने लगते हैं।

५. उदाहरण के तौर पर यदि अशुभ ग्रह दूसरे-भाव को अत्यधिक प्रभावित कर रहे हों तो वह व्यक्ति ठग होता है जिसने पिछले जन्म में कइयों को ठगा होगा और इस जीवन में भी दूसरों को ठगना और झूठ बोलना जारी रखेगा।

६. कुण्डली का पूरा ढांचा **अपरिहार्य प्रारब्ध** बताता है जिसे भोगना पड़ता है। भोगने से ही कर्म क्षीण होते हैं कोई अन्य उपाय काम नहीं करता।

७. प्रारब्ध दशा के दौरान फल देता है। यह अचानक सौभाग्य दे सकता है और व्याकुल कर सकता है।

८. ग्रहों का संक्रमण या गोचर केवल यह प्रकट करता है कि कोई व्यक्ति अपने वर्तमान जीवन को क्रियमाण कर्मों से, किस सीमा तक अपना समृद्धि कर सकता है या अपने दुर्भाग्य को कम कर सकता है।

९. क्रियमाण कर्म का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्तंभ स्तोत्र-पाठ है जैसा कि पराशर ने निर्धारित किया है। पश्चिमी देशों के ज्योतिषी केवल ग्रह-संक्रमण (गोचर) के आधार पर भविष्यवाणियाँ करते हैं वे ज्योतिष नामक विस्तृत ज्ञान के किनारे मात्र तक पहुँचे हैं।

१०. योगों और दशाओं को जाँचे बिना भविष्य कथन वैज्ञानिक और प्रारंभिक है। योग, भाग्य के सर्वाधिक दुर्बेध आधार (पैटर्न) है, जिन्हें किसी भी पुस्तक में नहीं समझाया गया है। इसे परम्पराओं से याद किया जाता है। इसके कई अर्थ निकलते हैं। यही कारण है कि योगों पर लिखित पुस्तकें प्रारंभिक, आदिकालीन और अनर्थकारी हैं। योगों पर लिखी पुस्तकें, योगों के हजारों भेदों और गुढार्थ को नहीं बता सकती।

११. मात्र ग्रह-संक्रमण (गोचर) के आधार पर भविष्यकथन ज्योतिष नहीं है बल्कि एक खर्चीला अंध-विश्वास है, जिस पर हिन्दू-ज्योतिष पर काम करने वाले अमरीकी ज्योतिषियों ने आक्रमण आरंभ कर दिया है। इस लड़ाई में हिन्दू-ज्योतिष ही जीतेगा क्योंकि यह ज्योतिष है, न कि मनोवैज्ञानिक गप्पें।

१२. ज्योतिष-ऋषियों, सन्यासियों और ब्रह्मचारियों की रचना है। ये भारत के गृहस्थों और डालर लोभी अमरीकनों द्वारा नहीं रचा जा रहा है। ज्योतिष अब भौतिकवादी, भ्रष्टाचार की चरमसीमा पर पहुँच गया है और मानव अपने मुक्ति-द्वार के उद्देश्य से अलग हो गया है।

तब ज्योतिष का संदेश क्या है? मिथ्या आध्यात्मिककता से बचना चाहिए। भारत में आडम्बरपूर्ण-धार्मिकता चाहे वह भ्रष्ट तरीकों से व्यापारी द्वारा एकत्रित की गई धन-संम्पदा के एक अंश से मंदिर बनाने में दिखाई जा रही हो या संयुक्तराज्य-अमरीका के न्यू-एज-मूवमेंट के द्वारा दिखाई जा रही हो; उसमें आध्यात्मिक रुझान नहीं है।

सभी धार्मिक-ग्रन्थों में ज्योतिष और पुनर्जन्म के दो संदेश है -

"निस्स्वार्थ-भाव से दान करना और दया में विश्वास रखना"।

ज्योतिषीय खोजों के सारिणीबद्ध परिणाम

१. जन्मकुण्डली और जन्मचन्द्र।

२. पूर्व जीवन में मृत्यु समय की दशा और अगले जन्म के आरंभ की दशा।

३. अगले (नये-जीवन) का नवांश पिछले जन्म से आये संस्कारों को दिखता है।

४. शनि की द्वादशांश स्थिति पर आधारित मेरे अपने विचार।

५. वृहस्पति की द्वादशांश स्थिति पर आधारित मेरे विचार।

६. पाँचवे-भाव के स्वामी और बारहवें-भाव का महत्व।

७. इस जन्म के आरंभ (गर्भदशा) की दशा का महत्व।

८. पिछले जन्म में नवें-भाव के स्वामी के साथ-साथ राहु का महत्व देखना।

९. पुनर्जन्म में ६४वें नवांश का अर्थ।

मेरे अपने विचार (निरीक्षण)

प्रथम सारिणी जन्मकुण्डली: जन्मचन्द्र

नाम	पूर्व जन्म का लग्न/चन्द्र	पिछले जन्म का लग्न/चन्द्र	विचार
लुगदी/शांतिदेवी	कुंभ/मेष	मीन/कुंभ	
जयपुर केस	कर्क/कर्क	मीन/कर्क	
पूरणसिंह केस	वृष/मिथुन	तुला/कर्क	
रामप्रताप सिंह केस	कर्क/सिंह	कुंभ/मीन	

द्वितीय सारिणी मृत्यु के समय की दशा/अगले जन्म की आरंभिक दशा

नाम	मृत्यु समय की दशा और अगला जन्म	विचार
लुगदी/शांतिदेवी	चंद्र/राहु दशा में मृत्यु। राहु-बुध में जन्म	कुछ दूसरे केसों में जो
जयपुर केस	बुध/शनि दशा में मृत्यु। शनि/बुध में जन्म	इस पेपर में नहीं दिये हैं
रामप्रताप सिंह केस	सूर्य/मंगल या राहु में मृत्यु। शनि/मंगल में जन्म	दोनो जन्मों की महादशा या अन्तर्दशा में कुछ सम्पर्क (समानता) है।

[illegible]

तीसरी सारिणी:

दोनों जन्मों का नवांश पिछले संस्कारों (उत्तराधिकार) के संस्कार दिखाता है।

नाम	विचार
लुगदी/शांतिदेवी	नवांश स्पष्ट रूप से विवाह का भय और सप्तांश (जिसकी चर्चा हो चुकी है) बच्चे को जन्म देते समय की पीड़ा का भय दिखाता है।
जयपुर केस	दोनों ही केसों में पांचवा-भाव, शनि और मंगल के प्रभाव के रूप में तेजी दिखाता है। दोनों ही केसों में नवांश वृश्चिक है और शनि यात्रा के तीसरे-भाव का स्वामी है।
पूरणसिंह	तृतीय-भाव में स्थिति केतु की तृतीय-भाव के कारक और सप्तम-भाव स्थित मंगल पर दृष्टि है साथ ही मंगल पर शनि की भी दृष्टि है।
रामप्रताप सिंह	पूर्व जीवन में शनि-मंगल की शत्रुता तीसरे-भाव को अपने प्रभाव में लिए हुए है और अगले जन्म में तीसरे-भाव के स्वामी का दुर्घटना सूचक छठे-भाव में होना, पूर्वजन्म के संस्कारों का साथ ले जाना दिखाता है।

द्वादशांश का उपयोग करते हुए - मेरा पहला विचार (निरीक्षण)

दोनों जीवनों की कुण्डलियों में शनि की स्थिति: एक अध्ययन

पूर्व जीवन का नाम	अगले जीवन का नाम	पूर्व जीवन	अगला जीवन
लुगदी	शांतिदेवी	तुला	कुंभ (पूर्वजीवन का द्वादशांश)
जयपुर १	जयपुर २	मीन	मकर (पूर्वजीवन का द्वादशांश)
पूरण सिंह	देविन्दरजीत	कुंभ	मकर (पूर्वजीवन का द्वादशांश)
रामप्रमाप	रामप्रताप	कुंभ	मिथुन (पूर्वजीवन का द्वादशांश)

द्वादशांश का उपयोग करते हुए- मेरा दूसरा विचार (निरीक्षण)

दोनों जीवनों की कुण्डलियों में शनि की स्थिति: एक अध्ययन

पूर्व जीवन का नाम	अगले जीवन का नाम	पूर्व जीवन	अगला जीवन
लुगदी	शांतिदेवी	कुंभ (अगले जीवन का)	धनु (पूर्वजीवन की जन्मकुण्डली में चन्द्र पर दृष्टि)
जयपुर १	जयपुर २	कन्या (लग्न और चन्द्र)	मीन (अगले जन्म की जन्मकुण्डली में चन्द्र और लग्न को देख रहा है।)
पूरणसिंह	देविन्दरजीत	मकर	धनु (जन्मकुण्डली में (पूर्वजीवन की) चन्द्र को देख रहा है।)
रामप्रताप	रामप्रताप	वृश्चिक	मकर (पूर्वजीवन की जन्मकुण्डली में लग्न को देख रहा है।)

द्वादशांश का उपयोग करते हुए मेरा पहला विचार (निरीक्षण)

मेरा अपना विशेष निरीक्षण - तीसरा

पाँचवे-भाव का स्वामी और बारहवें-भाव का महत्त्व

१. पाँचवा-भाव पूर्वजन्म के पुण्यों का प्रतीक है (आध्यात्मिक विशेषताएं या गत जीवन की विशेषताएं)। हमे इन चारों केसों में से प्रत्येक के अगले जीवन के पाँचवे-भाव के स्वामी की जाँच कर लेनी चाहिए।

२. शान्तिदेवी के पाँचवे-भाव का स्वामी चन्द्र है जो कभी भी वक्री नहीं होता परन्तु उसकी कुण्डली में बारहवें-भाव में होने से पूर्वजन्म की स्मृति के सूचक बारहवें-भाव के साथ संबंध दिखा रहा है।

३. जयपुर-२ के केस में वक्री शनि के नक्षत्र में पाँचवे-भाव में ०६°४६" पर चन्द्र कर्क में है, और वक्री शनि बारहवें-भाव में है। इस प्रकार इसका भी बारहवें-भाव से संबंध है।

४. देविन्दरजीत सिंह (पूर्वजन्म में पूरणसिंह) के पाँचवे-भाव का स्वामी वक्री होकर छठे-भाव में है, जहां से उसकी दृष्टि बारहवें-भाव पर है।

५. रामप्रताप-२ का पाँचवे-भाव का स्वामी बुध वक्री होकर धनु में है, और बारहवें-भाव के स्वामी शनि की उस पर दृष्टि है।

टिप्पणी-१

कई आध्यात्मिक कुण्डलियों में जहां महान योगियों ने अपनी साधना से अपने विगत (पिछले) जीवन को देखा वहां बारहवें-भावों का संबंध किसी न किसी रूप में रहा है। मेरे पास भी ऐसे कई केस हैं जिनकी चर्चा मैं यहा नहीं कर रहा हूँ।

टिप्पणी-२

अस्वाभाविक मृत्यु वाले जिन केसों को अपने पूर्व जीवन की स्मृति रही, उनके पाँचवे-भाव का स्वामी वक्री रहा, और उसके बारहवें-भाव या उसके स्वामी के साथ संबंध भी।

टिप्पणी-३

इस तरह पाँचवे-भाव के वक्री स्वामी वाले व्यक्ति का व्यवहार असामान्य होता है, और यदि उस पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो वह व्यक्ति मानसिक दृष्टि से विकृत (असामान्य) होता है और उसमें कृतज्ञता-भाव की कमी होती है।

मेरा अपना विशेष निरीक्षण - चौथा

इस जन्म की आरंभिक दशा का महत्व

नवें-भाव का स्वामी या नौवां-भाव इस जन्म में पुण्य का प्रतीक (आध्यात्मिक गुण दोष का प्रतीक) है। यह जनसामान्य में प्रचलित धारणा है कि बारहवां-भाव गत जीवन का संपर्क-सूत्र है। इनकी स्थिति चर्चित केसों में देखते हैं।

१. **शान्तिदेवी का केस** - आरंभिक-दशा राहु-बुध की थी। बुध नवें-भाव में बारहवें-भाव के स्वामी के साथ है, शनि भी नवें-भाव में है।

२. **जयपुर-२ का केस** - आरंभिक-दशा शनि-बुध की थी। शनि बारहवें-भाव का स्वामी है और इस पर बुध की दृष्टि है जो कि छठे-भाव से बारहवें-भाव में है। इस केस में नवें-भाव या नवें-भाव के स्वामी के साथ कोई संबंध नहीं है।

३. **देविन्दरजीत सिंह (पूरण सिहं)** - आरंभिक-दशा शनि की थी जो छठे-भाव में है और बारहवें-भाव को देख रहा है। नवें और बारहवें-भाव का स्वामी है।

४. **रामप्रताप-२ का केस** - आरंभिक-दशा शनि-मंगल की थी। बारहवें-भाव का स्वामी शनि नवें-भाव में है जबकि मंगल भी नवें-भाव में है।

मेरा अपना विशेष निरीक्षण - पाँचवा

पहले जीवन में नवें-भाव के स्वामी के साथ राहु का महत्व

कहा जाता है कि राहु कुछ अभुक्त (अनिवार्य) कर्मों की छाया का प्रतीक कहा जाता है और नवें-भाव का स्वामी पुण्य (या इस जन्म के आध्यात्मिक गुण-दोषों) का प्रतीक है। पूर्वजन्म के नवें-भाव का स्वामी अगले जन्म की कुण्डली में राहु के साथ जुड़ता है? यह देखिए -

१. लुगदी के नवें-भाव का स्वामी शुक्र है और राहु नवें-भाव में है। अगले जीवन में जब वह शान्तिदेवी बनी तब शुक्र राहु-केतु के मध्य (राहु-केतु के धुरी के मध्य) आ गया।

२. जयपुर-१ का नवें-भाव का स्वामी वृहस्पति है और नवां-भाव राहु-केतु की धुरी के मध्य आ गया है। जयपुर-२ के रूप में वृहस्पति राहु-केतु के मध्य पड़ कर दोनो के पीछे आ गया। साथ ही वक्री शनि वृहस्पति के बारहवें-भाव को देख रहा है।

३. पूरणसिंह के नवें-भाव का स्वामी शनि आठवें-भाव में धनु राशि में है। अगले जन्म में देविन्दर सिंह के रूप में शनि राहु-केतु के शिकंजे में आ गया है।

४. रामप्रताप-१ का नवें-भाव का स्वामी वृहस्पति है जबकि नवें-भाव में राहु है।

मेरा अपना विशेष निरीक्षण – छठा

पुर्वजन्म में ६४वें नवांश का अर्थ

क्या ६४वें नवांश का कोई अर्थ है? यह खोज के योग्य विषय है। हर केस में देखा जा सकता है।

१. लुगदी का ६४वां नवांश शनि के नक्षत्र में वृश्चिक राशि में १६°३१" पर मंगल के नवांश में है। अगले जन्म में शान्तिदेवी के रूप में जन्म लेने पर उसका चन्द्र शनि की राशि कुंभ में था और शनि वृश्चिक राशि में।

२. पूरणसिंह का ६४वां नवांश सूर्य के नक्षत्र में शनि की राशि मकर में ०८°२३" पर पड़ता है जो कि वृहस्पति का नवांश है। अगले जन्म में देविन्दरजीत सिंह के रूप में जन्म पर शनि के नक्षत्र में उसका चन्द्र कर्क में ०६°५३" पर था।

३. जयपुर-१ के केस में६४वां नवांश शनि से संबंधित कुंभ राशि में ०२°२८" पर शुक्र के नवांश में और मंगल के नक्षत्र में था। अगले जन्म में जयपुर-२ के रूप में उसका जन्म शनि के नक्षत्र में और ०६°४५" पर कर्क के चन्द्र में हुआ।

४. रामप्रताप सिंह-१ के केस में उसका ६४वां नवांश शनि के नक्षत्र में मंगल के नवांश में ०९°२३" पर मीन पर पड़ता है। अगले जन्म में रामप्रताप सिंह-२ के रूप में जन्म लेते समय इसका चन्द्र मीन में १२°१३" अंशों पर शनि के नक्षत्र में हुआ।

मैं अभी तक एकदम निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाया हूँ। जो कुछ मैं जानता हूँ, वह यह है कि मुझे यह विश्वास और संतोष प्राप्त हो गया है, कि मैंने पुनर्जन्म के लगभग २५ केसों पर काम किया है, हालांकि दोनों जन्मों के आधिकारिक केस केवल चार थे।

इससे दूसरे तथ्य की पुष्टि होती है। अधिकतर लोग जो मुक्ति नहीं पाते वे उसी परिवार में पुनर्जन्म लेते हैं।

चर्चित चार केसों में केवल लुगदी का केस है जो शान्तिदेवी के रूप में एक दम भिन्न पृष्टभूमि के कायस्थ परिवार में जन्मी। दूसरे तीन केसों में उसी परिवार में पुनर्जन्म हुआ।

१. पूरणसिंह का जन्म अपनी छोटी बहन के पुत्र के रूप में हुआ।

२. रामप्रताप सिंह-१ का जन्म अपने पिता के पौत्र के रूप में हुआ।

३. जयपुर-१ का जन्म अपने भाई के पुत्र के रूप में हुआ।

इस अनुभव और विश्वास ने कई भारतीय परिवारों में *"नामकरण-संस्कार"* को प्रभावित किया विशेषकर दक्षिण भारत में और उसमें भी विशेषकर कर्नाटक-प्रदेश में।

मैं अपना उदारण देता हूं -

१. मेरे दादाजी का नाम के.एन. राव था।

२. मेरे पिताजी का नाम के. रामाराव था।

३. मेरा नाम के.एन. राव है।

जब मुझे मतदान करने का अधिकार मिला मैंने अपना और अपने पिताजी का मतदान फार्म इस प्रकार भरा -

के. रामाराव सुपुत्र के.एन. राव

के.एन. राव सुपुत्र के. रामाराव

चुनाव अधिकारी ने पहली बार मेरे पिता जी का नाम काट दिया और मेरे द्वारा सही किये जाने पर मेरा नाम भी काट दिया। तब मुझे चुनाव अधिकारी को आंध्रप्रदेश के नामकरण की परम्परा को समझाना पड़ा।

मैं पुस्तक के पूर्वार्द्ध को उद्धघृत कर राहा हूं।

पूर्वजन्मों के ऋण

कुण्डली से पता लग जाता है कि जिस परिवार में हमारा जन्म होता है उस परिवार का स्तर (संस्कार), उससे हमारा संबंध और उस परिवार से हमारे क्या बंधन (लेन-देन) है। मैं पद्मपुराण का दृष्टान्त दे रहा हूँ, जिसमें ऋणानुबंधन को संक्षेप में समझाया गया है। ऋणानुबंधन से अभिप्राय है - पिछले जन्म के शेष ऋण जिसके फल स्वरूप हम उस परिवार के सदस्य, मित्र या अन्य प्रकार से घनिष्ठ रूप से जुड़े होते हैं जिनके साथ हम अपने जीवन में क्रिया-प्रतिक्रिया या आदान-प्रदान करते हैं।

१. पूर्वजीवन में जिन्होंने हमें ऋण दिया होता है वे वर्तमान जीवन में हामरे सम्बंधी बनते हैं।

२. उनमें कुछ ऐसे दर्जे के संबंधी होते हैं जिनकी सम्पति गैर कानूनी ढंग से हड़प ली गई होती है।

३. जीवन-साथी (पत्नी), माता-पिता, सन्तान, संबंधी यहां तक कि सेवक ऋणानुबंधन के फलानुसार मिलते हैं।

४. हर व्यक्ति का पुनर्जन्म मृत्यु के समय उसके मन-मस्तिष्क की प्रबल भावना (इच्छा) के अनुसार होता है। वर्तमान जीवन में उन इच्छाओं की पूर्ति होती है और दारुण-दुःख देने के बाद वह इस लोक से विदा हो जाता है।

५. जिसने पूर्वजन्म में अपनी संम्पति धोखा-धड़ी के कारण खोई हो वह अगले जन्म में ठगने वाले व्यक्ति का सुन्दर सुयोग्य पुत्र बनकर जन्म लेता है और असाध्य पीड़ा (दण्ड) देकर संसार से विदा हो जाता है।

६. जो किसी से कर्ज लेता है और कर्ज चुकाये बिना मर जाता है वह ऋण देने

वाले व्यक्ति के परिवार में पिता, भाई, पत्नी या मित्र आदि के रूप में जन्म लेता है। उसका व्यवहार बुरा होता है। वह हर एक के साथ बुरा वर्ताव करता है कर्कश (रूखे) शब्दों में बोलता है और दूसरों की कमाई से जीवन का आनंद लेता है। वह परिवार की संम्पति नष्ट करता है।

निष्कर्ष

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनम्।
इह संसारे खलु दुस्तारे कृपयापारे पाहि मुरारे।।

आदि शंकराचार्य

अर्थ

यहां बार-बार जन्म लेना पड़ता है बार-बार मरना पड़ता है, ऐसा यह भवसागर (संसार) पार करना दुष्कर है। हे मुरारी (भगवान)! मुझे इस जंजाल से बचाओ और मुक्ति दो।

सिक्खों के धर्मग्रन्थ गुरु-ग्रन्थ साहिब में एक मंत्र (शबद) है जो भगत सदाना का है।

इस मंत्र में ईश्वर प्रार्थना का आशाय है पूर्वजन्मों के कर्मों के फलों से मुक्ति मांगता है।

भक्त सदाना दा बना

राग बिलावल १६ सतगुर प्रसाद नरीप कन्या के कारने इक भया तेजधारी कामा रखो सरआरथी वाकी पैज सवारी तवगुन कहा जगत जुग कउ करम न साजे सिध सरन को जानीये कउ जंमूक रहाउ ऐक बूंद कउ कारने चात्रीक बीलला रदाउ ऐ बूंद को करने दुःख पावें प्रान गये सागर मिले- काम न आवे प्रान जो थाके थीर नहीं कैसे बीमारमावहु। बुड मये नऊका मिले कहु काहे छुडावों मैं नाहीं कछु दउ नहीं किछु आही

न अउसग- साच फेर सधना जन तोर।

सदन की कहानी

वह एक कसाई था और प्रतिदिन बकरों का वध करता था। एक दिन शाम के समय एक ग्राहक आया और उससे थोड़ा सा मुलायम मांस देने को कहा। ग्राहक की खुशी के लिए सदन बकरे के पास गया और उसका अंडकोष काटने ही वाला था। बकरा मनुष्य की हंसी हंसा और बोला; *"अरे सदन ऐसा मत करो"*। तुम इस चक्र को बंद क्यों नहीं कर देते। हम कई बार एक दूसरे का वध करते आ रहे हैं। *"पिछले जन्म में मैं कसाई था और तुम बकरे थे। अब मैं बकरा हूँ और तुम कसाई हो"*। स्तब्ध सदन ने बकरे के अंडकोष छुरे से नहीं काटे। इस घटना से उसका मन बदल गया और वह सच्चा भक्त बन गया। लेकिन कथाओं में, दन्तकथाओं में और गुरु-ग्रन्थ सहिब में पाया जाता है कि उसे अमरों का लोक (बैकुण्ठ) मिला।

(यह कहानी दिल्ली की निनिया के एक रिस्तेदार ने २६ मई १९९७ को चण्डीगढ़ से भेजी थी।)

(मकान नं. १८२१ सेक्टर-३४ डी. चण्डीगढ़)

पिछली शताब्दी में और इस शताब्दी के आरंभ में एक बहुत लोकप्रिय भजन गाया जाता था -

हरि से लागी रहो रे भाई, तेरी बनत बनत बन जाई।
अंका तारे बका तारे, तारे सदन कसाई।।

अर्थ

ईश्वर-भक्ति में दृढ रहो। अंका और बंका भक्तों ने मुक्ति पाई। ईश्वर ने कसाई सदन को मुक्ति प्रदान की।

मानव इतिहास में कोई ऐसा प्रमाण नहीं है और न भारत या भारत के बाहर हिन्दूओं में ही ऐसी कोई घटना मिलती है जिससे जीवन को पूर्ण-रूप से भली-भाँति समझ लिया गया हो। रंग-भेद (जाति-भेद) रखने वाले पश्चिमी देश बहिर्मुखी आक्रमणकारी रहे।

सेमिटिक धर्मों के कट्टर अनुयायियों में उन साक्ष्यों (प्रमाणों) को दबा दिया जो धर्म परिवर्तन के जुनून और धर्म-परिवर्तन हेतु क्रूरतापूर्ण तरीकों से मेल नहीं खाता था। समय-परिवर्तन के साथ यह आक्रामक प्रवृति, पापपूर्ण और निर्दयी आर्थिक साम्राज्यवाद की बहुराष्ट्रीय कंम्पनियों के, मार्केटिंग की मोर्चा बंदी के रूप में आ गई है।

जीवन को केवल भौतिक रूप में समझना और अन्य विचारधाराओं को एकदम वहिष्कृत कर देना सेमेटिक धर्मों और भौतिकवादी पश्चिमी देशों की शैली और जीवन

दर्शन रहा है जो कि अभी भी अपनी टेक्नोलोजी (तकनीकी) और [illegible] में अपने इतिहास की दासं प्रथा और साम्राज्यवाद के सभी विकृत [illegible] को इकट्ठा करने तथा बढाने में लगे हुए हैं। कुछ दशाब्दी पूर्व [illegible] के अनुसार तम्बाकू और कैंसर का कोई संबंध नहीं था इससे [illegible] आर्थिक [illegible] का खतरा महसूस हुआ। यह जीवन को सही ढंग से समझने का [illegible] नहीं था। वाशिंगटन डी.सी. विश्वविद्यालय में स्नातक-स्तर के पाठ्यक्रम में प्राचीन इतिहास की पुस्तक निर्धारित की गई थी, जिस पर १९९३ में मुझे सरसरी नजर डालने का [illegible] मिला, उसमें भारत के वेदों का, वाल्मीकि रामायण, उपनिषेदों का और [illegible] का भी उल्लेख नहीं था कि प्राचीन सभ्यताओं की चर्चा आने पर भारत और चीन का नाम सबसे पहले और शीर्ष-स्थान पर होना चहिए। अपने को विकसित कहने वाला संयुक्तराज्य-अमरीका कई मामलों में अर्धविकसित देश रहेगा। वह दूसरों के विचारों को नहीं सुनेगा। २५ मई १९९७ को इंडियन-एक्सप्रेस एक समाचार-अंश इस प्रकार था

हिन्दू व्याख्यान

वाशिंगटन: "फिलाडेलफिया में आयेजित, थियोलॉजिकल सेमिनार में, केरल की, धार्मिक विभूति माता अमृतानंदमयी का व्याख्यान स्कूल के अधिकारियों ने इस लिए हटा दिया है कि वह हिन्दू-धर्म का प्रतिनिधित्व कर रही है"।

संक्षेप में पश्चिमी देशों में सभ्यता का दूसरा नाम मार्केटिंग और मैनेजमेंट के छद्मवेश में अपनी नई साम्राज्यवादी जरूरतों के लिए इतिहास के तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर पेश करना, और सच्चाई को दबाना है। कहते हैं कि महात्मा गांधी ने कहा था कि सभ्यता नाम की चीज को पश्चिमी देशों में पहुँचने का अवसर मिला ही नहीं। असाधारण या अलौकिक योगिक विधि से खोजे गए तथ्य पर आधारित परन्तु वैज्ञानिक प्रक्रिया से स्पष्ट शब्दों को दिखाने, बताने योग्य विचारों को गुप्त रखने या दबाने की बात भी सही नहीं है। क्योंकि इस सच्चाई को, ज्योतिष विषय को भली-भाँति समझने वालों के द्वारा की जा चुकी है। ऐसी स्थिति में सेमिटिक-धर्म इसे क्यों नहीं मानते? ऐसा इसलिए है कि यह तथ्य उन धार्मों के *'कयामत के दिन'* (न्याय के दिन) वाले सिद्धान्त के विरुद्ध जाता है। विनोबा-भावे ने एक बार पूछा था कि यदि कोई शिशु जन्म के कुछ सेकण्ड बाद मर जाता है तो ईश्वर उसके किस अच्छे या बुरे कर्म के लिए दण्ड या पुरस्कार देगा? भली-भाँति रिकार्ड किए गए जाने सुने व चर्चित साक्ष्यों के बावजूद पुनर्जन्म में विश्वास न करना अंधविश्वास को मजबूत करना है। पुनर्जन्म में विश्वास करना कर्म में विश्वास करना है। कर्म में विश्वास करना किसी के भी वर्तमान जीवन में पुनर्जन्म के कर्मों का दण्ड या पुरस्कार पाने पर विश्वास करना है। जिनके आधार पर ईश्वर हमारे कर्मों के अनुसार न्याय करता है। कहीं भी आदर्श या

सर्वगुण सम्पन्न समाज नहीं हो सकता। किसी गुरु का सर्वगुण सम्पन्न या पूर्ण आश्रम नहीं हो सकता। कहीं भी आदर्श धार्मिक समुदाय नहीं हो सकता।

सारिणी एक

आत्म-विश्लेषण करो। यदि आप ज्योतिष जानते हैं तो यहां दी गई सारिणी का उपयोग करो जो कि आरम्भिक अध्यायों में पहले से चर्चित तथ्यों का समुच्चय है।

पूर्वजन्मों के संस्कारों का महत्व

जिन लोगों ने शरीर रहित या अशरीरी अनुभवों का यह विचार दिया गया है कि केवल दया या करूणा ही मूल्यवान चीज है; उनके ये अनुभव मर्मस्पर्शी हैं। पुनर्जन्म में दृढ विश्वास करते हुए कर्म में विश्वास करना ही जीवन की शैली में सुधार करने के मार्ग पर ले जाता है। जीवन-शैली की पश्चिमी परिभाषा शारीरिक और मानसिक आराम तक ही सीमित है। जीवन-शैली में सुधार का सही अर्थ केवल आध्यात्मिक होना चाहिए। मूर्त और भौतिक सुख एक सीमा तक ही सहायता कर सकते हैं। यह सीमा वहां धुंधली सीमा है, जहां विलासिता आवश्यकता नहीं बनती जैसा कि आज की उपभोक्ता संस्कृति में माना जाता है।

ज्योतिषी के रूप में हजारों कुण्डलियां देख लेने के बावजूद जब मुझसे मनुष्य के दुःखों और उनसे निजात पाने जैसे प्रश्नों का उत्तर देने को कहा जाय तो ऐसी स्थिति में यदि मैं यह कहूगां कि सुख दुःख अदृश्य होते हैं और ये मन के मानने की बात होती है तो वे निराश हो जायेंगे। यदि मैं मंत्रों का जप (पाठ) करने को कहूंगा तो कुछ हिन्दू समझेंगे कि सलाहकार की अपेक्षा उपदेशक बनने का नाटक कर रहा हूँ। वे मंत्रों की सामर्थ्य के बारे में नहीं जानते। गैर हिन्दू यह समझ सकते हैं कि मैं ईसाई मिशनरी की तरह दूसरों की आत्माओं की रक्षा का प्रयास कर रहा हूँ। ईसाई मिशनरी को अपनी आत्मा को प्रशिक्षित करना नहीं सिखाया जाता और यह सिखाया जाता है कि आध्यात्मिक सुधार या लक्षण ईसाई धर्म को अपनाये बिना नहीं होते। वे इतना भी समझदार नहीं होते कि यह एक सम्प्रदायगत सिद्धान्त और अंध-विश्वास है।

ऐसी स्थिति में साधना के रूप में ज्योतिष सीखना ज्योतिषी के लिए बहुत लाभ पहुँचाता है। वह जन्मपत्री में ग्रह-स्थिति देखते समय, दशा और योग देखते समय ईश्वरीय नियम देखता है। इसके बदले में ज्योतिषी भाग्य और कालचक्र की गति के तोड़-मरोड़ जानता है और देखता है।

कर्म तुम्हारा पीछा करते हैं। वे तुमसे मिलने को आतुर है, वे दिन-रात (चौबीस-घंटे) तुम्हारे आगे-पीछे चलते हैं। एक अच्छा ज्योतिषी अपने अलौकिक विज्ञान से यह सब देखता है। उसे पहले अपने कर्म सुधारने चाहिए और इस युग की डालर

उपभोक्ता संस्कृति का अनुयायी नहीं बनना चाहिए। तब उसे किसी [illegible] सलाह लेने वाले को बताना चहिए कि जन्मजन्मान्तरों में कर्म पीछा करते रहते हैं।

उत्तराधिकार में मिले संस्कार

बच्चों के मुख से मिले विलक्षण बातों वाली जो कहानियां हम सुनाते हैं वे उत्तराधिकार (पूर्वजन्म की) की कहानियां हैं। इन संस्कारों में भय, वहम (आशंका) के बीज भी होते हैं। मनुष्य स्पष्ट रूप से चार तत्वों से बना है –

१. जिस परिवार में जन्म लिया है, उसका वातावरण जो कि बाहरी आवरण है परन्तु उसे बड़ी सीमा तक प्रभावित करता है। उदाहरण के तौर पर जब मैं अपनी किशोरावस्था में विद्या प्राप्ति में अधिकाधिक रुचि ले रहा था, तो मेरे मारवाड़ी मित्र यह कहकर मेरा तिरस्कार करते थे, कि इससे मुझे कोई लाभ या मार्ग-निर्देशन नहीं मिलेगा, कुछ दशाब्दियों तक उन्होंने पारिवारिक व्यापार संभाला और बहुत धनी हो गए। मेरी किस्म के अन्य लोग अधिक आराम और सुरक्षा अनुभव करते हैं, जहां जीवन के अन्तिम भाग में पेंशन मिल जाती है। खेल साहित्य प्रेम और ज्योतिष जैसे व्यवसाय में रुचि न होने पर सरकारी सेना से निवृत होने पर बड़ी नीरसता जीवन में आ जाती है।

२. समाज द्वारा दिए गए संस्कार बहुत शक्तिशाली होते हैं, और कोई उनका प्रतिरोध (विरोध) नहीं कर सकता। गायत्री-मंत्र के प्रति, भारत की बाह्य संस्कृति के प्रति थोड़े से प्रेम (लगाव) और युवा-पीढ़ी में पश्चिमी पॉप संगीत के प्रति नया रुझान जैसे विचित्र और विषम सांस्कृतिक समन्वय के बीच रहते हुए हमें जीना पड़ता है, और हम नवीन-प्राचीन के इस समन्वय का विरोध नहीं कर सकते। *संयुक्तराज्य-अमरीका में धन और वासना के प्रति स्वाभाविक लगाव, डालर कमाना और समाज में इन्हें जीवन की सर्वाधिक आवश्यकता मानना वहां के संस्कार है। भारतीय या बौद्ध-गुरूओं से अमरीकन-महिलाएं शरीरि-संबंध स्थापित करना बुरा नहीं मानती। ये सब संस्कार हैं, जो वहां अगम्य, अनुलंघनीय नहीं माने जाते।*

३. *हर कोई अपने प्रकार के संस्कर लेकर पैदा होता है, एक वे संस्कार है जिन्हें व्यक्ति इस जन्म में अर्जित करता है, और दूसरे वे जिन्हें वह पिछले जन्म से साथ लाया है।* श्री अरविन्द ने कहा है कि व्यक्ति पूरी प्रतिभा और सारे संस्कार पूर्वजन्म से वर्तमान जीवन में नहीं लाता। उदाहरण के लिए किसी *व्यक्ति का पूर्व जीवन में संगीत के प्रति अत्यधिक प्रेम हो सकता है जबकि वर्तमान जीवन में संगीत के प्रति थोड़ा सा लगाव भी नहीं हो सकता।*

४. जो संस्कार जन्मजन्मान्तर में भी जारी रह सकता है, वह केवल आध्यात्मिक

संस्कार हो सकता है। इस लिए हिन्दूओं की चार आश्रमों वाली पद्धति में ब्रह्मचर्य पहले आता है जिसमें आध्यात्मिक-प्रशिक्षण और सांसारिक अनुशासन साथ-साथ सिखाया जाता है। प्रौढ़ावस्था, वृद्धावस्था में बाल्यकाल का आध्यात्मिक प्रशिक्षण अनासक्ति की ओर ले जाता है और यदि कोई सौभाग्यशाली है तो मृत्यु तक अनासक्ति बनी रहने से मन दिव्यता में विलीन हो जाता है।

५. भारत में हजारों हिन्दू-भक्तों को देखने समझने से स्पष्ट है कि विगत जीवन से आध्यात्मिक गुणों का अच्छा सन्तुलन (मात्रा) लेकर जन्मे हैं। इसी कारण वे गृहस्थ की समस्याओं, कठिनाइयों के बावजूद साधना करने में समर्थ हैं। पुराणों में दी गई पूर्वजन्म की कथाओं में यह आवश्यक सच्चाई है कि आध्यात्मिक गुण ही अक्षय (अविनाशी) रहते हैं जबकि धन, यश और अन्य संसारिक संम्पति क्षय (समाप्त) हो जाती है।

कुण्डलियों के वैयक्तिक अध्ययन से विगत जीवन के संस्कार स्पष्ट रूप से दिखाई देते है, हालांकि वे बहुत कम हैं जैसे -

शान्तिदेवी

वह विवाह और गर्भावस्था से भयभीत थी।

पूरणसिंह

पूर्वजीवन में उसकी इच्छा वर्मा जाकर संम्पति अर्जित करने की थी। वर्तमान जीवन में देविन्दरजीत सिंह के रूप में वह पूर्वजन्म की तरह पढ़ाई की उपेक्षा करके कोलम्बिया से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कर रहा है।

रामप्रताप सिंह

पूर्वजन्म की दुर्घटना का भयानक दृश्य उसके अवचेतन मन में इतना सजीव था कि वह दो वर्ष से अधिक समय तक शांतिपूर्ण नींद नहीं सो सका। यह पहले ही बताया जा चुका है।

जयपुर केस

मैं विस्तृत जानकारी प्राप्त नहीं कर सका। संभी केसों के मनोविश्लेषण अध्ययन में व्यक्ति के व्यक्तित्व की चारों परतों को समझना जरूरी है। समाज परिवर के दो बाहरी प्रभाव और पूर्व जन्म के तथा इस जन्म के अर्जित दो आन्तरिक संस्कारों का प्रभाव।

सारिणी दो
पूर्वजन्म के कर्मों का महत्व

रिकार्ड किए गए कुछ केसों में पूर्वजन्म के कर्मों का प्रतिफल इस जीवन में देखा गया है। पुराण और वाल्मीकि रामायण ऐसी घटनाओं से भरे हुए हैं, जिनमें से कुछ का उल्लेख आरंभ में दिया जा चुका है। पुनर्जन्म के दो केसों में जिनकी दोनों जन्मों की कुण्डलियां मेरे पास हैं उनमें पूर्वजन्म के कर्मों को भली-भाँति देखा जा सकता है। उनके कुछ उल्लेखनीय स्पष्ट अनुमान ये हैं -

प्रारब्ध

१. *जन्म-समय, जन्म-चन्द्र और जन्म-नक्षत्र समूह (ग्रह-स्थिति) के साथ-साथ योग भी कुण्डली में प्रारब्ध स्पष्टतम् सूचक होते हैं।* जन्मकुण्डली के गहन अध्ययन से पता लग जाता है कि व्यक्ति विनाशकारी कर्मों में पूर्णरूप से क्यों डूब जाता है? क्यों जघन्य अपराध करता है? क्यों कृतघ्नता दिखाता है? और क्यों पाप-कर्मों के जाल में फँसता है? ज्योतिष इस जानकारी के लिए पढ़ी जाती थी और आध्यात्मिक सुधार ही सलाह का मुख्य आधार होता था। ज्योतिष के कई रहस्य हैं, जो इस पुस्तक में नहीं दिए गए हैं। ऋषितुल्य ज्योतिषी पहले कुण्डली की जांच इसी पहलू से करते हैं।

२. कुण्डली देखने का बहुत सरल नियम है कि पहले कुण्डली में निर्बल या क्षीण ग्रह का स्वामित्व और स्थिति देखें। किसी भाव के स्वामी के नीचत्व से उत्पन्न निम्न नैतिकता दूसरे भाव तक भी जाती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले व्यक्ति को उनके स्वभाव, उनकी स्थिति का यह मूल कारण बताना चाहिए और उनके दुष्प्रभाव को कम करने का उपाय बताना चाहिए। इस तथ्य को कई ज्योतिषी समझते तक नहीं हैं।

३. सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थिति पाँचवे-भाव और पाँचवे-भाव के स्वामी की है । यदि उस पर शुभ या अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो या पंचमेश वक्री हो और उस पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो यह प्रारब्ध होता है, जिसे भोगना पड़ता है, और इसका कोई समाधान नहीं होता।

४. दसवें-भाव के स्वामी का हीन बली होना, और नवें-भाव के स्वामी पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि होना, वर्तमान जीवन में पिछले जन्म के अशुभ ग्रहों का जारी रहना दिखाता है, उच्चराशि के शुभ ग्रह का महत्व आध्यात्मिक कोण से है, क्योंकि वह आध्यात्मिक दृष्टि से शुभ ग्रह होता है। यदि ऐसा शुभ ग्रह वक्री हो और उस पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो बिखरे व्यक्तित्व के बीज दिखायी देते हैं।

५. उदाहरण के लिए यदि अशुभ ग्रह दूसरे-भाव को बहुत प्रभावित कर रहे हों तो वह व्यक्ति ठग होता है, जिसने पूर्वजीवन में भी बहुतों को ठगा होता है और इस जीवन में भी दूसरों को ठगना और झूठ बोलना जारी रखेगा।

६. कुण्डली का पूरा ढ़ाचा *अपरिहार्य प्रारब्ध दिखाता है* जिसे भोगना पड़ता है। प्रारब्ध भोगने से ही क्षय (कम) होता है। अन्य कोई उपाय काम नहीं करता।

७. प्रारब्ध दशा अवधि में फल देता है। दशा में अचानक भाग्योदय हो सकता है या स्थिति गड़बड़ा जाती है।

८. ग्रहों के संक्रमण या गोचर से यह प्रकट होता है, कि किस सीमा तक एक व्यक्ति अपने वर्तमान जीवन के क्रियमाण कर्मों से किस सीमा तक अपनी धन-सम्पदा बढ़ा सकता है या अपनी बुरी स्थिति को कम कर सकता है।

९. इस क्रियमाण कर्म का *सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग पराशर द्वारा निर्धारित स्तोत्र-पाठ है*। पश्चिमी ज्योतिषी जो गोचर या ग्रह संक्रमण के आधार पर सारी भविष्यवाणियाँ करते हैं। वे ज्योतिष नामक ज्ञान सागर के किनारे मात्र में प्रवेश कर रहे हैं।

१०. योगों और दशाओं को न देखना, अवैज्ञानिक और आरंभिक स्थिति है। *योग भाग्य के सर्वाधिक दुर्बोध नमूने हैं जिन्हें किसी भी पुस्तक में नहीं समझाया गया है।* इसे परम्परा से सीखा जाता है। इसके अर्थों की कई परतें होती हैं, यही कारण है कि योगों पर लिखी पुस्तकें आदिकालीन, प्रथम-स्तर की और हानिकारक सिद्ध हुई हैं। योगों पर कोई भी पुस्तक इनके हजारों भेदों और उनके आन्तरिक अर्थों को नहीं बता सकती।

११. मात्र ग्रह संक्रमण या गोचर के आधार पर भविष्यवाणी करना ज्योतिष नहीं है यह खर्चीला अंध विश्वास है, जिस पर हिन्दू ज्योतिष सीखने वाले अमरीकी ज्योतिषी आक्रमण कर रहे है। इस संघर्ष में केवल हिन्दू ज्योतिष विजयी होगा। क्योंकि यह ज्योतिष है मनोवैज्ञानिक गप्प मात्र नहीं।

१२. ज्योतिष ऋषियों, सन्यासियों और ब्रह्मचारियों की देन है, भारत के गृहस्थों और डालर लोभी अमरीकनों की देन नहीं है। मुक्ति की ओर ले जाने के मुख्य उद्देश्य से हटकर यह भौतिकतावादी, भ्रष्टाचार निष्कृष्टतम स्तर पर पहुँच गया है। कर्म में विश्वास करना आध्यात्मिक जीवन के विकास की स्थिति है, जो ज्ञान प्राप्ति की ओर ले जाती है। सच्ची मुक्ति दो सच्चाइयों पर आधारित है ***(दया (करूणा)* आध्यात्मिकता है (२) *क्रूरता नहीं*।**

मैं अपनी पुस्तक "***दिव्यता इतिहास और ज्योतिष में डुबकियाँ***" से उदाहरण देना चाहूँगा।

धार्मिक साहित्य के विशाल कोष ने स्वयं भारतीयों को इतना आश्चर्यचकित कर दिया है कि निष्कर्ष रूप में आध्यात्मिक जीवन दो पंक्तियों में इस प्रकार सारांशित कर दिया है :-

"अष्टादश पुराणेंषु व्यासस्य वचन द्वयम् ।
परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीड़नम्" ।।

"अठारह पुराणों में व्यास के केवल दो शब्द महत्वपूर्ण है, पुण्य (आध्यात्मिक-गुण) दूसरों की भलाई करना है, और पाप दूसरों को सताना है।"

तब ज्योतिष का संदेश क्या है? मिथ्या आध्यात्मिककता से बचना चाहिए। भारत में आडम्बरपूर्ण-धार्मिकता चाहे वह भ्रष्ट तरीकों से व्यापारी द्वारा एकत्रित की गई धन-संम्पदा के एक अंश से मंदिर बनाने में दिखाई जा रही हो या संयुक्तराज्य-अमरीका के न्यू-एज-मूवमेंट के द्वारा दिखाई जा रही हो; उसमें आध्यात्मिक रुझान नहीं है।

सभी धार्मिक-ग्रन्थों में ज्योतिष और पुनर्जन्म के दो संदेश है -

"निस्स्वार्थ-भाव से दान करना और दया में विश्वास रखना"।